केशरिया बाना
(The Saffron Robe)

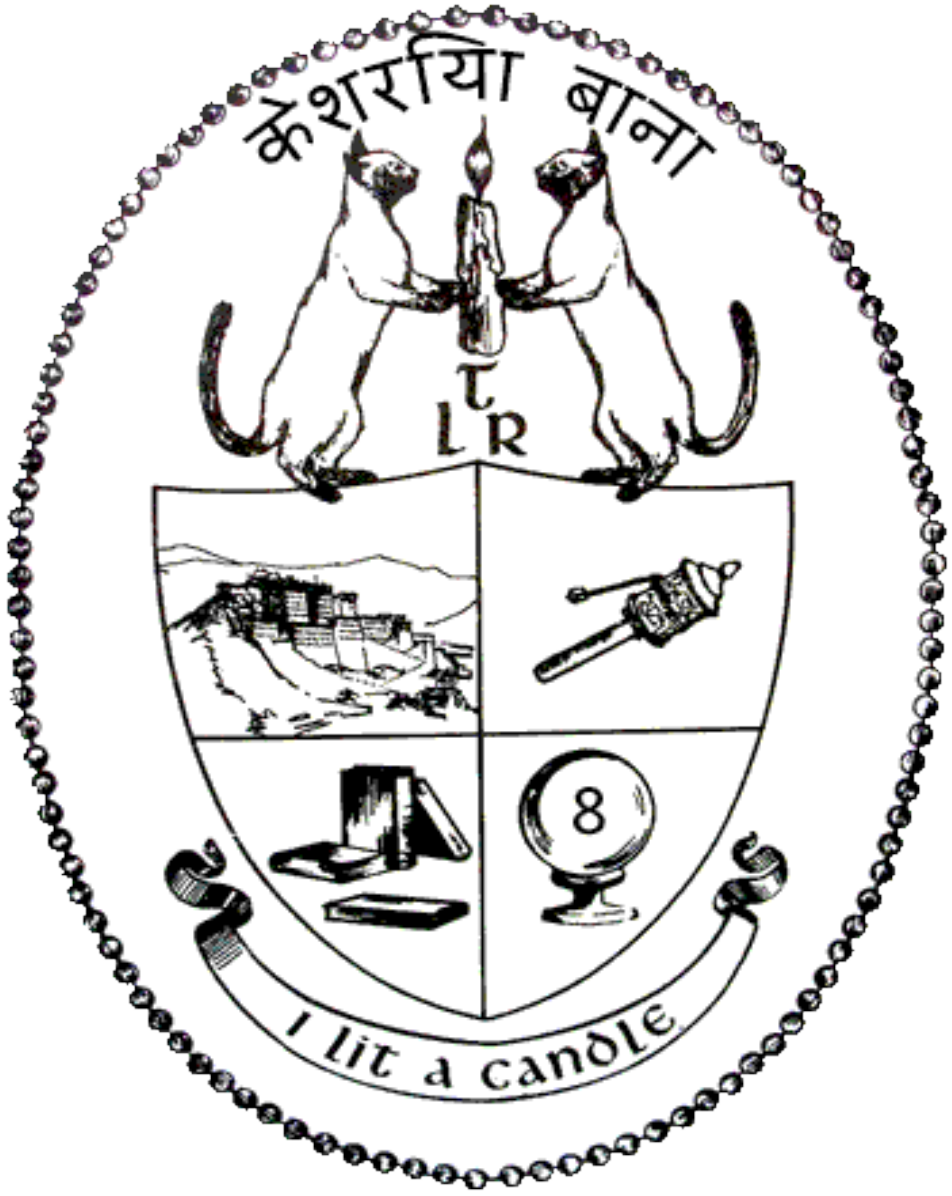

मैं दीप जलाता हूँ
(I Lit a candle)

केशरिया बाना
(The Saffron Robe)

मूल लेखक
टी. लोबसांग रम्पा

हिन्दी रूपान्तरणकर्ता
डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

शोधकार्यों के हितार्थ

निःशुल्क वितरण के लिये

प्राप्ति स्थल :
email : tuesday@lobsangrampa.org
drguptavp@gmail.com

© सर्वाधिकार सुरक्षित

समर्पित

शीलगाह एम राउस

(शर्मिंदा वह हो, जो इसमें बुराई देखता है–
चिनौतियों से शक्ति प्रबलित होती है– सम्पादक)

मंगलबार लोबसांग रंपा

केशरिया बाना

(पूर्ण संस्करण, 03–11–2013)

केशरिया बाना – (मूलतः 1966 में प्रकाशित) अपने भद्र शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ लोबसांग के लामामठ के जीवन में आगे तक की अंर्तदृष्टि। राजकुमार गौतम के सम्बंध में सत्य कहानी के साथ बौद्धमत का प्रादुर्भाव, और वह अपने चार भद्र सत्यों (four noble truths) के साथ बुद्ध कैसे बने। क्र क्र

विषय सूची

अनुवादक का निवेदन	:	i-v
अध्याय एक	:	1
अध्याय दो	:	9
अध्याय तीन	:	18
अध्याय चार	:	27
अध्याय पॉच	:	36
अध्याय छैः	:	44
अध्याय सात	:	53
अध्याय आठ	:	63
अध्याय नौ	:	73
अध्याय दस	:	82
अध्याय ग्यारह	:	91
अध्याय बारह	:	99
अध्याय तेरह	:	108
अध्याय चौदह	:	120
अध्याय पन्द्रह	:	131

अनुवादक का निवेदन

आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में जैनधर्म, बौद्धधर्म तथा अन्य सम्प्रदायों का बोलवाला था। जैनधर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी तथा बौद्धधर्म के प्रवर्तक सिद्धार्थ, जिन्हें आत्मज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् गौतम बुद्ध कहा गया, समकालीन थे। संयोग से महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध, दोनों ही राजपरिवारों से थे। जैनधर्म की अपेक्षा बौद्धधर्म अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ। बौद्धधर्म को, जो वास्तव में उपनिषदों की विचारधारा पर खड़ा हुआ था, कपिल मुनि के सांख्यशास्त्र पर आधारित था, मौर्य शासकों द्वारा बौद्धधर्म को राज्याश्रय प्रदान किया गया था। कुषाण युग में बौद्धधर्म की आराधना पद्धति की उत्पत्ति हुई। कनिष्क अभारतीय शासक था। शकवंशी होने के बावजूद, वह बौद्धधर्म का प्रबल समर्थक रहा था। आगे चलकर विशेषकर सम्राट अशोक की कलिंगयुद्ध में विजय के बाद, भयानक नरसंहार के बाद, सम्राट अशोक द्वारा बौद्धधर्म स्वीकार कर लेने पर, इसे राज्याश्रय प्राप्त हुआ। अशोक ने बौद्धधर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिये, शासकीय धर्मप्रचारकों को विदेशों, विशेषकर चीन, मंगोलिया, और जापान तक भेजा। अशोक की बेटी संघमित्रा ने भी बौद्धधर्म के प्रचार में स्वयं को समर्पित कर दिया। कर्मकाण्ड की असार्थकता, प्रपंच के मूल में अविद्या का होना, तृष्णा के उन्मूलन से ही रागद्वेष आदि बंधनों से मुक्ति, कर्मसिद्धान्तों की प्रबलता आदि सामान्य सिद्धान्त, बौद्धधर्म और औपनिषैदिक दर्शन, दोनों में ही समान रूप से पाये जाते हैं। वैदिक धर्म में ईश्वर और अवतारवाद पर जोर दिया गया है, जबकि बौद्धधर्म अनीश्वरवादी है। यह केवल अजर, अमर, अनादि, अनन्त और शाश्वत आत्मा, जो प्रत्येक प्राणी में विद्यमान है, के अस्तित्व को मानता है। बौद्धधर्म पुनर्जन्म में आस्था रखता है। यह संसार को, आत्मा को भिन्न–भिन्न प्रकार के अनुभव और पाठ सिखाने के लिये, एक पाठशाला की भॉति मानता है, पूर्णत्व प्राप्त करने के लिये आत्मा को बार–बार, संसार में जन्म धारण करता पड़ता है। जातक कथाओं में भगवान बुद्ध के अनेक जन्मों का उल्लेख है। तत्कालीन संस्कृत साहित्य में गौतम बुद्ध को शाक्यमुनि के नाम से संबोधित किया गया है।

आगे चलकर अशोक द्वारा प्रचारित बौद्धधर्म को हीनयान की संज्ञा दी गई और कनिष्क द्वारा प्रसारित धर्म को महायान की। कालान्तर में महायान से मंत्रयान की और मंत्रयान से बज्रयान की उत्पत्ति हुई।

भारत से बाहर निकलकर, बौद्धधर्म श्रीलंका, बर्मा (अब म्यांमार), तिब्बत, सिक्कम, तथा भूटान, थाईलेंड, चीन, कोरिया, मंगोलिया, जापान आदि लगभग आधे विश्व में फैल गया। समय के साथ–साथ इसमें विकृतियॉ भी बढ़ती गईं। प्रारंभिक बौद्ध अहिंसक थे। तिब्बतीय बौद्ध किसी जीवित प्राणी की हत्या तो नहीं करते थे परंतु स्वभाविक मृत्यु से अथवा दुर्घटना से मरे हुए जानवर का मांस खाते थे। बाद में चीन, जापान के भिक्षु, अहिंसा में विश्वास न रखते हुए प्राणियों को मारकर उनको भोजन के रूप में प्रयोग करते थे। जापान में बौद्धधर्म कुछ हद तक विकृत होकर ज़ेन (Zen), धर्म कहलाया। आरम्भ में बौद्धधर्म की भाषा, संस्कृत और पाली थी, परंतु बाद के बौद्ध साहित्य प्राकृत और पाली में लिखे गये।

विश्व के प्रसिद्ध धर्मप्रर्वतकों एवं दार्शनिकों में अग्रणी महात्मा बुद्ध के जीवन की घटनाओं का विवरण अनेक बौद्ध ग्रंथों जैसे– ललित विस्तार, बुद्धचरित, महावस्तु एवं सुत्तनिपात से ज्ञात होता है। तथागत, बुद्ध या गौतम बुद्ध, जिन्हें संस्कृत ग्रंथों में शाक्य मुनि कहा जाता है, का जन्म एक राजकुमार के रूप में, वर्तमान नेपाल के कपिलवस्तु के पास लुम्बिनी (Lumbini) नामक स्थान में 563 ई.पू. में हुआ

था। इनका बचपन का, पारिवारिक नाम सिद्धार्थ था, कपिलवस्तु राज्य के शासक, इनके पिता का नाम शुद्धोधन तथा माता का नाम माया (मायादेवी) था, जो देवदह की राजकुमारी थी। सिद्धार्थ के जन्म के सातवें दिन माता महामाया का देहान्त हो गया था। अतः उनका पालन–पोषण उनकी मौसी व विमाता प्रजापति गौतमी ने किया था। सिद्धार्थ बचपन से ही एकान्तप्रिय, मननशील एवं दयावान प्रवृत्ति के थे, जिसके कारण उनके पिता बहुत चिन्तित रहते थे। उपाय स्वरूप, शिक्षा समाप्त करने के साथ ही, सोलह वर्ष की आयु में, सिद्धार्थ का विवाह गणराज्य की राजकुमारी यशोधरा से करा दिया गया। विवाह के कुछ वर्ष बाद, एक पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम राहुल रखा गया। समस्त राज्य में पुत्र जन्म की खुशियॉ मनाई जा रही थी लेकिन सिद्धार्थ ने कहा, आज मेरे बन्धनों की श्रृंखला में एक कड़ी और जुड़ गई। यद्यपि उन्हें समस्त सुख प्राप्त थे, परन्तु शान्ति प्राप्त नही थी। चार दृश्यों (वृद्ध, रोगी, मृत व्यक्ति एवं सन्यासी ने उनके जीवन को वैराग्य के मार्ग की तरफ मोड़ दिया। राजा शुद्धोधन ने अपना राज्य अपने बेटे सिद्धार्थ को दे दिया। जब राजा सिद्धार्थ उन्नीस साल के थे, उन्होंने इस व्यर्थ के जीवन को त्याग देने का निर्णय किया। सिद्धार्थ ने अपना राज्य त्याग दिया। अतः एक रात अपनी पत्नी व पुत्र को सोता हुआ छोड़कर, गृह त्यागकर, ज्ञान की खोज में निकल पड़े और अनेक तत्कालीन सुप्रसिद्ध शिक्षकों के पास सत्य की प्रकृति के अंतिम अध्ययन के लिये गये, परंतु उनकी शिक्षा उन्हें संतुष्ट नहीं कर सकी और उन्होंने अपना रास्ता स्वयं तलाशने का मार्ग चुना। गृह त्याग के पश्चात सिद्धार्थ ने मगध की राजधानी राजगृह में अलार और उद्रक नामक दो ब्राह्मणों से ज्ञान प्राप्ति का प्रयत्न किया किन्तु संतुष्टि नहीं हुई। उनकी भेंट पाँच ब्राह्मण तपस्वियों से हुई। उन्होंने इन तपस्वियों के साथ कठोर तप किये परन्तु कोई लाभ न मिल सका। छैः वर्ष बाद वे बोधगया (बिहार) पहुँचे जहॉ उन्होंने निरंजना नदी के पास, एक वटवृक्ष के नीचे समाधि लगायी और प्रतिज्ञा की कि जबतक ज्ञान प्राप्त नहीं होगा, मैं यहाँ से नहीं हटूँगा।

सिद्धार्थ का मन बहुत शान्त और शिथिल था। जैसे ही वे बैठे उनका ध्यान गहरा होता गया और उनका ज्ञान बढ़ता गया, बढ़ता गया। शांति और स्पष्ट मन की इस स्थिति में उन्होंने जीवन के सत्य की प्रकृति को खोजना प्रारंभ किया। ''पीड़ा का कारण क्या है।'' उन्होंने स्वयं से पूछा और ''कभी समाप्त न होने वाले आनन्द का मार्ग क्या है ?'' मन की ऑखों से उन्होंने अपने खुद के देश के परे, अपने विश्व के काफी आगे देखा। शीघ्र ही ध्यान की अवस्था में सूर्य, ग्रह, आकाश के तारे और ब्रह्माण्ड की दूर की सब निहारिकायें उनके सामने प्रकट हुईं। उन्होंने देखा कि छोटी से लगाकर बड़ी तक, धूल के कण से सबसे बड़े तारे तक, हर चीज, एक लगातार बदलते हुए नमूने में आपस में एक दूसरे से जुड़ी थी : बढ़ना, मरना और दुबारा से उत्पन्न होना। हर चीज सम्बन्धित थी। कोई भी चीज बिना कारण के नहीं होती और हर कारण के पीछे एक प्रभाव होता है, हर दूसरी चीज के ऊपर।

जैसे ही उन्होंने इसको अनुभव किया, और गहरे सत्य उनके मन में आये। उन्होंने गहराई के साथ अपने अंदर झांका और खोज लिया कि राजकुमार सिद्धार्थ के रूप में उसका जीवन, परंतु जीवनों की श्रृंखला में अंतिम जो न कभी शुरू होती है और न कभी समाप्त और ये सब सत्य था हर एक के लिए। हम पैदा होते हैं जीवित रहते हैं और मर जाते हैं केवल एकबार नहीं बल्कि बार–बार। उसने देखा कि मृत्यु कुछ नहीं, केवल वर्तमान शरीर से मन (चेतना) का अलग होना है। मृत्यु के बाद कर्म का महत्व अगली यात्रा के केन्द्र में होता है। जब एक जीवन समाप्त होता है दूसरा प्रारम्भ होता है और इसी विधि से जीवन और मृत्यु का चक्र लगातार–लगातार घूमता रहता है घूमता रहता है। उन्होंने एक

जीवन के बाद दूसरे जीवन को देखा हम लगातार जिनको बदल रहे हैं और लगातार एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं। एक बार हम धनाढ्य और सुखमय होते हैं; दूसरी बार हम अत्यन्त गरीब और दुःखी होते हैं। कई बार हम आनन्द का अनुभव करते हैं, परंतु अधिकतर हम अपने आपको समस्याओं में ही पाते हैं। और सिद्धार्थ ने यह भी देखा कि जैसे ही हमारी परिस्थितियॉ बदलती हैं, वैसे ही दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध भी बदल जाते हैं। भूतकाल में हजारों–हजार बार, हम सब कभी न कभी, एक दूसरे के मित्र और शत्रु, माता और पिता, पुत्र और पुत्री रहे हैं।

तब उन्होंने विश्व की सभी पीड़ाओं को देखा। उन्होंने देखा कैसे जीवित प्राणी खुद अपने दुःख और आनन्द का कारण होते हैं। सत्य से अंधे होकर कि हर चीज लगातार बदलती है, वे झूॅठ बोलते हैं, चोरी करते हैं और उन चीजों को पाने के लिए जिन्हें वे चाहते हैं, हत्या तक कर देते हैं, तथापि, ये चीजें उन्हें कभी न समाप्त होने वाली इच्छाओं की प्रसन्नता प्रदान नहीं कर सकतीं और जितने अधिक उनके मन लालच और घृणा से भरते हैं, उतने ही अधिक, वे एक दूसरे को – और स्वयं को हानि पहुॅचाते हैं! हर एक हानिकारक क्रिया उन्हें अधिक और अधिक अप्रसन्नता की ओर ले जाती है। वे शांति की तलाश करते हैं, फिर भी, दुःख को छोड़कर कुछ नहीं पाते। अंत में उन्होंने इन सभी पीड़ाओं को समाप्त करने का वह तरीका खोज लिया। वह एक प्रज्वलित स्पष्ट प्रकाश से भर गए। अब वह एक साधारण व्यक्ति नहीं थे। शान्त और स्थाई मुस्कराहट के साथ, वे अपने ध्यान से उठे। स्वर्णिम प्रभात में, ऐसा कहा जाता है, सिद्धार्थ ने ऊपर देखा और बुद्ध के तारे को देखा और तब उनमें एक महान समझ उत्पन्न हुई। उन्होंने अपने मन में, भूत और भविष्य के सभी विश्व और गृहों के सम्पूर्ण जीवन को देखा; उन्होंने अस्तित्व का अर्थ समझ लिया, कि हम यहॉ इस पृथ्वी पर क्यों हैं और हमको किसने उत्पन्न किया है। काफी लम्बे समय बाद उन्हें सत्य का पता चला; उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और उन्होंने कर्म के सिद्धान्तों को स्थापित किया। सात दिन व सात रात समाधिस्थ रहने के उपरान्त कहा जाता है कि उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। अब वह भगवान बुद्ध थे, पूरी तरह से मुक्त हुए, पूरी तरह जागृत और ज्ञान प्राप्त। छैः लम्बे वर्षों की खोज समाप्त हुई। ये वह दिन था, जब पूरे देश देहात पर, एक सफेद चमकदार चांदी जैसी रोशनी को फैलाती हुई, वैशाख महीने की पूर्णिमा थी। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महात्मा बुद्ध सर्वप्रथम सारनाथ (बनारस के निकट) में अपने पूर्व साथियों से मिले और उन्हें पहला उपदेश दिया।

गौतम बुद्ध अथवा सिद्धार्थ गौतम, शाक्यमुनि बुद्ध या मात्र बुद्ध, बुद्ध पद प्राप्त करने के बाद एक श्रमण और संत थे, जिनकी शिक्षाओं के ऊपर बौद्ध धर्म स्थापित हुआ। गौतम बुद्ध के जन्म के सम्बन्ध में दो विचार हैं प्रथमतः वह 563 ईसा पूर्व में लुम्बिनी नेपाल में, जो शाक्य गणतंत्र था पैदा हुए और 483 ईसा पूर्व में खुशीनगर, माला गणतंत्र में निर्वाण को प्राप्त हुए। दूसरे विचार के अनुसार उनका जन्म 480 ईसा पूर्व में और निर्वाण 400 ईसा पूर्व में माना जाता है। दोनों अवस्थाओं में उनकी आयु अस्सी वर्ष की मानी जाती है।

गौतम ने मध्यमार्ग की शिक्षा दी। बाद में उन्होंने पूर्वी भारत के मगध और औसल राज्यों में अपनी शिक्षायें प्रसारित कीं। ये विश्वास किया जाता है कि लामामठों के नियम, उनके निर्वाण के बाद में बनाये गये और उनके अनुयायियों द्वारा स्मृति में रखे गए। लम्बे समय तक इनकी शिक्षाओं को मौखिक परम्परा से एक से दूसरे को प्रदान किया गया और लगभग चार सौ वर्ष बाद, ये लेखन में आये। अधिकांश लोग समझते हैं कि वह जीवित रहे, शिक्षायें दीं और एक मठीय व्यवस्था को महा–जनपद

काल में स्थापित किया, जो विम्बसार (558 ईसा पूर्व से – 491 ईसा पूर्व तक), जो मगध का राज्य था, में पढ़ाया, और उनकी मृत्यु अजातशत्रु, जो विम्बसार का उत्तराधिकारी था, के प्रारम्भ में हुई। अतः वे जैन धर्म के 24 वें तीर्थशंकर से थोड़े छोटे और उनके समकालीन थे। वैदिक ब्राह्मण ग्रन्थों से अलग हटकर बुद्ध का जीवनकाल, श्रमण विचारधारा अजीविका, जैन और अजना ब्रह्मजल नामक सूत्र में, इस तरह के विचारों के साठ प्रकार बताये गये हैं। बौद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ (बनारस) में दिया। बुद्ध कपिलवस्तु भी गये, जहाँ उनकी पत्नी, पुत्र व अनेक शाक्यवंशी उनके शिष्य बन गये। बौद्ध धर्म के उपदेशों का संकलन ब्राह्मण शिष्यों ने त्रिपिटकों के अंर्तगत किया। त्रिपिटक संख्या में तीन हैं, विनय पिटक, सुत्त पिटक व अभिधम्म पिटक। इनकी रचना पाली भाषा में की गई है। हिन्दू–धर्म में वेदों का जो स्थान है, बौद्ध धर्म में वही स्थान पिटकों का है।

भगवान बुद्ध के उपदेशों एवं वचनों का प्रचार प्रसार सबसे ज्यादा सम्राट अशोक ने किया। कलिंग युद्ध में हुए नरसंहार से व्यथित होकर अशोक का हृदय परिवर्तित हुआ। उसने महात्मा बुद्ध के उपदेशों को आत्मसात् करते हुए इन उपदेशों को अभिलेखों द्वारा जन–जन तक पहुँचाया। महात्मा बुद्ध आजीवन सभी नगरों में घूम–घूम कर अपने विचारों को प्रसारित करते रहे। भ्रमण के दौरान जब वे पावा पहुँचे, वहाँ उन्हे अतिसार रोग हो गया था। तत्पश्चात वे कुशीनगर गये जहाँ 483 ई.पू. में बैशाख पूर्णिमा के दिन, उन्हें निर्वाण प्राप्त हुआ।

''जो नित्य एवं स्थाई प्रतीत होता है वह भी विनाशी है। जो महान प्रतीत होता है, उसका भी पतन होता है। जहाँ संयोग है, वहाँ वियोग भी है। जहाँ जन्म है, वहाँ मरण भी है। ऐसे शाश्वत सत् विचारों को आत्मसात् करते हुए महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म का प्रवर्तन किया, जो विश्व के प्रमुख धर्मों में से एक है।''

''जैसा मैं हूँ वैसे ही वे हैं और 'जैसे वे हैं वैसा ही मैं हूँ। इसप्रकार सबको अपने जैसा समझकर, न किसी को मारें न मारने को प्रेरित करें।''

''हम जो कुछ भी हैं, वह, हमने आज तक क्या सोचा, इस बात का परिणाम है। यदि कोई व्यक्ति बुरी सोच के साथ बोलता या काम करता है तो उसे कष्ट ही मिलता है। यदि कोई व्यक्ति शुद्ध विचारों के साथ बोलता या काम करता है तो परछाई की तरह ही प्रसन्नता उसका साथ कभी नहीं छोडती।''

भगवान् बुद्ध के सुविचारों के साथ ही मैं अपनी कलम को विराम देना चाहूँगा।

लोबसांग रम्पा की इस पुस्तक में गौतम बुद्ध की कहानी को, भारतीय शिक्षक के माध्यम से विस्तार के साथ, अत्यन्त रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। बालक रम्पा ने सात वर्ष की आयु में चाकपोरी लामामठ में प्रवेश लिया था। उन्हें तेरहवे दलाईलामा का विशेष अनुग्रह प्राप्त था। लामा मिंग्यार डोंडुप उनके प्रिय शिक्षक, संरक्षक और सर्वस्व थे। चिकित्सा के साथ–साथ, उन्हें जड़ीबूटियों की पहिचान, उनका संरक्षण एवं उपयोग, तिब्बत का इतिहास और बौद्धधर्म, ज्योतिष, क्रिस्टल गेजिंग, दूरानुभूति, परोक्षज्ञान, प्रभामंडल, सम्मोहन, कुंडलिनी, सूक्ष्मशरीर से सूक्ष्मलोकों की यात्रा, आदि अनेक विधाओं का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया गया था। रम्पा ने स्थान–स्थान पर बालमन की चपलता, उत्सुकता, सहज जिज्ञासा, परानुभूति, अपने चटोरेपन एवं मनोभावों का सविस्तार मार्मिक वर्णन किया है।

संसार की आम बीमारी कब्ज के कारण और निदान के सम्बन्ध में अध्याय ग्यारह में पानी के महत्व की विशेषरूप से चर्चा की गयी है। पश्चिम की भोगसंस्कृति, उपभोगवाद पर, रम्पा अक्सर चोट करते दिख जाते हैं। अध्याय बारह में योग के ऊपर की गयी चर्चा में, भारतीय योग को शरीरिक व्यायाम मात्र बताते हुए, आध्यात्मिक प्रगति में उसके योगदान को नकारा गया है। तिब्बती मूल्यों एवं जीवन शैली का तथा तिब्बत में भिक्षुओं द्वारा गुफाओं में सावधि अथवा आजीवन एकान्तवास के माध्यम से शरीर से आत्मा का अलग करने का भी वर्णन किया गया है। रम्पा अपनी पुस्तकों में प्रत्येक शब्द के सत्य होने का दावा करते हैं। इनमें से अधिकांश विषय, परामनोविज्ञान एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में आते हैं, जिन पर विश्व भर में शोधकार्य चल रहे हैं। सम्भव है, भविष्य में इन क्षेत्रों में प्रगति देखी जा सके।

लोबसांग रम्पा की इस पुस्तक के हिन्दी रूपांतरण में, मुझे अपने गुरु श्री बी. एन. गच्छ, जिन्होंने मेरी पिछली सभी पुस्तकें पढ़ीं हैं, का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। इसके साथ अपने मित्रगणों विशेषकर, श्री राम प्रकाश गुप्ता, श्री देवेन्द्र भार्गव, श्री दिग्वीर सिंह चौहान, डॉ. पी. कुमार एवं डॉ. के. पी. शर्मा का भावपूर्ण प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है, इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। विशेषरूप से, श्री प्रगल्भ शर्मा, श्री प्रदीप सेन, जिनके सहयोग के बिना, इस पुस्तक का प्रस्तुतिकरण संभव नहीं था, का मैं आभारी हूँ। मैं पुनः उन सभी का आभार मानता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्षरूप से, इस पावन कार्य में सहयोग किया।

पुस्तक के प्रस्तुतिकरण में निश्चितरूप से कुछ त्रुटियॉ रह गयी होंगी, मैं उनके लिये पाठकों से क्षमायाचना करता हूँ तथा अपेक्षा करता हूँ कि विद्वत् पाठकगण उन्हें मेरे संज्ञान में लाने का कष्ट अवश्य करेंगे ताकि उन्हें यथाशीघ्र सुधारा जा सके।

डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता,

इन्दिरा कॉलोनी, नया बाजार, लश्कर
ग्वालियर – 474009, म.प्र., (भारत)
फोन 0751–2433425
मोबाइल : 9893167361 email : drguptavp@gmail.com

रक्षाबंधन, श्रावण शुक्ला 15,

सोम्यनाम संवत्सर, 2073 विक्रमी

तद्नुसार,

गुरुवार, 18 अगस्त 2016 ई0

अध्याय एक

मेरी लापरवाह टकटकी के सामने, मेरी नजर के सामने, इस सुखद विश्व की कुछ दूरी पर से, रंगीन दैत्यों के रूप में हिलती–डुलती कुछ अजनवी छायाऐं, तरंगों के रूप में लहरा उठीं। सूर्य से चितकबरे किये हुये पानी ने, मेरे चेहरे के कुछ इंच, शांति से सजाये।

उन अलसाई हुई छोटी तरंगों को, जो गति ने पैदा की थीं, देखते हुये, मैंने, धीमे से, अपनी भुजा को सतह के नीचे घुसा दिया। मैंने (अपनी) तिरछी नजर को, नीचे गहराइयों में घुसा दिया। हॉ, वह पुराना बड़ा पत्थर वहीं है, जहॉ वह रहता था–और वह मेरा अभिवादन करने के लिये बाहर आ रहा था! अलसाये ढ़ंग से, मैंने अपनी उॅगलियों को, अभी–गतिहीन, मछलियों के बगलों से चलने दिया; गलफड़ों की, अपनी सरलगति के सिवाय गतिहीन; मानो उसने अपना 'ठहरने का स्थान (station), मेरी उॅगलियों के पास ही बना रखा हो।

वह और मैं, अच्छे दोस्त थे, अक्सर मैं आता और उसके शरीर को प्रेम से स्पर्श करने से पहले, उसके लिये पानी में खाना ड़ाल देता। हमारे अंदर, पूरी आपसी समझ थी, जो केवल उन लोगों को आती है, जिन्हें एक दूसरे का डर न हो। उस समय, मैं ये भी नहीं जानता था कि, मछलियॉ खाद्य होती हैं! बौद्धमतावलंबी दूसरों के जीवन को लेते नहीं हैं अथवा दूसरों को पीड़ा नहीं देते।

मैंने एक गहरी सांस ली और दूसरे विश्व में काफी नजदीकी से घुसाने से आशंकित होते हुये, अपने चेहरे को सतह के नीचे दबाया। यहॉ मैंने (खुद को) एक देवता की तरह, एक बिल्कुल अलग प्रकार के जीवन पर नीचे घूरते हुए, महसूस किया। लंबे पत्ते, कुछ अनदेखी धाराओं पर, मंदमंद लहराये, पानी का जबरदस्त बढ़ाव, किसी जंगल के कुछ बड़े पेडों की भॉति, तनकर खड़ा हो गया। एक बलुआ लहर, मस्तिष्कहीन सर्प की भॉति, बगल से घूम गयी, और पूरे विश्व को, एक अच्छी तरह संरक्षित घास के मैदान की तरह देखने के लिये, पीले हरे से पौधे के साथ, किनारी की तरह सज गयी।

बहुरंगी और बड़े सिरों वाली, छोटी, पतली, मछलियॉ चमकीं और अपनी खाने और आनन्द की निरंतर जारी खोज में, पौधों के बीच चली गईं। पानी के एक बड़े घोंघे (water-snail) ने, परिश्रमपूर्वक, अपने आप को, एक भूरी, बड़ी चट्टान के बगल से नीचे किया, ताकि वह बालू साफ करने के अपने काम को कर सके।

परन्तु मेरे फैंफड़े फटे जा रहे थे; दोहपर का गरम सूर्य, मेरी गर्दन के पीछे चुभन पैदा कर रहा था, और सामने के तट के भद्दे से पत्थर, मेरे मांस में घुस रहे थे। अंतिमरूप से अपने आसपास देखते हुये, मैं अपने घुटनों पर उठा और धन्यवादपूर्वक, उस सुगंधित हवा में गहरी सांस ली। यहॉ, मेरे विश्व में, चीजें, इस शांत दुनियॉ से, जिसका मैं अध्ययन कर रहा था, बिल्कुल अलग थीं। यहॉ ये धूमधड़ाके, गड़बड़झाले और लगभग काफी भागदौड़ वाली थीं। मैं, अपनी बांयी टॉग के घाव के पुरने से, थोड़ा सा डगमगाते हुये खड़ा हुआ और अपनी पसंद के एक पेड़ के सामने, अपनी पीठ के सहारे विश्राम किया और अपनी तरफ देखा।

नोरबू लिंगा (Norbu-Linga) रंग की लपट था, फर (willows) के पेड़ों के सजीव हरे रंग, टापू के मंदिर के सिंदूरी और सुनहरे रंग और शुद्ध सफेद रंग के ऊन जैसे उड़ते हुये बादलों, जो भारत के पर्वतों के ऊपर से दौड़ते हुये आये थे, के द्वारा जोर डालते हुये आसमान का गहरा, गहरा नीला रंग। झील के शांत पानी ने, रंगों को परावर्तित किया और बढ़ाचढ़ा कर दिखाया और अवास्तविकता की हवा को प्रस्तुत किया, जबकि एक बड़ी हवा ने, पानी को हिलाया और चित्र के हिलने और धुंधला होने का कारण बनी। यहॉ सब कुछ शांत, विश्राम में था परन्तु फिर भी, दीवार के ठीक पीछे, जैसा मैं देख सकता था, हालात एकदम अलग थे।

गेरुआ (Russet) रंग की पोशाक पहने हुये भिक्षु, धोए जाने वाले कपड़ों के ढेरों को उठाये हुये आए। दूसरे (अनेक), चमकती हुई धारा के बगल से छितरा गये और उन्होंने अपने कपड़ों को मरोड़ा

और मोड़ दिया ताकि वे अच्छी तरह से पानी को सोख सकें या गीले हो जायें। मुड़े हुये सिर, धूप में चमके और जैसे–जैसे दिन बढ़ा, धीमे–धीमे वे धूप के कारण लाल हो गये। लामामठ में नये–नये आये हुए छोटे वेदीसेवक, जैसे ही उन्होंने अपनी पोशाकों को बड़े चिकने पत्थरों के ऊपर पछाड़ा ताकि वे पुराने, अधिक पहने हुये और इसतरह का प्रभाव देते हुये दिखाई दें कि, पहिनने वाला लंबे समय से वेदीसेवक रहा है, उत्तेजना के बहाव में इकट्ठे हो गये!

सूर्य, कभी–कभी, प्रकाश की चमकदार किरणों को, कुछ सम्मानीय लामाओं की सुनहरी पोशाकों से, जो पोटाला और पार्गोकलिंग के बीच यात्रा कर रहे थे, परावर्तित करता। उनमें से अधिकांश, सौम्य दिखने वाले आदमी थे, जो मंदिर की सेवा करते–करते, बढ़ते हुये बूढ़े हो गये थे। दूसरे, कुछ बहुत थोड़े से, जवान थे, वास्तव में, इनमें से कुछ स्वीकृत अवतार थे, जबकि दूसरे प्रगति कर चुके थे और अपने खुद के गुणों पर आगे बढ़ रहे थे।

लम्बे डग भरते हुए, तीखे और सावधान दिखते हुये, खाम के प्रदेश से आने वाले, बड़े–बड़े आदमी, कुलानुशासक (proctors) थे, आदमी जिनको अनुशासन बनाये रखने के कार्य का प्रभार दिया गया था। उनके पास कार्यालय के प्रतीक के रूप में, तने हुए और भारी, बड़े–बड़े डंडे थे। ये कोई प्रबुद्ध लोग नहीं, परन्तु बाहुवली और सत्यनिष्ठा (integrity) वाले, और केवल इसी कारण से चुने हुये लोग थे। एक पूछते हुये मेरे पास आया और उसने (मुझसे) पूछताछ की। मुझे देरी से पहिचानते हुये, वह ध्यान देने लायक अपराधियों की खोज में, लम्बे डग भरता हुआ आगे बढ़ गया।

मेरे पीछे, ऊँचा भव्य पोटाला,–''भगवान का घर (the Home of the God)''–आकाश की तरफ, आदमी के भव्यतापूर्ण कार्यों में से एक। अनेक रंगों वाली चट्टान धीमे से चमकी और उसने शांत पानी के पार, भागते हुये परिवर्तनशील रंगों के, परावर्तन भेजे। बदलती हुई रोशनी की एक तरकीब के द्वारा, आधार पर गढ़ी गईं और रंगीन आकृतियॉ, लोगों को, समूहों में, जीवन्त वार्तालाप में हलचल और गति उत्पन्न करते हुए, जीवन से भरपूर दिखाई दीं। पोटाला की छत के ऊपर, सुनहरी समाधियों से परावर्तित हुईं पीले प्रकाश की बड़ी किरणें, तेजी से चलीं और उन्होंने अपेक्षाकृत अंधेरी पर्वतीय दरारों के बीच में, जीवन्त चित्तियों (splashes) को उत्पन्न किया।

सहसा एक खोखली सी और लकड़ी के मुड़कर चटकने की आवाज ने, मुझे आकर्षण के इस नये स्रोत की तरफ मोड़ दिया। एक भूरी और पंख झड़ाने वाली पुरानी चिड़िया, पुराने से पुराने बेदीसेवक से भी ज्यादा पुरानी, मेरे पीछे के पेड़ पर आकर उतरी। छोटी और चमकीली ऑखों से, ध्यानपूर्वक, मेरी तरफ देखते हुए उसने कहा, '' क्रुआक (cruaak)!'' और अचानक ही उड़ गई, जिससे उसका पिछला हिस्सा, मेरी तरफ हो गया। आश्चर्यचकित करने वाली शक्ति और शुद्धता के साथ, अवांछित ''उपहार'' का, मेरी दिशा में बहिष्कार करते हुए, उसने पूरी लंबाई में अंगड़ाई ली और अपने पंखों को जोरदारी से फड़फड़ाया। केवल, बगल में, एक निराशायुक्त तीव्र उछाल के साथ, मैं उसका लक्ष्य बनने से बच पाया। चिड़िया ने मेरी तरफ देखते हुये, फिर दोबारा चक्कर लगाया और कहा ''क्रुआक! क्रुआक! किन्हीं अन्य स्थानों पर, बृहत्तर दिलचस्प चीजों के पक्ष में अपना ध्यान से हटाने से पहले, उसने मुझे रद्द (reject) कर दिया।

मंद हवा आने के साथ, समीप आते हुए, भारत से आने वाले व्यापारियों के पहले समूह का पहला मंदा सा स्वर आया। याकों की रंभाहट (lowing), मानो उन्होंने, अपने चरवाहों द्वारा जल्दी चलाये जाने के प्रयास का विरोध किया। बूढ़े के दमा की आवाज और हॉफनी, अनेक पैरों की घसीटन और लड़खड़ाहट और काफिले के द्वारा एकतरफ धकेली जाती हुई छोटी कंकड़ियों की संगीतमय टनटनाहट। शीघ्र ही मैं, लकड़ी के काफी ऊँचे ढ़ेर लगाकर रखे हुये, अजीब से गट्ठरों से लदे जानवरों को देख सका। झबरी भौहों के ऊपर उछलते हुये बड़े सींग, जैसे ही वे डगमगाकर चलते, उनकी धीमी, न थकने वाली गति के साथ–साथ, बड़े जानवरों का चढ़ना और गिरना। व्यापारी, कुछ पगड़ी वाले,

कुछ पुरानी ऊन के टोप वाले, दूसरे मरम्मत की हुई, नम्देवाली सिर की टोपी, लगाये हुये।

''भिक्षा, भिक्षा भगवान से प्रेम के लिये'', भिखारी लोग चिल्लाये। ''आह!'' जैसे ही व्यापारी दयाहीनता के साथ आगे चले, वे (गालियॉ देते हुए) चिल्लाये, ''तुम्हारी मॉ एक गाय है, जिसने सुअर के साथ संसर्ग किया, तुम्हारी नस्ल शैतान की नस्ल है, तुम्हारी बहिनें, भरे–बाजार बेची जाती हैं।''

मुझे लंबी सांस खींचने के लिये तैयार करते हुए–अनजान गंध, मेरी नकुओं में चिकोटी काटने के लिये, और तब दिल से छींकने के लिये आई। भारत के दिल से सुगंध, चीन से चाय की ईंटें, याक के ऊपर लदी हुई गॉठों में से झड़ती हुई पुरानी धूल, सभी मेरे रास्ते में आकर बिखर गईं। दूरी पर, याक के गले की घंटियों की आवाज, व्यापारियों की तेज बातचीत और भिखारियों की लानत, गाली देने का कृत्य, धीमा पड़ गया। जल्दी ही, ल्हासा की महिलाऐं, धनी आगुन्तकों को, अपने दरवाजों पर पायेंगी। शीघ्र ही, दुकानदार, व्यापारियों द्वारा मांगी गई कीमतों के ऊपर मोलभाव करेंगे; उठी हुई भोंहें और बिना किसी स्पष्टीकरण के, बढ़े हुये मूल्य पर तेज उठी हुई आवाजें। शीघ्र ही मैं, पोटाला को वापस जा रहा होऊॅगा।

मेरा ध्यान भटक गया। अलसाते हुये, मैंने नहाते–धोते हुये भिक्षुओं को देखा, जिनमें से दो, पहले के द्वारा, दूसरे की तरफ उछालकर फैंके गये पानी के झटकों के लिये तैयार थे। कुलानुशासक, चाल में घबराहट के साथ, शीघ्रता से अंदर आये और दोनों भिक्षुओं को, हर एक को सींखचों के पीछे, ''शांति के रखवालों की पकड़ में,'' दण्डित करके वहॉ से हटा दिया गया।

परन्तु वह क्या था ? मैंने अपनी टकटकी को झड़ियों की खोज में चले जाने दिया। लगभग जमीन के तल के पास से, दो छोटी चमकती हुई ऑखें, मेरी ओर आशंकित होकर देख रही थीं। दो छोटे, अधेड़ कान जानबूझकर मेरी दिशा में लगे हुये थे। यदि मैं एक झूठी चाल चलूॅ, एक सूक्ष्म सी चीज, दौड़ने के लिये पक्की तैयार थी। मेरे और झील के बीच में, एक छोटा, भूरा चूहा, अपने घर की तरफ जाने के रास्ते पर जाने की संभावना पर विचार कर रहा था। जैसे ही मैंने देखा, वह, पूरे समय अपनी नजर मेरे ऊपर रखते हुये, आगे बढ़ा। उसकी चिंता गलत थी; जहॉ वह जा रहा था, वहॉ न देखते हुये, वह सीधा एक शाखा पर गिरा और डर की एक कर्णभेदी चीख के साथ, हवा में एक–एक फुट उछल गया। वह बुरी तरह उछला, बगल से काफी दूर उछला। जब वह नीचे आया, उसने अपने पैरों को चुका (missed) दिया और झील में गिर गया। जब मैं, घुटनों तक गहरे पानी में नीचे उतरा और उसे उठाकर बाहर निकाला, बेचारा पानी में छोटा तैरने वाला घुन (mite), सीधा नहीं चल रहा था और एक मछली के द्वारा पकड़े जाने के खतरे में था।

मैंने उसे, अपनी पोशाक से सिरे से सावधानी से सुखाते हुये, डाट बनाकर, किनारे पर वापस रख दिया और कॉपते हुये छोटे बण्डल को जमीन पर रख दिया। मात्र एक धुंधला सा धब्बा–और वह निस्संदेह, अपने भाग जाने के लिये धन्यवाद देता हुआ, थोड़ा नीचे, बिल में जाकर गायब हो गया। मेरे ऊपर वाली प्राचीन चिड़िया ने, ठिठोली में ''क्रुआक!'' की एक आवाज लगाई और श्रमपूर्वक ल्हासा की दिशा में हवा में फडफडा़ती हुई, आवाज के साथ चीखी।

ल्हासा की दिशा में ? उसने मुझे ध्यान दिलाया, मुझे पोटाला की दिशा में जाना चाहिए था! नोरबू लिंगा की दीवार के ऊपर, धुलाई की जॉच करते और जमीन पर (कपड़े) सुखाते भिक्षु, उम्र के कारण, झुके जा रहे थे। इससे पहले कि उसे चुन लिया जाए, हर चीज को सावधानी से जॉचा परखा जाना था; छोटे भाई गुबरैला (Beetle), कपड़ों के आरपार चहलकदमी कर रहे होंगे, और पोशाकों की तह करने में, छोटे भाई दबा दिये जायेंगे–बौद्ध पुजारी बनाने का नाटक कॉप उठा और पीला पड़ गया।

शायद, धूप से बचकर एक छोटा कीड़ा, एक उच्चलामा के कपड़े धोने के स्थान के नीचे, शरण ले चुका था, तब उस छोटे कीड़े को सुरक्षा के साथ, सावधानी से उठाकर, अलग किया जाना चाहिए ताकि, उसके भाग्य को, मनुष्य के द्वारा परिवर्तित नहीं किया जा सके। पूरे मैदान के ऊपर भिक्षु, झुके

हुए थे, ताकते हुये और आराम के साथ बातें करते हुये, जैसे कि एक छोटा कीड़ा, दूसरे के बाद, सुरक्षितरूप से, मृत्यु से अलग भेज दिया गया हो।

धीमे–धीमे, जैसे ही हर एक ने अपने तैयार कपड़ों को पोटाला ले जाने के लिये, ढ़ेर लगा दिया, धुले हुए कपड़ों के गठ्ठर बढ़े। छोटे बेदीसेवक, अपने ताजे धोये हुये बोझों के अंतर्गत डगमगाये; कुछ, उसके ऊपर नहीं देख सके, जिसे वह ढोकर ले जा रहे थे। तब सहसा, जैसे ही छोटा सा साथी नीचे गिरा और विस्मय भरी एक चीख उभरी। (उसने) सभी कपड़ों को, धूल भरे मैदान में या दलदल भरे नदी के किनारे पर भी उड़ा दिया।

छत की ऊँचाई से शंखों (conches) के स्पन्दन और तुरहियों के गूंजने की आवाजें भी आईं। ध्वनियॉ, जो दूर स्थित पर्वतों से कई बार गूंजी और पुनः गूंजी, ताकि कई बार, जब हालात ठीक थे, कंपन, किसी के आसपास धड़के और किसी की छाती को कुछ मिनटों के लिये पीट दिया। तब अचानक ही, सब स्थिर, शांत, इतना शांत कि कोई अपनी दिल की धड़कनों को भी सुन सकेगा, हो जायेगा।

मैंने मित्रवत पेड़ों की छाया को छोड़ दिया और बाड़ में से, उसके रिक्तस्थान में होकर अपने रुकने का रास्ता बनाया। मेरी टॉगें कॉप रही थीं; कुछ समय पहले, जलने से मेरी बांयी टॉग में, गहरा घाव हुआ था–वह ठीक से भरा नहीं–और तब, जबकि हवा के एक बड़े तूफान ने मुझे पोटाला की छत से उठा दिया और पहाड़ों के बगल से उठाकर नीचे फैंक दिया, मेरी दोनों टॉगें टूट गईं थीं। इसलिये मैं लंगड़ा रहा था और थोड़े समय के लिये, मुझे घरेलू कर्तव्यों को करने से मुक्त कर दिया गया था। उस पर से, मेरा आनन्द, जैसा कि मुझे बताया गया ''कि ऋण को सीधे व्यवस्थित किया जा सकता है।'' अधिक अध्ययन करने की तरफ मुड़ गया था। आज–कपड़े धोने के दिन–मैं घूमने–फिरने के लिये स्वतंत्र था और मैंने नोरबू लिंगा में विश्राम किया।

पहाड़ों में प्रविष्टि के रास्ते पर, सभी उच्चलामाओं और मठाध्यक्षों के साथ, जो अपनी एड़ियों पर चलते थे, से वापस लौटना, मेरे लिये नहीं था। ये कठोर–कठोर कदम, जहॉ मैं ''98–99–100, 101––'' गिना करता था, मेरे लिये नहीं थे; जब लामा, भिक्षु और तीर्थयात्री समीप से गुजरे, मैं सड़क के बगल से खड़ा हुआ था। तब वहॉ थोड़ी गुनगुनाहट हुई और मैं लंगड़ाकर सड़क के पार गया और झाडियों में घुसा। अपने आपको पपड़ीदार पहाड़ों की बगल से खींचते हुये, मैंने अपने चढ़ने का रास्ता बनाया, जो न्यायालय और पोटाला के बीच में, श्यो (Shö) गॉव के ऊपर और बगल के रास्ते में जाकर मिल गया।

रास्ता उबड–खाबड़ था परन्तु अपने छोटे पहाड़ी पौधों से भरपूर, सुन्दर था। हवा ठण्डक दे रही थी और मेरी सुधरी हुई टॉगें, असह्यदर्द देना शुरू कर रहीं थीं। मैंने अपनी फटी हुई पुरानी पोशाक को, अपने आसपास समेटा और एक सुविधाजनक चट्टान के ऊपर जा बैठा ताकि मैं अपनी शक्ति और अपनी हवा को, पुनः प्राप्त कर सकूँ। ल्हासा की दिशा में, ऊपर, मैं हल्की–हल्की चिनगारीदार आग की लपटों को देख सकता था–व्यापारी, सरायों में से एक में ठहरने के बजाय, खुले में अपना शिविर लगाये हुये थे, जैसा कि भारतीय, अक्सर करते थे। मैं चमकती हुई नदी को, दांयी ओर से थोड़ा दूर, जब उसने, पूरे रास्ते में अपनी दीर्घकालीन यात्रा को, बंगाल की खाड़ी में जाने के लिये छोड़ा, देख सकता था।

''उर–रोर, उर–रोर'' एक गहरे, मंदस्वर ने कहा, और एक गुस्सेबाज सिर ने मेरे घुटने में टक्कर मारी। ''उर–रोर उर–रोर'' मैंने मिलनसारिता के साथ जवाब दिया। एक हल्की सी हलचल और एक बड़ा काला बिल्ला, मेरी टॉगों के ऊपर आ खड़ा हुआ और अपने चेहरे को मेरे अन्दर घुसा दिया। ''आदरणीय, पूसी, पूसी!'' मैंने मोटी बालदार खाल के माध्यम से कहा।'' आप अपने ध्यानाकर्षण के द्वारा मुझे बन्द कर रहे हैं।'' हल्के से, मैंने अपने हाथ उसके कंधों पर रखे और उसे थोड़ा सा पीछे खिसकाया ताकि मैं उसे देख सकूँ। हल्की सी क्रॉस की हुई बड़ी नीली ऑखों ने, मेरी ओर वापस

घूरकर देखा। उसके दॉत इतने सफेद थे, जितने कि ऊपर के बादल, और उसके चौड़े कान हल्की सी आवाज सुनने के लिये भी सजग थे।

आदरणीय पूसी पूसी, एक बूढ़ा सा और एक मूल्यवान दोस्त था। अक्सर हम, किसी शरण देने वाली झाड़ी के नीचे, एक दूसरे के साथ चिपटकर लेट जाते और अपने–अपने डरों, अपनी निराशा, और कठोर, कठोर जीवन की अपनी कठिनाइयों के बारे में, एक दूसरे से बातें करते। अब वह मेरे ऊपर लोट–पोट करते हुये, अपने बड़े पंजों को खोलते और बंद करते हुये, जबकि उसकी दुलार (purr), तेजी से, औरतेजी से गॅूजी, अपना प्यार जता रहा था। हम कुछ समय के लिये साथ–साथ बैठे, और तब यह तय किया कि अब ये चलने का समय था।

जैसे ही मैंने ऊपर की तरफ, अपनी टूटी हुई टॉगों के दर्द में अडंगा डालते हुये, सदैव की अपेक्षा सर्वाधिक परिश्रम किया, आदरणीय पूसी पूसी आगे दौड़ा, पूंछ कड़ी सीधे खड़ी हुई। वह कुछ नीचे की तरफ कूदा और तब, जब मैं समतल पर आ गया, उछला और खेलते हुये, मेरी फड़फड़ाती हुई पोशाक से चिपक गया। ''अब, अब'' मैं इस मौके पर खुशी से चिल्लाया, ''ये नगीनों की रक्षक बिल्लियों के नेता के लिये, व्यवहार करने का कोई तरीका नहीं है।'' जवाब में उसने अपने कान पीछे खड़े किये और मेरी पोशाक के आगे दौड़कर आया और मेरे कंधों की ओर पहॅुचते हुये, बगल से एक झाड़ी में कूद गया।

अपनी बिल्लियों को देखकर मैं आश्चर्य चकित हुआ। हम उन्हें संतरी के रूप में उपयोग करते हैं, क्योंकि ठीक से प्रशिक्षित ''सियामी (Siamese)'' बिल्ली, किसी कुत्ते की तुलना में अधिक घातक होती है। वे, पवित्र वस्तुओं के बगल से, आराम से, सोती हुई दिखाई देती हैं। यदि तीर्थयात्रियों ने कुछ छूने या चुराने का प्रयास किया, तब ये बिल्लियॉ–हमेशा जोड़े में–उसको पकड़ लेंगी और उसके गले को दबा देंगी। वे घातक होती थीं, फिर भी, मैं उनके साथ कुछ भी कर सकता था और दूरानुभूति वाली होने के कारण, मैं उनके साथ बिना कठिनाई के बातचीत कर सकता था।

मैं बगल से, प्रवेश के रास्ते में पहॅुचा। आदरणीय पूसी पूसी, दरवाजे के बगल से, एक लकड़ी के खंभे की बैसाखियों को शक्ति के साथ तोड़ते–फोड़ते हुये, पहले से ही वहॉ था। जैसे ही मैंने सिटकनी को पकड़ा, उसने अपने मजबूत सिर से धक्का देकर दरवाजा खोल दिया और धुंधले, धुंए भरे रास्ते में गायब हो गया। मैंनें काफी धीमे से उसका पीछा किया।

ये मेरा अस्थाई घर था। मेरी टॉग के जख्म ऐसे थे कि, मुझे चाकपोरी से पोटाला भेज दिया गया था। अब, जैसे ही मैं गलियारे में घुसा, परिचित खुशबुओं ने ''घर'' की याद दिला दी। अगरबत्तियों की सदा उपस्थित रहने वाली खुशबू, समय और उद्देश्य, जिसके लिये ये जलाईं गयीं थीं, के अनुसार विभिन्न प्रकार की गंध। याक का मक्खन, जिसका उपयोग हम छोटी चीजों, जैसे पतीलियों को गरम करने के लिये, अपने दीपकों में करते थे, और जो सर्दी के दिनों में मूर्तिकला में उपयोग किया जाता था, में से कड़वी, बासी और बदबूदार गंध। ''स्मृति खिंचती गई।'' कोई बात नहीं, हम इसे चाहे जितना खुरचें ''और हम बहुत अधिक खुरचते भी नहीं हैं'' हर चीज को भेदते हुये खुशबू वहॉ हमेशा थी। याकोबर, जो सूख गया, बूढ़े और बीमारों के कमरों को गर्म करने के लिये काम में लाया जाता था, की गंध कुछ कम आनन्ददायक थी। परन्तु अब मैं, टिमटिमाते हुये मक्खन के दीपों से, जिन्होंने धुंधियाले गलियारे को और अधिक धुंधियाला बना दिया था, गलियारे में नीचे चलते हुये, गुजरते हुये लड़खड़ाया।

सभी लामामठों में दूसरी ''सुगंध'' हमेशा प्रस्तुत थी, इतनी परिचित ''सुगंध'' कि जबतक भूख ने उसके दिमाग को तेज न कर दिया हो, कोई उस तरफ ध्यान भी नहीं देता। त्सम्पा! भूने हुये जौ की खुशबू, चीनी चाय की ईंटों की खुशबू, गरम मक्खन की खुशबू। इन सब को मिला दें तो अपरिहार्य परिणाम होगा, शाश्वत त्सम्पा। कुछ तिब्बतियों ने त्सम्पा के अलावा दूसरे किसी खाद्य को कभी चखा तक नहीं है; वे इसके स्वाद के साथ ही पैदा हुये, और ये ही अंतिम खाना होगा, जिसे वे चखेंगे। ये

खाना, पीना और सॉत्वना है। कठोर शारीरिक श्रम के बीच, ये दिमाग को खाना प्रदान करता है, जीविका प्रदान करता है। परन्तु, मेरा विश्वास सदैव ही ये रहा है कि ये यौनिक (sexual) अभिरुचियों को कम करता है। इसलिये भिक्षुओं के देश और गिरती हुई जन्मदर के साथ, तिब्बत को ब्रह्मचर्य की स्थिति में रहने में कोई कठिनायी नहीं होती।

भूख ने मेरी ताड़ने की शक्ति को तेज कर दिया था, इसलिये मैं, भुने हुये जौ, गरम मक्खन और चीनी–चाय की ईटों की खुशबू को सराहने में सक्षम था! जब सुगंध तीव्रतम थी, मैं थके हुये अंदाज में, गलियारे में नीचे की तरफ चला और बांयी ओर मुड़ा। यहॉ, तांबे के बड़े कड़ावों में, रसोइये भिक्षु, भुने हुए और पिसे हुए जौ को उफनती हुई चाय में, कलछुल से चला रहे थे, घुमा रहे थे। एक ने याक का कई पाउंड मक्खन बर्बाद कर दिया और उसे उछालकर फैंक दिया। दूसरों ने चमड़े के नमक के बोरे (leather sack of salt), जिसको आदिवासियों द्वारा उच्चदेशीय झीलों से लाया गया था, को समाप्त कर दिया। चौथा भिक्षु, दस फुटे पायदान के साथ, हर चीज को आपस में घुमा और हिला रहा था। कढ़ाव उफन रहे थे, झाग दे रहे थे और चाय की ईटों में से कुछ पत्तियॉ तथा टहनियॉ, भिक्षु के द्वारा एक कलछी से हटाये जाने के लिये, सतह की ओर उठीं।

कढ़ाव के नीचे जलता हुआ याक का याकोबर (yak dung), गरम, चिरपिरे, कसेले और काले धुंए के बादल फैंक रहा था। पूरा स्थान रंग गया था, और रसोई भिक्षुओं के काले, पसीने से नहाये हुये चेहरे, गहरे नरक के अंदर के उन अस्तित्वों में से हो सकते थे। कलछी चलानेवाला भिक्षु, अक्सर, कढ़ाई में तैरते हुये मक्खन को कढ़ाई से अलग उठा देता और उसे उछालकर आग में झौंक देता। वह कडकड़ाता, आग की लपट उठाता, और एक नई दुर्गंध, पैदा करता!

''आह लोबसांग! ''एक भिक्षु, सभी चीख–पुकारों और आवाजों के ऊपर उठकर जोर से चिल्लाया। ''खाने के लिये दोबारा आओ, ए ? अपनी सहायता स्वयं करो, बच्चे अपनी सहायता स्वयं करो!'' मैंने अपनी पोशाक के अंदर से, चमड़े का अपना छोटा थैला, जिसमें हम भिक्षु, जौ की एक दिन की मात्रा की आपूर्ति रखते हैं, निकाला। धूल को झड़ाते हुये, मैंने इसे अपनी सामर्थ्य तक, ताजे भुने हुये, ताजे पीसे हुये जौ से भर लिया। अपनी पोशाक के सामने से, मैंने अपना कटोरा निकाला और सावधानी से उसकी तरफ देखा। ये थोड़ा गंदा था, थोड़ा ''परतदार।'' दूर दीवार के सामने स्थित बड़ी खत्ती (bin) में से, मैंने मुट्ठीभर महीन रेत उठाया और अपने कटोरे को अच्छी तरह से रगड़कर मांजा। इसने मेरे हाथों को भी साफ रखने में मदद की! अंत में, मैं इस हालत से संतुष्ट हुआ। परन्तु दूसरा काम किया जाना था; मेरा चाय का थैला खाली था, या गोया कि उसमें कुल मिलाकर, थोड़ी सी छोटी बत्तियॉ, थोड़ी सी बालू रेत, और दूसरी चीजें थीं, जो चाय में अक्सर पाई जाती हैं। इसबार मैंने थैले को अंदर से बाहर को पलट दिया और मुक्त मलबे को उठा लिया। थैले को अपनी सही स्थिति में लौटाते हुये, मैंने एक हथौड़ा उठाया और चाय की सबसे समीप ईंट में से, एक सही डेले को तोड़ा।

अब ये मेरी बारी थी; एकबार फिर, मैंने अपना कटोरा लिया–अपना नया मांजा हुआ कटोरा– और उसे पकड़ा–एक भिक्षु ने एक चमचा लिया और त्सम्पा से भरकर, पूरा मेरे कटोरे में पलट दिया। धन्यवादपूर्वक, मैं एक कोने में खिसक गया, एक पुराने बोरे के ऊपर बैठा और अपने भरे हुये बाउल से खाना खाया। जैसे ही मैंनें खाना खाया, मैंने अपने आसपास देखा। रसोईघर, सामान्य मंडराने वालों से भरा पड़ा था, आलसी मनुष्य, जो नवीनतम घोटालों को बताते हुये और नवीनतम सुनी हुई अफवाहों में, थोड़ा जोड़तोड़ करते हुये, गप्पें मारना पसंद करते थे। ''हॉ, लामा टेंचिंग (Tenching), गुलाबबाड़ की ओर जा रहा है। तिस (Tis) ने बताया कि, मठाध्यक्ष स्वामी के साथ उसका झगड़ा हुआ था। मेरे दोस्त ने ये सब सुना, उसका कहना है .....''

लामामठों और बौद्धमठों के बारे में लोगों के अजीब–अजीब अनुमान हैं। अक्सर ये माना जाता है कि, भिक्षु–''अच्छे दिखते हुये और भली बातों को कहते हुये,'' अपना पूरा दिन, ध्यान, स्वाध्याय और

प्रार्थना में लगाते हैं। लामामठ वह स्थान है, जहॉ धार्मिक विचारोंवाले लोग, अधिकारिकरूप से, ध्यान और उपासना के उद्देश्य से इकट्ठे होते हैं ताकि, आत्मा को शुद्ध किया जा सके। अधिकारिकरूप से! अनाधिकारिकरूप से, पोशाक किसी को भिक्षु नहीं बनाती। कई हजार लोगों के समाज में कुछ ऐसे होंगे, जो घरेलू कामकाज, वस्त्रों की मरम्मत और रखरखाब को करते हैं। दूसरे हिसाब–किताब देखते हैं, पुलिसगीरी करते हैं, निम्नवर्ग के थोड़े से लोग पढ़ाते हैं, उपदेश देते हैं ..... काफी! बौद्धमठ, विशेषरूप से नर आबादी का एक बड़ा नगर हो सकता है। कर्मचारी, निम्नतम श्रेणी के भिक्षु होते हैं और इनका, जीवन के धार्मिकपक्ष में कोई रुझान नहीं होता, वे इसके प्रति केवल दिखावटी प्रेम प्रदर्शित करते हैं। कुछ भिक्षु, मंदिर के फर्श को साफ करने को सिवाय, कभी भी मंदिर में नहीं गये।

एक बड़े लामामठ में, पूजा का स्थान, स्कूल, अशक्त लोगों के अस्पताल, भण्डार, रसोईघर, छात्रावास, जेल और लगभग हर चीज, जो एक छोटे नगर में पाई जाती, होती है। मुख्य अंतर यह है कि, लामामठ में हर कोई, हर चीज, पुरुष है और सतही दृष्टि से, हर एक व्यक्ति, धार्मिक निर्देशों और क्रियाओं में मगन है।'' लामामठ के अपने ईमानदार कर्मी और उनकी सदाशयता, अनाड़ीपन घुमक्कड़पन भी होते हैं। अनेक भवनों और उद्यानों वाले बड़े लामामठ, एक लंबे चौड़े क्षेत्र में विस्तारित, शहर या नगर होते हैं। कईबार ये पूरा समुदाय, एक ऊॅची दीवार से, परकोटे से घिरा होता है। दूसरे लामामठ, सभी एक ही इमारत में रहने वाले, लगभग सौ भिक्षुओं के, और छोटे होते हैं। कुछ दूर के क्षेत्रों में, एक अत्यन्त छोटे लामामठ में, दस से अधिक भिक्षु भी नहीं होते सदस्य भी नही होते। इसलिये ये, दस से दस हजार तक के बीच में आबादी वाले होते हैं, लंबे और छोटे, मोटे और पतले, अच्छे और बुरे, आलसी और तनदुरुस्त। ऐसा ही, जैसा कि किसी बाहरी समुदाय में होता, उससे खराब नहीं, और अच्छे होने के सिवाय कुछ नहीं। अक्सर, लामा अनुशासन, सैनिक अनुशासन होता है–ये सभी उसके प्रभारी मठाध्यक्ष ऊपर निर्भर करता है। वह दयालु, विचारपूर्ण व्यक्ति हो सकता है, और वह एक तानाशाह भी हो सकता है।

मैंने एक दबी हुई जम्हाई ली और बाहर गलियारे में घूमा फिरा। भण्डारों में से एक की गुफा या आले में हुई सरसराहट की तरफ मेरा ध्यान गया; मैंने समय रहते, एक काली पूंछ, को चमड़े के बोरों में, अनाज के बीच गायब होते देखा। बिल्लियॉ, अनाज की रखवाली कर रही थीं और उसी समय उन्होंने अपने बढ़िया खाने (चूहे) को पकड़ लिया। एक बोरे के ऊपर, मैंने एक संतुष्ट दिखने वाले बिल्ले को, अपनी मूंछों को साफ करते हुये और संतुष्टि के साथ मुस्कुराते हुये देखा।

गूंजते हुये गलियारों में तुरहियॉ बजीं और दोबारा फिर बजीं। मैं मुड़ा और मैंने अंदरवाले मंदिर की ओर, जिसमें जानेवाले तमाम खड़ाउओं की और नंगे पैर जाने वालों की आवाजें आ रही थीं, अपना रास्ता लिया।

अंदर, बैगनी छायाओं को फर्श के आरपार से चुराते हुए और गहरे अंधकार के साथ स्तम्भों को ढ़कते हुए, शुरूआती शाम की धुंध गहराती जा रही थी। ज्यों ही सूर्य की उॅगलियॉ बाहर पहुॅची और (उन्होंने) हमारे घर को अंतिम मंद दुलार दिया, खिड़कियों की बगलें, सोने से मढ़ गईं और जब सुगंध के हिलते हुये बादल, सूर्य की रोशनी से पार हुये, लहराये और उन्होंने धूल के बहुत से कणों को सजीव रंगों के रूप में, लगभग जीवन के उपहार के साथ, प्रस्तुत किया।

भिक्षु और लामा, और नम्र बेदीसेवक, पंक्तिबद्ध हुये और हर एक ने अपने खुद के रंगों के प्रदर्शन को, हिलती हुई हवा के द्वारा परावर्तित होने के लिये, शामिल करते हुए, फर्श के ऊपर अपना स्थान ग्रहण किया। पोटाला के लामाओं की सुनहरी, दूसरे लोगों की केशरिया तथा लाल, भिक्षुओं की गहरी भूरी, और उन लोगों की, जो आदतन बाहर कार्य करते हैं, सूर्य से चमकायी गयी पोशाकें। सभी अनुमोदित (aproved) स्थितियों में, पंक्तियों में बैठे। मैं–चूॅकि मेरी गंभीररूप से घायल टॉग ने, मुझे निर्धारित (prescribed) तरीके से नहीं बैठने दिया–निर्वासित सा मैं, पीछे की ओर, जहॉ मैं, धुंऐ के

गजरे से छिपा रहकर बैठा, ताकि, मैं संपूर्ण व्यवस्था को बिगाड़ न दूँ।

मैंने, सभी बच्चों, आदमियों और बूढ़े संतों, जो अपनी–अपनी समझ के अनुसार, अपनी भक्ति के ऊपर ध्यान दे रहे थे, को देखते हुये, अपनी तरफ देखा। मैंने अपनी मॉ का ख्याल किया, मॉ, जिसने जब मैंने–चाकपोरी लामामठ में प्रवेश करने के लिये घर को छोड़ा, मुझे अलविदा भी नहीं कहा था–ऐसा लगा, कितना वक्त गुजर गया। आदमी, सभी आदमी, मैं केवल आदमियों के बारे में जानता था। औरतें कैसी होती थीं ? मैं जानता था कि तिब्बत के कुछ भागों में कुछ बौद्धमठ थे, जहॉ शादीशुदा भिक्षु (monks) और भिक्षुणियॉ (nuns) साथ–साथ रहते थे और अपने परिवार को बढ़ाते थे।

अगरबत्ती के धुंऐ भंवराते गये, प्रार्थना चलती गई और मुश्किल से टिमटिमाते हुए मक्खन के दीपों से राहत पाती हुई तथा नरमी के साथ खुशबुओं से उबरती हुई शाम, अंधेरे में डूबती गई। मनुष्य! क्या अकेले रहना, औरतों के साथ कोई संबद्धता न रखना, मनुष्य के लिये ठीक था ? औरतें कैसी दिखती थीं, कैसे भी, क्या वे हमारे ही समान सोचतीं थीं ? जहॉ तक मैं जानता था, वे केवल फैशन के बारे में, बाल संवारने के ढ़ंग के बारे में, और ऐसी ही कुछ अन्य बेबकूफी भरी चीजों के बारे में बातचीत करती थीं। वे उन सभी पदार्थों के साथ, जो वे अपने चेहरों पर पोतती थीं, भयानक भी दिखती थीं।

प्रार्थना समाप्त हुई और मैं दुःख के साथ कॉपती हुई टांगों से ऊपर चढ़ा और उस खंभे के साथ ताकि, मैं पहली ही भीड़ के साथ लुढ़क नहीं पड़ूँ, अपनी पीठ पर खड़ा हुआ। अंत में, मैं गलियारे में गया और मैंने शयनबीथिका (dormitory) की तरफ चलता बना।

सीधे हिमालय से बहती हुई बर्फीली ठण्डी हवा, खुली हुयी खिड़कियों से बहती हुई आ रही थी और रात की ठण्डी साफ हवा में, तारे चमक के साथ चमक रहे थे। मेरे नीचे वाली एक खिड़की से, एक कंपकपाती हुई आवाज गा रही थी :

पीड़ाओं के मूल के बारे में, अब भद्र सत्य ये है कि ये तड़पती हुई प्यास है, जो अस्तित्व के नवीनीकरण का कारण बनती है .....''

मैंने स्वयं को ध्यान दिलाया, कल और उसके बाद शायद अगले कुछ दिनों के लिये हम, महान भारतीय शिक्षकों में से किसी एक के द्वारा, बौद्धमत के ऊपर, कुछ विशेष व्याख्यान पाने वाले थे। हमारा बौद्धमत–लामामत–उस कठोर पुरातन परम्परा ''भारतीय बौद्धमत'' की दिशा से, लगभग वैसे ही, जैसे कि ईसाई आस्थाओं के विभिन्न प्रकार हैं, जैसे कि क्वेकर (Quaker)[1] और कैथोलिक (Catholic)[2], भटक गया था। अब यद्यपि, रात के घंटे काफी आगे बढ़ गये थे, मैं धुंधली खिड़की से बाहर की तरफ मुड़ गया।

मेरे आसपास बेदीसेवक सो रहे थे। कुछ खर्राटे लेते हुये, और कुछ थकानहीन, उछलते हुये, मानो उन्होंने ''घर'' के बारे में सोचा हो, जैसे कि मैं अभी सोचता रहा था। कुछ, काफी कम, कठोर आत्माऐं ''उचित'' लामा शयन–मुद्रा (Lama sleeping posture)–पद्मासन की मुद्रा में सीधे तन कर बैठे–बैठे सोने का अभ्यास करने का प्रयास कर रही थीं। वास्तव में, हमारे पास पलंग नहीं थे, और न ही चटाईयॉ। फर्श ही हमारी मेज और हमारे पलंग थे।

मैंने अपनी पोशाक को, एकदम ठण्डी जमी हुई रात में, नंगे कडकड़ाते हुये, हवा में उठाया, और तब स्वयं को कम्बल में लपेटा, जिसे सभी तिब्बती भिक्षु अपने कंधे पर गुल्ला बनाकर, लपेट कर, ले जाते हैं और उसे कमर पर पकड़कर रखते हैं। उस स्थिति में, जबकि मान लो, मेरी टॉगों ने धोखा दिया, सावधानीपूर्वक स्वयं को फर्श तक नीचा करते हुये, मैंने अपनी पोशाक को लपेटकर, अपने सिर के नीचे वण्डल बनाकर, तकिये के रूप में रखा और नींद में सो गया।

---

1 अनुवादक की टिप्पिणी : मित्रों के धार्मिक समाज, जिसे जॉर्ज फॉक्स (George Fox) के द्वारा स्थापित किया गया था, (यद्यपि इसके मित्र सदस्य, स्वयं को कभी क्वेकर नहीं कहते) के सदस्य क्वेकर कहलाते हैं।

2 अनुवादक की टिप्पिणी : रोमन कैथोलिक चर्च, जिसका नेतृत्व पोप करते हैं, के अनुयायियों, को कैथोलिक कहा जाता है।

अध्याय दो

''तुम, लड़के, तुम–ठीक से बैठो; बताये गये तरीके से बैठो !'' आवाज, कड़कती हुई बिजली जैसी थी, तब दो भारी हाथ मेरे कानों को खींचने लगे, बांया–दांया। एक क्षण के लिये मैंने सोचा, मंदिर के सभी घंटे एक साथ बज उठे हैं; मैंने सबसे ज्यादा साफ रात में दिखने वाले सितारों की अपेक्षा अधिक तारे ही देखे। एक हाथ ने मेरी पोशाक के कॉलर को पकड़ लिया, मुझे अपने पैरों पर उठाया, और मुझे खिड़की के एक झाड़न की तरह से झाड़ दिया।

''जवाब दो मुझे, लड़के, मुझे जवाब दो!'' क्रोधित आवाज चीखी। परन्तु उसने मुझे केवल हिलाते हुये, जबतक कि मेरे दांत नहीं कड़कने लगे और मेरी ऑतें बाहर नहीं निकल आईं और मैं फर्श के ऊपर लुढ़कने नहीं लगा, मुझे उत्तर देने का कोई अवसर नहीं दिया। जौ से भरा हुआ मेरा थैला गिर पड़ा और हिलती हुई हवा में, फुआरों की तरह से गिरते हुये दानों को देखकर, भीड़ इकट्ठी हो गयी। अंत में, उस तीखे आदमी ने, संतुष्ट होकर, मुझे एक घटिया टूटी हुई गुड़िया की तरह से बगल से फैंक दिया।

सहसा शांति उतरी और उम्मीद की तनाव भरी आवाज वहॉ आई। मैंने अपनी पोशाक को सावधानीपूर्वक, बांयी टॉग में पीछे की तरफ, उॅगली डालकर छुआ; फटे हुये घाव में से खून की एक पतली सी धारा निकल रही थी। शांति ? मैंने ऊपर देखा। एक मठाध्यक्ष, उस तीखे आदमी को देखते हुए, दरवाजे में खड़ा हुआ था। लड़के को गंभीर चोटें लगी हैं,'' उसने कहा, ''उसके पास, गहनतम की, सबसे अधिक आरामदायक स्थिति में बैठने की विशेष अनुज्ञा है। उसके पास, खड़े हुये बिना, किसी प्रश्न का उत्तर देने की इजाजत है।'' मठाध्यक्ष चलकर मेरे पास आया और मेरी खून से लाल हुई उॅगलियों को देखा, और कहाः ''खून बहना जल्दी ही रुकना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता है तो अस्पताल में जाओ।'' इसके साथ ही, उसने तीखे आदमी को सिर हिलाकर संकेत किया और कमरे को छोड़ दिया।

''मैं'' तीखे आदमी ने कहा, ''मैं यहॉ मातृभूमि भारत से आपको विशेषरूप से बौद्धमत के सत्य को बताने के लिये आया हूॅ। इस देश में तुम अपने मूल से भटक चुके हो, टूट चुके हो और लामामत के नाम से अपना खुद का नया धर्म बना लिया है। मैं तुम्हें मूल सत्यों को बताने के लिये आया हूॅ।'' उसने मेरी ओर ताका मानो कि मैं उसका घातक शत्रु था, तब उसने एक लड़के को मेरा कटोरा और अब मेरा खाली जौ का थैला मुझे देने के लिये कहा। कुछ क्षणों के लिये, जबकि ये किया जा रहा था, और जबकि मेरे फैले हुये जौ समेटे जा रहे थे, वह कमरे के आसपास, यद्यपि किसी दूसरे शिकार की तलाश में ठहरा। वह गहरी भूरी खाल का और लंबी नाक वाला एक लंबा पतला आदमी था। वह प्राचीन भारतीय क्रम (order) की पोशाकें पहने हुये था और उसने हमें ऐसे देखा मानो उसने हमारी उपेक्षा की हो!

भारतीय शिक्षक, टहलकर कमरे के अंत तक गया और छोटे, उठे हुये प्लेटफॉर्म के ऊपर खड़ा हो गया। सावधानी से, उसने व्याख्यानमंच (lectern) को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सही समायोजित किया। उसने चमड़े के एक थैले में से, जिसकी बगलें खुली हुई थीं और किनारे चौकोर थे, अनिश्चितरूप से तलाशते हुए, कुछ विशिष्ट कागजपत्र बाहर निकाले। एक हाथ लंबे दो हाथ चौड़े, पतले कागज, हमारे मोटे कागजों की तरह लंबे नहीं, जो हम उपयोग में लाते थे। ये पतले, पारदर्शी, स्वच्छ और ऐसे नरम थे, जैसे कि कपड़ा। उसके अनोखे चमड़े के बैग ने मुझे मोहित किया। ये बहुत अच्छी तरह पॉलिश किया हुआ था और उसके बीच में, पतली बगल से, धातु का एक चमकदार टुकड़ा था, जो जब बटन को छुआ जाता, क्लिक करके खोला जा सकता था। चमड़े के टुकड़े से, उच्चस्तरीय, सुविधाजनक हैंडिल बनाया गया था और मैंने निश्चय किया कि, मैं भी एक दिन, चमड़े के ऐसे बैग को अवश्य लॅूगा।

भारतीय ने, हमारे ऊपर गंभीररूप से त्यौरियॉ चढ़ाते हुये, अपने कागजों को फड़फड़ाया और

हमें, उस कहानी को, जो कि हमें काफी पहले से मालूम थी, बताया। मैंने अत्यधिक अभिरुचि के साथ उस तरीके को देखा, जिससे जब वह बोलता था, उसकी नाक का आखिरी सिरा हिलता था और उसकी भौंहें, जब वह तिरछी नजरों से पृष्ठों पर देखता था, कैसे एक तीखी कगार बनाती थीं। कहानी जो उसने हमें सुनाई ? पुरानी परिचित कहानी थी!

''भारत के लोग, दो हजार पॉच सौ साल पहले, अपने धर्म के प्रति भ्रांति से, मुक्त हो गये थे; हिन्दू पुजारी, केवल अपने सांसारिक सुखों, केवल अपने व्यक्तिगत लाभों का विचार करते हुये, भ्रष्ट हो चुके थे। लोग, जिनकी उन्हें मदद करनी चाहिए थी, अपनी पुरानी आस्थाओं से किसी भी तरफ, जहॉ से उन्हें आशाओं की थोड़ी सी भी झलक मिल सके, मुॅह मोड़ रहे थे। प्रताड़ना और धुंध की भविष्यवाणी करते हुये भविष्यवक्ता और शांति प्रदान करनेवाले पूरे देश में घूम रहे थे। पशु प्रेमियों ने निश्चय किया कि पशु आदमियों से ज्यादा अच्छे होते हैं, इसलिये उन्होंने देवताओं के रूप में पशुओं की उपासना शुरू कर दी।

''अधिक सभ्य भारतीय, गंभीर चिन्तनवाले व्यक्ति, जिन्हें अपने देश की चिन्ता थी, अपने पूर्वजों के धर्म से एक तरफ अलग हो गये और मनुष्य की दुःखी आत्मा की ओर, गम्भीरता से विचार करने लगे। ऐसा ही एक व्यक्ति, एक बड़ा हिन्दू राजा, एक अत्यधिक धनी और योद्धा राजा था। उसे अपने इकलौते पुत्र गौतम, जो इस दुःखभरी दुनियॉ में अभी पैदा ही हुआ था, के भविष्य और उसे तराशने की, चिन्ता थी।

''पिता और परिवार की तीव्र इच्छा थी कि गौतम, योद्धा राजकुमार के रूप में पले बढ़े और बाद में, बिरासत के रूप में, अपने पिता के राज्य को प्राप्त करे। एक पुराने भविष्यवक्ता ने भविष्यवाणी में कहा, उसने कहा कि नौजवान, उच्चश्रेणी का एक प्रसिद्ध पैगम्बर होगा। पीड़ित पिता के लिये, ये ''मृत्यु से भी अधिक घातक था। उसके आसपास उच्चवर्ग के तमाम नोजवान लोगों के उदाहरण थे, जिन्होंने एक नये आध्यात्मिक जीवन की चाह में, अपने जीवन के सुखों का त्याग किया और तीर्थयात्रियों के रूप में, नंगे पैर, चिथड़े लपेटे हुये चल दिये। पिता ने उस भविष्यवाणी को झुठलाने के लिये हर संभव कार्य करने का निश्चय किया; उसने अपनी योजनाऐं बनाईं .....

''गौतम, गहरी जागरूकता, जो धोखेबाजों को समेटने के लिये सक्षम थी और मामलों के अंदर तक, दिल तक छू सकती थी, के साथ प्रखर बुद्धिवाला, कलात्मक, भावनात्मक नौजवान था। जन्म और पालन–पोषण के द्वारा निरंकुश होते हुये भी, वह अपने अधीनस्थों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण था। उसका विचार इस तरह का था कि, उसे सावधानीपूर्वक दिशा निर्देश दिये जाऐं, उसे बचाकर रखा जाए और केवल उन्हीं लोगों से मिलने की इजाजत दी जाए, जो उसके निजी सेवक अथवा जाति के समतुल्य थे।

''भविष्यवक्ता के द्वारा भविष्यकथन किये जाने के समय, पिता ने कठोरतम आदेश दिये थे कि उसके पुत्र को, हर समय, उन बुराइयों और दुःखों से बचाकर रखा जाए, जो उसके राजभवन की दीवारों के बाहर के लोगों को दुःख देते थे। लड़के को अकेला बाहर जाने की इजाजत नहीं थी; उसकी यात्राओं पर नजर रखी जाती थी और जो गरीब या दुःखी हो, ऐसे किसी को भी मिलने नहीं दिया जाता था। बिलासिता और केवल बिलासिता, उसको प्रचुरता में दिखाई जाती थी। पैसा, जो कुछ भी खरीद सकता था, वह सब उसका था, जो कुछ भी निष्ठुरता या असुखद बेदर्दी थी, उससे उसे बचाकर रखा गया था।

''परन्तु जीवन इस प्रकार नहीं चल सकता। गौतम आत्मावाला और अपने निश्चय से अधिक अंशवाला एक नौजवान था। एक दिन, अपने माता–पिता की जानकारी के बिना, अपने शिक्षकों की जानकारी के बिना, वह राजमहल से खिसक लिया और सावधानीपूर्वक चुने गये एक सेवक के साथ, राजमहल के मैदान के आगे चलता चला गया। पहली बार, उसने अपने जीवन में देखा कि दूसरी

जातियॉ किसी प्रकार रहती थीं। चार घटनाओं ने, उसके अत्यधिक मजबूत विचारों को उत्तेजित किया, और इस प्रकार धार्मिक इतिहास का पथ ही बदल गया।

''अपनी यात्रा की शुरूआत में उसने एक बूढ़े को देखा। बूढ़ा, जो अपनी आयु और बीमारियों के कारण कॉप रहा था, वह दो बैसाखियों के सहारे, काफी कष्ट सहता हुआ, झुका हुआ चल रहा था। दंतहीन, मोतियाबिंद से अंधा और जराजीर्ण, बूढ़ा आदमी, एक खाली चेहरेवाले इस नौजवान राजकुमार की ओर मुड़ा। गौतम ने अपने जीवन में पहली बार, यह अनुभव किया कि वृद्धावस्था हर एक को आती है, सालों के बढ़ते हुये भार के साथ, कोई और अधिक सक्रिय और नरम और लचीला नहीं रह सकता।

''बुरी तरह से कॉपते हुये, नौजवान राजकुमार ने, अनोखे और दर्दनाक विचारों से भरे हुए अपने अभियान को जारी रखा। परन्तु अभी दूसरा झटका भंडार में से आना था; जैसे ही घोड़े, एक तंग मोड़ के लिये धीमे हुए, गौतम की आतंकित निगाहों ने एक मरियल सी आप्रति, जो सड़क के एक किनारे उछलती हुई दुःख मनाती हुई बैठी थी, की ओर देखा। अपने सड़ते हुये घावों से भरा हुआ, प्रषकाय और बीमारी से घिरा हुआ एक आदमी, जैसे ही, उसने अपने शरीर में से पीली पपड़ी के नीचे घाव को नौचा, दुःख मना रहा था।

''नौजवान गौतम, दिल की गहराई तक हिल गया। दिल से दुःखी–शायद भौतिकरूप से भी बीमार–जैसे ही वह आगे बढ़ा, इस प्रश्न ने उसको परेशान कर दिया। क्या किसी को पीड़ा होनी ही चाहिए ? क्या पीड़ाऐं सब के लिये आती हैं ? क्या पीड़ाऐं अपरिहार्य हैं ? उसने अपने सेवक, जो रथ हॉक रहा था, की ओर देखा। वह इतना शांत क्यों था, नौजवान राजकुमार को आश्चर्य हुआ। सारथी इन सबसे असंबद्ध था, मानो ऐसी चीजें सामान्य हों। तब ये कारण हो सकता है कि, पिता ने उसको बचाकर रखा हो।

''अन्यथा आदेशों को देने के लिये अत्यधिक स्तब्धित, गौतम के साथ, वे आगे चलते चले गये। यद्यपि, भाग्य एवं भविष्य अभी समाप्त नहीं हुआ था। गौतम के एक विस्मययुक्त स्वर के साथ घोड़े धीमे पड़ गए; वे रुक गये, सड़क के किनारे, कुरूप और सूरज की तीखी धूप से फूला हुआ, एक नंगा मुर्दा था। चालक के कोड़े की विचित्र आवाज और मक्खियों का एक घना झुण्ड, जो लाश के ऊपर पोषित हो रहा था, झुण्ड बनाकर बाहर की ओर उठा। लाश, बदरंग और दुर्गंधयुक्त हो गई थीं और जैसे ही उसने देखा कि, एक मक्खी मरे हुये के मुँह में से बाहर निकलकर आई, भिनभिनाई और वापस जाकर फिर वहीं बैठ गई, इसने नौजवान आदमी की निगाह को पूरी तरह से खोल दिया।

गौतम ने अपने जीवन में पहली बार, मृत्यु को देखा, जाना कि, जीवन के अंत में मृत्यु होती है। नौजवान आदमी ने निशब्दरूप से सारथी को वापस लौटने का आदेश दिया ..... वह, जीवन के अस्थायित्व पर विचार करते हुये, शरीर की सुन्दरता के ऊपर विचार करते हुये, जिसको सड़ने के लिये गिरना ही है, पर विचार करते हुए बैठा रहा। क्या सुन्दरता इतनी अस्थाई थी, उसे आश्चर्य हुआ ?

''(रथ के) पहिये घूमते गए, धूल के गुबार, बादलों की तरह पीछे उठते गए। नौजवान राजकुमार उदास और अंतरचित्त में विचारमग्न होकर बैठा। मौके से या भाग्यवश, उसीसमय उसने, एक अच्छे कपड़े पहने हुए, सड़क के किनारे लंबे डग भर कर जाते हुए, एक शांत भिक्षु को देखा। शांत और स्थिर भिक्षु ने, अपने साथियों के प्रति, प्रेम की शुभकामनाओं एवं आंतरिक शांति के प्रभामण्डल को विकरित किया। विचारमग्न गौतम, उन दृश्यों के ऊपर, जो उसने देखे थे, अपनी अंतरात्मा तक हिल गया। अब उसे दूसरा झटका लगा। क्या शांति, संतोष, अक्षोभ, सभी भलाईयॉ, केवल तभी प्राप्त की जा सकती हैं, जब कोई अपने आप को, नित्य प्रति के जीवन से अलग कर ले और धार्मिक हो जाए ? भिक्षु ? किसी रहस्यमय क्रम (order) का सदस्य ? तब उसने, उस भिक्षु की तरह होने का निर्णय किया। वह, अपने राजमहल के जीवन से, स्वयं को अलग करेगा, उस जीवन से, जिसे वह जानता था, अलग करेगा।

''उसके पिता ने क्रोध में आकर तूफान मचा दिया, उसकी मॉ रोई और उसने अपने तर्क रखे। (राजकुमार को बाहर ले जाने वाला) सेवक, राज्य से गायब हो गया था। गौतम, उन दृश्यों पर विचार करते हुये, जो उसने देखे, जो अनन्त हैं, विचारमग्न, अपने कमरे में अकेला बैठा हुआ था। विचार करते हुये कि यदि, उसने एक छोटी सी यात्रा में इतना सब देखा है, मात्र एक छोटी से यात्रा में–तो पीड़ाऐं और यातनाऐं, कितनी अधिक होंगी। उसने खाना खाने से मना कर दिया, उदास होकर एक जगह बैठ गया और आश्चर्य करता हुआ बैठा कि क्या किया जाए, राजमहल से कैसे भागा जाए, भिक्षु कैसे बना जाए।

''उसके पिता ने, दुःख और अवसाद के इस भार को हटाने के लिए, जो उस नौजवान राजकुमार को सता रहा था, हर तरीके से, जिसे वह जानता था, प्रयास किया। सबसे अच्छे संगीतज्ञों को लगातार संगीत बजाने के लिये आदेश दिया गया ताकि, उस नौजवान को, चिन्तन के लिये, थोड़ी सी भी शांति न मिल सके। सभी प्रकार के ऐन्द्रजालिक (jugglers), नट–बाजीगर (acrobats), मनोरंजक (entertainers) लाकर कोशिश की गई। राज्य की सुन्दरतम कुमारी कन्याऐं, लड़कियॉ, जो प्रेम करने की कला में अच्छी तरह सुशिक्षित थीं, उनको बुलाया गया, जिससे गौतम को करुणा के द्वारा उत्तेजित किया जा सके और इसप्रकार उसकी मायूसी से उबारा जा सके।

''संगीतज्ञों ने तब तक गाया जब तक कि वे थक कर चूर होकर गिर नहीं गए। कुमारी कन्याओं ने नृत्य किये और उत्तेजक भाव–भंगिमाओं का प्रयोग किया, जब तक कि वे भी थकान से बेहोश होकर गिर नहीं गईं, केवल तभी, गौतम का ध्यान इस ओर गया। उसने आतंक के साथ, टकटकी लगाकर, उन गिरे हुए संगीतज्ञों की मुद्राओं के ऊपर देखा। उसने गहरे सदमे के साथ, उन नग्न कुमारियों को देखा, जो बेहोशी के कारण पीली और विवर्ण हो गई थीं, उनके चेहरे के सौन्दर्य प्रसाधन बुरी तरह उतर गये थे और अब विविध प्रकार से भद्दे हो गये थे और स्वास्थ्य की आभा गायब हो गई थी।

एकबार फिर, उसने सुन्दरता के अस्थायित्व पर आश्चर्य किया, ये कितनी क्षणभंगुर थी, ये कितनी जल्दी से बह जाती है। ये जीवन कितना दुःखी, कितना भद्दा था। रंगी–पुती औरतें, जब उनकी तात्कालिक गतिविधियॉ समाप्त हो गई, कितनी दिखावटी और कितनी घटिया दिखीं। उसने छोड़ देने का संकल्प किया, जो कुछ वह जानता था, उसको छोड़ देने का संकल्प किया और शांति प्राप्त करना चाहा, ये जहॉ कहीं भी मिल सके।

''उसके पिता दुगनी तीव्रता से बड़बड़ाए और उन्होंने राजमहल के संतरियों की संख्या दुगनी, और तिगुनी कर दी। उसकी मॉ रोई–पीटी और मिर्गी के दौरे से पीड़ित हो गई। उसकी पत्नी, बेचारी महिला, बेहोश होकर गिर पड़ी और महल की सभी महिलाऐं, समूह में, एकसाथ रो उठीं। गौतम का छोटा बच्चा भी, ये जो भी चल रहा था, उस सबसे अनभिज्ञ, अपने आसपास की दुर्बलताओं को देखते हुये, सहानुभूति में चीखा चिल्लाया। राजमहल के सलाहकारों ने असहाय होकर अपने हाथ खड़े कर दिए और शब्दों के झरने प्रवाहित किये परन्तु हासिल कुछ नहीं हुआ।

''उसने कई दिनों तक, उन साधनों को क्रियान्वित करने की योजना बनाई, जिनसे वह गृह त्याग कर सकता था। राजमहल के संतरी, उसे भलीभांति जानते–पहचानते थे। राज्य की जनता उसे बिल्कुल नहीं पहचानती थी– क्योंकि वह, यदाकदा ही राजमहल की चारदीवारी के बाहर गया था। अंत में, जब वह लगभग पूरी तरह निराश था, उसके मन में एक विचार आया कि उसे केवल अपने संतरियों से, करीबी संतरियों से भेष बदलकर छिपाना ही तो है, कुछ मित्रवत् सेवकों की सहायता से, जिनको अच्छी तरह से इनाम दिया गया था और जिन्होंने तुरंत ही राज्य को छोड़ दिया, गौतम ने फटे–पुराने कपड़े, जैसे कि याचक लोग पहनते हैं, प्राप्त किये। एक रात को, धुधलके में, जबकि राजमहल के दरवाजे की तालाबंदी हो, उसके पहिले ही उसने फटे–पुराने कपड़े पहने, बालों को अस्तव्यस्त किया

और अपने हाथों और चेहरे को पूरी तरह धूल से ढ़क लिया। वह भिखारियों, जो रात होने के कारण बापस बाहर निकाले जा रहे थे, के साथ मिलकर बाहर चला गया।

''वह, इस बात से डरते हुये कि, रोजमर्रा के जीवन की अज्ञानता, उसे झुठला सकती है, मुख्य सड़कों और लोगों से दूर, जंगल में गया। पूरी रात, वह अपने पिता के राज्य की सीमाओं के बाहर तड़पता हुआ भटकता रहा। उसे शेरों और दूसरे जंगली जानवरों का, जो रात में निकलते हैं, कोई डर नहीं था; उसके जीवन को, कवच बनाकर इसप्रकार रखा गया था कि, वह खतरों को जानता ही नहीं था।

''उसका पलायन, राजमहल में शीघ्र ही पता चल गया। पूरे भवन की, बाहर के भवनों की भी, उद्यानों की भी तलाशी की गई। राजा अपने आदेशों को चीखता हुआ दौड़ता फिरा। सशस्त्र सिपाही सजगतापूर्वक खड़े रहे। तब हर व्यक्ति, प्रतीक्षा करते हुऐ कि भोर होगा और फिर से तलाश शुरू की जाएगी, सोने चला गया। महिलाओं के कक्षों में, शोकपूर्ण क्रंदन हो रहा था और राजा के हालातों पर ऑसू बहाये जा रहे थे।

''गौतम, सभी प्रश्नों के प्रति शांत होता हुआ, जबकि ऐसा नहीं था, मिलने–जुलने के अवसरों को यथासंभव गंवाता हुआ, अनाज के दानों, बेर–बूटियों और फलों पर जीता हुआ, झरनों से ठण्डा, साफ पानी पीता हुआ, जंगल में खिसक गया। उगती हुई फसल से उसने खाना लिया। परन्तु, एक अनजान घूमन्तू, जो घूमन्तू की तरह व्यवहार नहीं कर रहा था, की खबरें अंत में, राजमहल में पहुॅची। परन्तु, शक्ति बटोरते हुये राजा के आदमी, उस पलायन करनेवाले को न पकड़ सके, क्योंकि वह हमेशा उन झाड़ियों और झुण्डों में छिपता हुआ जा रहा था, जहॉ घोड़े नहीं जा सकते थे।

अंत में, राजा ने आज्ञा दी कि सभी नर्तकियों को जंगल में ले जाया जाए और वे गौतम का अनुगमन करें और उसे लुभाकर वापस लाने का प्रयास करें। उन्होंने कई दिनों तक नृत्य किया और हमेशा गौतम की दृष्टि (में बने रहने) के लिये, हमेशा अपने चित्राकर्षक नृत्यों को करते हुये, जंगल में पगडंडियों में होकर अपना रास्ता बनाया। अंत में, अपने पिता के राज्य की सीमाओं के पास तक, गौतम खड़ा हुआ और उसने कहा कि वह आध्यात्मिकता के संसार की खोज में जा रहा है, और वह नहीं लौटेगा। उसकी पत्नी, बच्चे को अपनी बांहों में लिये हुए, उसकी तरफ दौड़कर आई। गौतम उसके तर्कों से प्रभावित नहीं हुआ, वल्कि मुड़कर अपनी यात्रा पर चल दिया।''

भारतीय शिक्षक ने, इस कहानी में, जिसे हम उतनी ही अच्छी तरह से जानते थे, जितना कि वह, इतनी दूर तक आते हुए कहा, ''तात्कालिक हिन्दू धर्म, एक नवीन चिन्तन, एक नई आस्था, जो उसी समय बनी थी, पर आधारित था। एक आस्था, जो अनेक लोगों को सुख और आशा लाती। इस सुबह में हम अपने सत्र को पूरा करेंगे। दोपहर को हम फिर शुरू करेंगे। बर्खास्त !'' दूसरे लोग, अपने पैरों पर खड़े हुए, शिक्षक के प्रति आदरपूर्ण ढ़ंग से झुके और बाहर चले गए। मुझे परेशानी थी; मैने देखा कि मेरी पोशाक मेरी टॉग के घाव पर, सूखे हुए खून के साथ चिपक गई है। शिक्षक, मेरी तरफ बिना नजर डाले हुये बाहर निकल गये। मैं, ये सोचता हुआ कि अब क्या करना है, काफी दुःख के साथ बैठा रहा। तभी सफाई करनेवाला एक बूढ़ा भिक्षु, लंगड़ाकर चलता हुआ अंदर आया और उसने आश्चर्य के साथ मेरी ओर देखा। ''ओह!'' उसने कहा ''मैंने शिक्षक को जाते हुये देख लिया था और मैं सफाई करने के लिये आया था। क्या परेशानी है ?'' मैंने उसे बताया, उसे दिखाया कि किसप्रकार ये बड़ा घाव फूटकर खुल गया है, खून कैसे बाहर निकल रहा है, और मैंने कैसे अपनी पोशाक से, डाट लगा कर छेद को बंद किया है। बूढ़ा आदमी बड़बड़ाया, धत् तेरी की, धत् तेरी की, और जितनी जल्दी वह अपनी टूटी हुई टॉगों से बाहर जा सकता था, जल्दी से बाहर निकल गया। वह शीघ्र ही, अस्पताल के एक कर्मचारी के साथ वापस लौटा।

दर्द, जलती हुई आग की तरह तेज था; मैंने अनुभव किया कि मेरा मांस, हड्डियों से खींचा जा

रहा है। ''आ मेरे बेटे'' अस्पताल के कर्मचारी ने कहा। ''तुम वैसे ही दुःखों को झेलने के लिये पैदा हुए हो, जैसे कि चिनगारियॉ, निश्चितरूप से ऊपर की ओर उछलती हैं। उसने दुःख का अहसास किया, और बड़बड़ाया, ''परन्तु महान शिक्षकों में से कुछ, जिनको अच्छी तरह पता होना चाहिए, क्यों इतने कठोर, इतने भावनाशून्य होते हैं ? वहॉ!'' उसने कहा, जैसे ही उसने एक जड़ी–बूटी को दबाते हुये बांधा और मुझे अपने कांपते हुये पैरों पर खड़ा होने में मदद की। अब के बाद तुम ठीक होते जाओगे, मैं तुम्हें एक नई पोशाक दूँगा और दूसरी को नष्ट कर दूँगा।'' ''ओ आदरणीय स्वामी'' मैं विस्मय से डर कर, चिल्लाया। मेरे घुटने सदमे से कांपने लगे। ''मैं नई पोशाक नहीं ले सकता अन्यथा हर आदमी ये सोचेगा कि मैं नया लड़का हूँ, जो अभी, हाल ही में, यहॉ आया हूँ। मैंने कहा कि मैं इसी को रखना चाहूँगा'' बूढ़ा अस्पताल का कर्मचारी हॅसा और हॅसा और तब उसने कहा, ''आओ, मेरे बच्चे, मेरे साथ आओ और हम साथ–साथ देखेंगे कि इस गंभीर मामले में क्या किया जा सकता है।''

हम साथ–साथ, धीमे–धीमे, गलियारे में नीचे की ओर चले, जहॉ अस्पताल के कर्मचारी का अपना कार्यालय था। अंदर, मेजों पर, आलों में, दराजों में, जड़ीबूटियों के कुछ बर्तन थे, कुछ पीसे गए अयस्क (ores) और दूसरी विषम वस्तुऐं जिन्हें मैं पहचान नहीं सका। तिब्बती, केवल अत्यन्त आवश्यक आकस्मिकता की स्थिति में ही, चिकित्सकीय सहायता लेते हैं। हमारे लिये, पश्चिम जैसी प्राथमिक चिकित्सा (first aids) का पालन क्यों नहीं होता। हम वैसी व्यवस्था करते हैं, जैसी प्रप्रति चाहती है। टूटी हुई टॉग वास्तव में जोड़ी जाएगी और तब काफी गहरे घाव को सिल दिया जाएगा। हम घोड़े की पूंछ के लंबे बालों को सिलाई के लिये उपयोग में लाए जाते थे। ये उबाल देने के बाद, बहुत ही उपयुक्त होते थे। काफी गहरी परतों को सीने के लिये, हम बांस में से निकाले गये लंबे–लंबे धागों को काम में लाते थे। जब किसी के आंतरिक घाव से मवाद को बहाकर बाहर निकालता होता था, बांस को बहाने वाली नलियों के रूप में भी काम में लाया जाता था। साफ, अच्छी तरह धोयी हुई स्फेगनम काई (sphagnum moss), बहुत अच्छा स्पंजी पदार्थ होता था और जड़ी–बूटियों के मलहम के साथ भी, और उसके बिना भी, दबा कर भरने के लिये उपयोग में लाया जाता था।

स्वास्थ्यकर्मी मुझे बगल के कमरे में, जिस पर मैंने ध्यान नहीं दिया था, ले गया। उसने पुरानी और सुधारी गई पोशाकों के ढेर में से, एक को बाहर खींचा। ये अच्छी तरह सुधारी गई और धूप में बदरंग हुई, साफ थी। इसे देखने पर मेरी ऑखों में चमक उठीं क्योंकि, ऐसी पोशाक ये दिखायेगी कि मैं लामामठ में बहुत लंबे समय से रह रहा हूँ। स्वास्थ्यकर्मी ने मुझे बताया कि, मैं इस पोशाक को ले सकता हूँ। मैंने ऐसा किया, और उसने, दूसरे घावों के लिये मेरी जांचपरख की। ''हूँऊँऊँऊँऊ ! पतले दुबले, छोटे आकार के, तुम्हें अपनी उम्र से बड़ा होना चाहिए। तुम कितनी उम्र के हो बेटे ?'' मैंने उसे बताया। ''इतने?'' ओ, मैंने सोचा कि तुम तीन साल बड़े होगे। हूँऊँऊँऊँऊ ! पूरे आदमी, ए ? अब इस पोशाक को पहन कर देखो।'' मैंने–बड़ा और लंबा दिखने की कोशिश में अपना सीना फुलाया और सीधे खड़े होने की कोशिश की, परन्तु मेरी टॉगें नहीं खिंच सकीं। पोशाक कुछ हद तक मेरे लिये बहुत बड़ी थी और मैंने अपने तथ्यों को इसमें छिपाने की कोशिश की। ''आह!'' स्वास्थ्यकर्मी ने कहा। तुम शीघ्र ही बड़े हो जाओगे और तबियत तुम्हें भर देगी। बढ़ते रहो। अलविदा!''

परन्तु अब ये खाने का, दोपहर की कक्षाओं से पहले खाने का समय था। पहले ही मेरा काफी समय खत्म हो चुका था, इसलिये मैं जल्दी से रसोईघर में आया जहॉ मैंने अपने दुःख का बखान किया। ''खाओ, खाओ, बेटा और इसके साथ चलते जाओ'' कालोंच से भरे हुये मित्रवत् रसोईये ने, मेरी भरपूर सहायता करते हुए कहा। सूर्य का प्रकाश खिड़की में से अंदर आ रहा था। जब मैंने खाना खाया, मैं अपनी कुहनियों को खिड़की के फ्रेम पर टिकाये हुये, बाहर देखते हुये खड़ा था। इस समय लालच बहुत अधिक था, और काफी दूर नीचे संदेह न कर सकनेवाले भिक्षु को देखते हुये, मैंने थोड़ा सा त्सम्पा अपने कटोरे में, उसकी कगार के ऊपर तक डाल दिया। ''और अधिक, बेटे ?'' कुछ आश्चर्यचकित होते

हुये, रसोईये भिक्षु ने कहा। ''और ? तुम्हारा पेट खाली होगा अथवा–उसने कलात्मक ढ़ंग से मेरी ओर ऑख मारी–तुम सभी भाईयों के सिरों के ऊपर निकल रहे हो ? मुझे शर्माना चाहिए था या दोषी दिखना चाहिए था, क्योंकि वह बहुत ही जोर से हॅसा और उसने कहा, ''अब इतने सारे के साथ में हम थोड़ा सा काजल भी मिला लें!''

परन्तु ये मौज हमेशा के लिये नहीं रही। मेरा पेट फिर खाली था। नीचे, मिले–जुले भिक्षुओं का बढ़ता हुआ समूह, अपनी काली धब्बेदार प्लेटों को मांज रहा था और आपस में संदेहपूर्वक ताक रहा था। कोई अपने पथ पर चलना भी शुरू कर चुका था। जल्दी से और उतनी निर्लिप्तता के साथ, जितनी मैं कर सकता था, रसोईघर के बाहर, और गलियारे में, मटरगस्ती करता हुआ, मैं रसोईघर से बाहर निकला। जैसे ही मैं एक कोने में मुड़ा, एक चमकता हुआ भिक्षु प्रकट हुआ और जैसे ही उसने मुझे देखा, वह हिचकिचाया। ''मुझे अपना कटोरा देखने दो,'' वह गुर्राया। अपने सर्वाधिक भोलेपन के प्रदर्शन की कल्पना करते हुए, मैंने अपनी पोशाक में देखा और वांछित वस्तु को उसके सामने प्रस्तुत कर दिया और उसे जॉचने के लिये दे दिया। ''क्या कुछ गलत है इसमें, श्रीमान्'' मैंने पूछा। ''ये वास्तव में, मेरा कटोरा है,'' मैंने कहना जारी रखा। भिक्षु ने, कालोंच के धब्बों को देखते हुये, जो मैंने पूरी तरह से मिटा दिये थे, कटोरे को सावधानीपूर्वक जॉचा। उसने गहरे संदेह के साथ, घूर कर मेरी तरफ देखा तब, जैसे ही उसने कटोरा मुझे हाथ में वापस दिया, कहा, ओ तुम घायल हो। तुम छत पर नहीं चल सकते थे। कोई हमारे ऊपर गीली कालोंच गिरा रहा है, वह छत के ऊपर है– मैं उसे पकड़ूॅगा!'' इसके साथ ही, वह मुड़ा और छत की तरफ दौड़ा। मैंने गहरी सॉस ली और फिर मटरगस्ती करने लगा।

मेरे पीछे, एक दबी हुयी मंद मुस्कान थी और रसोइए भिक्षु की आवाज ने कहाः ''शाबाश, लड़के, तुमको एक कलाकार होना चाहिये। मैं तुम्हें छोड़ूंगा नहीं अन्यथा मैं तुम्हारा अगला शिकार होऊॅगा'' उसने खाद्य आपूर्ति से संबंधित कुछ रहस्यपूर्ण उद्देश्यों के लिए, मुझे छोड़कर जाने की जल्दी की और मैं अपने अनिच्छुक रास्ते पर चलता हुआ, वापस कक्षा में आ गया। मैं यहॉ पहिला व्यक्ति था और मैं बाहर देखता हुआ, खिड़की के साथ चिपक कर खड़ा हो गया। देहात में, इस विस्तृत देहात में, दूर तक देखना, मुझे हमेशा मोहित करता है। पार्गो कलिंग में (अथवा पश्चिमी द्वार पर) भिखारियों की दृष्टि, और हिमालय की ऊॅची चोटियों से बर्फ, जो शाश्वत बहती आ रही है, उसके फेन के, कभी असफल न होने वाले रोमांच को देखने में, मैं घण्टों, दिनों तक खर्च कर सकता था।

ल्हासा के जिले के आसपास, पहाड़–शक्तिशाली हिमालय, जो इस महाद्वीप की रीढ़ था, एक बड़ा सा "U" बनाते थे। मेरे हाथ में समय होते हुये, मैंने इसे खेल समझते हुए, ठीक से देखा। मेरे नीचे पोटाला, जो युगों पहिले एकबार, कभी ज्वालामुखी रहा था, की सफेद चूने से पोती हुई दीवारें, जीवन्त चट्टानों के रूप में, अलक्षितरूप से पिघल रही थीं। इस मानवरचित संरचना का चूने का सफेद पत्थर, पहाड़ के स्लेटी और भूरे में बहता जा रहा था, और एक कहॉ समाप्त होता था और दूसरा कहॉ शुरू होता था, कोई व्यक्ति नहीं बता सकता था, कि वे एक साथ इतनी सफलता से कैसे जुड़े रहे हैं। पहाड़ों के नीचे, ढलानवाले स्थान, छोटी–छोटी झाड़ियों से ढ़के थे, जिसमें होकर, पहिचाने जाने से बचने के प्रयास में, हम लड़के अक्सर रेंग जाया करते थे और नीचे श्यो गॉव को बनाने वाली इमारतें थीं, जिसमें न्याय के महान न्यायालय, सरकारी कार्यालय, सरकारी मुद्रणालय, नागरिक अभिलेख कार्यालय, और जेल थे।

ये एक व्यस्त दृश्य था, तीर्थयात्री, पुण्य प्राप्त करने के लिये उछलते हुए, अपनी लंबाईयों को जमीन पर विस्तारित करते हुये, कुछ फुट आगे रेंगते हुए, और तब दोबारा झुक कर लेटते हुए, ''तीर्थयात्रियों के मार्ग'' पर बढ़ते जा रहे थे। निश्चय ही, मेरी ऊॅचाई से अधिक से, यह बहुत अधिक आश्चर्यजनक दिखता था। भिक्षु, स्फूर्तिमय या ऊर्जापूर्ण ढ़ंग से, घरों–जो मैंने सोचा, अपराधियों या कुलानुशासक के होने चाहिए–के बीच में से लंबे डग भरते हुये और लामा लोग, घोड़े की पीठ पर

सवार होकर, अपने राजकीय कार्यों को करने के लिये आगे बढ़ रहे थे। एक मठाध्यक्ष और उसका सहायक, हमारी सड़क पर मुड़ा और मुख्य प्रवेशद्वार की तरफ कदम रखते हुए, धीमे से चौड़ी सड़क पर चढ़ गया। जैसे ही उन्होंने अपनी जन्मकुण्डलियों का बखान करना शुरू किया, एक फुर्तीले और चालाक व्यवसाय वाले भविष्यवक्ताओं का एक समूह जमा हुआ, ''ध्यान रखें, स्वामी मठाध्यक्ष द्वारा आर्शीवाद दी गई, निश्चितरूप से आपको सौभाग्य लाने वाली!''

सड़क के पार, दलदली भूमि में, फर (willow) के वृक्षों की हरियाली ने मुझे आकर्षित किया, पत्ते हवा में धीमे–धीमे हिल रहे थे। पानी के तालाबों ने, दौड़ते हुये बादलों को परावर्तित किया और रंगों को गुजरनेवाले पैदल यात्रियों के रंगों के अनुसार परिवर्तित किया। एक भविष्यवक्ता, एक बड़े तालाब के किनारे पर बैठा हुआ था और वह ''पोटाला के चरणों में, पवित्र पानी में'' अपने ग्राहकों का ''भविष्य पढ़ने'' का नाटक कर रहा था। व्यवसाय, वास्तव में मजेदार था।

पार्गो कलिंग भीड़ भरा था। छोटी–छोटी दुकानें खड़ी की गईं थीं और फेरी वाले व्यापारी, खाने और मिठाईयों को तीर्थयात्रियों को बेचते हुये, पैना व्यापार कर रहे थे। एक खोंमचे में किनारे की ओर, अधिक मात्रा में गण्डे–ताबीज (amulets) और जादुई वक्से (charm boxes) और नीलम और सूर्य की रोशनी में चमकते स्वर्ण के चटकदार आभूषण, लटकाये गये थे। बड़ी–बड़ी दाढ़ीवाले, और चमकती हुई ऑखोंवाले, आनन्द से साफा बांधे हुये भारतीय, विक्रेताओं को परास्त करने का प्रयास करते हुए, और आसपास लंबे–लंबे डग भरते हुये दिखाई दिए।

सामने–लौह पहाड़ी पर–पोटाला से थोड़ा सा ऊपर, चाकपोरी, मीनारों की भांति खड़ा था परन्तु, इतना विभूषित नहीं, उतनी अधिक इमारतें भी नहीं। चाकपोरी पवित्र था, कुछ–कुछ स्लेटी और धुंधला। परन्तु चाकपोरी, स्वास्थ्य–लाभ का घर था, जबकि पोटाला, देवताओं का घर था। चाकपोरी के परे, प्रसन्नता की नदी हॅस रही थी और मानो कि ये बंगाल की खाड़ी में जाने के लिये, उतावली होकर दौड़ रही थी। अपनी ऑखों पर छाया करते हुए और थोड़ा सा दवाब डालते हुए मैं, नदी में पार जाने वाले यात्रियों को, नाविकों को पैडल चलाते हुए देख सका। उनकी हमेशा फूली हुई, याक की खाल से ढकी हुई नाव, मुझे मोहित करती थी और मैं ये आश्चर्य करना प्रारंभ कर रहा था कि क्या मैं, एक बड़े लामामठ के छोटे बेदीसेवक की तुलना में, नाविक के रूप में, इससे अच्छा होऊॅगा। परन्तु, जैसा मैं ठीक जानता था, यहॉ नाविक होने का अभी कोई अवसर नहीं था, मुझे पहिले अपने अध्ययन को पूरा करना था और जिसने भी किसी भिक्षु को एक नाविक होता हुआ सुना हो!

बांयी ओर, काफी दूर, जो कांग (Jo Kang) या ल्हासा के कैथेड्रल, की सुनहरी छत, जैसे ही ये सूर्य की किरणों को परावर्तित करती, ऑखों को चौंधिया रही थी। मैं, प्रसन्नता की नदी को, जब ये टिमटिमाती हुई, फर के पेड़ों के बीच में होकर, दलदली भूमि में होकर, आगे बढ़ रही थी और सुन्दर कछुआ पुल के नीचे होकर बहती हुई, एक छोटी सहायक नदी को देख रहा था। ज्यों ही नदी, सपाट निचले देशों के लिए, अपने रास्ते पर आगे बढ़ी, मैंने, एक चमकते हुए चांदी के धागे को, काफी दूरी पर समाप्त होते हुए देखा।

काफी, काफी लंबी दूरी पर गिरने के खतरे के साथ–साथ–खिड़की में से बाहर झुकते हुए–ये एक व्यस्त दिन था। मैं देख सकता था कि बैकुंठ से, ऊॅचे पर्वतीय दर्रों से होते हुए, औरअधिक व्यापारी, सड़क पर चलते हुए आ रहे थे। परन्तु, इससे पहले कि वे मेरे काफी समीप पहॅुचें, उनको विस्तार से देखना, ये कुछ अधिक समय लेगा; कक्षाऐं उससे पहिले ही शुरू हो जाऐंगी।

पर्वतों की बगलें, बड़े लामामठों से, जो अपने आप में स्वयं परिपूर्ण नगर थे, और छोटे लामामठों से, जो तीखी चट्टानी पराकाष्ठाओं से चिपके हुए थे, छितराई हुई थीं। अत्यन्त खतरनाक स्थिति में स्थित, अत्यन्त छोटों में से कुछ एक, उन भिक्षुओं की कुटियाऐं थीं, जिन्होंने संसार को छोड़ दिया था और अपने छोटे प्रकोष्ठों में दीवार के अंदर सीमित हो गए थे, उन्हें अपने जीवन का शेष भाग वहॉ

बिताना था। क्या ये वास्तव में सही था ? मैंने आश्चर्य किया ? दुनियॉ से पूरी तरह से इतना एकदम कट जाना ? जब कोई नौजवान स्वस्थ मनुष्य, किसी छोटी कोठरी में, अपने आपको बंद करने का निर्णय ले, वहॉ शायद अपने चालीस वर्ष, पूर्ण अंधकार में, पूर्ण शांति में, व्यय करे, जबकि वह जीवन के ऊपर ध्यान कर रहा हो और इस हाड़मास के शरीर से, स्वयं का संबंध तोड़ने का प्रयास कर रहा हो ? क्या ये किसी को मदद कर सकता था। मैंने सोचा, दोबारा फिर देखना नहीं, फिर कभी बोलना नहीं, फिर कभी चलना नहीं और एक दिन छोड़कर एक दिन खाना खाना, ये आश्चर्यजनक हो सकता है।

अध्याय तीन

मैंने अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप का विचार किया, जिनको एकदम अचानक ही दूरस्थ पारी (Pari) स्थान को जाना पड़ा था; मैंने उन सभी प्रश्नों के ऊपर, जो मेरे अंदर उमड़ रहे थे और जिसका केवल वही उत्तर दे सकते थे, के बारे में सोचा। बुरा न मानें, वह कल लौटेंगे और तब मुझे चाकपोरी वापस जाने पर प्रसन्न होना चाहिये। यहॉ, पोटाला में, काफी समारोह थे, अत्यधिक लाल फीताशाही। हॉ! मेरे पास काफी प्रश्न थे, जो मुझे परेशान कर रहे थे और मैं उनके उत्तरों के लिए मुश्किल से ही प्रतीक्षा कर सकता था।

कुछ क्षणों के लिए उभरता हुआ शोर, मेरी चेतना के ऊपर हावी हो रहा था; अब ध्वनियों की तीव्रता ने मुझे, पूरे प्रभार में याकों के एक भरे पूरे झुण्ड का ध्यान दिलाया। सभी लड़के कक्षा में, एक साथ फूट पड़े। हॉ– वे याकों के एक झुण्ड के साथ खेल रहे थे ! मैं सावधानी से, कमरे के पीछे की तरफ, गुपचुप, दुबक कर चला और जो चक्कर में दौड़े, उनके रास्ते को तोड़ते हुए, दीवार के पास जाकर बैठ गया।

उड़ती हुई पोशाकें, आनन्द से भरी हुई चीखने की आवाजें, उन्होंने एक के बाद एक, मेढकों की तरह से उछलते हुए, चक्कर पर चक्कर लगाए। अचानक ही, वहॉ एक जोर का ''धमाका (WHUUMPF)!'' हुआ और तेजी से निकाली हुई हवा का एक झटका लगा। मानो बच्चों के, मंदिर में गढ़ी हुई आप्रतियों जैसी स्थिति में जम जाने के कारण, कमरे में मृत शांति फैल गई। मेरी भयभीत निगाहों ने भारतीय शिक्षक को फर्श पर बैठे हुए देखा। उनकी ऑखें टकराईं और सदमे से फैल गईं। अब उनका कटोरा और जौ, उनकी पोशाक में से फैल गए थे, मैंने उल्लास (glee) के साथ कुछ सोचा। वे धीमे से खलबलाये और अपने संबंध में देखते हुए और दीवार को पकड़ते हुए, अपने हिलते हुए पैरों से चढ़ गये। केवल मैं ही बैठा हुआ था, प्रथम दृष्टया, इसमें मेरी कोई भूमिका नहीं थी। ओह! पूर्ण स्पष्ट चेतना होने का आश्चर्यजनक, अजीब अहसास। जैसे ही मैं वहॉ बैठा, मैं मूल्यों के साथ फूल गया था।

आधा भौंचक्का हुआ या डर से स्तब्धित हुआ, लड़का भूतल पर लेटा था, जिसने सीधे ही भारतीय शिक्षक के धड़ के सामने के खुले भाग में (midriff) छलांग लगाई थी। लड़के की नाक से खून बह रहा था, परन्तु भारतीय ने, उसे एक असभ्य पैर से स्पर्श किया और गरजा ''उठो!'' झुकते हुए, उसने लड़के को कानों से पकड़ लिया और ऊपर उठा दिया। ''अशोभनीय, भयानक छोटे तिब्बती नाचीज,'' बच्चे के कानों पर तमाचा मारते हुए, अपने शब्दों को कहते हुए, वह चिल्लाये। ''मैं तुम्हें सिखाऊॅगा कि एक भारतीय सज्जन से कैसे व्यवहार करना चाहिए। मैं तुम्हें योग सिखाऊॅगा, जो तुम्हारे मांस को घटायेगा ताकि, आत्मा वहॉ से स्वतंत्र होकर निकल सके।'' मैंने सोचा, मुझे अपने शिक्षक से, मुझे ये बताने के लिए कि, दूसरे देशों से आने वाले कुछ महान शिक्षक, इतने खराब क्यों (होते) हैं, कहना चाहिए।

नाक–भौंह चढ़ाये हुए शिक्षक ने, लड़के को ठुकराना बंद किया और कहा, ''हम तुम्हें एक विस्तारित पाठ पढ़ाने के लिए कक्षा लेंगे, जिससे कि तुम बुरे न होकर, अच्छा होना सीख लो। अब हम प्रारंभ करेंगे।'' मैं बोल पड़ा, ''ओह ! परन्तु आदरणीय स्वामी, मैं बिल्कुल कुछ नहीं कर रहा था, ये अच्छा नहीं है कि मुझे रुकना पड़ेगा।''

भारतीय का चेहरा, अतिक्रूर होकर मेरी दिशा में मुड़ा और उन्होंने कहा, ''तुम–तुम इस पूरे समूह में सबसे खराब हो। केवल इसलिये कि तुम अपंग हो और उपयोगी नहीं हो, बेकार हो, इसका यह अर्थ नहीं है कि तुमको अपने विचारों के प्रति, दण्ड से मुक्त कर दिया जाए। तुम रुकोगे, जैसे कि दूसरे भी।''

उन्होंने अपने फैले हुए कागजों को समेटा, और उन्हें यह देख कर दुःख था कि उनका सुन्दर

चमड़ेवाला बैग, जिसके ऊपर हैंडिल और एक चमकता हुआ बटन लगा हुआ था, जो उसे खोलता था, पत्थर के खुरदरे फर्श से रगड़ जाने से घिस गया है। भारतीय ने इसको ध्यान से देखा वह बड़बड़ाये, ''किसी को इसके लिए बहुत मंहगी कीमत चुकानी पड़ेगी; मैं पोटाला से दूसरे की मांग करूँगा।'' उन्होंने अपना डिब्बा खोला और उसे, अपने कागजों को छांटते हुए, दोबारा भरा। अंत में संतुष्ट होकर उन्होंने कहा, ''हमने आज सुबह, ये कहते हुये छोड़ा था कि गौतम ने राजमहल का जीवन, ये कहते हुए कि वे अपना जीवन, सत्य की खोज में जारी रखेंगे, त्याग दिया। अब हम आगे चलें।

''जब गौतम ने अपने पिता का राजमहल छोड़ा, राजा, उसका दिमाग चक्कर में था। उन्हें बीमारी के देखने के, जबकि वह बीमारी को जानते भी नहीं थे, मृत्यु को देखने के, जबकि वह मृत्यु को जानते भी नहीं था, और एकदम शांत और संतुष्टि, घनी शांति को देखने के, झकझोर देनेवाले सहसा अनुभवों से गुजरना पड़ा। उनका विचार था कि संतुष्टि का भाव रखनेवाला, भिक्षु की पोशाक को भी पहिन रहा था, तब संतुष्टि और आंतरिक शांति, भिक्षु की पोशाक में ही मिलेंगी, और इसप्रकार, यह ऐसा था कि, वह अपने अंतर की शांति की खोज में, जीवन के अर्थ की अपनी खोज में, आगे चले।

''वह आगे, और आगे, राज्य, जो उनके पिता के द्वारा शासित था, की उन सीमाओं के आगे, आगे और आगे, विद्वान भिक्षुओं और ज्ञानी संतों की, अफवाहों का पीछा करते हुए, चलते गये। उन्होंने सबसे अच्छे शिक्षक, जिसे कि वह पा सकते थे, से पढ़ा, उन्होंने वह सब पढ़ा, जो कोई भी सीख सकता था। जब उन्होंने एक शिक्षक से वह सब सीखा, जो वह शिक्षक उसे सिखा सकता था। वह आगे चले, हमेशा आगे, आगे, हमेशा ज्ञान की तलाश में, हमेशा इस पृथ्वी पर सबसे अधिक रहस्यमय चीजों की तलाश में—मन की शांति, शांति।

''गौतम एक अत्यन्त दक्ष शिष्य थे। उन्हें जीवन के द्वारा समर्थन दिया गया था, उन्हें एक सजग मस्तिष्क और एक चमकदार जागरूकता मिली थी। वह सूचनाओं को पाने में, और उन्हें अपने दिमाग में छॉटने में, जो बेकार थीं उनको छोड़ देने में और जो सार्थक थीं, जो उनके हित की या उनके लायक थीं, उनको संभाल कर रखने में, सक्षम थे। महान शिक्षकों में से एक, गौतम की तैयारी और उनकी प्रखर बुद्धि से प्रभावित हुए और उन्होंने पूछा कि क्या वह उनके साथ रुककर, कुछ सीखना चाहेंगे और दूसरे शिष्यों को ज्ञान देने में, पूरी तरह से उनके सहभागी बनेंगे। परन्तु ये गौतम के विश्वास के लिए, पूरी तरह बाहरी (alien) ही था क्योंकि—उन्होंने कारण दिया—वह, जो खुद अच्छी तरह नहीं समझता, दूसरे को कैसे पढ़ा सकता है ? वह दूसरों को कैसे पढ़ा सकता है जबकि वह खुद, अभी भी, सत्य की तलाश कर रहा था ? वह पवित्रग्रन्थों और पवित्रग्रन्थों पर की गई टीकाओं को जानते थे, परन्तु जबतक कि पवित्रग्रन्थ, उन्हें कुछ निश्चित सीमा तक शान्ति दें, उसके पहिले भी हमेशा प्रश्न और समस्याऐं होती थीं, जो उनकी शांति, जिसे वह प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे, को तोड़ देती थीं, और इस प्रकार गौतम घूमते रहे।

''वह एक धुनी आदमी थे, एक आदमी, जिसमें ज्वलन्त प्रेरणा (drive) थी, जो उन्हें चैन से बैठने की इजाजत नहीं देती थी, उन्हें लगातार ज्ञान की खोज में, सत्य की खोज में, उकसाती रहती थी। एक संत ने उन्हें ये विश्वास कराया कि केवल पवित्र जीवन ही उन्हें शांति की तरफ ले जा सकता है, इसलिये साहसी व्यक्ति, गौतम ने, संत के जीवन को जीने का प्रयास किया। काफी पहले उन्होंने सभी संसारी वस्तुओं को त्याग दिया था, उन्हें कोई सांसारिक आनन्द नहीं था, वह केवल जीवन के पीछे के तात्पर्य की खोज में जिन्दा थे। परन्तु अब उन्होंने अपने आपको, जबरदस्ती कम से कम खिलाने के लिए प्रयत्न किया, और, जैसे कि पुरानी, पुरानी कहानियॉ कहती हैं, अंत में, वह एक दिन में केवल चावल के एक दाने के ऊपर जिंदा रहने के लिये व्यवस्थित हुए।

''उन्होंने अपना पूरा समय, एक बरगद के पेड़ की छाया में, स्थिर बने रहते हुए, ध्यान की गहराइयों में व्यतीत किया। परन्तु अंत में, उनकी अतिसूक्ष्म खुराक ने उसको धोखा दिया; वह भूख,

कुपोषण और देखभाल की मूलभूत कमी से गिर गये। लंबे समय तक, उन्होंने मृत्यु के बिन्दु को लंबा खींचा, परन्तु कोई ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ। उन्हें अभीतक शांति का रहस्य नहीं मिला था, उन्हें अभीतक पृथ्वी के इस मायाजाल के पीछे का अर्थ प्राप्त नहीं हुआ था–मन की शांति, शांति।

भूखे मरने के दिनों के करीब, कुछ 'मित्र', ये सोचते हुए कि यहॉ एक हलचल (sensation) है, एक भिक्षु, जो एक दिन में चावल के एक दाने पर, जिंदा रह सकता था, ये सोचते हुए कि एक ऐसे अनुभूतिपूर्ण आदमी के साथ संबद्ध होते हुए, वे महान उपलब्धियॉ पा जाऐंगे, उसके आसपास इकट्ठे हो गए। परन्तु, जैसे मित्र विश्व भर में थे, उन्होंने उसे आवश्यकता के समय में त्याग दिया। जब गौतम भुखमरी के कारण मृत्यु की कगार पर थे, उनके दोस्तों ने एक–एक करके उनको छोड़ दिया। कहीं दूसरी जगह ज्ञान पाने की तलाश में इधर–उधर घूम गए। मित्रों द्वारा परेशान किए जाने से स्वतंत्र, शिष्यों से स्वतंत्र, और एकबार फिर जीवन के पीछे के अर्थ को पहिचानने के लिए आश्चर्य करने के लिए, शुरू करने के लिए स्वतंत्र, गौतम अब एकबार फिर अकेले थे।

''यह कड़ी, गौतम के भविष्य में परिवर्तन लानेवाली थी, वर्षों तक वह, मांस को सुखाते हुए और आत्मा को शरीर के बंधन से मुक्त करते हुए, जो वह कर सकते थे, योग का अभ्यास करते रहे थे, परन्तु अब उसने पाया कि योग अब उनके लिये उपयोगी नहीं है। योग, उद्दंड शरीर के ऊपर थोड़ा सा अनुशासन प्राप्त करने का, मात्र एक साधन था और इससे आध्यात्मिकता को बढ़ाने में कोई सहायता या विशेष लाभ नहीं मिलता था। उन्होंने ये भी पाया कि ऐसे पवित्र जीवन को जीना बेकार है, क्योंकि लगातार की पवित्रता, उनकी मृत्यु के रूप में ही परिणामित होगी। उनके प्रश्न अभी भी अनुत्तरित ही रहेंगे और तलाश समाप्त नहीं होगी। उन्होंने उस समस्या पर भी विचार किया और तब उन्होंने निश्चय किया कि वह, जो अब तक करते रहे है, उसका अर्थ है, गंगा नदी को, एक चलनी में से निकाल देना, या हवा में गॉठ बांधने की कोशिश करना।

''एकबार फिर, गौतम ने ध्यान लगाया, वह कमजोरी के कारण कमजोर और कांपते हुए, जो उन लोगों को हो जाती है, जो बहुत लंबे समय तक भूखे रहते हैं और जो मृत्यु के द्वार से, केवल बचे हुये मात्र, ही रहते हैं, पेड़ के नीचे बैठे और उन्होंने, अप्रसन्नता और पीड़ा की समस्या पर, गहराई से विचार किया। उन्होंने एकमात्र संकल्प किया कि, उन्होंने पहले ही छः साल से अधिक, बिना उत्तर प्राप्त किए, ज्ञान की खोज में लगा दिये हैं, वह ध्यान में बैठेंगे और तब तक दुबारा नहीं उठेंगे, जबतक कि उन्हें अपनी समस्याओं के समाधान न मिल जाऐं।

गौतम बैठे, सूर्य ढल गया और जमीन पर अंधेरा छा गया, रात की चिड़ियों ने अपनी पुकार प्रारम्भ की और जानवर अपनी शिकार की खोज में निकल पड़े। गौतम बैठे। रात के लंबे घंटे गुजर गए और शीघ्र ही, आकाश में प्रकाश की एक धुंधली सी किरण चमकी, भोर होती जा रही थी। गौतम बैठे और ध्यान किया।

एक दिन पहले, जब वह अकेले महान वृक्ष के नीचे बैठे थे, प्रप्रति के सभी जीवों ने दुर्बल गौतम की पीड़ा के साक्षी दी। उनको, उनकी समझ, उनकी सहानुभूति मिली और प्रप्रति के सभी प्राणियों ने, उनके मन का विचार किया कि वे मानवजाति को मदद करने के लिए, इस संघर्ष में, कठिन तरीकों से अलग जाकर, कैसे मदद कर सकते हैं।

''शेरों ने दहाड़ना बंद कर दिया, ताकि, उनका गाना और उनकी पुकार, ध्यानस्थ गौतम को परेशान न करे; बंदरों ने चीखना–चिल्लाना, एक डाल से दूसरी डाल पर उछलना, झूलना बंद कर दिया; वे एक टॉग पर खड़े होते हुए, शांतिपूर्वक बैठे। चिड़ियों ने गाना बंद कर दिया, अपनी थरथराहट को बंद कर दिया और गौतम को मदद करने की आशा में, अपने पंखों को फड़फड़ाने के बजाय उसे प्रेम की और ठण्डी हवा की तरंगें भेजते हुए, शांत बैठ गईं। सामान्यतः चारों तरफ पीछा करनेवाले और भौंकनेवाले कुत्तों ने, अपनी आवाज बंद कर दी और दूर चले गए और झड़ियों के नीचे जाकर छिप

गए। वहॉ छिपे, जहॉ से सूर्य की किरणें उन पर न गिर सकें। उनकी तरफ देखते हुए घौंघाओं के राजा ने, कुत्तों को छाया में गायब होते देखा और घोंघाओं के राजा ने सोचा कि वह और उसकी प्रजा, गौतम के माध्यम से, मानवजाति की सहायता करें। घोंघाओं के राजा ने, अपनी प्रजा को साथ–साथ बुलाते हुये, धीमे से, उसकी गर्दन पर, गौतम के पीछे का रास्ता लिया और वे, उनके धूप से लाल हुए सिर के ऊपर जाकर इकट्ठे हो गए, ध्यान में सिर इतना गहरा डूबा हुआ था और सूर्य की जलती हुई किरणों से इतना तेजी से झुलता हुआ था; घोंघे इकट्ठे हो गए और उनके ठण्डे शरीरों ने गौतम को दोपहर की धूप की गर्मी से बचाया। और कौन जानता है, उन घोंघों ने गौतम के सिर को ठण्डा रखते हुये, उसकी अंतिम तलाश को सहायता दी हो। एक समय, प्रप्रति की प्रजा, मनुष्यों की मित्र थी, उन्हें मनुष्य से कोई भय नहीं था और जब तक मनुष्य ने धोखेबाजी का व्यवहार नहीं किया, उनके प्रति प्रप्रति की प्रजा, हमेशा मनुष्य को सहायता करने के लिए आगे आई।

गौतम के स्थिररूप से, इतना स्थिर, जितना कि एक गढ़ा हुआ पुतला हो सकता है, बैठे रहते हुये, दिन चलता गया, चलता गया। एकबार फिर रात आई, अंधेरा; एकबार फिर भोर हुई और आकाश में हल्की–हल्की चीखें आईं, और तब सूर्य क्षितिज पर दिखाई दिया, परन्तु इसबार सूर्य, बुद्ध के लिए ज्ञान की अनुभूति लाया था। मानो कि बिजली से टकराकर, एक विचार गौतम में कौंधा, उन्हें अपना उत्तर और समस्याओं का आंशिक समाधान, जिनके संबंध में वह व्याकुल रहते थे, मिल गया। उन्हें एक नये ज्ञान के साथ, आत्मानुभूति (enlightenment) हुई। वह ''ज्ञान को प्राप्त एक व्यक्ति (The awakened one),'' हो चुके थे, जिसका हिन्दुस्तानी में अर्थ है 'बुद्ध।'

''उनकी आत्मा, सूक्ष्मतल (astral plane) पर प्रकाशित हो रही थी, जो उन्हें ध्यान के बीच घटित हुआ, उन्हें अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई और (वह) उन चीजों को याद रख सके, जो उन्होंने सूक्ष्मस्तरीय तलों में देखी थीं। अब, जैसे वह जानते थे, वह इस पृथ्वी पर, जीवन की अप्रसन्नताओं से मुक्त हो जायेंगे, जीवन–मरण के कभी न समाप्त होनेवाले चक्कर में घूमने से मुक्त हो जायेंगे। वह ज्ञान प्राप्त कर चुके थे कि मनुष्य पीड़ा क्यों पाता है, इसे कौन उत्पन्न करता है, इसकी प्रप्रति क्या थी, और उसे कैसे समाप्त किया जा सकता था।

''गौतम, उस क्षण से, ज्ञान प्राप्त गौतम, या भारतीय शब्दावली में कहें, गौतम बुद्ध हो गये। अब उन्होंने फिर आश्चर्य किया कि, उनका अगला रास्ता क्या होना चाहिए। उन्होंने पीड़ायें झेली थीं और अध्ययन किया था, इसलिये उन्हें दूसरों को ये सिखाना चाहिए या उन्हें उन साधनों को पता लगवा देना चाहिए, जिससे उन्हें स्वयं ये सब प्राप्त हुआ था ? वह परेशान हुए, क्या कोई दूसरा आदमी इस पर, उस अनुभव पर, जिससे वह गुजरे थे, विश्वास करेगा ? परन्तु उन्होंने निश्चय किया कि, इसका उत्तर प्राप्त करने का एकमात्र तरीका, उन्हें इस आत्मज्ञान, जो उसके अंदर आ चुका था, की प्राप्ति के शुभ समाचारों को बताने का, दूसरों से बातचीत करने का, था।

''अपने पैरों पर खड़े होते हुए और थोड़ा भोजन और पानी लेते हुए, उन्होंने बनारस की ओर यात्रा प्रारम्भ की, जहॉ उन्हें आशा थी कि उन्हें अपने पॉच पुराने साथी, जो उन्हें तब छोड़ गये थे, जब वह मदद की नितांत आवश्यकता में थे, मिल जायेंगे, जिन्होंने उन्हें तब छोड़ दिया था, जब उन्होंने दोबारा खाना लेना प्रारम्भ किया।

''एक यात्रा, जो काफी लंबे समय के बाद समाप्त हुई, के बाद, चूँकि गौतम, बुद्ध, अभी भी अपने अभाव के कारण कमजोर थे, वह बनारस पहुँचे और (उन) पॉच साथियों से मिला, जिनसे वह मिलना चाहते थे। उन्होंने उनके साथ बातें कीं और ''नियम के चक्र के घूमने का उपदेश (The Sermon on the Turning of the Wheel)'' जो इतिहास के माध्यम से आ चुका है, उन्हें बताया। उन्होंने अपने श्रोताओं को, पीड़ा के कारण के बारे में, पीड़ा की प्रप्रति के बारे में बताया, उन्होंने उन्हें बताया कि पीड़ा से कैसे पार पाया जाये; उन्होंने उन्हें, एक नये धर्म के बारे में, जो हमें बौद्धमत के नाम से ज्ञात है,

बताया। बौद्धमत का आशय है, वह धर्म, जो पुनः जागरण चाहते हैं, उनके लिये।''

गौतम ने इसप्रकार भूख को पहिचाना, मैंने सोचा। मैं भी भूख को जानता था! मैंने कामना की कि यह शिक्षक अधिक समझदारी वाला होगा, क्योंकि हम बच्चे, हमें कभी खाने के लिये इतना अधिक नही मिला, हमें अपने लिये कभी इतना अधिक समय नहीं मिला और उसकी गूंजती हुई आवाज, उसको दिये गये समय के भी परे गूंजती हुई आवाज, हम भूखे थे, थके हुये, सब तरह से परेशान, मुश्किल से उसके महत्व को समझने में सक्षम थे, जो वह कह रहे थे।

लड़का, जो मेढ़क की तरह उछलकर भारतीय शिक्षक के ऊपर जा गिरा था, नाक सूंतता बैठा था, उसकी नाक को, प्रगटरूप से, नुकसान हुआ था, शायद टूट गई थी, परन्तु उसे, अपनी उँगलियों से खून को रोकने का प्रयास करते हुए, शिक्षक को और आगे गुस्सा होने से दूर रखने का प्रयास करने के लिये वहॉ बैठना पड़ा। तब मैंने सोचा, इस सबका उद्देश्य क्या है, इतनी पीड़ा क्यों, जो लोग शक्ति को अपने पास रखते हैं, उनको दया दिखाने की आवश्यकता क्यों? करुणा, और समझ–बदले में वे क्यों इसप्रकार से आतंकपूर्ण ढ़ंग से व्यवहार करते हैं ? मैंने संकल्प किया कि जैसे ही मेरे शिक्षक वापस आयेंगे, मैं इन समस्याओं में, जो मुझे, वास्तव में, व्यथित कर रही थीं, और गहराई तक नीचे उतरूँगा। परन्तु मैंने पर्याप्त आनन्द के साथ देखा कि, भारतीय शिक्षक थोड़े थके हुए लग रहे थे, थोड़े भूखे और प्यासे दिखते हुए, वह एक पैर से दूसरे पैर पर बदल रहे थे। हम बच्चे, मुझे छोड़ कर सभी, फर्श पर पालथी मारकर बैठे और मैंने अपने आप को, जितना संभव हो सका, बिना हलचल के बनाये रखने का प्रयास किया। दूसरे व्यथित, पालथी मारकर, पंक्तियों में बैठे। शिक्षक सामान्यतः हमारे पीठ पीछे गश्त करते थे, जिससे हम ये नहीं जान पायें कि, वह इस क्षण कहॉ थे, परन्तु ये आदमी, भारतीय शिक्षक, खिड़की के बाहर देखते हुए, उन छायाओं को, जो मैदान में चल रही थीं, उन घण्टों को, जो गुजर रहे थे, को देखते हुए, एक पैर से दूसरे पैर को बदल रहे थे। वह एक निर्णय तक आये; उन्होंने अपने आपको खड़ा किया और कहा, ''ठीक है ! हम एक विराम लेंगे, तुम्हारा ध्यान घूम रहा है, तुम मेरे शब्दों पर ध्यान नहीं दे रहे हो, शब्द, जो तुम्हारे पूरे जीवन को और तुम्हारे आनेवाले जीवनों को शाश्वतताओं (eternities) के लिए, प्रभावित कर सकते हैं। हम आधे घंटे के लिये विश्राम लेंगे। तुम अपना खाना खाने को स्वतंत्र हो, तब तुम यहॉ शांति से वापस आओगे और मैं अपनी वार्ता को जारी रखूँगा।''

उसने तेजी से, अपने चमड़े के बैग में, अपने कागजात समेटे। उसने मुँह को, संतुष्टि प्रदान करनेवाली ''चटाक (click)!'' की आवाज के साथ, तेजी से बंद किया और तब वह अपनी पीली पोशाक की हलचल के साथ चले गये। हम, इस सब की सहसाहट (suddenness) के साथ, भौंचक्के होकर बैठे, और तब दूसरे (लोग), मुस्तैदी के साथ अपने पैरों पर उछले, परन्तु मैं–मुझे दुःखपूर्वक चढ़ना पड़ा। मेरी टांगें कड़ी थीं, और मुझे अपने आपको, कमोवेश, एक टांग को दूसरे से पहिले धकेलने में, दीवार के विरुद्ध झुककर सहारा देना पड़ा। परन्तु (जब) अंतिम (बच्चा) बाहर चला गया, मैंने, मित्रवत् रसोईये भिक्षु के परिक्षेत्र की तरफ, नीचे की ओर अपना रास्ता पकड़ा और (सम्पूर्ण) स्थिति को उसको समझाया, और कैसे मैं, एक भोला आदमी, दूसरों के अपराधों के लिए दण्डित किया गया था।

वह मेरे ऊपर हँसा और उसने कहा, ''आह! परन्तु उस नौजवान के बारे में क्या, जो काजल के गुल्ले गिरा रहा था ? क्या यह, वह मामला नहीं है कि, तुम्हारा कर्म तुम्हें पकड़े हुये है ? और क्या यह, वह मामला भी नही है कि, यदि तुम्हारी टॉगें टूटी नहीं होतीं, तो तुम गैंग के नेता भी हो सकते थे?''

वह शुभेच्छापूर्वक, मेरे ऊपर फिर हँसा। वह एक अच्छा, बूढ़ा आदमी था और तब उसने कहा, ''परन्तु चलते रहो, अपनी खुद की मदद करो! तुम्हें मेरी सहायता की आवश्यकता नहीं है, तुमने पहिले ही अपनी खुद की काफी सहायता की है। अच्छा खाना खाओ और वह भयानक आदमी, जबतक अपना पारा गरम होने दे, उससे पहले दोबारा वापस लौट जाओ।'' इसलिए मैंने अपनी चाय ली, वैसे ही जैसे कि मैंने नाश्ते में ली थी, वैसे ही जैसे कि मैंने दोपहर के खाने में ली थी–त्सम्पा–वैसे ही, जैसे मैं वर्षों

तक लूँगा–त्सम्पा।

हम तिब्बतियों के पास, न तो (कलाई) घड़ियॉ होती हैं और न ही दीवार घड़ियॉ। जब मैं तिब्बत में था, मैं कलाई घड़ी के अस्तित्व के बारे में ही नहीं जानता था, परन्तु कुछ ऐसी चीज के द्वारा, जो हमारे अंदर थी, हम समय बताने में सक्षम थे। लोग, जो यांत्रिक युक्तियों की तुलना में, अपने आप पर निर्भर करते हैं, कुछ भिन्न प्रकार की शक्तियॉ विकसित कर लेते हैं। इसप्रकार, मैं और मेरे मित्र, समय के गुजर जाने का एकदम ठीक अंदाज रखते थे मानो कि, वे घड़ियॉ पहिने हों। आधे घंटे से काफी पहिले, चुहिया की तरह से, जो नीचे के भण्डारों में, हमारे दानों पर पोषित होती है, हम अपनी कक्षा में लौटे, सावधानीपूर्वक लौटे।

उस लड़के के सिवाय, जिसकी नाक से खून बह रहा था, हम एक व्यवस्थित क्रम में, जुलूस के रूप में, प्रविष्ट हुये। वह बेचारा साथी, अस्पताल को गया था, जहॉ ये पता लगा कि उसकी नाक टूट गई है, इसलिये मुझे, भारतीय शिक्षक को, एक फटी हुई खपच्ची देने का कार्य मिला, जिसमें कारण लिखा हुआ एक कागज फसाया गया था कि, लड़का–अब एक मरीज–क्यों उपस्थित नहीं हो सका।

दूसरे बैठे, और हमने प्रतीक्षा की, मैं खपच्ची को अपने हाथ में पकड़े हुये, उसके अंत में वैसे ही, अपने छोटे कागज को फड़फड़ाते हुये, दीवार के विरुद्ध, अपनी पीठ के सहारे खड़ा हुआ। सहसा भारतीय शिक्षक, दरवाजे में आते हुये दिखे और (उन्होंने) हमारे ऊपर ऑखें तरेर कर देखा और तब वह मुड़े और मुझे त्योरी चढ़ा कर देखा, ''तुम–लड़के, तुम, तुम, यहॉ क्या कर रहे हो, डंडी के साथ खेल रहे हो ?'' उन्होंने पूछा। ''श्रीमान्!'' मैंने कुछ घबराहट के साथ उत्तर दिया। ''मेरे पास मरीज का एक संदेश है।'' मैंने खपच्ची को उसकी दिशा में आगे बढ़ाया; एक क्षण के लिए ऐसा लगा, मानो उन्हें ये धुंधला सा भी विचार नहीं था कि उन्हें क्या करना चाहिए, तब सहसा उन्होंने खपच्ची को ऐसे झटके के साथ कि वह लगभग अपने मुँह के बल गिर पड़े, छीन लिया। खपच्ची के गिरते हुये, उन्होंने कागज लिया और उसे पढ़ा। जैसे ही उन्होंने ऐसा किया, वैसे ही उनकी त्योरियॉ गहरी हो गईं, तब उन्होंने कागज के टुकड़े को गुड़मुड़ी किया और उसे खुद से बाहर की तरफ फैंक दिया। हमारे लिये, तिब्बतियों के लिए, ये एक गंभीर अपराध था, क्योंकि हम कागज को इतना अधिक पवित्र समझते हैं। ये कागज के माध्यम से ही था कि हम इतिहास पढ़ने के योग्य थे, और इस आदमी, इस भारतीय साधु ने पवित्र कागज को फैंक दिया था।

''ठीक है ! तुम यहॉ, आश्चर्य में किसलिये खड़े हो ? '' मैंने उनकी तरफ देखा और आश्चर्य से मुँह और अधिक खुला रह गया क्योंकि, जिस तरीके से वह चल रहा थे, उससे मैंने कोई अर्थ नहीं समझा। यदि वह एक शिक्षक थे, तब मैंने निश्चय किया कि मैं एक शिक्षक नहीं होना चाहूँगा। मोटे तौर से, उन्होंने मुझे नजर से हट जाने और बैठ जाने का इशारा किया। मैंने ऐसा किया, और वह फिर से हमारे सामने खड़े हुए और अपनी वार्ता को प्रारम्भ किया।

जैसा उसने हमें बताया, गौतम को यथार्थ तक पहुँचने का एक दूसरा रास्ता मिल गया था, एक रास्ता जो ''मध्यमार्ग (the middle way)'' कहलाया। गौतम का अनुभव, निश्चितरूप से, दूना हो चुका था; सर्वोत्प्रष्ट विलासिता और सुखों में, नर्तकियों की प्रचुर पूर्ति और उन सभी खानों, जो वह खा सकते थे, उन सभी आनन्दों, जो वह ले सकते थे, के साथ राजकुमार के रूप में पैदा हुए (भारतीय शिक्षक की ऑखें विषादग्रस्त हो गईं!) और तब उससे (विपरीत), घृणित गरीबी, पीड़ा, अभाव, भुखमरी के द्वारा, मृत्यु के लगभग अंतिम बिन्दु पर पहुँचना। परन्तु, गौतम ने शीघ्र ही ये समझ लिया कि, न तो धन, न ही गुस्सा, आदमी की शाश्वत समस्याओं की पूँजी है। इसलिये उत्तर, इन दोनों के बीच में होना चाहिए।

बौद्धमत को बहुधा एक धर्म के रूप में माना जाता है, परन्तु सही मायने में, विश्व के मायने में, ये धर्म नहीं है। बौद्धमत, जीवन का एक ढ़ंग, जीने का एक तरीका है, जिसके द्वारा, बशर्ते कोई उस आचरण का पूरी तरह से पालन करता है, कुछ निश्चित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। सुविधा के लिये

बौद्धमत को धर्म कहा जा सकता है, यद्यपि हममें से उनके लिये, जो सही बौद्धमताबलंबी पुजारी हैं ''धर्म'' एक गलत शब्द है, केवल शब्द है ''मध्यम मार्ग।''

बौद्धमत, हिन्दू धर्म की शिक्षाओं पर आधारित था। हिन्दू चिन्तकों और धार्मिक शिक्षकों ने पढ़ाया था कि स्वयं के प्रति ज्ञान का रास्ता, आत्मा के ज्ञान का रास्ता, और मनुष्यता के साथ निपटने का तरीका ऐसा था, जैसे कि कोई तलवार की धार पर चल रहा हो, जिसमें किसी का, थोड़ा भी एक तरफ या दूसरी तरफ झुक जाना, उसे धड़ाम से नीचे गिरा सकता था।

गौतम सभी हिन्दू शिक्षाओं को जानते थे क्योंकि वह अपने जीवन के प्रारम्भ में हिन्दू थे, परन्तु अपनी खुद की धुन के साथ, उन्होंने मध्यम मार्ग की खोज की।

सीमान्तक (extreme) आत्मत्याग बुरा होता है, ये किसी को विप्रत दृष्टिकोण तक ले जा सकता है; अत्यधिक प्रवृति (extreme indulgence) भी उतनी ही बुरी है क्योंकि ये भी उसी प्रकार से विप्रत दृष्टिकोण तक ले जाती है। कोई, लाभ के साथ, उन परिस्थितियों को समझ सकता है, जैसे कि एक तारवाले वाद्य उपकरण में, उसका सुर मिलाना। यदि कोई, किसी उपकरण, उदाहरण के लिये गिटार, के तारों को अधिक कस देता है, अंत में वह टूटने के बिन्दु पर पहुॅच जाता है, तब एक हल्का सा स्पर्श भी उस तार को तोड़ सकता है और इसलिये इस ज्यादा कसाब में, समरसता (harmony) का अभाव होता है।

यदि कोई, तार के उपकरण के पूरे तनाव को समाप्त कर देता है तो उसे फिर, सामंजस्य (harmony) का अभाव मिलता है, किसी को तालमेल तभी मिल सकता है जबकि, तार सही और ठीक रूप से कसे हुए हों। ऐसा ही मानवता के मामले में भी है जहॉ प्रवृत्त होना या अत्यधिक पीड़ा झेलना, सामंजस्य के अभाव को पैदा करते हैं।

गौतम ने मध्यमार्ग में विश्वास का नियमन (formulation) किया और कुछ नीति वचनों को निकाला, जिनके द्वारा कोई भी प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है क्योंकि, उनकी कहावतों में से एक थी, ''वह, जो प्रसन्नता चाहता है, प्रसन्नता को जीत सकता है, यदि वह चाहने का अभ्यास करे (Happyness he who seeks, may win, if he practices seeking)।''

पहिले प्रश्नों में से एक, जिसे कोई व्यक्ति पूछता है वह है ''मैं दुःखी क्यों हूॅ ?'' ये प्रश्न अधिकांशतः पूछा जाता है। गौतम बुद्ध ने पूछा कि वह दुःखी क्यों थे; उन्होंने चीज के विचार और चीज के आसपास के विचार पर, चिंतन किया, और चिंतन किया और वह इस निर्णय पर पहुॅचे कि एक नया पैदा होने वाला बच्चा भी, पैदा होने में होने वाले कटु अनुभवों के कारण चीखता है और पैदा होने में सुख की कमी तथा कष्ट के कारण, उस सुखदायक संसार, जिसे वह जानता था, को छोड़ने के कारण, पीड़ित होता है। बच्चे जब सुख में नहीं होते, वे चीखते हैं, और जब वे बड़े हो जाते हैं, वे चीख नहीं सकते। फिर भी, वे अपने दुःख को, अपने संतोष के अभाव को, और अपने वास्तविक दर्द को, नाराजगी को, स्वर देने के मार्ग खोजने का प्रयास करते हैं परन्तु, एक बच्चा इस बारे में नहीं सोचता कि वह क्यों चीख रहा है, वह केवल चीखता है, वह स्वचालितरूप से, जैसे केवल प्रतिक्रिया करता है। कुछ उत्तेजनायें, मनुष्य को चिल्लाने के लिये प्रेरित करती हैं, कुछ उत्तेजनायें मनुष्य को हॅसाती हैं परन्तु केवल तब, जब लोग पूछते हैं कि मैं पीड़ित क्यों हूॅ, मैं दुःखी क्यों हूॅ ?, पीड़ा–दर्द–एक समस्या बन जाता है।

शोध ने ये बताया है कि, अधिकांश लोग, कुछ हद तक, जबतक कि वे दस साल की उम्र में

होते हैं, पीड़ा झेलते हैं और वे ये भी सोचकर आश्चर्य करते हैं कि उन्हें पीड़ा क्यों झेलनी पड़ी। परन्तु गौतम के मामले में, जबतक कि वह तीस वर्ष की आयु के नही हो गये, यह प्रश्न पैदा नहीं हुआ क्योंकि, गौतम के माता–पिता ने वह हर चीज की थी, जो उसे किसी भी प्रकार की, कभी भी पीड़ा झेलने से बचाने के लिये, संभव हो सकती थी। लोग जो अधिक संरक्षित किये जाते हैं और अधिक प्रवृत्त होते हैं, वे नहीं जानते कि दुःखी चेहरा क्या होता है, अंत में, जब दुःख उन पर आ पड़ता है, तो वे इसके साथ यथोचित व्यवहार करने की स्थिति में नहीं होते और इस मामले में वे अक्सर मानसिक या स्नायुविकरूप (mental and nervous breakdown) से टूट जाते हैं।

हर व्यक्ति को, किसी समय, पीड़ा झेलनी पड़ती है और पीड़ा के कारण का सामना करता है। हर व्यक्ति को भौतिक, मानसिक, आध्यात्मिक दर्द झेलना पड़ता है, क्योंकि बिना दर्द के, इस पृथ्वी पर कुछ भी नहीं सीखा जा सकता, यहॉ किसी प्रकार का शुद्धीकरण, परिमार्जन नहीं हो सकता या वर्तमान में आदमी की आत्मा को, जो मल घेरे हुये हैं, उसको नहीं हटाया जा सकता।

गौतम ने नया धर्म नहीं पाया; गौतम की पूरी शिक्षायें, मनुष्य के सम्पूर्ण ज्ञान के लिए गौतम का पूरा योगदान, दुःख अथवा प्रसन्नता की समस्या की इस बात पर या इसके आसपास केन्द्रित है। उनके ध्यान की अवधि में, जबकि प्रप्रति के प्राणी शांत रहे और वह बाधारहित होकर ध्यान कर सके, और जबकि घोंघों ने, उसके धूप के द्वारा गर्म किये हुये सिर को ठण्डा बनाये रखा, गौतम ने दर्द को महसूस किया, दर्द के कारण को महसूस किया, और ये पाया कि, वह जानते हैं कि पीड़ा से कैसे पार पाया जा सकता है। उन्होंने इन चीजों को अपने पॉच सहयोगियों को पढ़ाया, और ये चीजें जो उन्होंने पढ़ाईं, चार सिद्धांत बन गईं, जो बौद्धधर्म के पूरे के पूरे ढ़ॉचे को संभालती हैं। ये चार भद्र–सत्य (noble truths) हैं, जिनके संबंध में हम बाद में बात करेंगे।

रात की छायाऐं गिर रही थीं, अंधेरा इतनी तेजी से घिर रहा था कि, हम मुश्किल से ही एक दूसरे को देख सकते थे। भारतीय शिक्षक, फिर से खिड़की में से मंडराये, उनका ढ़ॉचा, सितारों की हल्की, मंदी रोशनी में दिखा। उन्होंने, भूले या इस तथ्य की चिन्ता किये बिना, कि हम लड़कों को अर्धरात्रि की सेवा के लिए उठना है, बात करना जारी रखा। हमें सुबह चार बजे की सेवा के लिए उठना था और तब हमें फिर, सुबह छैः बजे की सेवा के लिए उठना था। अंत में, वह ऐसा महसूस करते हुये लगे कि, वह थकता जा रहे हैं, वह ऐसा महसूस करते हुये लगे कि, अपनी पीठ के साथ अंधेरे में, तारों की रोशनी में खड़ा होना, शायद, वह अपना समय गंवा रहे थे, क्योंकि, वह हमें देख नहीं सकता थे, वह नहीं जानते थे कि हम ध्यान दे रहे हैं, या हम बैठे–बैठे सो रहे हैं।

सहसा उन्होंने, अपने व्याख्यानपीठ (lecturn) के ऊपर, जबरदस्त थ्वांग (thwang!) की आवाज के साथ, एक तमाचा मारा। शोर–अप्रत्याशित–और बिक्षुब्ध करनेवाला था, जब हम सभी, डर के मारे कूदे ताकि हमारे और उनके बीच में, शरीरों और फर्श के बीच कई इंच हवा हो। तब हम सभी, सुस्त होते हुए, और आश्चर्य की कराह के साथ तरबतर होते हुए, पीछे गिर गए।

भारतीय शिक्षक, कुछ क्षणों के लिए वहॉ खड़ा रहे, तब उन्होंने कहा, बर्खास्त, और लंबे डग भरते हुए कमरे के बाहर चले गये। मैंने सोचा, ये उनके लिये आसान था। वह, मात्र एक आगन्तुक थे, जिसको विशेषाधिकार मिले हुये थे और यहॉ उनसे कोई काम करने लिये कहने वाला नहीं था। वह अब, अपने प्रकोष्ठ की ओर जा सकते थे और यदि वह करना चाहें, तो पूरी रात भर विश्राम कर सकते थे। ठीक है हमें–हमें मंदिर की प्रार्थना सेवा के लिए जाना था।

हम अपने पैरों पर सीधे खड़े हुये और मैं उन सबमें अधिक तना हुआ था, और तब हम, गिरते पड़ते, अंधेरे कमरे में से, अंधेरे गलियारे में आए। हमारी कक्षाओं का इस समय तक लगना, सामान्य नहीं था और वहॉ कोई रोशनियॉ नहीं थीं। गलियारे हमारे परिचित थे, तथापि, हम उनके सहारे तबतक पैर घसीटकर चले, जबतक कि हम एक मुख्य गलियारे की तरफ नहीं आ गए, जो वास्तव में, अपरिहार्य मक्खन के टिमटिमाते हुए दीपों से प्रकाशित था, मक्खन के दीप, जो सिर की ऊॅचाई पर, दीवार के आले और ताकों में रखे हुये थे और उन्हें लगातार मक्खन से भरकर रखना और उनकी बत्तियों को आगे बढ़ाना, जो तरल मक्खन की सतह पर तैर आया करतीं थीं, दो भिक्षुओं का कार्य था।

हम गिरते–पड़ते, अपनी शयनवीथिका (dormitory) तक गए, जहॉ, इससे पहले कि तुरहियॉ और शंख हमें अर्द्धरात्रि की सेवा के लिए बुलाऐं, हम थोडी नींद प्राप्त करने का प्रयास करते हुए, बिना किसी देरी के, फर्श पर लुढ़क गए।

अध्याय चार

जब मैंने एक छोटे छिद्र में से झांककर देखने का प्रयास किया, मैं, अपने आप को समेटकर, गेंद के रूप में बनाये हुये, बड़ी मुडेरों के नीचे दुबककर बैठा हुआ था। मेरी टॉगें, आग में जलती हुई लकड़ियों की तरह से भभक रहीं थीं, जिसके कारण, मुझे डर था कि किसी भी क्षण, मेरे खून निकल आयेगा। परन्तु मुझे वहॉ ठहरना था, और डरते हुए, तंग आकार में लेटने की उस असुविधा को झेलना था, जबकि मैं दूर क्षितिज की सूक्ष्म जॉच करने की कोशिश कर रहा था। यहॉ, मैं अपनी वर्तमान स्थिति में, मैं लगभग दुनियॉ की छत पर था! मैं बिना पंख लगाये, या–मेरे मन में विचार कौंधा–बिना किसी शक्तिशाली पतंग में बैठकर उड़ने के, इससे और अधिक ऊपर नहीं जा सकता था। हवा, प्रार्थनाध्वजों को फाड़ते हुये, सुनहरी समाधियों की छतों के नीचे, शोक मनाती हुई और मेरे असुरक्षित सिर के ऊपर, हर जब–तब, महीन पर्वतीय धूल की वर्षा करती हुई, मेरे आसपास चीखी और घूमी।

सुबह जल्दी ही, चोरी से और डर के साथ कॉपते हुए, मैंने कम उपयोग में लाये जानेवाले गलियारों और रास्तों में होकर, अपना गुप्त रास्ता पकड़ा। अत्यधिक सावधानी के साथ, प्रत्येक कुछ कदमों को सुनने से रोकते हुये, अंत में, मैं पवित्र छत, छत जहॉ केवल, अंतरतम और उनके अत्यधिक निकटस्थ मित्र ही जा सकते थे, पर उभरा। यहॉ खतरा था। इस विचार के ऊपर, मेरा दिल दोबारा धड़का। यहॉ, यदि मैं पकड़ लिया गया, तो मुझे इस व्यवस्था (order) से, अत्यन्त कठोर अपमान के साथ, बहिष्प्रत कर दिया जायेगा। निकाल दिया जायेगा ? तब मुझे क्या करना चाहिये ? मेरे अन्दर दर्द उमड़ पड़ा, और एक लंबे क्षण के लिए, मैं नीचे वाले क्षेत्रों में, जहॉ से मैं संबंधित था, भागने के बिन्दु पर था। सामान्य अभिज्ञान (common sense) ने, अपना उद्देश्य प्राप्त किये बिना, अभी नीचे जाने से मुझे रोका; वास्तव में, ये असफलता होती।

अपमान के साथ बाहर निकाल दिया जाना ? तब मैं क्या करूॅ ? मेरा कोई घर नहीं था, पिताजी ने मुझे कह दिया था कि ''घर'' अब मेरे लिये घर नहीं था– जीवन में अपना रास्ता, मुझे स्वंय बनाना चाहिए। मेरी घूमती हुई ऑखों ने, प्रसन्नता की नदी की चमक को पकड़ लिया, याक की खाल से ढकी हुई नाव में, एक काले नाविक को अंधेरे में देखा, और मेरा मन साफ हो गया। ये वह है, जिसे मैं करूॅगा, मैं नाविक होऊॅगा! अधिक सुरक्षा के लिए, मैं स्वर्णिम छत की कगारों के साथ छिप गया, अब गहनतम की नजरों से भी सुरक्षित, क्या वह ऐसी हवा में भी, आने का प्रयास, उद्यम करेंगे। मेरी टॉगें तनाव से कांपने लगीं, मेरे अंदर भूख कुलबुलाने लगी। वर्षा की कुलबुलाहट ने एक समस्या का हल कर दिया, मैं झुका और एक छोटे तालाब के ऊपर, जो वहॉ बन गया था, अपने होठों को गीला किया।

क्या वह कभी नहीं आऐंगे ? उत्सुकता से चिन्तित, मैंने दूर क्षैतिज की सूक्ष्म जॉच की। मैंने–हॉ, मैंने अपनी ऑखों को, अपने हाथों के पीछे के पृष्ठ से रगड़ा और दोबारा टकटकी लगाकर देखने लगा। अब वहॉ धूल का छोटा सा गुबार था! पारी की दिशा से! कुछ क्षणों के लिए, मेरी टॉगों का दर्द, भुला दिया गया, हमेशा बना रहने वाला, देख लिये जाने का डर भी भुला दिया गया। मैं खड़ा रहा और ताकता रहा। बहुत, बहुत दूर, घुड़सबारों का एक समूह, ल्हासा की घाटी के साथ–साथ नजदीक आता जा रहा था। तूफान बढ रहा था और घोड़ों की टापों के द्वारा, धूल का बादल उठा और उसे, लगभग उतनी ही शीघ्रता से, जितना तेजी से वह बना था, दबा दिया गया। मैंने, उस काटनेवाली और कभी भी किसी को न छोड़नेवाली हवा से, अपनी ऑखों के बचाव का प्रयास करते हुए, झॉका, और झॉका।

पेड़ बबंडर से दूर, झुकते जा रहे थे। पत्तियॉ पागलपन से हिल रही थीं, तब टूटीं और हवा के द्वारा उड़ाये जाते हुए, अज्ञात की ओर दौड़ गईं। सर्पमंदिर के पासवाली झील, अब दर्पण की भांति और अधिक शांत नहीं थी; हिलती हुई तरंगें, दूर के किनारे के विरुद्ध, उसे तोड़ने के लिये, पागलपन के साथ, सतह पर उभरीं। हमारे मौसम को अच्छी तरह से जाननेवाली बुद्धिमान चिड़ियाऐं, खुद को बचाने

के लिए, हवा को हमेशा सामने रखते हुए, सावधानीपूर्वक चलीं। प्रार्थनाध्वजों की श्रंखला में होकर, अब अधिकांशतः टूटनेवाले कड़क दवाब के कारण, गड़गड़ाहट की एक भयंकर आवाज आई, जबकि, जैसे ही, हवा ने अपने उतार–चढ़ाव और घुमाव को, उनके मुँह के सामने किया, छत से जुड़ी हुई तमाम तुरहियों की, गूँजती हुई कठोर आवाज आई। यहाँ मैं, स्वर्णिम छत के सबसे ऊँचे भाग पर, नीचे नाविकों (के समीप) से उठाई गयी, उस पुरानी धूल की खुरचनों के अजीब झटकों, और उसके सहसा फैला दिये जाने को अनुभव कर सकता था।

एक भयानक पूर्वाभास, और एक राक्षसी काली आप्रति को, तेजी से अपनी ओर दौड़ते हुए देखकर, मैं समय रहते, बेचैनी से मुड़ा। मेरी बोलती बंद करते हुए, मेरे ऊपर हिंसक घूंसों की मार करते हुये, कठोर बाहों ने मुझे घेर लिया। मैं चीख नहीं सका– मेरे अंदर कोई सांस नहीं थी! एक दुर्गन्धयुक्त काले बादल ने, घिनौनी गंध के साथ उल्टी आते हुए, मुझे अपने में लपेट लिया। प्रकाश नहीं, केवल चीखता हुआ अंधकार और गंध! हवा नहीं, केवल उबकाई जाने वाली गैस!

मैं कांप गया– मेरे पापों ने मुझे बाहर ही पा लिया था। एक दुष्टात्मा ने मेरे ऊपर आक्रमण कर दिया था और मुझे दूर ले जानेवाली थी। ओह! मैं बड़बड़ाया, मैंने नियम की अवज्ञा क्यों की और इस पवित्र धरती पर क्यों चढ़ा ? लेकिन मेरा खराब स्वभाव जीत गया। नहीं ! मैं दैत्यों के द्वारा नहीं ले जाया जाऊँगा, मैं लडूँगा, और हर हालत में किसी से भी लडूँगा। व्यग्रतापूर्वक, अंधे कष्ट और उबलते हुये स्वभाव में, गुस्से में, मैने, बड़े ''दैत्य'' को फाड़ते हुये उसके ऊपर कोड़े बरसाये। राहत, मुझमें से बह निकली, और मैं, लगभग मिर्गी (hysteria) की सी, ऊँची आवाज के साथ हँसा। मैं एक पुराने, काफीपुराने, बकरी की खाल के टैंट से डर गया था, जो समय के साथ एकदम गल गया था, जो हवा के साथ उडकर, मेरे ऊपर आ गया था, अब (हवा के द्वारा) उसके टुकड़े, ल्हासा की दिशा में ले जाये जा रहे थे।

परन्तु तूफान के अंतिम शब्द थे; एक गरजती हुई, विलाप करती हुई तुरही से हवा का एक बड़ा झौंका उठा, जो मुझे फिसलाकर, फिसलन भरी छत पर ले गया। मेरे घिसटते हुये हाथों ने, पकड़ बनाने की बेकार कोशिश की, मैंने अपने आपको छत के साथ कसकर पकड़े रखने की कोशिश की, परन्तु बिना किसी उपलब्धि के। मैं ठीक किनारे पर पहुँचा, डगमगाया, डगमगाया, और पंखों की तरह हल्का सा महसूस करते हुये, आश्चर्यपूर्वक, एक बूढ़े लामा की भुजाओं में गिरा, जिसने मुझे भौंचक्के खुले मुँह से देखा, जैसा मैं दिखाई दिया–जैसा उसे लगा–आकाश में से, स्वयं हवा के द्वारा लाया हुआ!

जैसा कि, ल्हासा के तूफानों का तरीका होता था, सभी कोलाहल और उत्तेजनाऐं समाप्त हो गयीं थीं। हवा कम हो गई थी और अब मात्र उत्साह से कराह रही थी और सुनहरी कंदराओं के आसपास, महान तुरहियों को धीमे से बजा रही थी। पर्वतों के ऊपर, सिर के ऊपर, बादल अभी भी दौड़ रहे थे और उनके गुजरने की गति के साथ, फटने (मंद पड़ने) के लिये पीटे जा रहे थे। मै उतना शांत नहीं था यद्यपि, मेरे अंदर अत्यधिक ''तूफान'' था। पकड़े गये! मैंने, लामामठ में सबसे बड़े बुद्धू की तरह से, स्वयं से कहा। अब मुझे एक नाविक या गाय हांकनेवाला बनना पड़ेगा। अब मैं वास्तव में, कष्ट में हूँ ''श्रीमान्!'' मैंने कांपती हुई आवाज में कहा। ''समाधियों के संरक्षक लामा, मैं .....था'' ''हॉ, हॉ मेरे बच्चे,'' बूढे लामा ने शांति देते हुये कहा। मैंने ये सब पूरा देखा है, मैंने तुम्हें तूफान के द्वारा जमीन से उठाये जाते हुये देखा है। तुम्हें देवताओं का आर्शीवाद प्राप्त है!''

मैंने उसे देखा। उसने मुझे देखा। तब उसने महसूस किया कि वह मुझे अभी भी अपनी भुजाओं में पकड़ हुये था–वह आश्चर्य के साथ, ये सोचते हुए कि, पहले क्या हुआ, अत्यधिक भौंचक्का रह गया था। धीमे से उसने मुझे नीचे उतारा। मैंने चोरी से, पारी की दिशा की झलकी देखी। नहीं! अब उन्हें मैं नहीं देख सका। वे बंद हो गई होंगी, मैं .....''आदरणीय संरक्षक!'' एक आवाज जोर से चिल्लाई। ''क्या तुमने उस लड़के को पर्वत के ऊपर उड़ते हुये देखा ?'' देवताओं ने उसे ले लिया, उसकी आत्मा

को शांति मिले!'' मैं गोलाई में घूमा, एक छोटे से दरवाजे में, तिमन नाम का साधारण बूढ़ा भिक्षु, जडवत् खड़ा था। तिमन उनमें से एक था, जो मंदिरों में झाड़ू लगाते थे और दूसरे छुटपुट काम करते थे। वह और मैं पुराने दोस्त थे। अब, जैसे ही उसने मुझे देखा और मुझे पहचान लिया, उसकी ऑखें आश्चर्य के साथ फैल गईं।

''मां डोलमा का आर्शीवाद तुम्हारी रक्षा करे!'' उसने हर्ष प्रकट किया। '' और ये तुम थे!!! कुछ दिन पहले तूफान ने, तुम्हें इस छत से उड़ा दिया था और अब दूसरे तूफान ने तुम्हें यहॉ वापस रख दिया। ये वास्तव में एक चमत्कार है।'' ''लेकिन मैं–––था'' मैने कहना शुरू किया, परन्तु बूढ़े लामा ने मुझे रोक दिया, ''हॉ, हॉ, हम जानते हैं, हमने ये सब पूरा देखा है। मैं अपने कर्तव्यों के क्रम में, ये देखने के लिए आया था कि सब कुछ ठीक है और तुम मुझसे पहिले, उड़कर छत पर आ पहुॅचे!'' मैंने थोड़ा उदास महसूस किया, इसलिये उन्होंने सोचा कि भेड़ की खाल का सड़ा–गला एक पुराना तंबू, फटा हुआ और पुराना तंबू, मैं था! ओह ठीक है, उन्हें ऐसा सोचने दो। तब मैंने सोचा कि मुझे किस प्रकार से डराया गया है, मैंने सोचा, दुष्ट आत्माऐं कैसे मेरे साथ लड़ रही थीं। सावधानीपूर्वक, मैंने आसपास देखा कि क्या कोई पुराना टेंट नजर में था। नहीं, मैंने अपने संघर्षों में उसको फाड़ डाला था और सभी टुकड़े, हवा में दूर–दूर उड़ रहे थे।

देखो! देखो!'' तिमन चीखा। ''प्रमाण वहॉ है, उसको देखो, उसको देखो!'' मैंने नीचे की तरफ खुद को देखा और देखा कि प्रार्थनाध्वजों की एक डोरी ने मुझे, चारों तरफ से लपेट लिया। अपने हाथ में, अभी भी, मैं आधे झण्डे को पकडे हुए था। बूढ़ा लामा मुस्कराया, और मुस्कराया, और मुस्कराया और नीचे के रास्ते पर उतर गया परन्तु, मैं सहसा मुड़ा और फिर से मुंडेरों की ओर घूरते हुए, अपने प्रिय शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, के बहुत दूर से नजर आने की आशा में, बाहर की दीवार की तरफ दौड़ा। परन्तु दूर की वह दूरी, पूरी तरह से गुस्सैल तूफान से भर गई थी, जिसने हमें छोड़ दिया था और जो अब उड़ती हुई धूल को, उड़ती हुई पत्तियों को, और निस्संदेह बूढ़े बकरे की खाल के तम्बू के अवशेषों को (पीछे) छोड़ते हुये, घाटियों को साफ कर रहे थे।

समाधियों का बूढ़ा संरक्षक वापस आया और उसने मेरे साथ, मुंडेरों की ओर ऊपर देखा। ''हॉ हॉ'' उसने कहा। ''मैंने तुम्हें दीवार की दूसरी तरफ से, ऊपर आते हुये देखा था, तुम मेरे सामने, हवा के द्वारा समर्थित होते हुए, लड़खड़ा रहे थे और तब मैंने तुम्हें, स्वर्णिम समाधियों की छतों के ऊपर सबसे अधिक ऊॅचाई से गिरते हुये देखा; मैं, औरअधिक देखना नहीं सह सका। मैंने तुम्हें, अपना संतुलन बनाने के लिये संघर्ष करते हुये देखा, और मैंने अपनी ऑखों को, अपने हाथों से मूंद लिया।'' एक भली बात भी, मैंने सोची, या तुमने मुझे बकरे की खाल के पुराने तम्बू से लड़ते हुये देखा होगा, और तब तुम्हें पता लगेगा कि, मैं पूरे समय, हमेशा वहॉ ऊपर रहा हूॅ। तब मुझे कष्ट के समय, अंदर जाना चाहिए था।

जब हम मुड़े और (उस) दरवाजे में से होकर गुजरे, जो नीचे दूसरे भवनों को जाता था, वार्तालाप में फुसफुसाहट थी, वार्तालाप की फुसफुसाहट। वहॉ भिक्षुओं और लामाओं का एक समूह, जिनमें से हर एक ये प्रमाणित करते हुए वहॉ था कि, उन्होंने मुझे पर्वतों की नीचे की पहुॅच से, झटके के साथ ऊपर उठते हुए और अपनी भुजाओं को सीधा ऊपर किये हुये, उठाये हुए, देखा था। उन्होंने सोचा कि मैं दीवार के विरुद्ध कुचला जानेवाला हूॅ या सीधा पोटाला पर फैंका जा रहा हूॅ, उनमें से किसी ने भी, मुझे दोबारा जिंदा देखने की आशा नहीं की थी और उनमें से कोई भी मुझे धूल के पार और बदबूदार हवा में देखने में सक्षम नहीं था क्योंकि ये मैं नहीं था, जिसको फैंका गया था, परन्तु ये भेड़ की खाल के तम्बू का एक हिस्सा था।

''ए! ए!'' किसी ने कहा। ''मैंने इसे स्वयॅ देखा–अपनी खुद की ऑखों से। ये वहॉ, हवाओं से बचता हुआ, जमीन पर था और–प्रमाण! अचानक ही, वह अपनी बाहों को फैलाये हुए, मेरे सिर के ऊपर

तैर रहा था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम्हें मै इस तरह देखूँगा।'' ''हॉ! हॉ!'' दूसरे ने कहा। ''मैं कोलाहलों के ऊपर आश्चर्य करते हुये, खिड़की में से बाहर देख रहा था, और जैसे ही इस लड़के को अपनी तरफ धकेले जाते हुये देखा, मेरी ऑखों में पूरी तरह धूल भर गई। जैसे ही वह गुजरा, उसने लगभग मेरे चेहरे पर ठोकर मारी।'' ''ये कुछ नहीं है!'' तीसरा चिल्लाया। ''उसने मुझे टक्कर मारी, मेरे भेजे को, धक्का मारकर, लगभग बाहर कर दिया। मैं बाहर मुंडेर पर था और यह उड़ता हुआ मेरे पास आया। मैंने इसे पकड़ने की कोशिश की और इसने मेरी पोशाक को लगभग फाड़ दिया। इसने उसे ठीक मेरे सिर के ऊपर कसकर खींचा, इसने किया– मैं अंधा हो गया था, थोड़े समय के लिये कुछ भी नहीं देख सका। जब मैं कर सकता था–वह जा चुका था। आह ठीक है, मैंने सोचा, उसका समय आ गया है, परन्तु मैं देखता हूँ कि वह अभी भी यहॉ है।''

मैं हाथों ही हाथों में, एक दूसरे से गुजर रहा था, मानो मैं एक पुरुस्कार में जीते जाने वाली मक्खन की प्रतिमा होऊँ। भिक्षुओं ने मुझे महसूस किया, लामाओं ने मुझे प्रेरित किया और किसी ने भी मुझे ये नहीं बताने दिया कि मैं छत के ऊपर उड़ा नहीं हूँ परन्तु लगभग पूरी तरह फुला दिया गया हूँ। ''चमत्कार!'' किसी बूढ़े आदमी ने कहा जो वहॉ बाहरी कगार पर था। तब–''ओह बाहर देखो, मठाध्यक्ष स्वामी यहॉ आ गये हैं!'' भीड़ ने, सम्मानपूर्वक, उन सुनहरी पोशाकधारी आप्रति के लिए रास्ता बनाया जो अब हमारे बीच प्रकट हुई। ''ये क्या है ?'' उन्होंने पूछा। ''तुम लोग यहॉ भीड़ बनाकर क्यों इकट्ठे हुए हो ? मुझे समझाओ,'' जैसे ही वह सब से अधिक वरिष्ठ लामा, जो वहॉ उपस्थित थे, की तरफ मुड़े, उन्होंने कहा। कुछ विस्तार के साथ, और कुछ लगातार बढने वाली भीड़ की सहायता से, मामले को ''समझाया'' गया। मैं ये कामना करता हुआ, वहॉ खड़ा रहा कि धरती फट जायेगी और मैं नीचे रसाईघर .....में! समा जाऊँगा। मैं भूखा था, पिछली रात से अबतक मैंने कुछ नहीं खाया था।

''मेरे साथ आओ!'' स्वामी मठाध्यक्ष ने आदेश दिया। वरिष्ठ लामा ने एक भुजा पकड़ी और मेरी सहायता की, क्योंकि मैं थका हुआ, डरा हुआ, दर्द सहता हुआ और भूखा था। हम एक बड़े कमरे में गये, जिसे मैंने पहले नहीं देखा था। स्वामी मठाध्यक्ष बैठे और शांति में बैठे, जब उन्होंने विचार किया कि उन्हें क्या बताया गया था। ''किसी चीज को बिना छोड़े हुये, मुझे दोबारा बताओ'' उसने लामा से कहा। इसप्रकार, एकबार फिर, ''मैंने जमीन से, पवित्र समाधियों तक की, अपनी बढ़िया उड़ान के बारे में सुना। ठीक तभी, मेरा खाली पेट, कुलाचें भरते हुये, एक जोरदार चेतावनी देने लगा कि, उसे खाने की आवश्यकता है। स्वामी मठाध्यक्ष ने, मुस्कुराने की कोशिश न करते हुये कहा, ''इसे ले जाओ, ताकि ये कुछ खा सके। मेरा अनुमान है कि इसकी कठिन परीक्षा ने इसे निचोड़ दिया है। तब चोटों की जॉच करने के लिए, जड़ीबूटियों के विशेषज्ञ, आदरणीय लामा चिन को बुलायें। परन्तु पहले उसे खाने दो।''

खाना! ये स्वादिष्ट लगा! ''निश्चितरूप से, आपका जीवन, उतार–चढ़ाव वाला है, लोबसांग'' मित्रवत् रसोईये भिक्षु ने कहा। ''पहले तुम छत पर से उड़ा दिये गये थे और पर्वत के नीचे फैंक दिये गये थे और अब ये मुझे बताते हैं कि, तुम पर्वत की तली में से छत की ऊँचाई तक उड़े हो! एक उतार–चढ़ाव वाला जीवन, और दैत्य इसके संबंध में खुद देखता है!'' अपने परिहासों के ऊपर धीमे–धीमे मुस्कराता हुआ, वह दूर गया। मैंने बुरा नहीं माना, वह मेरे लिये हमेशा उदार था और (उसने) अनेक छोटे–मोटे मामलों में, हमेशा मेरी मदद की है। दूसरे दोस्त ने मुझे शुभकामनायें दीं; एक रगड़ते, तेज आवाज करता हुए गाढ़े प्यार और मेरे पुट्ठे में, टांगों में, दिल से, प्रेम भरी थाप ने, मुझे नीचे देखने के लिये प्रेरित किया। बिल्लियों में से एक (बिल्ला), मेरे ध्यान का अपना हिस्सा लेने के लिए आ गया था। अलसाते हुये, उसकी अपनी जोरदार, जोरदार, पुचकार के लिए, मैंने अपनी उँगलियों को, उस पर, उसकी रीढ़ की हड्डी पर, नीचे की तरफ फिराया। जौ के बोरों की दिशा में से–एक हल्की सी फड़फड़ाहट (हुई), और वह शांति से, एक चमक की तरह गया।

मैं खिड़की की तरफ चला और (मैंने) ल्हासा की तरफ देखा। मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप

के द्वारा नीत (led by), छोटे दल का कोई चिन्ह नहीं था। क्या वह भी तूफान में घिर गये ? मैंने आश्चर्य किया। आश्चर्य भी किया, वे कितनी देर बाद लौट रहे होंगे।''..... कल, तब एह ?'' मैं मुड़ा। रसोइयों में से एक पिछलग्गू, कुछ कहता रहा था और मैंने केवल उसके अंत को पकड़ा। ''हॉ,'' दूसरे ने कहा, वे आज रात को गुलाबबाड़ में रुक रहे हैं और कल लौटेंगे'' ''ओह!'' मैंने कहा। ''क्या आप मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप के संबंध में बात कर रहे हैं ?'' ''हॉ ऐसा लगता है कि, हमें आपके साथ एक और दिन रहना पड़ेगा, लोबसांग'' पिछलग्गुओं में से एक और ने कहा। परन्तु ये मुझे ध्यान दिलाता है–''आदरणीय डॉक्टर आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं; अच्छा हो क्या आप जल्दी करेंगे।''

मैं उदास मन से, ये सोचता हुआ कि इस संसार में अत्यधिक परेशानियॉ हैं, लड़खड़ाता हुआ चला। मेरे शिक्षक को अपनी यात्रा क्यों रोकनी पड़ी और शायद, गुलाबबाड़ लामामठ में, एक दिन और एक रात के लिये रुकना पड़े ? अपने अस्तित्व के उस चरण में, मैंने सोचा कि केवल मेरे ही मामले महत्वपूर्ण थे, और मैंने उस महान कार्य को पूरी तरह से महसूस नहीं किया जोकि, लामा मिंग्यार डोंडुप दूसरों के लिए कर रहे थे। मैं आगे झुककर, गलियारे के साथसाथ अस्पताल के कार्यालय की तरफ चला; वह ठीक बाहर निकलते ही जा रहे थे परन्तु जैसे ही उन्होंने मुझे देखा, उन्होंने मेरी बॉह पकड़ ली और पीछे की तरफ ले चले। ''अब तुम क्या कर रहे हो ? जब कभी तुम पोटाला से आते हो, हमेशा कोई घटना या परेशानी होती है।''

मैं उनके सामने विचारावस्था में खड़ा रहा और (मैंने) हवा और बड़े तूफान के बारे में, उन्हें केवल वह बताया, जो चश्मदीद गवाहों ने देखा था। मैंने उन्हें ये नहीं बताया कि, मैं पहिले से ही स्वर्णिम छत पर था, क्योंकि जैसा मैं जानता था, उनका पहिला विचार होता, इसे गहनतम को सूचित करना।

''ठीक है, अपनी पोशाक उतारो, मुझे तुम्हारी चोटों की जॉच करनी हैं और तब तुम्हारी अवस्था के संबंध में सूचना देनी है।'' मैंने अपनी पोशाक उचकायी और उसे एक नीची मेज पर फैंक दिया। स्वास्थ्यकर्मी घुटनों के बल झुका और जॉच की तथा ये देखने के लिये प्रेरित किया कि, क्या मेरी कोई हड्डी या मांसपेशियॉ तो नहीं टूटी हैं। वह आश्चर्यचकित था, कि टूटी हुई टॉगों को छोड़कर, मेरी चोटें ऐसी थीं, जो कुछ पीली झलक के साथ, नीली–काली खरोंचों से भरी हुईं थीं!

''यहॉ–इसे लो, और अपने आप, अच्छी तरह रगड़ो,'' उन्होंने खड़े होते हुये, और एक ऊॅचे टॉड पर पहुॅचते हुये, और एक चमड़े के जार को, जो किसी जड़ीबूटी की मल्हम से पूरा भरा हुआ था, जिसमें बहुत अधिक दुर्गन्ध आ रही थी, नीचे उतारते हुए कहा। ''क्या तुम इसे यहॉ रगड़ोगे, ''उन्होंने कहा। ''मैं कोरी बकवास नहीं करना चाहता, कुल मिलाकर, ये तुम्हारे खरोंच हैं।'' ''आदरणीय चिकित्साकर्मी,'' मैंने कहा, ''ये सत्य है कि, मेरे शिक्षक को गुलाबबाड़ लामामठ में रुकना पड़ रहा है ?'' ''हॉ, उन्हें वहॉ, एक मठाध्यक्ष का इलाज करना पड़ रहा है, और मुझे आशा नहीं है कि, वे कल शाम से पहले यहॉ आऐंगे। इसलिये तबतक के लिये, हमें आपके साथ ही रहना पड़ेगा'' उसने कहा, और तब कलात्मक तरीके से जोड़ा, ''तुम, हमारे आदरणीय भारतीय आगन्तुक शिक्षक के व्याख्यानों का आनन्द लेने के लिये सक्षम होगे।'' मैंने उसे देखा और एक विचार मेरे मन में आया कि, बूढ़ा चिकित्साकर्मी उस भारतीय शिक्षक से अधिक प्यार नहीं करता, जितना मैं करता हूॅ। तथापि, अभी ये समय, इस मामले में कुछ कहने का नहीं था। सूर्य सिर के ठीक ऊपर था और ये समय था, जबकि मैं व्याख्यानकक्ष की ओर दुबारा जा रहा था।

पहले मैं शयनबीथिका में गया जहॉ मैंने अपनी पोशाक उतारी और उस बदबूदार मल्हम को मला। तब मैंने अपने हाथों को, पोशाक से पौंछा, फिर इसे पहिना, और मैंने अपना रास्ता, वापस व्याख्यान कक्ष की ओर लिया, भारतीय शिक्षक से उतना दूर, जितना मैं कर सकता था, पीछे अपना स्थान लिया।

दूसरे लड़के अन्दर आए, छोटे बच्चे, मध्यम आकार के बच्चे, बड़े बच्चे, सभी आपस में इकट्ठे हुये क्योंकि, एक बहुत ही विद्वान भारतीय शिक्षक की यात्रा, ये एक विशेष अवसर था और ये सोचा गया था कि हम बच्चे, बौद्धमत, जैसा वह दूसरी सभ्यताओं में पढ़ाया जाता है, के सम्बंध में सुनते हुये, कुछ लाभान्वित होंगे।

हम शिक्षक के लिए प्रतीक्षा करते हुये बैठे, बच्चे जोर से छींक रहे थे सूंघ रहे थे। मेरे पास वाले बच्चे, थोड़ा दूर खिसके, इसलिए जबतक शिक्षक आए, मैं एकान्त में, दीवार के विरुद्ध, ठाठ से बैठा हुआ था, बच्चों के अर्द्धवृत के साथ नहीं, जो लगभग बारह फुट दूर था। भारतीय शिक्षक, अपने सुन्दर से छोटे चमड़े के बैग को लिये हुये आए, लेकिन हॉफते हुए, अपने संबंध में संदेहपूर्ण दृष्टि से देखते हुए, उनके नकुए काम कर रहे थे और वह ऊॅची आवाज में सांस ले रहे थे। वह दरवाजे और व्याख्यान पीठ के बीच, आधी दूरी पर रुके और सब तरफ देखा, तब उन्होंने देखा कि मै अकेला बैठा हुआ था। वह मेरी तरफ आये परन्तु शीघ्र ही वापस लौट गए, इतने सारे बच्चों के साथ उसमें रहते हुए, कमरा काफी गर्म था और गर्मी के साथ, मल्हम और अधिक दुर्गन्धयुक्त होती जा रही थी। भारतीय शिक्षक रुके, अपने हाथ अपने कूल्हों पर रखे, और मेरी तरफ घूरकर देखा। ''मेरे बच्चे, इस देश में, तुम सबसे बड़े परेशानी पैदा करने वाले हो, ऐसा मेरा विश्वास है। तुम अपने विश्वासों को, पहाड़ों के बगल से ऊपर नीचे उड़ने में, खराब करते हो। मैंने इसे अपने कमरे में से देखा, मैंने तुम्हें कुछ दूरी पर ऊपर जाते हुये देखा। तुम्हें पढ़ाने के लिये, तुम्हारे विषम क्षणों में, दैत्य को, या वैसे ही किसी को, आना चाहिए। और अब–धत्तेरे की!–अब तुम बदबू मार रहे हो!!'' ''आदरणीय भारतीय शिक्षक,'' मैंने उत्तर दिया, ''मैं बदबू को रोकने में कोई मदद नहीं कर सकता, मैं केवल उस मल्हम का प्रयोग कर रहा हूॅ, जो आदरणीय चिकित्साकर्मी महोदय ने मुझे दी है, और,'' अत्यधिक साहस करते हुए, मैंने आगे कहा, ''ये मेरे लिए सबसे ज्यादा खराब है, क्योंकि ये मसाला मुझमें से, बुलबुलों के साथ, अधिक तेजी से बाहर फूट रहा है।'' उसके चेहरे पर, उसके ओठों पर, एक हल्की सी भी मुस्कान नहीं झलकी, वह एक बगल को मुड़ गया और व्याख्यानपीठ की ओर चला गया।

''हमें अपने व्याख्यानों के साथ आगे चलना चाहिए,'' भारतीय शिक्षक ने कहा, ''क्योंकि मैं तुम्हें छोड़ते हुए और अधिक सभ्यभारत की ओर यात्रा करते हुए, अत्यन्त प्रसन्न होऊॅगा।'' उसने अपने कागजों को व्यवस्थित किया, थोड़ा सा ऊपर नीचे किया, हम सब की तरफ ये देखने के लिए कि क्या हम, कुछ ध्यान दे रहे थे, संदेह से देखा, तब उन्होंने कहना जारी रखा;

''गौतम ने अपने घूमने के दौरान, काफी कुछ विचार किया। वे छः सालों तक घूमते रहे थे, उन्होंने अपना अधिकांश समय, सत्य को खोजते हुये, जीवन के पीछे के उद्देश्य को ढूंढते हुये, सत्य की खोज में लगा दिया था। ज्यों–ज्यों वे घूमे, उन्हें कठिनाईयॉ झेलनी पड़ीं, भूखमरी से, भूख से पीड़ित हुये, और तब उनका पहला प्रश्न था ''मैं क्यों दुःखी हूॅ ?''

''गौतम ने लगातार इस प्रश्न के ऊपर विचार किया, और जब प्रप्रति के सभी प्राणी, उनकी सहायता कर रहे थे, घोंघे उनके सिर को ठण्डा कर रहे थे, पक्षी उनकी भोंहों को उत्तेजित कर रहे थे और बाकी सभी, शांति बनाये हुये थे ताकि, उन्हें विचलित न होना पड़े, उनको जवाब मिला। उन्होंने निश्चय किया कि चार महान सत्य हैं, जिनको उन्होंने 'चार भद्र सत्य (four noble truths)' कहा, जो मनुष्य के पृथ्वी पर टिके रहने के नियम थे।

''जन्म, पीड़ा है, बुद्ध ने कहा। मॉ और बच्चे को दर्द देते हुए, एक बच्चा मॉ से पैदा होता है, केवल दर्द के माध्यम से ही, कोई इस पृथ्वी पर जन्म ले सकता है, और पैदा होने का कार्य, दूसरों को भी, दुःख और पीड़ा पैदा करता है। सड़ना भी पीड़ा है; कोई व्यक्ति जैसे–जैसे बूढ़ा होता जाता है और उसके शरीर की कोशिकायें, परिचित प्रादर्श के अनुसार, उसे फिर से नया कर देने में समर्थ नहीं होती हैं, पतन शुरू हो जाता है, अंग, और लम्बे समय तक, ठीक से काम नहीं करते, परिवर्तन होते जाते हैं,

और पीड़ा होती रहती है। पीड़ा के बिना, कोई बूढ़ा नहीं हो सकता। बीमारी पीड़ा है; एक अंग के असफल हो जाने के साथ, उसे ठीक से काम चलाना, पीड़ा है, दर्द है, जैसे कि, अंग शरीर को, दुबारा नई परिस्थितियों में व्यवस्थित करने के लिए, मजबूर करता है। बीमारी, जो कुछ भी हो, दर्द और पीड़ा उत्पन्न करती है। मृत्यु सभी बीमारियों का अंत है; मृत्यु पीड़ा पैदा करती है, स्वयं मृत्यु का ढंग ही नहीं, वल्कि वे परिस्थितियॉ, जो मृत्यु को लाती हैं, अपने आप में दुःखदायी हैं। इसलिये, हम फिर, दुःखी होते हैं।

पीड़ा उन वस्तुओं की उपस्थिति से उत्पन्न होती है, जिन्हें हम घृणा करते हैं। उनकी उपस्थिति के द्वारा, जिन्हें हम नापसंद करते हैं, हम तनाव में, अवसाद में, रखे जाते हैं। जिन्हें हम प्यार करते हैं, उन चीजों से दूर रख कर, हमको दुःखी बनाया जाता है; जब हम किसी प्रियजन से, शायद ये न जानते हुये कि, हम इससे इस व्यक्ति के साथ दुबारा फिर कब मिलनेवाले हैं, दूर होते हैं, तब हम पीड़ाऐं झेलते हैं, अवसाद से पीड़ित होते हैं, इसके कारण हम दुःखी होते हैं।

''इच्छा करना, जिसे हम चाहते हैं उसे न पाना, पीड़ा का कारण है, ये प्रसन्नता के नष्ट होने का कारण है, दुर्बलता (misery) का कारण है। यही कारण है, कि जैसा हम चाहते हैं और वैसा प्राप्त नहीं कर पाते, तब बदले में, हम पीड़ित होते हैं, दुःखी होते हैं।

भारतीय शिक्षक ने हमारी तरफ देखा और कहा ''बुद्ध, हमारा शुभाकांक्षी बुद्ध, निराशावादी नहीं था परन्तु यथार्थवादी था। गौतम ने अनुभव किया कि, जबतक हम तथ्यों को स्वीकार नहीं करेंगे, कोई आदमी पीड़ा से मुक्त नहीं हो सकता। जबतक कि कोई ये नहीं समझेगा कि, हम क्यों पीड़ित हो रहे हैं कोई आदमी मध्यमार्ग (Middle Way) पर प्रगति नहीं कर सकेगा।''

शिक्षाओं ने, पीड़ाओं के ऊपर काफी जोर दिया है, मैंने सोचा, परन्तु मुझे याद आया कि मेरे प्रिय शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप ने मुझसे क्या कहा था। उन्होंने कहा था, ''लोबसांग, हम ये विचार करें कि गौतम ने, वास्तव में, क्या कहा। उसने ये नहीं कहा कि हर चीज पीड़ा देती है। कोई बात नहीं, धर्मग्रन्थ क्या कहते हैं, कोई बात नहीं, महान शिक्षक क्या कहते हैं, गौतम ने कभी भी, ये नहीं कहा कि हर चीज पीड़ादायक है, उसने वास्तव में ये कहा कि, हर चीज में पीड़ित करने की संभावना होती है, इससे यह स्पष्ट है कि, जीवन की प्रत्येक घटना, दुःख–दर्द या तकलीफ या असामंजस्य में परिणामित हो सकती है। हो सकती है! ये कहीं नहीं कहा गया है कि, हर चीज दर्द ही पैदा करती है।''

यहॉ, उस संबंध में, जो महापुरुषों ने कहा या नहीं कहा, इतनी अधिक गलतफहमी है : गौतम को ये विश्वास था कि पीड़ाऐं, भौतिक पीड़ाऐं, मात्र भौतिक पीड़ाओं से कॉफी आगे तक जातीं हैं। उसने पूरे समय, इस बात पर जोर दिया कि, मन की पीड़ा, भावनाओं की दुष्क्रिया के माध्यम से, जो वह पैदा कर सकता था, किसी भौतिक पीड़ा, या दुःख की पीड़ा की तुलना में, एक अधिक बड़ी पीड़ा, एक अधिक बड़ा असामंजस्य, हो जाती है। गौतम ने बताया ''यदि मैं दुःखी हूॅ तो ये इसलिये है, क्योंकि मैं सुख से नहीं रह रहा हूॅ, क्योंकि मैं प्रप्रति के साथ सामंजस्य में नहीं रह रहा हूॅ। यदि मैं सामंजस्य पूर्वक नहीं रह रहा हूॅ तो ऐसा इसलिए है कि, ये संसार जैसा है, मैंने इसको, इसकी सभी बुराईयों और पीड़ा की सभी संभावनाओं के साथ, वैसा ही स्वीकार करना नहीं सीखा है। असप्रसन्नता के कारणों को अनुभव करते हुए और उन कारणों से बचते हुये, केवल तभी, मैं प्रसन्नता को प्राप्त कर सकता हूॅ।

मैं इस पर सोचते हुये व्यस्त था और ये सोचते हुए कि मल्हम कितनी भयंकर बदबू पैदा कर रही थी, जब भारतीय शिक्षक ने अपने व्याख्यान पीठ को फिर से थपथपाया और कहा, ये भद्र सत्यों में से पहिला है। अब हम दूसरे भद्र सत्य की चर्चा करें।

''गौतम ने अपना उपदेश, अपने शिष्यों को, उनको जो पहिले उनको छोड़ चुके थे, दिया, जबकि शिक्षा से अधिकांश सनसनी जा चुकी थी, परन्तु अब वे फिर से, गौतम के शिष्य बन गये थे। उन्होंने, उनसे कहा, ''मैं तुम्हें केवल दो चीजें, पीड़ा और पीड़ा से छुटकारा पाना, बताता हूॅ। अब ये

पीड़ा के मूल का, उत्पन्न होने का, भद्र सत्य है। ये उत्प्रष्ट प्यास है जोकि, होने के (being), नवीनीकरण (renewal) का कारण उत्पन्न करती है। उत्प्रष्ट प्यास, इन्द्रियजनित सुखों की सहयोगी होती है और अभी यहॉ, अभी वहॉ (now here, now there), संतुष्टि चाहती है। परितुष्टि (gratification) के संबंध में ये इन्द्रियजनित ज्ञानों (senses) की ललक, या सम्पन्नता और सांसारिक वस्तुओं की ललक का रूप ले लेती है।''

''जैसा हमें पढ़ाया गया था, पीड़ा, हमने जो कुछ गलत किया है, उसके बाद आती है। ये शेष विश्व के प्रति, गलत रवैये का परिणाम है। संसार, स्वयं में खराब स्थान नहीं है परन्तु इसके कुछ लोग इसको खराब दिखाने का प्रयास करते हैं, और ये हमारा स्वयं का रवैया, हमारे स्वयं के दोष हैं, जो संसार को इतना खराब दिखता हुआ बनाते हैं। हर एक की इच्छाऐं (desires) या लालसाऐं (cravings) या कामनाऐं (lusts) होती हैं, जो किसी को, उन चीजों को करने को बाध्य करती हैं, जिन्हें वह, अधिक संतुलित मनस्थिति (mood) में, जब वह इसप्रकार की लालसाओं और कामनाओं से मुक्त हो, नहीं करेगा।

बुद्ध की महान शिक्षा थी कि, जो लालसा करता है, वह मुक्त नहीं हो सकता, और एक व्यक्ति, जो मुक्त नहीं है, प्रसन्न नहीं हो सकता। इसलिए, लालसा पर विजय प्राप्त करने के लिए, प्रसन्नता की तरफ आगे बढने का, एक बड़ा कदम उठाना होगा।

गौतम ने सिखाया कि हर व्यक्ति को, अपने लिए प्रसन्नता, खुद ढूंढनी होगी। उसने कहा कि प्रसन्नता है, जो संतुष्टि नहीं देती, ये मात्र एक क्षणभंगुर चीज है और प्रसन्नता का ही एक प्रकार है, जो कोई व्यक्ति पाता है, जब वह हमेशा परिवर्तन चाहता है, ताजे दृश्यों को देखते हुये, नये लोगों से मिलते हुये, हमेशा आसपास मंडराना चाहता है। ये क्षणभंगुर प्रसन्नता है। वास्तविक प्रसन्नता वह है, जो गहरा संतोष देती है, किसी की आत्मा को, असंतोष से मुक्ति प्रदान करती है। गौतम ने कहा, ''जब मैंने देखा कि प्रसन्नता के बाद, बुरे गुण विकसित होते हैं, और अच्छे गुण कम हो जाते हैं, तब इस प्रकार की प्रसन्नता को, छोड़ दिया जाना चाहिए। जब प्रसन्नता के बाद, मैंने देखा कि दुर्गुण गायब हो जाते हैं और अच्छे गुण विकसित होते हैं; ऐसी प्रसन्नता को प्राप्त करना चाहिए।''

''तब हमें, शरीर की बेकार की चीजों के पीछे पड़ने से रुकना होगा, वे चीजें, जो अगले लोक में नहीं ले जातीं, हमको उन चीजों को पाने का प्रयास बंद कर देना होगा। हमें अपनी लालसाओं, जो ज्यों–ज्यों हम उन्हें पोषित करते हैं, वे अधिक, औरअधिक बढ़ती जाती हैं, की संतुष्टि को रोकने के लिए प्रयास करना होगा, और बदले में, हमें सोचना होगा कि हम, वास्तव में, क्या चाहते हैं, हम उसे कैसे प्राप्त करेंगे ? हमें अपनी लालसाओं की प्रप्रति के संबंध में, अपनी लालसाओं के कारण के संबंध में, सोचना होगा और अपनी लालसाओं का कारण जानने के बाद, हम उस कारण को हटाने की चाह कर सकते हैं।''

हमारे शिक्षक, अपने विषय पर बढते जा रहे थे। उन्हें जड़ीबूटी की मल्हम से थोड़ा सा कष्ट हुआ, क्योंकि उन्होंने कहा, ''हम क्षण भर के लिए विश्राम लेंगे क्योंकि, तुम्हारी मानसिकता, जो मैं देख रहा हूँ कि मेरे भारतीय विद्यार्थियों की मानसिकता जैसी बिल्कुल नहीं है, पर मैं अधिक भार नहीं डालना चाहता।''

उन्होंने अपने कागज उठाए, अपनी पेटी में रखे, सावधानीपूर्वक ताला लगाया और जैसे ही वह मेरे समीप चले, उन्होंने अपनी सांस को रोककर रखा। कुछ क्षणों के लिए, दूसरे लड़के, कुछ दूर जाकर उनके कदमों की आवाज समाप्त हो जाने की प्रतीक्षा में, स्थिर बैठे रहे। तब एक मेरी तरफ मुड़ा और उसने कहा, छी, छी, लोबसांग, तुम बदबू मार रहे हो! ऐसा इसलिए हो सकता है कि तुम, उनके साथ ऊॅचे नीचे उड़ते हुए, स्वर्गों में दैत्यों से मिलते–जुलते रहे हो।'' मैंने पूरे तर्कपूर्वक उत्तर दिया, ''ठीक है, यदि मैं दैत्यों के साथ मिलता–जुलता रहा हूँ, मुझे उनके साथ स्वर्ग के लिये नहीं उड़ना चाहिए था,

परन्तु दूसरी तरफ, और जैसा कि हर आदमी जानता है, मैं ऊपर उड़ा।'' हम तितर–बितर हुये और अपने–अपने रास्तों पर चले। मैं खिड़की पर गया और विचारमग्न होकर, आश्चर्य करते हुए देखा, कि मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, गुलाब बाड़ लामामठ में, क्या कर रहे होंगे, आश्चर्य करते हुए कि मैं इन भारतीय शिक्षक के साथ, जिन्हें मैं पूरी तरह से नापसंद करता हूँ, समय को कैसे काट पाऊँगा। मैंने सोचा कि, यदि वह उतने ही अच्छा बौद्धमतानुयायी होते, जैसा वह स्वयं को मानते थे, तब उनमें छोटे बच्चों के प्रति, अधिक समझ और भावनाऐं होनी चाहिए थीं। जब मैं सोचता हुआ यहॉ खड़ा था, एक नौजवान लामा जल्दी से कमरे में आया। ''लोबसांग'' उसने कहा। ''जल्दी आओ, गहनतम तुम्हें मिलेंगे।'' तब वह रुका और उसने कहा, ''छी! छी! जो कुछ भी तुमने किया है'' इसलिए मैंने उन्हें जड़ीबूटियों की मल्हम के संबंध में बताया और उसने कहा, ''इसके पहिले कि तुम अंतरतम से मिलो, हमें ये देखने लिए कि इस दुर्गन्ध से छुटकारा पाने के लिए क्या किया जा सकता है, हमें स्वास्थ्यकर्मी के पास जाने की जल्दी करनी चाहिए। आओ–जल्दी से।''

अध्याय पॉच

हम साथ–साथ, गलियारे में नीचे की तरफ, अस्पताल के कार्यालय की तरफ, दौड़े। साथ साथ ? नहीं, बिल्कुल नहीं ! नौजवान लामा ने ही दौड़ लगाई, मैंने दोषयुक्त टॉगों से उसका पीछा किया, क्योंकि उसने मेरी पोशाक के सामने के हिस्से को पकड़ रखा था और वह मुझे खींच रहा था। मै स्वयं के प्रति, जितना ज्यादा हो सकता था, जितना मेरी सांस मुझे करने दे सकती थी, बड़बड़ाया और बुदबुदाया। मैं हवा द्वारा, जमीन से छत के ऊपर, उड़ा दिया गया और अब हर आदमी मुझे चारों ओर धकिया रहा था। ओह! मैंने सोचा, अब मैं लगभग विश्वास कर रहा हूँ कि, मैं ऊपर उड़ा दिया गया था। ओह! मैं आश्चर्य कर रहा था कि यदि अंतरतम जान जायें, तो वे क्या सोचेंगे!

हम कोने के आसपास जल्दी चलने लगे और तेजी से कार्यालय में घुसे। स्वास्थ्यकर्मी त्सम्पा खा रहा था। हमें देख कर वह रुका और देखने लगा; मुझे दुबारा देखकर, उसका मुँह खुला का खुला रह गया और उसका हाथ, कटोरे और मुँह के बीच में स्थिर हो कर रह गया। ''तुम फिर ? तुम ? अब तुमने क्या किया है ?'' नौजवान लामा ने उत्सुकता से, उत्तेजना से हॉफते हुए और सांस की कमी से, हकलाते हुए शब्दों के झरने को,–अपनी खुद की जवान को, लगभग अपनी आवाज की गति के साथ खोलते हुए, उंडेल दिया।

''अंतरतम, अब वह लोबसांग को देखना चाहते हैं। हम क्या कर सकते हैं ?'' स्वास्थ्यकर्मी ने जैसे ही अपना कटोरा जमीन पर रखा, सांस भरी और अपनी उँगलियों को अपनी पोशाक से पोंछा। ''यदि मैं उसे इस तरह ले गया, तो वह उसे केवल देखेंगे ही नहीं वल्कि सूघेंगे,'' नौजवान लामा ने तेजी के साथ बड़बड़ाते हुये कहा। ''ए! ए! हम उसे मधुर बनाने के लिए क्या कर सकते हैं ?'' स्वास्थ्यकर्मी मुँह बन्द करके मुस्कराया और जब उसने गहनतम का विचार किया, तब शीघ्रता से गंभीर हो गया। ''आह!'' उसने कहा। ''मैंने इसके साथ केवल मजाक किया था, मैं एक नई मल्हम की जॉच कर रहा था और यह उपलब्ध था। ये भी एक मरहम है, जो अपनी गंध के कारण, कुत्तों को दूर रखने के लिए, खम्भों और दीवारों पर फैलाई जाती है परन्तु ये खरोंच पर लगाने की मरहम है। अब, मुझे सोचने दो!''

नौजवान लामा और मैंने कुछ हताशा के साथ, एक दूसरे की तरफ देखा। कुत्ते भगानेवाली, ठीक है, इसने निश्चितरूप से मुझे, भगानेवाला बना दिया है, परन्तु अब हम क्या कर सकते हैं ? इसलिए, बूढे आदमी ने मेरे साथ एक मजाक किया, उसने किया ? ठीक है, मैंने सोचा, अब मजाक उसके साथ था–इससे पहले कि दलाईलामा इस संबंध में कुछ जान पाऐं, वह इस दुर्गन्ध से कैसे छुटकारा पा रहा था ? वह अपने पैरों पर उछला और संतोष के साथ, अपनी उँगलियों को नचाया। ''अपने पोशाक से पोंछो,'' उसने आदेश दिया। उसने मेरी पोशाक को दुबारा से झड़ाया। स्वास्थ्यकर्मी बगल के कमरे में गया, कुछ मिनट बाद, वह एक चमड़े के बर्तन के साथ, जिसमें मधुर सुगन्धवाला एक द्रव भरा हुआ था, बाहर निकला। मुझे अपने कार्यालय में एक छोटी नाली के ऊपर धकेलते हुए, और उसने बर्तन के ऊपरी सिरे से, पूरे द्रव को मेरे ऊपर, मेरे सिर के ऊपर, उंडेल दिया।

मैं उछला और उछला, पदार्थ कड़वा कसैला था और मैंने सोचा कि मेरी खाल उधड़ जाएगी। जल्दी से, एक चिथड़े को पकड़ते हुए, उसने मेरे शरीर को पोंछा, उसे पूरी तरह से गुलाबी, बहुत चुस्त परन्तु मधुर गन्धवाला बना दिया। ''वहॉ!'' वह संतोष के साथ जोर से चिल्लाया। ''तुम मेरे लिए बहुत दु :खदायी रहे हो, शायद ये दर्दभरा इलाज, तुम्हें अत्यधिक आवश्यकता के समय को छोड़कर, तुमको अन्य किसी समय आने से निरुत्साहित करेगा।'' वह दूसरे कमरे में गया और एक साफ पोशाक पहिने हुए वापस लौटा। ''इसे पहिनो,'' उसने आदेश दिया। ''हम अंतरतम के पास तुम्हें इस तरह कौआ सा दिखते हुए, नहीं जाने दे सकते।'' पूरे शरीर में खुजाते हुए और चींटी सी रेंगते हुये, मैंने कपड़े पहिने। पोशाक के मोटे कपड़े ने, मामलों को और अधिक खराब बना दिया, परन्तु नौजवान लामा और

स्वास्थ्यकर्मी को इसका ख्याल आता हुआ नहीं दिखा ! ''जल्दी ! जल्दी !'' पहिले ने कहा। ''हमें समय व्यर्थ नहीं गवाना चाहिए।'' उसने मेरी बॉह पकड़ी और मुझे दरवाजे की तरफ ले गया। मैं गीले सुगन्धित पैर के निशानों को फर्श पर छोड़ते हुए, अनिच्छापूर्वक चला। ''रुको!'' स्वास्थ्यकर्मी चीखा। ''उसे चप्पल पहिन लेनी चाहिए!'' हड़बड़ी में वह गायब हो गया और तब एक जोड़ी चप्पल लाता हुआ निगाह में आया। मैंने अपने पैर उनमें डाले और ये पाया कि वे मुझसे दुगने आकार के व्यक्ति के लिए भी काफी बड़ी थीं।

''ओह!'' मैं दुःख से चिल्लाया। ''ये बहुत बड़ी हैं, मैं उनके ऊपर गिर पड़ूँगा या उन्हें खो दूँगा। मुझे अपनी (चप्पलें) चाहिए!'' ''ओह ! क्या तुम वही नहीं हो ?'' स्वास्थ्यकर्मी ने छपाक से मारा। ''मात्र तकलीफों का एक पिटारा, हमेशा तकलीफों में। रुको ! मैं तुम्हारे लिए, तुम्हारे नाप की लाता हूँ, अन्यथा तुम गहनतम की उपस्थिति में गिर पड़ोगे और इसलिए मेरा अपमान कराओगे।'' वह कुछ ढूंढते हुए और टटोलते हुए, मुँह ही मुँह में बड़बड़ाया और तब चप्पलों का एक जोड़ा मुझे दिया, जो पहिले से अधिक संतुष्टिदायक नाप की थीं। ''जाओ !'' वह जोर से बोला। ''जबतक कि तुम मर नहीं रहे हो, यहॉ दुबारा वापस नहीं आना!'' वह मुझे लांघते हुए मुड़ा और अपने बीच में छोड़े हुए खाने को, दुबारा खाना शुरू कर दिया।

नौजवान लामा, चिंता और उत्तेजना से छटपटा रहा था। ''मैं देरी को किस प्रकार से समझाऊँगा?'' उसने कहा, मानो मैं उसे उत्तर दे सकता था। वह तेजी से गलियारे की तरफ गया और जल्दी ही एक दूसरे नौजवान लामा के द्वारा, आगे ले जाया गया। ''तुम कहॉ थे?'' उसने कुछ झुंझुलाहट के साथ पूछा। ''अंतरतम प्रतीक्षा कर रहे हैं–और उन्हें प्रतीक्षा नहीं करायी जानी चाहिए!'' ये समझाने का समय नहीं था।

हमने गलियारों की तरफ ऊपर फर्श पर, और उसके ऊपर के फर्श पर–और इसके आगे भी एक और फर्श पर चढते हुए, जल्दी की। अंत में, हम दो बड़े संतरियों के द्वारा संरक्षित, एक बड़े दरवाजे के पास पहुँचे। दोनों नौजवान लामाओं को पहिचानते हुए, बे बगल से हट गए और हम दलाईलामा के निजी कक्षों में प्रविष्ट हुए। अचानक ही पहला नौजवान लामा, रुककर फिसल गया और उसने मुझे एक दीवार के विरुद्ध धकेल दिया। ''शांत बने रहो'' उसने कहा। ''मैं ये देखूँगा कि तुम सुव्यवस्थित हो।'' एक तह को यहॉ से खींचते हुए और दूसरी तह को वहॉ ढांकते हुए, उसने ऊपर से नीचे तक मुझे देखा। ''पीछे मुड़ो,'' उसने आदेश दिया, जब उसने, यह आशा करते हुए कि अब मैं एक सामान्य छोटे वेदीसेवक की तुलना में अधिक फूहड़ नहीं था, सावधानीपूर्वक, मुझे देखा। मैं अपना चेहरा दीवार की तरफ करते हुए मुड़ा। उसने फिर से, मेरी पोशाक को खींचा, झटका दिया और सीधा किया। ''तुम घायल टॉगों वाले, वही लड़के हो, ठीक है, अंतरतम इस बात को जानते हैं। यदि वह तुम्हें बैठने को कहें– भव्यता के साथ बैठना, उतनी भव्यता के साथ बैठना, जितना कि तुम कर सकते हो। ठीक है, पीछे मुड़ो।'' दूसरे नौजवान लामा, जो जा चुका था, को देखते हुए, मैं मुड़ा। हम खड़े रहे और प्रतीक्षा की। हमने तब तक प्रतीक्षा की, जबतक कि मैंने ये नहीं सोचा कि मेरे घुटने जवाब दे जायेंगे। सब तरफ भागदौड़ और हमने प्रतीक्षा की, मैंने सोचा। मुझे एक भिक्षु क्यों होना पड़ता है?

अंदरवाला दरवाजा खुला और एक प्रौढ़ लामा बाहर आया। नौजवान लामा झुका और वापस हुआ। उच्च अधिकारी, चूँकि वह प्रौढ़ लामा था, के प्रति, मेरी तरफ देखा, ऊपर से नीचे तक मेरी तरफ देखा और पूछा, ''क्या तुम बिना सहायता के चल सकते हो ?'' ''पवित्र स्वामी !'' मैंने जवाब दिया, ''मैं मुश्किल से ही चल सकता हूँ।'' तब आओ,'' उसने, घूमते हुए और धीमे से, मुझे दूसरे कमरे में रास्ता बताते हुए, उसे पार करते हुए और एक गलियारे में आते हुए कहा। उसने एक दरवाजे पर थपथपाया और मुझे बाहर ही प्रतीक्षा करने का इशारा करते हुए प्रवेश किया। ''आपकी पवित्रता (your holiness),'' मैंने उसकी सम्मानपूर्ण आवाज को कहते हुए सुना। ''बच्चा लोबसांग। वह ठीक से चल

नहीं सकता। स्वास्थ्यकर्मी कहता है कि, उसे बुरी तरह खरोचें आई हैं और उसकी टॉगों के जख्म, अभी भी, भरे नहीं हैं।'' मैं उत्तर को सुन नहीं सका परन्तु वह प्रौढ़ लामा बाहर आया और फुसफुसाया : ''अंदर जाओ, खड़े होकर, तीन बार झुको और तब, जब ऐसा कहा जाए, आगे बढो। धीमे चलो–गिरो नहीं। अब अंदर जाओ!''

उसने धीमे से मेरी बॉह पकड़ी और मेरे पीछे के दरवाजे को बंद करते हुए और बाहर निकलने से पहिले, दरवाजे में से ये कहते हुए, लेकर चला, ''आपकी पवित्रता, बच्चा लोबसांग!'' डर और भावनाओं से अंधा होते हुए, मैं हिचकिचाहटपूर्ण तरीके से तीन बार झुका, जिसमें मैंने आशा की कि मैं ठीक दिशा में था। ''आओ! मेरे बच्चे, आओ और यहॉ बैठो,'' गहरी गर्म आवाज ने कहा, एक आवाज, जिसे मैं इससे पहले, अपने पूर्व मिलन के दौरान, सुन चुका था। मैंने ऊपर देखा और पहले केशरिया पोशाक को, चमकीली धूप की रोशनी में, जो खिड़की में से बहती हुई आ रही थी, मुलायम तरीके से चमकते हुए देखा। केशरिया बाना! कुल मिलाकर, एक प्रकार (type), परन्तु पक्का चेहरा, उसका चेहरा, जो निर्णय लेने का अभ्यस्त था। एक अच्छे आदमी का, पृथ्वी पर हमारे भगवान का चेहरा।

वह जमीन से ऊपर उठी हुई, एक छोटी चौकी के ऊपर बैठे थे। लाल गद्दियॉ, जिनके ऊपर वह बैठे थे, उनकी केशरिया पोशाक के साथ, विभेद (contrast) कर रही थीं। अपने हाथ अपने सामने रखे हुए, वह पद्मासन की मुद्रा में थे और उनके घुटने और पैर, एक सुनहरे कपड़े से ढके हुए थे। उनके सामने एक नीची मेज थी, जिस पर थोड़ी सी वस्तुऐं रखी थीं, एक छोटी घंटी, आभूषण का एक डिब्बा, एक प्रार्थनाचक्र, और राज्य के कागजात। उनकी मूछें थीं और उनका सिरा, उनकी ठोड़ी के थोड़ा नीचे गिरता था। उनके चेहरे पर एक दयालु मुस्कान थी, परन्तु हॉ पीड़ा के चिन्ह् भी थे। उनके सामने, छोटी मेज के बगल से, फर्श पर, बैठने की दो गद्दियॉ थीं। उन्होंने ये कहते हुए, उनकी तरफ इशारा किया, ''मैं तुम्हारी असमर्थता को समझता हूँ, तुम किसी भी सुखपूर्वक तरीके से बैठो।'' आभार प्रदर्शित करते हुए, मैं बैठ गया क्योंकि आसपास की पूरी भागदौड़, पूरी उत्तेजना–ये सभी, मेरे ऊपर अपना प्रभाव डाल रहीं थीं और मैं थकान की वजह से थोड़ा थरथरा रहा था।

''इसलिए!'' पवित्रतम (holiness) ने कहा।'' तुमने कुछ साहस दिखाए थे ? मैंने इनके संबंध में काफी सुना है, ये काफी डरानेवाले रहे होंगे ?'' मैंने उन्हें, उस महान व्यक्ति को, भलाई और ज्ञान के साथ, पूरा भरा हुआ देखा। अब, मैं जानता था, अब मुझे बताना पड़ेगा कि, क्या हुआ था, क्योंकि मैं उन्हें धोखा नहीं दूँगा। ठीक है, तब मुझे–नियम को तोड़ने के लिए वहिष्प्रत कर दिया जायेगा और बहुत ज्यादा ऊॅचा चढ़ने के लिए, बाहर निकाल दिया जाएगा। कोई बात नहीं, मैं नाविक या पतंगों का बनानेवाला होऊॅगा या, मेरा मन विचारों पर ठिठकने लगा–मैं भारत की यात्रा भी कर सकता हूँ और एक व्यापारी बन सकता हूँ।

अंतरतम मेरी तरफ कठोरता से देख रहे थे और जैसे ही मैंने महसूस किया कि वह मुझसे कुछ कह रहे थे, मैं कुछ दुविधा में झूम रहा था। ''आपकी पवित्रता !'' मैंने कहा। ''मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने मुझे बताया था, आप इस संसार में महानतम व्यक्ति हैं और मैं इस सत्य को आपसे छिपा नहीं सकता।'' मैं रुका और थूक को, जो मेरे गले में आ गया था, गटका। ''आपकी पवित्रता,'' मैंने एक मंदी सी आवाज में कहा। मैं सुबह जल्दी उठा और चढ़ गया .....'' ''लोबसांग!'' अंतरतम ने कहा, उनका चेहरा आनन्द से दमक रहा था। ''और मत कहो, मुझे और मत बताओ, मैंने पहले से ही जानता हूँ, मैं खुद भी एक छोटा बच्चा रहा हूँ ओह! बहुत लंबे समय पहले।'' वह रुके और विचारपूर्वक मुझे देखा। ''मैं तुम्हें आदेश देता हूँ, उन्होंने कहा। ''तुम्हें किसी भी समय, इसको दूसरे के साथ कहने की जरूरत नहीं है, तुम्हें इस मामले में, जो वास्तव में हुआ, चुप रहना है। अन्यथा जैसा कि नियम आदेश करता है, तुम्हें बहिष्प्रत कर दिया जाएगा।'' एक क्षण के लिए, वह गहरे विचार में थे, तब उन्होंने, प्रतिक्रियात्मक ढ़ंग से आगे बढ़ाया, ''कई बार, एक चमत्कार होना भला होता है, क्योंकि ये नीचे और कमजोर भाइयों

के विश्वास को मजबूत बनाता है। उन्हें, जो वे कल्पना करते हैं, उसके प्रमाण की आवश्यकता होती है परन्तु प्रमाण, समीप से परीक्षा किये जाने पर, अक्सर भ्रम सिद्ध होता है, जबकि भ्रम, जिसके लिए प्रमाण चाहा गया था, वास्तव में, एक सत्य होता है।''

मध्य–सुबह कां सूर्य, कमरे को सुनहरे प्रकाश से भर रहा था। अंतरतम का केशरिया बाना, ज्यों ही हवा की फुसफुसाहट ने उसकी सिकुड़नों को खोलने का दुस्साहस किया, दमक उठा और आधी लपट (के समान) दिखाई दिया। लाल गद्दियों का अपना प्रभामण्डल होता था और वे पॉलिश किए हुए फर्श के ऊपर, अपने सुर्ख परावर्तनों को डाल रहीं थीं। एक छोटा प्रार्थनाचक्र, खानाबदोश हवाओं में, धीमे से घूम रहा था और उसमें जड़े हुए नगों की फिरोजी आभा, सुनहरी हवा में, नीली सी रोशनी को फैंक रही थी। लगभग सुस्ती से, गहनतम ने अपने हाथ फैलाए और प्रार्थनाचक्र को उठाया, उस पर अनुमान से देखा और फिर वापस नीचे रख दिया। ''तुम्हारे शिक्षक, और पवित्रता में मेरे भाई, मिंग्यार डोंडुप तुम्हारे बारे में बहुत ऊॅचा–ऊॅचा बोलते हैं,'' पवित्रतम ने कहा।'' और तुम्हें अच्छी तरह से जानते हैं। तुम्हारे जीवन में एक महान कार्य है और तुम अधिक से अधिक, अपने शिक्षक और उन जैसे दूसरे व्यक्तियों की देखभाल में रहोगे, इसलिए तुमको कक्षा के अध्ययन से अधिक, और अधिक हटा दिया जायेगा और तुमको उच्चतम स्तर की निजी शिक्षाऐं दी जाऐंगी।'' अंतरतम रुके और मेरी ओर मुस्कान, जो उनकी ऑखों में छिपी हुई थी, के साथ देखा। ''परन्तु तुम्हें, हमारे भारतीय आगन्तुक के साथ व्याख्यानों का ये पाठ्यक्रम, जारी रखना पड़ेगा'' उन्होंने कहा।

इसने मुझे हिला दिया; मैं उस भयानक व्यक्ति को हटा देने की आशा किए हुए था–अपने महान अनुभव की शक्ति के आधार पर, दोपहर बाद के व्याख्यानों में शामिल होने से मुक्त किए जाने की आशा रखता था। अंतरतम ने कहना जारी रखा : ''तुम्हारे शिक्षक आज देर रात में या कल सुबह जल्दी लौटेंगे, वे मुझे मिलेंगे, और अपने विशिष्ट अध्ययनों को जारी रखने के लिए, तुम उनके साथ लौटकर लौह पहाड़ी को जाओगे। विद्वान व्यक्तियों ने तुम्हारे भविष्य का निश्चय कर दिया है, वह हमेशा कठोर होगा, परन्तु अभी तुम जितना ज्यादा पढ़ोगे, बाद में तुम्हारे अवसर उतने ही अच्छे होंगे।'' उन्होंने दयापूर्ण ढ़ंग से अपनी गर्दन हिलाई, और अपनी छोटी घंटी की तरफ पहुॅचे, संगीतमय ध्वनि के साथ, प्रौढ लामा को बुलाते हुए, जो जल्दी करते हुए आया, उसे बजाया। मैं, कुछ परेशानी के साथ, अपने पैरों पर खड़ा हुआ–अपनी छाती को पकड़ते हुए, लज्जाजनक भद्देपन से तीन बार झुका, ताकि पहले की तरह से–मेरा कटोरा और दूसरी चीजें गिर न पड़ें और लगभग प्रार्थना करते हुए कि, मैं ठोकर नहीं खाऊॅ और गिर न पडूॅ, वापस बाहर, पीछे की तरफ खिंचा।

अपनी भोंह पर से पसीने को पौंछते हुए और दीवार के सहारे अपने आपको स्थिर करते हुए, मैंने आश्चर्य किया–आगे क्या ? प्रौढ़ लामा मेरे ऊपर मुस्कुराया (क्योंकि मुझे गहनतम के द्वारा आर्शीवाद दिया गया था) और (उसने) दयापूर्ण ढ़ंग से कहा, ''ठीक है, अब, बच्चे। इतने छोटे बच्चे के लिए, ये बड़ा लंबा साक्षात्कार था। पवित्रतम तुम से प्रसन्न दिखाई दिए। ''अब''– उसने छायाओं की तरफ बाहर देखा ''अब'' ये तुम्हारे लिए, खाने का और भारतीय बौद्ध धर्म के व्याख्यानों की अपनी कक्षाओं में जाने का समय है, ठीक है, मेरे बच्चे, तुम जा सकते हो। ये अधिकारी, तुम्हें संतरियों के बाद तक, पहुॅचा देगा।'' वह दुबारा मेरे ऊपर मुस्कुराया और एक बगल से मुड़ गया। नौजवान लामा, जिससे वह पहले मिला था, एक पर्दे के आसपास दिखाई दिया और (उसने) कहा, ''आओ–इस रास्ते से!'' मैंने लगभग ढुलमुल तरीके से, ये सोचते हुए कि आज, जो अभी आधा भी नहीं गुजरा था, पहले से ही, एक हफ्ते जैसा लंबा दिखाई देता था, उसका अनुगमन किया।

इसलिए एकबार फिर, मैंने रसोईघर का रास्ता पकड़ा और कुछ त्सम्पा मॉगा। इसबार मुझे आदर के साथ व्यवहार किया गया– क्योंकि मैं गहनतम की उपस्थिति में रहा था और पहले से ही ये खबरें उड़ चुकी थी कि, वह मुझसे प्रसन्न हैं! अपना खाना जल्दी से खाते हुए और उसे अभी भी मधुरता

से सूंघते हुए, मैं अपनी क्लास में गया।

हमारे शिक्षक, ये कहते हुए, अपने व्याख्यानपीठ की तरफ खड़े हुए, ''अब हमारे पास तीसरा भद्र सत्य है, सत्यों में से सबसे आसान और सबसे छोटा।

''जैसे गौतम ने सिखाया, जब कोई व्यक्ति, किसी चीज के लिए लालायित होना छोड़ देता है, तब वह उसके साथ जुड़ी हुई तमाम पीड़ाओं से भी, साथ छोड़ देता है; चाह की पूर्ण समाप्ति होने पर पीड़ाऐं समाप्त हो जाती हैं।

''एक व्यक्ति, जिसकी ललक, सामान्यतः दूसरे व्यक्ति की चीजों के लिए तरसने की है, वह लालची हो जाता है–वह, जो दूसरों की चीजों के प्रति लालची हो जाता है, वह दूसरे की चीजों के प्रति मोहित हो जाता है और जब वह उन चीजों को प्राप्त नहीं कर सकता, उसमें रोष उत्पन्न हो जाता है और वह उन ललचाने वाली चीजों के स्वामी के प्रति, नापसंदगी शुरू कर देता है। इससे अवसाद, क्रोध, और कष्ट उत्पन्न होते हैं।

''यदि कोई, किसी चीज की लालसा करता है, जिसे वह पा नहीं सकता, तब अप्रसन्नता होती है। ललक से उत्पन्न होनेवाली क्रियाऐं, दुःख तक ले जाती हैं। प्रसन्नता प्राप्त होती है, जब कोई इच्छा करना बंद कर देता है, जब कोई जीवन को वैसे ही ग्रहण करता है, जैसे वह आता है, बुरे के साथ अच्छा।''

भारतीय ने अपने पन्ने पलटे, कागजों को थोड़ा सा उलटा–पलटा और कहा, ''अब हम, चार भद्र सत्यों में से, चौथे भद्र सत्य की तरफ आते हैं, परन्तु चारों भद्र सत्यों में से चौथा, आठ भागों में विभाजित किया गया है और इसे ''पवित्र आठ गुना पथ (holy eight fold path)'' कहते हैं। इस में आठ चरण हैं, जिन्हें कोई, मांस (शरीर) की इच्छाओं से मुक्ति पाने के लिए, ले सकता है। अब हम इनको देखेंगे। इनमें से पहला है;

''(1) सम्यक दृष्टिकोण (The Right Viewpoint): जैसी गौतम ने शिक्षा दी, किसी को, अप्रसन्नता के ऊपर अपना दृष्टिकोण, सही रखना चाहिए। एक व्यक्ति, जो कमजोर या दुःखी दिखता है, उसे एकदम शुद्धता के साथ, पता लगाना चाहिए कि वह कमजोर या दुःखी क्यों है, उसे खुद की जॉच करनी चाहिए और पता करना चाहिए कि उसकी अप्रसन्नता का कारण क्या है। जब कोई व्यक्ति, अपने लिए यह खोज लेता है कि उसको क्या कारण दुःख दे रहा है, तब वह व्यक्ति, चार भद्र सत्यों में से चौथे को प्राप्त करने के लिए, जो है– मैं प्रसन्नता कैसे पा सकता हूँ, उसके संबंध में कुछ कर सकता है ?

''इससे पहले कि हम जीवन की यात्रा पर, एक शांत मन के साथ, और इस आशा के साथ आगे बढ़ें, कि हम जीवन को जैसा है, वैसा ही चलायेंगे, हमको जानना चाहिए कि हमारे उद्देश्य क्या हैं, जो हमें आठ गुने पथ पर, दूसरे चरण की ओर ले जाता है :

''(2) सम्यक आशा (Right Aspiration): हर कोई किसी चीज के संबंध में 'आशा' करता है, ये मानसिक, भौतिक या आध्यात्मिक प्राप्ति, हो सकती है। ये दूसरों को मदद करना हो सकता है, ये केवल स्वयं को मदद करना हो सकता है परन्तु, दुर्भाग्यवश, मनुष्य बहुत गड़बड़ में हैं, वे अनिर्देशित हैं, भ्रमित हैं, ये देखने में अक्षम हैं कि उन्हें क्या देखना चाहिए। हमें इन सभी व्यर्थ मूल्यों, सभी झूठे शब्दों, को छोड़ देना चाहिए, और इसके साथ–साथ कि हम जिसकी इच्छा करते हैं, स्पष्टरूप से देखना चाहिए कि हम जो हैं और हमें जो होना चाहिए। हमको नकली मूल्यों को त्याग देना चाहिए, जो हमें स्पष्टरूप से, दुःख की ओर ले जाते हैं। अधिकांश लोग, केवल ''मैं, मुझे, और मेरा, ये ही सोचते हैं।'' अधिकांश लोग, अत्यधिकरूप से, आत्मकेन्द्रित होते हैं, वे दूसरे के अधिकारों की बिल्कुल परवाह नहीं करते। यह आवश्यक है कि, हम अपने आपको एक लक्ष्य के रूप में देखें, जिसका अध्ययन किया जाना है, जैसे हम किसी अनजान को देखते हैं; क्या तुम अनजान को पसंद करते हो ? क्या तुम उसे अपना

नजदीकी मित्र बनाना चाहोगे ? तुम जीवन भर के लिए उसके साथ रहना, उसके साथ खाना, उसके साथ सांस लेना, उसके साथ सोना पसंद करोगे? अपने जीवन की सफलता तक पहुँचने से पहले, तुम्हें उचित आकांक्षाऐं रखनी पड़ेंगी और इस उचित आकांक्षा से, ऐसा समझमें आता है कि तुमको चाहिए;

''(3) सम्यक भाषण (Right Speech) : इसका अर्थ है कि, एक व्यक्ति अपनी जुबान पर नियंत्रण रखे, बेकार में बदनाम करनेवाला न बोले, उसे अफवाहों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए, मानो कि वे अफवाहें सत्य हों। उचित भाषण से कोई हमेशा दूसरे व्यक्ति को संदेह का लाभ दे सकता है, और भाषण को, जब वह दूसरे को हानि पहुँचा सकता है, टालते हुए, जब भाषण देना अच्छा हो, केवल तभी बोलते हुए, जब भाषण सहायक होता हो, तभी बोलना चाहिए। भाषण, तलवार से अधिक मारक हो सकता है, भाषण, सब से अधिक जहरीले जहर से भी अधिक विषैला हो सकता है। भाषण, एक राष्ट्र का नाश कर सकता है। इसलिए किसी को हमेशा सही भाषण, देना चाहिए और सही भाषण पैदा होता है यहाँ से :

''(4) सम्यक व्यवहार (Right Behaviour) : यदि कोई उचित ढ़ंग से व्यवहार करता है, गलत ढ़ंग से नहीं बोलता। इसप्रकार, सही व्यवहार, संसारवादी दृष्टिकोण से सही भाषण और सही आकांक्षाऐं।

''उचित व्यवहार का अर्थ है कि, एक व्यक्ति झूठ नहीं बोलता, मद्यपान नहीं करता, चोरी नहीं करता।

''गौतम ने शिक्षा दी कि हम, अपने खुद के विचारों के परिणाम हैं। हम अभी जो हैं, वह हमारे भूतकाल के विचारों से उत्पन्न हुए हैं। इसलिए यदि हम अभी ठीक सोचते हैं, हम अभी ठीक व्यवहार करते हैं, तो हम अपने निकट भविष्य में किसी भी अवसर पर सही होंगे।

''गौतम ने कहा, किसी भी समय घृणा, घृणा से समाप्त नहीं होती; घृणा को केवल प्यार से जीता जा सकता है।'' उसने यह भी कहा, ''एक व्यक्ति को, दूसरे की गुस्से को, प्रेम से जीतना चाहिए एक व्यक्ति की बुराइयों को, दूसरों को, अपनी स्वयं की अच्छाइयों से जीतना चाहिए।''

''जैसा मुझे अक्सर सिखाया गया था, किसी को अपनी अतीन्द्रियज्ञान की क्षमता का प्रमाण नहीं देना चाहिए, किसी को उसके ऊपर, जो आक्रमण करते हैं, आक्रमण नहीं करना चाहिए। गौतम के कहने के अनुसार, उन पर, जो किसी पर गंदी भाषा के द्वारा या पत्थरों के द्वारा आक्रमण करते हैं, किसी को आक्रमण नहीं करना चाहिए। गौतम ने कहा, ''यदि कोई तुम्हें गाली देता है, तो तुम्हें अपना खुद का गुस्सा दबा देना चाहिए और ये पूरा पक्का निश्चय कर लेना चाहिए कि, तुम्हारा मन इससे विक्षुब्ध नहीं होगा और कोई भी क्रोधपूर्ण शब्द, तुम्हारे ओठों से नहीं निकलेगा और तुम, बिना बदला लिए हुए, दयालु और मित्रवत् रहोगे।''

''हमारी बौद्ध धर्म की मान्यताऐं मध्यम मार्ग की, जीवन की आचार संहिता हैं, किसी को दूसरे के साथ, वह करना चाहिए जो दूसरे उसके साथ करें, ऐसा करने की आचार संहिता। पवित्र आठ गुने पथ के ऊपर अगला है :

''(5) सम्यक जीविका (Right Livelihood): बुद्ध की शिक्षाओं के अनुसार कुछ पेशे हैं, जो मनुष्य के लिए नुकसानदेह होते हैं। कुछ पेशे, जो एक सच्चे बौद्धमताबलंबी के द्वारा नहीं चलाये जा सकते। उदाहरण के लिए, एक सच्चा बौद्धमताबलंबी, कसाई या विषों का विक्रेता नहीं हो सकता, गुलामों का विक्रेता या गुलामों का मालिक नहीं हो सकता। एक बौद्धमताबलंबी, नशीले पदार्थों का उपभोग नहीं कर सकता और न ही उनका वितरण कर सकता है। भला बौद्ध, गौतम के समय में, आवश्यकरूप से एक आदमी था, जो अकेला घूमता था या मठ में रहता था।

''(6) सम्यक प्रयास (Right Efforts): सही प्रयासों का एक विशेष अर्थ है; इसका अर्थ है कि किसी को अपनी अधिकांश उपयुक्त गति से, पवित्र आठ गुने पथ पर चलना चाहिए। प्रगति चाहनेवाले व्यक्ति को धैर्यहीन नहीं होना चाहिए और अपने पाठों को, जो सीखने हैं, सीख लेने से पहले, अत्यधिक

तेजी से नहीं चलना चाहिए। परन्तु फिर भी, न ही किसी साधक को, झूठी नम्रता के साथ, पीछे नहीं घसीट़ना चाहिए। एक व्यक्ति केवल, अपनी खुद की आबंटित की हुई गति से ही, प्रगति कर सकता है।

''(7) सम्यक सजगता (Right mindfullness): ये व्यक्ति का मन ही है, जो मनुष्य के कार्यों को नियंत्रित करता है, विचार ही कार्यों का जनक होता है; यदि तुम किसी चीज की सोचो, तो उसको करने के लिए यह पहला कदम होगा। कुछ विचार काफी असामंजस्यपूर्ण होते हैं। भौतिक इच्छाऐं, किसी आदमी को अपने रास्ते से हटा देती हैं और उसको नुकसान पहुॅचाती हैं। कोई आदमी अत्यधिक खाने की या अत्यधिक पोषणयुक्त खाने की इच्छा कर सकता है; यह इच्छा किसी को भी दुःख नहीं देती परन्तु अत्यधिक खाना ऐसा करता है। दुःख और दर्द अधिक खाने से विकसित होते हैं और अत्यधिक खाने और अत्यधिक खाने की इच्छा का अनुगमन करते हैं।

''बौद्ध को याद रखना चाहिए कि भावनाऐं, हवा की तरह से, जो लगातार हर समय बदलती रहती है, अल्पजीवी होती हैं, आती हैं और जाती हैं। भावनाऐं अस्थाई चीजें हैं, जिनके ऊपर विश्वास नहीं किया जा सकता। किसी को, स्वयं को प्रशिक्षण देना चाहिए ताकि, सभी समयों पर, उस व्यक्ति की क्षणिक इच्छाओं को विचार न करते हुए, उसमें उचित सजगता पैदा हो।

''(8) सम्यक मनन (Right Contemplation): जैसे कि गौतम ठीक से जानते थे, योग किसी भी प्रकार से आध्यात्मिक प्राप्तियों का उत्तर नहीं है। योग, कुल मिलाकर, व्यायामों का एक ढ़ंग है, जो मन को योग्य बनाने के लिए इसप्रकार बनाये गये हैं कि, वे भौतिक शरीर को नियंत्रित कर सकें, वे मन के आदेशों पर, शरीर को वशीभूत करने के लिए बनाये गये हैं। वे किसी को आध्यात्मिक उन्नति देने के लिए नहीं बने हैं।

''सही मनन में, किसी को अपने अनर्गल विचारों को नियंत्रित करना होता है, किसी को अपनी खुद की वास्तविक आवश्यकताओं को जानना होता है। सही मनन से, कोई ध्यान लगा सकता है, विचार कर सकता है–ताकि अंतरात्मा से बिना तर्क किए, कि किसी के लिए क्या सही था और उसके लिए क्या गलत, कोई एक निर्णय पर पहुॅच सके।''

भारतीय शिक्षक की आवाज रुक गई और वह वर्तमान में झटके लेता हुआ दिखाई दिया। उसकी ऑखें हमारे ऊपर भटकने लगीं और मुझ पर जाकर टिक गईं। ''तुम !'' उसने, बाहर की ओर फैली हुई उॅगली से इशारा करते हुए कहा। ''मैं तुम्हारे साथ, बात करना चाहता हूॅ, मेरे साथ बाहर गलियारे में आओ।'' धीमे से मैं अपने पैरों पर उठा और दरवाजे की तरफ चला। भारतीय शिक्षक मेरे पीछे आया और अपने पीछे के दरवाजे को उसने बंद कर दिया, तब उसने दुबारा खोला और अपने सिर को, ये कहते हुए, कोने के आसपास रखा ''तुम बच्चे लोगो शांत रहो, तुम्हारी तरफ से एक भी आवाज नहीं, मैं बाहर ही रहूॅगा।'' उन्होंने दुबारा दरवाजा बंद किया और अपनी पीठ उससे टिकाकर खड़े हो गये। ''अब बच्चे,'' उसने कहा ''तुम दलाईलामा से मिलने गए थे; उन्होंने तुम्हें क्या कहा ?'' ''आदरणीय स्वामी,'' मैं जोर से बोला। ''मुझे ये आज्ञा दी गई है कि मैं, जो भी हुआ, उसके बारे में किसी को भी नहीं बताऊॅ, एक भी शब्द न कहूॅ, जो गुजरा था।'' वह मेरी तरफ क्रोध में मुड़े और जोर से चिल्लाए, ''मैं तुम्हारा शिक्षक हूॅ, मैं तुम्हें, मुझे बताने के लिए आदेश देता हूॅ; क्या तुमने मेरा उल्लेख किया ?'' ''मैं आपको नहीं बता सकता, श्रीमान्'' मैंने कहा। ''मैं केवल यह दोहरा सकता हूॅ कि मुझे, जो हुआ, उसके ऊपर कोई भी टिप्पणी करने से वर्जित कर दिया गया है।'' ''मैं, तुम्हारी इस गुस्ताखी और इस अवज्ञा के लिए, और तुम्हारे, सामान्यरूप से असंतोषजनक शिष्यों में होने की, तुम्हारी शिकायत करूॅगा।'' इसके साथ, वह आगे को झुके और मुझे मेरे सिर के बांयी तरफ और दांयी तरफ, जोर से मारा। वे मुड़े और कक्षा में प्रविष्ट हुए, उनका चेहरा गुस्से से जल रहा था। मैंने उनका अनुगमन किया और अपने स्थान पर जाकर बैठ गया।

भारतीय शिक्षक, अपने व्याख्यानपीठ की ओर लौटे और तब उन्होंने अपने कागज उठाए। जैसे

ही एक लामा ने प्रवेश किया, उसी क्षण उन्होंने अपना मुँह खोला, ''आदरणीय श्रीमान्'', लामा ने भारतीय शिक्षक से कहा ''मुझे, आपको मठाध्यक्ष स्वामी से मिलने के लिए, कहने के लिए, कहा गया है और मुझे इस व्याख्यान को जारी रखने का निर्देश दिया गया है। क्या आप मुझे प्रपा करके वह बिन्दु बतायेंगे, जहॉ तक आप पहुँचे हैं, मुझे इसे जारी रखने में प्रसन्नता होगी।'' भारतीय शिक्षक ने, फूले हुए मुँह से, स्थिति का एक मोटा सारांश बताया, और कहा कि वह निर्वाण के संबंध में बताने जा रहे थे। तब उन्होने कहा, ''ये मुझे अधिक आनन्द देता है कि मैं तुम्हारी कक्षा को छोडूँगा, और मैं आशा करता हूँ कि यहॉ वापस नहीं आने से मेरा आनन्द बढ़ सकता है।'' इसके साथ वह घूमे, उन्होंने अपने सारे कागजों को अपने चमड़े के थैले में समेटा, एक जोरदार आवाज के साथ, झंकार के साथ, उसे झटके से बंद किया और लामा को आश्चर्यमय गुस्से के प्रदर्शन के ऊपर छोड़ते हुए, कमरे के बाहर निकल गए। हम मुस्कुराये, क्योंकि हम जानते थे कि अब, चीजें अच्छी होंगी, क्योंकि ये एकदम नौजवान लामा, बच्चों की भावनाओं को समझने के लिए, अभी भी काफी जवान था। ''तुम लोग–कितनी देर से इस व्याख्यान में रहे हो ? क्या तुमने खाना खाया ? उन्होंने पूछा। ''क्या तुममें से कोई कुछ क्षणों के लिए छुट्टी चाहता है ?'' हम सभी उनके प्रति मुस्कराए और उन्हें आश्वासित किया कि, हम ठीक अभी, जाने के उत्सुक नहीं हैं। इसलिए, जब वह खिड़की की तरफ गए और उन्होंने एक या दो क्षणों के लिए बाहर देखा, उन्होंने संतोषपूर्ण ढ़ंग से सिर हिलाया।

अध्याय छेः

लामा, जो हमारा नया शिक्षक थे, ने व्याख्यानपीठ को खिसकाकर एकतरफ रख दिया और हमारे सामने पद्मासन की मुद्रा में बैठ गये। वह जमीन से थोड़ी से उठी हुई गद्दी के ऊपर, जो सभी तिब्बती व्याख्यान कक्षों में मौजूद रहती थी, बैठे। हमारे भोजनकक्षों में, खाने के समय, एक ऊँचा व्याख्यानपीठ होता था, जिसपर पाठक या तो बैठता था या खाने के समय खड़ा रहता था, क्योंकि जबतक हम खाना खाते थे, हमें पूरे समय, इसप्रकार पढ़ना पड़ता था कि, हमारे मन आध्यात्मिक विचारों से भरे रहें, जबकि हमारे पेट त्सम्पा से भरे रहें। खाना और उसके साथ खाने का विचार करना, ठीक नहीं समझा जाता था। दिये जाने वाले औपचारिक व्याख्यानों का रिवाज यह था कि, व्याख्याता व्याख्यानपीठ पर खड़ा होता था, और हम इस तथ्य की कि, हमारे नये शिक्षक, हमारे सामने बैठे हुए थे, प्रशंसा करने की जल्दी में थे। इसने हमें प्रदर्शित किया कि वह दूसरी तरह के आदमी थे।

''ठीक है,'' उन्होंने कहा, अभीतक तुम लोग, सम्यक मन के बारे में सुनते रहे हो, और मुझे आशा है कि तुम अपने मन की सही हालत में हो क्योंकि, मन ही मनुष्य की अनेक परेशानियों का कारण है। भौतिक इच्छायें, विशेषरूप से मठ के समुदाय में, खासतौर से, जहॉ मठ के सभी रहनेवाले ब्रम्हचारी हों, अधिक कष्टदायी हो सकती हैं। इसप्रकार, ठीक मन की अवस्था उत्पन्न करने के लिये, मन को नियंत्रण में रखना–आवश्यक है, क्योंकि, उचित मन की अवस्था प्राप्त कर लेने पर, हम दुःख का परिहार करने में सक्षम हैं, जो तब उत्पन्न होता है, जब हम उन सभी चीजों की आकांक्षा करते हैं, जिन्हें हम अच्छी तरह से जानते हैं कि हम, उन्हें प्राप्त नहीं कर सकते।

तुम जानते हो कि बुद्ध ने हमेशा सिखाया कि मनुष्य विशेषरूप से, बहुधा जिसे कोई दृश्य का प्रभाव कह सकता है, के द्वारा बरबाद हो गये थे। मनुष्य, सामान्य मनुष्य, औरतों से, आदर्श होने की उम्मीद करता है।'' उन्होंने तब, एक बड़े बच्चे की तरफ देखा, और जैसे ही उन्होंने यह कहा, वह मुस्कराया, ''मैं जानता हूँ कि तुम्हारे जैसा एक नौजवान भद्रपुरुष, जो कईबार प्रौढ़ भिक्षु के साथ बाजार में जाता है ऑखों को घुमाना फिराना चाहता है,'' परन्तु बुद्ध ने सिखाया कि ऐसी चीजें भिक्षुओं के लिए अच्छी नहीं हैं क्योंकि, इच्छा से क्रिया थोड़ी ही दूर होती है। विचार, ऐसे कामों को करने के लिए प्रेरित करते हैं, जिन्हें कोई जानता है, वे गलत हैं।''

उन्होंने हम में से हर एक की ओर देखा और यह कहते हुए मुस्कुराये, ''हमको मध्यमार्ग लेना चाहिए, तथापि, जो न तो अत्यधिक अच्छा हो और न ही अत्यधिक बुरा। यहॉ, एक निश्चित राहगीर की, जो एक सड़क के सहारे यात्रा कर रहा था, एक कहानी है; उसने कुछ समय पहले, एक सुन्दर नौजवान महिला को गुजरते हुये देखा था, और वह उससे जान–पहिचान बनाने के लिए, अत्यधिक उत्सुक था। दुर्भाग्यवश, उसे किसी ऐसे उद्देश्य के लिए, जिसकी हम चर्चा नहीं करना चाहते, सड़क से बगल से झाड़ियों में जाना पाड़ा, और उसे डर लगा कि इस बीच में, वह नौजवान महिला उस से (वहॉ से) गुजर जायेगी। उसने एक बूढ़े बौद्ध भिक्षु को साथ आते हुए देखा और उसने उसे यह कहते हुए रोका, ''आदरणीय स्वामी, क्या आप मुझे बतायेंगे कि, क्या आपने, अपनी यात्रा में, एक अत्यंत सुन्दर नौजवान महिला को इस रास्ते से गुजरते हुये देखा है ?'' बूढ़े भिक्षु ने खाली ऑखों से उसकी तरफ देखा और उत्तर दिया, ''एक सुन्दर नौजवान महिला ? मैं तुम्हें नहीं बता सकता। मुझे सम्यक मन की अवस्था में प्रशिक्षित किया गया है, इसलिए ऐसा है कि मैं तुम्हें केवल यह बता सकता हूँ कि कुछ समय पहले, यहॉ से हड्डियों का एक ढ़ॉचा गुजरा था, वह आदमी था या औरत, मैं नहीं कह सकता, क्योंकि इस सब में मेरी कोई रुचि नहीं थी।''

लामा ने दबी मुस्कान से मुस्कुराते हुए कहा, '' ये सभी उचित सीमाओं के अंत के परे ले जाये गए, वास्तव में, एक बेहूदा सीमा तक ले जाये गए सम्यक मन की स्थिति है। तथापि, हम, एक विषय के साथ, जिसे बहुत, बहुत अधिक गलत समझा जाता है, आगे चलें।''

वह हमें यह बताते गए कि, आठ गुने पथ एक लक्ष्य था, एक उद्देश्य, जिसके अंतर्गत, जो उस पथ का अनुगमन करेंगे, एक बहुत ही वांछित अंत, निर्वाण को प्राप्त करेंगे। निर्वाण का, वास्तविक अर्थ है, इच्छाओं का अंत करना, नाराजगी और लालचीपन का अंत करना। लालचीपन और शरीर की दूसरी कामनाओं का अंत, एक आदमी या औरत को, आनन्द की स्थिति प्राप्त करने में समर्थ बनाता है।

निर्वाण शरीर से, शरीर की लालसाओं और कामनाओं से मुक्ति है। किसी भी प्रकार से यह नहीं समझा जाता है कि ये सभी अनुभवों की समाप्ति है, न ही इसका अर्थ सभी ज्ञान और सभी जीवनों का अंत है। यह कहना गलत होगा कि, निर्वाण का अर्थ, कुछ नहीं अवस्था में अस्तित्व रखना है; यह एक गलती है, जो अनभिज्ञ लोगों के माध्यम से, उन चीजों के बारे में बात करते हुए, जिनको वे कतई नहीं समझते, पाप करती है।

निर्वाण, कामनाओं से मुक्ति है, मांस के शरीर की विविध भूखों से मुक्ति है। निर्वाण केवल आनन्ददायक चिन्तन ही नहीं है, वास्तव में, ये आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण होना और शारीरिक इच्छाओं से मुक्ति पाना है। निर्वाण की अवस्था, एक शुद्ध अवस्था में होना है, शुद्ध जहॉतक कि भौतिक वस्तुओं के लिए कामनाओं का अभाव, संबधित है। परन्तु फिर भी, यदि किसी ने निर्वाण, अर्थात् शरीर की इच्छाओं से मुक्ति प्राप्त कर ली है, वह फिर भी, आध्यात्मिक चीजों को सीखना, और अस्तित्व के दूसरे तलों में आगे बढ़ना, जारी रखता है।

बौद्ध, अस्तित्व के चक्र में, विश्वास करते हैं, उनका विश्वास है कि मानव जाति, पृथ्वी पर पैदा हुई है, पृथ्वी पर रहती है, और तब मर जाती है और तब दूसरे शरीर में, वापस, फिर पृथ्वी पर आती है, अर्थात् पृथ्वी पर दुबारा जन्म लेती है, ताकि पिछले जीवन में नहीं सीखे जा सके पाठ, इस जीवन में समावेशित किये जा सकें।

निर्वाण कोई स्थान नहीं है, ये कोई स्थान नहीं है, जिसे कि तुम किसी नक्शे पर बता सको। ये मन की अवस्था है, मन की अवस्था। ये विचारपूर्ण होने की अवस्था है; किसी अच्छे बौद्ध भिक्षु के लिए, विचारपूर्ण होना, प्रमुख मूल्यवान वस्तु है, जबकि (बौद्धमत में) विचारहीनता से घृणा की जाती है।

निर्वाण का अर्थ, इस पृथ्वी पर जीवन समाप्त होने के समय, व्यक्तिगत चेतना का नाश नहीं है, (वल्कि) इसका अर्थ एकदम विपरीत है। यहॉ आगे, एक और निर्वाण है, जिसे भारतीय भाषा में परिनिर्वाण कहा जाता है।

''एक अच्छा बौद्ध,'' हमारे लामा शिक्षक ने कहा; '' वास्तव में, एक सुखी व्यक्ति होता है, एक व्यक्ति, जो दूसरों की मदद करने से जुड़ा रहता है, एक व्यक्ति, जिसने दूसरों के लिए विचार किया है। अच्छा बौद्ध, किसी व्यक्ति के पदों या जातियों को, जहॉ ये अभी चल रही हैं, जैसे कि भारत, क्योंकि कोई व्यक्ति, केवल अपने माता–पिता की संपदा के कारण, सुख की अवस्था प्राप्त नहीं कर सकता । एक राजकुमार दुःखी हो सकता है, जबकि एक भिखारी सुखी। जन्म, किसी को भी ये खोजने के योग्य नहीं बनाता कि, पीड़ाओं को कैसे हराया जाए, किसी के माता–पिता के बटुए की स्थिति, इसके साथ कुछ नहीं कर सकती। निकम्मेपन से मुक्ति का एक ही व्यवहारिक रास्ता है, आठ गुने पथ पर चलना, जो किसी को आत्मज्ञान देता है, और जैसे ही किसी के पास आत्मज्ञान आता है, उसे सदा बने रहनेवाला आनन्द मिलता है।''

लामा ने हम में से, हर एक की ओर देखा और कहा, ''मैं मानता हूॅ कि तुम यह सोचते हो कि हम बौद्धमतावलम्बी, दुनियॉ के किसी भी धर्म के अनुयायियों में सर्वाधिक संख्या में हैं। तुम सोचते हो कि हम सब से अधिक महत्वपूर्ण हैं। ठीक है, परन्तु ये सही नहीं है, क्योंकि वर्तमान समय में संसार की आबादी का 1/5 भाग ही बौद्ध है। थाईलैण्ड, श्रीलंका, बमा[3], चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, और भारत में कुछ निश्चित संख्या में बौद्ध हैं। बौद्धमत की तमाम भिन्न–भिन्न शक्लें हैं, और वे सभी एक ही स्रोत से

3 अनुवादक की टिप्पिणी : दक्षिण–पूर्व का एक देश, जो वर्तमान में म्यांमार कहलाता है।

निकली हैं, इस कारण से ये स्पष्ट है कि हम लोगों के बीच में, आपस में मतभेद न हों, चूँकि हम सब, समान पूर्वज से निकले हैं। हम में से हर एक, अपने–अपने तरीके से सोच सकता है। अपने व्याख्यानों में, काफी बाद में हम, धर्म के उपयोगों के बारे में बतायेंगे, परन्तु इससमय, मैं चाहता हूँ कि तुम, इन ''शरणों (Refuges)'' को गाओ।

''तीन शरण
बुद्धम् शरणम् गच्छामि
धम्मम् शरणम् गच्छामि
संघम् शरणम् गच्छामि।''

लामा ने कहा, तुम बच्चों को, इसे प्रातःकाल और रात में, सोने से पहले, कहना चाहिए। तुम्हें इसे अपने अवचेतन में बैठा लेना चाहिए। तुम्हें इसे महान त्याग, जो बौद्धधर्म के संस्थापक ने किया, जब उन्होंने परिवार, राजमहल को छोड़ दिया और भिक्षु की अपनी पोशाक को धारण किया, के प्रतीकात्मकरूप में याद करना चाहिए।''

''तुम बच्चे लोग,'' उन्होंने (कहना) जारी रखा, शरीर के प्रलोभन को त्याग दोगे। तुम सच्चरित्र, अच्छे आचरण वाले, शुद्ध विचारों के नौजवानों के रूप में प्रशिक्षित होओगे, क्योंकि अगले दिनों में, जो हमारे देश के ऊपर, दुःख के दिन, बुराइयों की छाया लानेवाले दिन, आनेवाले हैं क्योंकि, भयानक चीजें हमारे प्रिय देश के ऊपर होकर गुजरेंगी। अच्छे चरित्र के नौजवान लोगों के लिए, हमारे लिए, उस महान अज्ञात में बाहर जाना और अपनी खुद की सभ्यता को जीवित रखना, आवश्यक होगा। इसलिए ऐसा है कि, इस पीढ़ी के तुम लोगों को अध्ययन करना चाहिए और अपने आपको शुद्ध बनाना चाहिए, क्योंकि हम पुरानी पीढ़ी के लोग, तुम्हारा अनुगमन करने में सक्षम नहीं होंगे।''

उन्होंने हमें बताया, ''अपनी यात्राओं में तुम अनेक ज़ेन (Zen) बौद्धों से मिलोगे। तुम आश्चर्य करोगे कि, जो पढ़ाते हैं, क्या उनके लिये तप और ब्रत आवश्यक हैं, क्योंकि उन सब ज़ेन बौद्धों के लिये, और वह सब जो उन्हें पढ़ाता है– जैसे कि किताबें या धर्मग्रन्थ–उस रास्ते के, जिसपर कोई चलेगा, केवल संकेतक मात्र हैं, जैसेकि बाहर की ओर इंगित करती हुई उँगली। उस आदमी का विचार करो, जिसको तुमने मुद्रिकापथ में गोलगोल घूमते हुए देखा है, हमारे तीर्थयात्रियों के ऊपर सोचो; निरीक्षण करो कि जब कुछ पथप्रदर्शक या घुमक्कड़ लोग, जैसे कि हम अपनी खिड़कियों के ऊपर इशारा करते हैं, किसी चीज की ओर संकेत करते हैं और उस लक्ष्य के बजाय, जिस पर इनका इशारा था, इंगित की गई उंगलियों की ओर, तीर्थयात्रियों की निगाहें कैसे उनका सटीक पीछा करती हैं। ये एक तथ्य है कि, अज्ञानी हमेशा, इसके बजाय कि, जिस तरफ को ये उंगलियाँ संकेत करती हैं, उस दिशा में देखा जाए, संकेत की हुई उँगलियों के ऊपर देखता है। ये एक तथ्य है, जो बौद्धधर्म के एक तबके को पता था, जो ज़ेन बौद्ध के रूप में प्रसिद्ध हुआ। उनका विश्वास है कि कोई, केवल अपने खुद के सत्य के अनुभव के आधार पर, ही सत्य को जान सकता है। सत्य को, कहे हुए शब्दों को, न तो केवल सुनने मात्र से, और न ही छपे हुए कागजों को पढ़ने से जाना जा सकता है। कोई केवल अपने वास्तविक व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर, इससे लाभ उठा सकता है।

''कोई पढ़ने में, पवित्र ग्रन्थों के अध्ययन में, और विद्वानों के व्याख्यानों को ध्यान के साथ सुनने में, रुचि रख सकता है। परन्तु, किसी आदमी के खुद के मन के काम करने के लिए, सभी छपे हुए, और सभी लिखे हुए शब्द, केवल ईंधन की भाँति सेवा करते हैं, ताकि जब किसी को अनुभव प्राप्त हो, तो उस अनुभव को, दूसरों के द्वारा स्थापित किए हुए, महान सत्यों के साथ जोड़ा जा सके।'' वह मुस्कुराए और उन्होंने कहा, ''इस सबका अर्थ है कि केवल सिद्धांतवादी होने के नाते, तुम इससे दूर नहीं जा सकते, तुमको व्यवहारिक आदमी होना पड़ेगा और उसके साथ ही, लिखे हुये शब्दों का विद्यार्थी भी। ये कहा गया था कि, कोई चित्र, एक हजार शब्दों से अधिक मूल्यवान होता है, परन्तु मैं कहता हूँ

कि एक अनुभव, एक हजार चित्रों से अधिक मूल्यवान होता है।''

वह एक क्षण के लिए हिचकिचाए, मुड़े और खिड़की के बाहर की ओर देखने लगे। मेरा हृदय उछल पड़ा क्योंकि मैंने सोचा कि शायद वे मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप को जंगली गुलाबबाड़ लामामठ से लौटते हुए देख लेंगे। परन्तु नहीं, वह मुड़कर फिर हमारी तरफ आए और उन्होंने कहा, ''मैं तुम्हें कुछ ऐसी चीज बताने जा रहा हूँ जो निस्संदेह तुमको झटका देगी और तुम्हें सोचने के लिए मजबूर करेगी कि, ज़ेन बौद्ध असभ्य, गंवार, और पवित्र वस्तुओं को खराब करनेवाले होते हैं! कुछ समय पहले, जापान में, वास्तव में, एक बहुत मशहूर शिक्षक था, एक आदमी, जिसका उसके ऊँचे आदर्शों के लिए, उसके सर्वोच्च ज्ञान के लिए और उसके शुद्धता से रहने के ढ़ंग के लिए, सम्मान किया जाता था। पूरे पूर्वी विश्व में से, विद्यार्थी उसके पास आते और उस स्वामी के चरणों में शीश झुकाते और उसके निर्देशन में अध्ययन करते। एक दिन वह, उत्सवी मंदिरों में से एक में, एक मंदिर, जो हजारों बुद्धों की अनेक मूर्तियों से सजाया हुआ था, मूर्तियॉ, जो विरली, आकर्षक लकड़ियों से खूबसूरती से गढ़ी गई थीं, एक खास व्याख्यान दे रहा था। शिक्षक को अपने सम्मोहित विद्यार्थियों का ध्यान प्राप्त था और तब वह अपने व्याख्यान के मध्य में रुका और उसके विद्यार्थियों ने, आश्चर्य करते हुए कि वह क्या कहनेवाला था, क्योंकि वह वांछितरूप से, एक बहुत बहुत सनकी की उपाधि का सम्मान पाने के योग्य था, अपनी सांसें रोक लीं।

''जैसे ही ये विद्वान मनुष्य, एक तरफ को मुड़ा और उसने सब से पास की लकड़ी की बुद्ध की मूर्ति को उठाया और उसे आग में झौंक दिया। विद्यार्थी सदमे और भय में उठे। एक क्षण के लिए, वहॉ बातचीत, विरोध, हाथों का हिलाया जाना, और पैरों का पीटना, सब शुरू हो गया। परन्तु विद्वान मनुष्य, अपनी पीठ उस आग की ओर, बुद्ध की जलती हुई मूर्ति की ओर, किये हुए शांति से खड़ा रहा। जब सारा कोलहल समाप्त हो गया, उसने कहा कि, हर एक के पास, उनके मन में प्रतिमाऐं हैं, हर व्यक्ति, गहनों, प्रतिमाओं, अनुपयोगी चीजों को, जो मन में जगह घेरतीं हैं, को ठीक वैसे ही, जमा करके रखता है, जैसे कि अनुपयोगी लकड़ी की प्रतिमाऐं, इस मंदिर में जगह घेरती हैं। जैसे ही उसने कहा, उन्नति करने का एक ही रास्ता है, किसी के दिमाग में भरी फालतू चीजों को जला देना, उन चीजों को नष्ट कर देना, जो उन्नति में बाधक हैं। महान शिक्षक मुड़ा और (उसने) अपनी उँगली को, उच्चबुद्धों में से एक के ऊपर रगड़ा; वह वापस कक्षा की ओर मुड़ा और उसने कहा, ''यहॉ धूल है, बुद्ध के ऊपर धूल, परन्तु ये उतनी बुरी नहीं है, जितनी कि तुम्हारे मन के ऊपर की धूल। हम गढ़ी हुई छवियों को नष्ट कर दें, झूंठे विचारों को, जो हमारे अंदर जिंदा हैं, नष्ट कर दें क्योंकि जैसे कोई अपनी गंदी अटारी को साफ करता है, (वैसे ही) जबतक कोई अपने गंदे मन को साफ नहीं कर लेता, वह उन्नति नहीं कर सकता और रास्तों की ऊँचाइयों पर नहीं जा सकता।''

हमारे लामा शिक्षक, हमारी सदमा खायी हुई अभिव्यक्तियों के ऊपर, खुलकर हँसे। उन्होंने कहा, ''ओह! तुम पुरातनपंथी लोग हो! प्रतीक्षा करो, जबतक कि तुम दूसरे लामामठों से बाहर नहीं भगा दिये जाते, प्रतीक्षा करो, जबतक कि तुम दूसरे लोगों के साथ नहीं चलते। तुम पाओगे कि, कुछ लोगों के लिए, धर्म की शिक्षा का कोई उपयोग नहीं है और तुम्हें दूसरे ऐसे भी मिलेंगे, जो अपने मुँह को, बुद्ध का नाम लेने से पहले धो ड़ालते हैं, अपने मुँह को साफ करते हैं ताकि, इस पवित्र नाम को लेने से पहले, उनका मुँह साफ हो जाए परन्तु ये पराकाष्ठाऐं (extremes) हैं, वे जो इसकी अंधभक्ति करते हैं और वे जिनके लिए धर्म का कोई उपयोग नहीं है। धर्म अनुशासन है, जो केवल तभी उपयोगी है, जबकि कोई अपने सामान्यज्ञान, सुधारों और मध्यमार्ग का उपयोग करे और तब धर्म किसी को, सभी समस्याओं का समाधान दे सकता है।''

मैं नहीं जानता, परन्तु मैं मान लेता हूँ कि मुझे भुनभुनाना चाहिए था या कुछ दूसरे चिन्ह् प्रदर्शित करने चाहिए थे, जो उनके ध्यान को आकर्षित कर सकते क्योंकि, वह एक क्षण के लिए

हिचकिचाए और तब धीमे से ऊपर आए और मेरे सामने खड़े हुए और नीचे देखा। ''लोबसांग,'' उन्होंने कहा, ''तुम बहुत दुःख में दिखाई देते हो, तुम बहुत प्रयास करते रहे हो, आज एक सर्वाधिक प्रयास करनेवाला अनुभव। परन्तु तुम्हारे हावभाव से मुझे पक्का यकीन है कि कोई दूसरी चीज, तुम्हें अधिक परेशान कर रही है, और मुझे यह भी पक्का यकीन है कि ये, तुम्हारे शिक्षक अभीतक लौटे नहीं हैं, और आज के दिन लौटेंगे भी नहीं, की तुलना में और अधिक गंभीर है। मुझे बताओ ये क्या है।''

मैंने कामना की कि फर्श फट जाए और मैं, एक ज्वालामुखी के, ठीक नीचे के प्रकोष्ठों में, उसमें अंदर समा जाऊँ,, क्योंकि मुझे, खुद से यह स्वीकार करना पड़ा कि मैं, अवास्तविक चीजों को सोचता रहा हूँ। मैं एकदम भौंतरा होते हुए, उस ढ़ंग पर, जो मुझे जीना पड़ रहा था, दिल से दुःखी था और मैंने विचार किया, शायद, अब ये समय था कि, हमें इस से पार पाना चाहिए।

''आदरणीय स्वामी,'' मैंने कुछ घबराहट के साथ कहा, ''ये सत्य है कि मैं असंतुष्ट हूँ। मेरा मन दुविधा में है, मेरे विचारों में उथल–पुथल चल रही है, क्योंकि मैं कार्रबाई का एक रास्ता लेने के लिए बाध्य हूँ, जो मेरी खुद की इच्छाओं के बिल्कुल भी अनुकूल नहीं है। मुझे अत्यधिक कष्ट उठाने पड़े, और जब मैं, हवाओं से संघर्ष करते हुए, ये सोचते हुए कि मृत्यु हमारी प्रतीक्षा कर रही है, स्वर्णिम छत के ऊपर बैठा, मैं प्रसन्न था क्योंकि, मैंने सोचा था कि मृत्यु, मेरी सभी समस्याओं का अंत कर देगी।''

लामा शिक्षक ने सहानुभूति से मेरी तरफ देखा। उन्होंने अपनी पोशाक को अपने आसपास खींचा और अपनी टॉगों को बॉधते हुए और अपने आपको पद्मासन की मुद्रा में व्यवस्थित करते हुये, मेरे बगल से फर्श पर बैठे। ''लोबसांग!'' उन्होंने कहा। ''हम इस समस्या पर चर्चा करें, और मेरा सुझाव है कि, हम इसपर कक्षा में चर्चा करें क्योंकि, मुझे कोई संदेह नहीं है कि नौजवान लोगों में से अनेक, यहॉ किसी न किसी समय, इसीप्रकार से, कष्ट उठाते हैं। मैं बहुत लंबे समय तक पोटाला में रहा हूँ, लंबे समय तक, और शायद तुम्हारी खुद की, अब की समस्याऐं, बीते गए दिनों में, किसी समय, मेरी रही होंगी।''

आदरणीय शिक्षक,'' मैंने जवाब दिया, ''मेरे पास कोई चुनाव नहीं है, मुझे अपना वैभवपूर्ण घर छोड़ना पड़ा। मुझे अपने माता–पिता, जो वास्तव में, अत्यधिक शक्तिशाली लोग थे, कि द्वारा निकाल दिया गया और मुझे कहा गया कि मुझे पुजारी के रूप में प्रशिक्षित किया जायेगा। चूँकि, मैं एक उच्चपरिवार से आया था, अतः निम्नपरिवार से आने वाले की तुलना में, मुझे जॉच के अनेक दौरों और दुःखों में से गुजरना पड़ा। मुझे अधिक पढ़ना पड़ा, मुझे अधिक पीड़ा झेलनी पड़ी। मेरी किसी गलती के बिना, मेरी बांयी टॉग, हड्डी तक जला दी गई। जबकि मैं तूफान के द्वारा पहाड़ों में, उड़ा दिया गया, मेरी दोनों टॉगें टूट गईं। यद्यपि मैं मुश्किल से ही लंगड़ाकर चल सकता हूँ, यद्यपि मैं निरन्तर दुःख झेल रहा हूँ, परन्तु, मुझे अभी भी कक्षाओं में भाग लेना पड़ रहा है। अब, आदरणीय शिक्षक, मैं कभी भी भिक्षु नहीं बनना चाहता था, परन्तु मेरे पास कोई विकल्प नहीं था, जिसमें से मैं चाहता, मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया गया। धर्म ने मुझे कुछ नहीं दिया।''

लामा ने, काफी समझदारी के साथ, मेरी तरफ देखा और कहा, ''लेकिन, लोबसांग, ये प्रारम्भिक दिन हैं। जब तुम मध्यमार्ग की कार्यप्रणाली को, इस जीवन के और इसके परे के जीवन के नियमों को समझोगे, धर्म तुम्हें बहुत कुछ देगा। तब तुम शान्त हो जाओगे और अत्यंत अधिक समझदारी पाओगे कि जीवन, वास्तव में, क्या है। परन्तु अपनी वर्तमान अवस्था में, तुम क्या होना चाहते हो ?'' ''मैंने सुनहरी छत से बाहर की तरफ देखा और मैंने प्रसन्नता की नदी के ऊपर नाविक को, जिसको हर व्यक्ति प्यार करता है, देखा, और सोचा कि ये कितना मुक्त, कितना सुखदायक जीवन है, एक नदी के ऊपर, पीछे और सामने की तरफ पैडल चलाना, अभिरुचिपूर्ण व्यक्तियों से मिलना, लोग जो अनजाने (अनौखे) ज्ञान के साथ और अनोखी शिल्प आकृतियों के साथ, कुछ समय में लौटने के लिए, भारत से आते हैं, लोग, जो चीन की तरफ जाते हैं, लोग, जो पर्वतों के आगे तक जाते हैं। परन्तु मैं–मैं, यहॉ अनुशासन में बंधा

हुआ, मात्र एक लड़का हूँ, किसी भी चीज को, जिसे मैं करना चाहता हूँ, करने के लिए योग्य नहीं, मुझे हमेशा आदेशों को मानना पड़ता है, हमेशा उन चीजों को सीखना पड़ता है, जिनमें मेरी कोई रुचि नहीं है, हमेशा ये कहा जाता है कि, मेरा जीवन कठिन होगा परन्तु मैं एक विशेष उद्देश्य के लिए काम कर रहा हूँ, कि मैं एक विशेष काम करनेवाला हूँ।'' मैं रुका और मैंने अपनी भौंहों को अपनी आस्तीनों से पौंछा, तब फिर कहना जारी रखा, ''मुझे हमेशा ही, इसप्रकार की कठिनाईयॉ क्यों झेलनी पड़तीं हैं ?''

शिक्षक ने मेरे कंधे के ऊपर अपना हाथ रखा और कहा, '' पूरा जीवन, इस कक्षा के समान है; तुम में से कुछ लोग अनिच्छापूर्वक, कुछ लोग प्रसन्नतापूर्वक, यहॉ आते हो, परन्तु तुम सभी, यहॉ चीजों को सीखने के लिए आए हो, और तुममें से प्रत्येक को अपनी–अपनी गति से सीखना पड़ेगा क्योंकि, कोई भी (व्यक्ति), कोई भी शिक्षक, तुम्हारे विकास को, तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती नहीं थोप सकता, क्योंकि ऐसा करने का मतलब होगा कि तुम्हें विषय का अपूर्ण ज्ञान है। तुम्हें, ज्ञान के संबंध में, तुम्हारी अपनी क्षमताओं के अनुसार, अपनी इच्छाओं के अनुसार, तेजी से या धीमे, अपने तरीके से उन्नति करनी है। पूरा जीवन एक कक्षा की तरह से है; तुम इस जीवन में आते हो मानो कि तुम कक्षा में आए हो। परन्तु, जब तुम इस कक्षा को कुछ मिनटों के समय में ही छोड़ देते हो, ये ऐसा ही होगा जैसे कि इस जीवन में मरना, कक्षा में से मरना। शायद, कल तुम किसी दूसरी कक्षा में जाओगे, जो अधिकांशतः ऐसी ही है, इसी तरीके से, दूसरे शरीर में जन्म लोगे, विभिन्न हालातों में, विभिन्न परिस्थितियों में दुबारा जन्म लोगे। तुम नहीं जानते कि शिक्षक तुमको क्या पढ़ानेवाला है, तुम नहीं जानते कि शिक्षक तुमको क्यों पढ़ा रहा है, परन्तु आनेवाले वर्षों में, जब तुम, हमारी पर्वत श्रंखलाओं की परिधि के परे, एक बड़े संसार में, बाहर जाओगे, तुम पाओगे कि, जो चीजें इस कक्षा में और दूसरी कक्षाओं में तुमने सीखी हैं, तुमको तमाम तरीकों से, जिनको वर्तमान में समझा भी नहीं जा सकता, अत्यधिक मदद करेंगी।''

''ये वही है, जो मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप हमेशा मुझे कहते हैं,'' मैंने उत्तर दिया। ''परन्तु मैं अभी भी नहीं जानता हूँ कि मैं ऐसी चीजों को, जो मुझे दुःखी करती हैं, करते हुए, इन सब चीजों को, अपने साथ कैसे जोड़ सकता हूँ।''

शिक्षक ने, ये देखने के लिए कि दूसरे बच्चे क्या कर रहे थे, आसपास देखा परन्तु दूसरे सभी, अपने इरादों में थे, वे दिलचस्पी दिखा रहे थे क्योंकि, ऐसा लगा कि वे भी वैसी ही समस्याओं से ग्रस्त थे, जैसी कि मेरी थीं। हम सभी बच्चे, हमारी खुद की पसंद के बिना, लामामठों में रखे गए थे। मेरे खुद के मामले में, मैंने तब प्रवेश किया, जब मैं सात साल का था। अब ये बच्चे सुन रहे थे, हम सभी, वास्तव में, पूर्ण अंधकार में टटोलते हुए, उन लोगों की तरह, जो एक किरण को, जो हमें दिशा बता सके, पाने की आशा में थे।

हमारे शिक्षक ने (कहना) जारी रखा : तुमको यह निर्णय करना चाहिए कि तुम्हारे लिए यहॉ कितने रास्ते खुले हुए हैं। तुम, लोबसांग, यहॉ रुक सकते हो और एक भिक्षु बन सकते हो, या तुम जा सकते हो और एक नाविक या पतंगों के बनानेवाले, या पहाड़ों के परे दूसरे देशों में जानेवाले व्यापारी बन सकते हो। परन्तु तुम एक ही समय में, उनमें से सब कुछ नहीं हो सकते हो। तुमको निर्णय करना चाहिए, तुम क्या बनना चाहते हो। यदि तुम नाविक बनना चाहते हो, तो तुम इस लामामठ को अभी छोड़ दो और इस लामामठ के बारे में, एक भिक्षु होने के संबंध में और अधिक मत सोचो, केवल नाविक होने के संबंध में सोचो। परन्तु यदि तुम एक भिक्षु बनना चाहते हो–जो कि, वास्तव में, तुम्हारा भाग्य है–तब नाविक होने के बारे में भूल जाओ, अपने पूरे विचारों को भिक्षु बनने में लगा दो, अपने पूरे विचारों को अध्ययन में लगा दो, कैसे एक अच्छा भिक्षु बना जाए, और अच्छा भिक्षु बनने के संबंध में, तुम जितना अधिक सोचोगे, ये तुम्हारे लिए उतना ही आसान होगा।

दूसरे बच्चों में से एक, उत्तेजना में ये कहते हुए उठ खड़ा हुआ, ''परन्तु, आदरणीय स्वामी, मैं भी अपनी खुद की इच्छाओं के विरुद्ध, लामामठ में प्रविष्ट हुआ। मैं नेपाल में रहने के लिए जाना चाहता

था क्योंकि, मैं सोचता था कि मैं नेपाल में अधिक सुखी रहूँगा।''

हमारे लामा शिक्षक, काफी गंभीर दिखाई दिये, ऐसा दिखा, मानो कि, बच्चों की बेहूदा सोच विचार के बजाय, जो ये नहीं जानते कि वे क्या बात कर रहे थे, ये उनके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय हो। उन्होंने गंभीरता से जवाब दिया, ''क्या तुम नेपाली लोगों को बहुत अच्छी तरह से जानते हो ? क्या उन थोड़े से लोगों को छोड़कर, जिनके साथ तुम मिले हो, तुम्हें उनके साथ का कोई वास्तविक अनुभव है ? क्या तुम निचले तबके के नेपाली लोगों को जानते हो ? यदि नहीं, यदि तुम उनके घर में बारबार नहीं गए हो, तो तुम नहीं जान सकते कि क्या तुम उन्हें पसंद करोगे। मैं कहता हूँ कि यदि तुम यहाँ तिब्बत में रुकना चाहते हो, तो तुम अपने पूरे विचारों को तिब्बत के ऊपर लगाओ परन्तु, यदि तुम नेपाल जाना चाहते हो, तो तुम तिब्बत को अभी छोड़ जाओ और नेपाल जाओ और तिब्बत के संबंध में बिल्कुल भी मत सोचो क्योंकि यदि कोई, अपने विचारों को विभाजित करता है तो वह, अपनी शक्तियों को भी विभाजित करता है। हमें विचारों या शक्ति की, एक अच्छी धारा मिल सकती है, अथवा हमें बरसात की छितरायी हुई बूंदें मिल सकती है, जो काफी लंबे चौड़े क्षेत्रफल पर बिखरी हों, परन्तु, जिनमें कोई शक्ति न हो। तुम में से प्रत्येक को निर्णय कर लेना चाहिए कि तुम क्या होना चाहते हो, और ये निर्णय करने के बाद, तुम में से प्रत्येक को अपने पूरे दिल और अविभाजित मन से, जो तुम होना चाहते हो, उसे प्राप्त करने के लिए एकाग्र करना चाहिए क्योंकि, यदि तुम, अपने अधूरे मन से नेपाल जाने का निर्णय करते हो और आधे मन से तिब्बत में रुकने का निर्णय करते हो, तो तुम पूरे समय, अनिर्णय की स्थिति में हो, तुम पूरे समय चिंता में रहोगे, और तब तुम किसी भी समय, मन की शांति प्राप्त नहीं कर सकते या शांत नहीं हो सकते। ये विश्व की बड़ी शक्तियों में से एक, महान नियमों में से एक है, जिसको तुम्हें याद रखना चाहिए। शत्रु को विभाजित करो और तुम शत्रु के ऊपर शासन कर सकते हो, स्वयं संगठित बने रहे तो तुम विभाजित शत्रु को हरा सकते हो। शत्रु भलीभाँति अनिर्णय, डर, और अनिश्चय में हो सकता है।''

हम सभी ने एक दूसरे की तरफ देखा, और हमने सोचा कि इस विशेष शिक्षक ने हमें कैसा समझा। इसलिये, एक आदमी को पाना, जो एक आदमी था, एक आदमी, जिससे हम बात कर सकते थे और जो हम से, केवल हमारे बारे में ही नहीं, वापस बात करता और ये बहुत अच्छा था। हमने अपने भारतीय शिक्षक के संबंध में विचार किया, वह कितना उपेक्षापूर्ण था। मैंने कहा, आदरणीय स्वामी मेरा एक प्रश्न है : ऐसा क्यों है कि कुछ लामा अत्यधिक क्रूर हैं, जबकि दूसरे इतने अधिक समझदार और इतने अधिक दयालु हैं ?''

शिक्षक थोड़ा मुस्कराये और उन्होंने कहा, ''लोबसांग, रात को देर में, इन गंभीर विषयों में विचार करना, परन्तु मैं वायदा करता हूँ कि हम इन चीजों के विषय में चर्चा करेंगे और हम धर्मों की, उनके उपयोग और बुराइयों के बारे में भी चर्चा करेंगे। परन्तु अब मैं सोचता हूँ कि, हमने पूरे दिन में काफी काम कर लिया है, इसलिए हम में से हर एक, जाकर अपने–अपने काम में लग जाए।'' वे खड़े हुए, और सभी बच्चे उनके साथ खड़े हो गए। लामा ने देखा कि मुझे कठिनाई हो रही है, इसलिए वह झुके, एक बॉह मेरे चारों ओर डाली और उतनी ही सरलता से, उतनी ही शांति से, मानो वह अपने जीवन में, ये सब करने के अभ्यस्त रहे हों, अपने पैरों पर खड़े होने में मेरी मदद की।

''अब, साथ चलो, बच्चो,'' उन्होंने कहा, ''अन्यथा तुम, गलियारों के अंधेरे में ठोकर खाते रहोगे और गिर पड़ोगे और हम, अन्य लोगों के साथ, इसप्रकार की टॉग की अस्थाई चोटों को, और अधिक नहीं चाहते।''

सभी बच्चे, प्रसन्नता से भरे हुए भाग गए, क्योंकि, हमने सामान्य की तुलना में, अपना काम अधिक जल्दी समाप्त कर लिया था। जाने से पहले, लामा शिक्षक मेरी ओर मुड़े और उन्होंने कहा, ''लोबसांग, तुम्हारे शिक्षक सुबह लौट रहे होंगे; मुझे शक है कि तुम शाम से पहले उन्हें नहीं देखोगे, या

शाम तक भी नहीं, क्योंकि उन्हें अंतरतम और उच्चपरिषद के सदस्यों को, अपनी विशेष रिपोर्ट देनी है। परन्तु उन्होंने एक संदेश भेजा है कि, वे आपके संबंध में सोच रहे हैं, और अंतरतम ने, उन्हें एक संदेश भेजा है कि, वह काफी प्रसन्न थे, पवित्रतम तुम्हारे साथ हैं और, लोबसांग, तुम्हारे शिक्षक, तुम्हारे लिए कुछ लाए हैं!'' इसके साथ, वे मुझे देखकर मुस्कराये, मेरे कंधे के ऊपर एक हल्की सी थपकी दी, मुड़े और गए। मैं एक या दो क्षणों के लिए आश्चर्य करते हुए खड़ा हुआ कि, अंतरतम मुझसे प्रसन्न क्यों होने चाहिए, जबकि मैं इतना चिरकुट जैसा और सुधारा गया था, और दूसरों की निगाह में, मैंने इतनी अधिक परेशानियॉ पैदा की थीं, और मैंने यह भी आश्चर्य किया कि मेरे प्रिय शिक्षक, मेरे लिए क्या लाए हैं। मैं मुश्किल से ही ये सोचना झेल सका कि उनके पास मेरे लिए क्या होगा क्योंकि, मैंने अपने जीवन में, किसी से कोई उपहार नहीं पाया था, मुझे कोई उपहार अर्पित नहीं किया गया था। मैं मुड़ा और ठीक जैसे ही, सफाई करने वाले बूढ़े लामा ने प्रवेश किया, कमरे में से डगमगाता हुआ चला। उसने मुझे मित्रवत् ढ़ंग से शुभकामनाऐं दीं और अत्यन्त कृपापूर्ण ढ़ंग से मेरी टॉग के बारे में पूछा। मैंने उन्हें बताया कि ये धीमे–धीमे सुधर रही थी, और उन्होंने कहा, ''आज मैं लामाओं के घरों में सफाई कर रहा था और मैंने उन्हें ये कहते हुए सुना कि तुम महान चीजों के लिए भाग्यशाली बताए गए हो, मैंने उन्हें कहते हुए सुना कि पवित्रतम तुमसे बहुत बहुत प्रसन्न हैं।'' मैंने कुछ और शब्दों का आदान–प्रदान किया, बूढ़े आदमी को, मक्खन के दीपों को जलाने में मदद की और तब मैं नीचे, और नीचे चलता हुआ, अनिच्छापूर्ण ढ़ंग से गलियारों से रसाईघर में गुजरता हुआ और चलता हुआ, बदले में कुछ छोटे मंदिरों में होते हुए, अपने रास्ते पर चला गया। मैं अकेला रहना चाहता था, सोचना चाहता था, भूतकाल के ऊपर ध्यान लगाना चाहता था और भविष्य के ऊपर मनन करना चाहता था।

लामामठ में, एक वेदीसेवक के लिए–और अधिक सही ढ़ंग से, एक चेले के लिए, निजता (privacy) थोड़ी ही होती है, क्योंकि, चेला एक बौद्ध शब्द (term) है–और यदि हम, समस्याओं के दुःख से इससे कभी उभर पाऐं, तब वह स्थान, जहॉ हम अकेले होंगे, इन छोटे मंदिरों में से केवल एक में होगा, जहॉ हम पवित्र आकृतियों में से, एक के पीछे होंगे जहॉ कोई हमें परेशान नहीं करेगा। इसलिए मैं नीचे गया और एक धीमे से प्रकाशित मंदिर में, जहॉ मक्खन के दीपक, ये दिखाते हुए कि किसी ने उनमें मक्खन के साथ पानी डाल दिया है, दीपक थुकथुका रहे थे और काले धुंओं के गुबार को निकाल रहे थे, जो दीवारों के ऊपर अपना निशान छोड़ रहे थे, टंका (Tanka[4]) के ऊपर निशान छोड़ रहे थे।

मैं, सुगंधित अगरबत्तियों की अंगीठियों से गुजरते हुए, चलता गया, चलता गया और अपनी पसंदीदा प्रतिमा के लिए घूम गया और उसकी छाया के नीचे बैठ गया। जब मैं वहॉ बैठा, ''उर्रा उर्रा'' शब्द हुआ और एक महत्वपूर्ण काला सिर, मुझसे मेरी पीठ में, थोड़ा सा टकराया, और तब फर के महान पैरों ने, मेरी गोद में अपनी जगह बनाई और जैसे ही बिल्ला जोर, और जोर से, प्यार करने लगा, उसने मुझे बुनना (knitting) शुरू कर दिया।

कुछ क्षणों के लिए, मैं उस बूढ़े बिल्ले से, उसकी खाल के ऊपर हाथ फेरते हुये, और उसकी पूंछ को खींचते हुए और कानों को मरोड़ते हुए खेला, और पूरे समय मुझे उसने जोर से, और जोर से प्यार किया। तब अचानक ही उसका सिर, एक बुझते हुए दीपक की भॉति, गिरा और वह मेरी पोशाक की गोदी में, नींद में जा पड़ा। मैंने अपने हाथों को कसकर पकड़ लिया और अपने जीवन की सभी घटनाओं के ऊपर, सभी कठिनाईयों के ऊपर, विचार किया। मैंने, ये सोचते हुए कि लोगों के लिए

4अनुवादक की टिप्पिणी : तिब्बती–बौद्ध पेंटिंग, जो सूती या रेशमी कपडों के ऊपर बनायी जाती है, टंका कहलाती है। सामान्यतः इसमें बौद्ध देवी–देवताओं, धार्मिक दृश्यों, या मंडलों का चित्रण किया जाता है। पारंपरिकरूप से टंकाओं को फ्रेम नहीं किया जाता और प्रदर्शित नहीं किये जाने की स्थिति में इन्हें लपेटकर रखा जाता है। इनमें पीछे की तरफ, चीनी पेंटिंग की शैली में, कपड़े का अस्तर और सामने की तरफ एक रेशमी कवर लगाया जाता है। ऐसे टंका बहुत लंबे समय तक चलते हैं, परन्तु इनकी नाजुकता के कारण, इनको शुष्क स्थानों में, जहॉ नमी रेशम को खराब न कर सके, रखा जाता है। अधिकांश टंका पश्चिमी पोर्टेट की तुलना में आधी लंबाई के होते हैं। इसके विपरीत कुछ बैनरों की तरह काफी लंबे चौड़े भी होते हैं।

किसी मामूली बात को, धर्म के संबंध में जोड़ देना, कितना आसान था, यह सोचते हुए कि किसी के लिए, ठीक जीवन के नियमों का कहना, कितना आसान था, चिन्तन किया। परन्तु ये उतना आसान नहीं था, जब कोई छोटा बच्चा था और जिसे भविष्य के धन्धे में, बिना उसके हल्के से भी झुकाव के या इस प्रकार के धन्धे या वृत्तिका की इच्छा के, जबरदस्ती लगाया गया हो। इसलिए ये सोचते हुए, मैं नींद में न गिर जाऊँ, सीधे बैठते हुए, जैसा, जब हम सोते थे, हम अक्सर करते थे। बूढ़ा बिल्ला सो गया और मैं भी सो गया, और समय गुजरता गया। लंबी होती हुई छायाऐं बाहर गहराती गईं और गहरी होती गईं। सूर्य अपने रास्ते पर चढ़ा और गायब हो गया। पहाड़ों के किनारों से, शीघ्र ही ऊपर घुस गया और चाँदी जैसे चन्द्रमा का चेहरा तथा ल्हासा के सभी घरों में, मक्खन के छोटे दीपक, अपनी खिड़कियों के पीछे टिमटिमाते हुए जल उठे और मैं तथा बूढ़ा बिल्ला, हम पवित्र आकृतियों की छायाओं में सो गए।

अध्याय सात

एक गहरी गूंजती हुई आवाज, मेरे आलसी मन में घुसी। कहीं पड़ौस से, ग्रहणशील वायु में काफी अधिक विचार शक्ति, मेरे अंदर उड़ेली जा रही थी। मेरी दूरानुभूति की क्षमताऐं डोल गईं। मैंने अपने हिलते हुए सिर को उठाया और थकी हुई पलक झपकती हुई ऑखों को खोला। मेरे प्रभु! मैं थक गया था! मेरी गोदी में थोड़ा सी हलचल हुई, और एक प्रेमपूर्ण मुॅह ने, मेरे हाथ को हल्के से पकड़ लिया और प्रेम से मरोड़ा। ''अर्ररे! मम्म्म्ररनो!'' संरक्षक बूढ़े बिल्ले ने कहा। उसने, गहरी समझदारी के साथ मेरी तरफ देखा। ऑखों से खूनी–लाल रंग की, मक्खन के दीपक की टिमटिमाहट, जो सूर्य की रोशनी रहने तक आसमानी नीली थी, परावर्तित हुई। कोमलता से, इतनी कोमलता से, कि मैं इसे उसके छोड़ जाने के बाद ही जान पाया, बिल्ला मेरी गोद में से खिसक गया और सुस्पष्ट छायाओं में जाकर मिल गया।

ओह! मेरी टॉगें कड़ी हो रही थीं; पवित्र जुड़ी हुई हड्डियॉ ऐसे महसूस हो रही थीं, मानो वे पीसी जा रही हों, कसकर गहरी जली हुई गूथ, मुझे यह आभास दे रही थी कि वह किसी भी समय, कच्चे और खुले हुये घाव को फिर से खुला छोड़ते हुए, मांस से उधेड़ दी जाएगी। मेरी भुजाओं में दर्द की लहरें, टूट पड़ी और चुभते हुए दर्द के पंजे, मेरी रीढ़ के साथ, मेरी पसलियों को उनके स्थान से फाड़ डालने की धमकी देते हुए, चक्कर लगाने लगे। मैं हॉफते हुए शांत लेटा रहा। जैसे ही पेट का दर्द थोड़ा सा हल्का हुआ, मैंने सावधानी से, अपने आसपास देखा। यहॉ महान पवित्र आकृति की गहरी बैगनी छाया में, मैं अनदेखे को देख सकता था।

खिड़कियॉ, अंधेरे चौकोर के रूप में, नाचती हुई छायाओं की दीवार पर, रूपरेखा (outline) जैसी बनी हुईं थीं। मैं रात के आसमान को, कॉचरहित ढॉचों में से होकर, चमकीले प्रकाश के नगीनों के साथ, सब से चिकने मखमल छिड़के हुए काले गद्दे के रूप में, देख सकता था। हीरे, लाल, नीलम के बिन्दु ऊपर चमक रहे थे और घूम रहे थे।

यहॉ, तिब्बत की ऊॅची, पतली हवा में, तारे रंगीन दिख रहे थे, विश्व के निचले भागों में (दिखने वाले) प्रकाश के सफेद धब्बों की तरह नहीं। यहॉ, आकाश की शुद्धता को धब्बा लगाते हुए और स्वर्ग की भव्यता को दूषित करते हुए, धुंऐ के लुढ़कते हुए बादल, नहीं थे। मंगल (Mars), लाल था–एक पीला सा लाल। शुक्र (Venus) हरा था, जबकि बुध (Mercury) का छोटा सा धब्बा, फिरोजे की एक किरच जैसा था। जहॉतक मैं देख सकता था, उॅगलियों की धुंधली छाप, मानो हीरे की पिसी हुई महीन धूल, पट्टी के रूप में फैली हुई थी। आज, तारों की भीगी हुई, हल्की सी रोशनी के साथ प्रतियोगिता करने के लिए, चन्द्रमा नहीं था।

दीवारों पर छायाऐं उछलीं और अब उन्होंने आकृतियॉ, छत तक बढ़ती हुई दैत्याकार आकृतियॉ बनाईं, अब पालथी मारकर बैठे हुए बोने, फर्श पर टटोल रहे थे। मेरे पास, बगल से थोड़ा हटकर, मक्खन का एक दिया क्षतिग्रस्त हो गया था। जैसे ही पिघला हुआ मक्खन, उसमें से रिसकर बाहर आया, उसकी मरम्मत की हुई तली में से, ''टप–टप (gluck-gluck)'' की आवाज आई और तब एक उछाल, जैसे ही जमा हुआ द्रव फर्श पर फैला। दूरी पर स्थित एक दीवार के विरुद्ध एक खिड़की के बगल से, एक टंका इतनी कठोरता से फड़कने लगा, जैसे लगभग मानो कि ये एक खून चूसने वाला कीड़ा हो, जो लपलपाती हुई ज्वालाओं के पास पहुॅचने का प्रयास कर रहा हो। जब ये उभरकर दीवार से दूर, कंपित हुआ, इसने हल्की सी खड़खड़ाहट की और तब थककर, दुबारा से, और दुबारा से, केवल दुहराने के लिए, वापस डूब गया। एक क्षण के लिए, मुझ पर लगभग चक्करों का आक्रमण हुआ! मैं अचानक ही नींद से जग पड़ा, और अब, जैसे ही मैंने पवित्र आकृतियों के दूसरी तरफ, विविध प्रकार की आवाजों की लय–ताल के साथ, छायाओं को चलते हुए और कुलबुलाते हुए और घूमते हुए, आसपास देखा, इसने मानो मुझे हत्प्रभ कर दिया। मैंने महान आकृति, जिसके पीछे मैं दुबककर बैठा

हुआ था, के सिर के पीछे, ऊपर की तरफ, देखा। एक क्षण के लिए, मैंने हड़बड़ी महसूस की, आकृति उल्टी हो रही थी, औंधी हो रही थी, वह मुझ पर गिरनेवाली और मुझे कुचलनेवाली थी। ढॉचा हिला, और जैसे कि मानो अपनी टूटी हुई टॉगों से उछलते हुए, मैं खुद को बगल से फैंकने के लिए तैयार हुआ परन्तु, अचानक ही–मैं लगभग जोर से हॅसा–ये छायाओं के लहराने के माध्यम से, जीवन का भ्रम था।

अब तक दर्द कुछ हद तक घट गया था। मैं अपने हाथों और घुटनों पर उठा और कोमलता से आकृति के सिरे की तरफ रेंग गया, ताकि मैं सबसे अंदरूनी मंदिरों में से एक में झांक सकूॅ। मैंने पहले कभी, इस मंदिर में प्रार्थना सेवा नहीं देखी थी, हम बच्चों को सख्ती से बाहर निकाल दिया जाता था क्योंकि हमारे लिए, यह मुख्य मंदिर, अथवा उन छोटे सामान्य मंदिरों में से एक था, परन्तु यह मनुष्य निर्मित ढ़ॉचे के काफी नीचे, चट्टान में जाकर, खोखला हो जाता था। मैंने आश्चर्य किया कि यह क्या था, वे यहॉ क्या कर रहे थे। सावधानीपूर्वक, अपनी पोशाक को अपनी कमर के आसपास लपेटते हुए, ताकि मैं इसमें फंस कर गिर न जाऊॅ, मैं किनारे की ओर आगे चला और मैंने कोने के आसपास झांका।

ये काफी दिलचस्प था, मैंने सोचा। मेरे सामने, एक वृत में नौ लामा, सभी अपनी केशरिया पोशाकों में, हर एक का सिर वृत के केन्द्र की ओर किये हुए (बैठे) थे, और केन्द्र में एक सजाए हुए गढ़े हुए स्टैण्ड पर कुछ चीज थी–कुछ चीज, जिसे मैं स्पष्टरूप से नहीं देख सका। वहॉ कुछ चीज दिखाई दी, और अभी तक वहॉ कुछ भी नहीं था। मैं कॉप गया, और मेरे मुड़े हुए सिर के बाल, कड़े होकर, परेड में प्रहरियों की तरह से, सीधे खड़े हो गए और क्योंकि, डर की ठण्डी उॅगलियॉ, मुझे उत्तेजित करते हुए, मुझ तक पहुॅच चुकी थीं, अतः मैं भागने के लिए तैयार था। मैंने सोचा कि, उस गढ़े हुए स्टेण्ड के ऊपर, छाया के लोक में से, एक प्राणी खड़ा था। इस प्राणी का, वास्तव में, हमारे इस विश्व में, कोई अस्तित्व नहीं था और दूसरे विश्वों में, जहॉ से ये आया हो, मुश्किल से ही इसका कोई अस्तित्व हो। मैं घूरता रहा और घूरता रहा।

मुझे ये किसी चीज (something) का अथवा कुछ नहीं (nothing) का एक गोला (globe) प्रतीत हुआ; ये लगभग आकृतिरहित लगा, और फिर भी यहॉ कौन सी आकृति लहरा रही थी! मैंने कामना की कि मैं पास जा सकता, और इन बैठे हुए लामाओं में से एक के सिर के ऊपर ताक सकता, परन्तु तब इसका अर्थ, निश्चितरूप से पहिचान लिया जाना था। इसलिए मैं पीछे बैठा, और नींद को भगा देने, उन्हें और अधिक जागरूक बनाने, इस बाड़ और अंधेरे में उनको अधिक देखने योग्य बनाने के प्रयास में, मैंने अपने हाथों से अपनी ऑखों को मला। इससे संतुष्ट होकर कि अपनी ऑखों के लिए, मैं जितना अधिक कर सकता था, मैंने किया। मैं, दो लामाओं के कंधों के बीच से, अधिक अच्छा दृश्य देखने के प्रयास में अपनी स्थिति को थोड़ा सा बदलते हुए, हाथों पर, घुटनों पर, आगे की तरफ, टुकुर–टुकुर करते हुए बैठ गया और घूरता रहा।

मैंने देखा–अचानक ही मुझे ये कौंधा–कि यह बहुत बड़ा, दोषरहित, और पूर्ण, चट्टानी क्रिस्टल था। यह उस गढ़े हुए स्टैण्ड के ऊपर टिका था और इसने उन लामाओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, जो इसके सामने, लगभग भक्तिभाव से बैठे थे। अपनी भौतिक ऑखों को उपयोग में लाते हुए, उन्होंने इसे जानबूझकर देखा, और फिर भी इतना जानबूझकर नहीं परन्तु, बदले में ये तीसरे नेत्र का एक उपयोग दिखाई दिया। ठीक है, मैंने सोचा, मैं भी, एक अतीन्द्रियज्ञानी हूॅ। इसलिए मैंने, इसे अपनी ऑखों से, और अधिक नहीं घूरा, बदले में, मैंने अपनी अतीन्द्रियज्ञान की योग्यताओं को, अपनी भूमिका में आने दिया और मैंने क्रिस्टल में रंग, नाचना, चक्कर लगाना और धुंए की हलचल देखीं। आश्चर्यजनकरूप से डरते हुए, मैं काफी ऊॅचाई से, विश्व की सबसे ऊॅचाई से गिरता हुआ, नर्क में गिरता हुआ सा, प्रतीत हुआ, परन्तु नहीं, ये नर्क नहीं था; इसके बजाय, एक विश्व था, जो हमारी ऑखों के सामने खिंच रहा था, एक लोक, जहॉ विभिन्न रंग, विभिन्न मानक थे। मैंने, दुर्बलता से लगभग पूर्ण,

दुःख से पूर्ण, थोड़े से विद्वान लोगों को घूमते हुए देखा; कुछ दुःख से पूरे भरे थे। बिना पथ प्रदर्शन वाली आत्माऐं, अपनी चिन्ताओं से मुक्त किए जाने के तरीके पर आश्चर्य करती हुईं आत्माऐं। वे भटकी हुई आत्मायें थीं।

जैसे ही मैं, मोहित होकर बैठा, यद्यपि मैं सूर्य द्वारा प्रकाशित दूसरे लोक के किसी तल में था, लामाओं की स्तुतियॉ गूँजने लगीं, उनमें से एक, अक्सर कईबार अपने हाथ को ऊँचा उठाता और चॉदी की एक घंटी को बजाता, घंटी के दूसरे सुर के साथ, सामनेवाला दूसरा भी वही करता और इसप्रकार, वे अपने मंत्र जाप के ऊपर, लगातार चलते रहते, संगीत के पैमाने पर उनका संगीत, ऊपर और नीचे, गिरता हुआ, तीखे असंबद्ध सुरों में नहीं, जैसा कि विश्व के दूसरे हिस्सों होता था, परन्तु यहॉ सुरों की फिसलन हो रही थी, एक का दूसरे में फिसलना, सुरों (chords) में मिल जाना, जो दीवारों से प्रतिध्वनित होकर गूँजता रहा और जिसने अपनी खुद की धुनें बनाईं।

लामाओं के समूह के नायक ने अपने हाथों से ताली बजाई, उसके अगले ने घण्टी बजाई, और तीसरे ने अपनी आवाज को रीति रिवाजवाले ढ़ंग से ऊँचा उठाया ''ओह! हमारी आत्माओं की आवाजों को सुनो।'' और इसप्रकार वे, उन युगों पुराने पदों को एक से दूसरे तक दुहराते हुए चलते गए, एक बार में पहला, तब सबके साथ में, उनकी आवाजों के उतार–चढ़ाव, आरोह–अवरोह, चढ़ने और गिरने ने मुझे समय के परे, मुझे खुद से भी परे, उठा दिया।

तब इस समूह की पूरी प्रार्थनाओं का ये क्रम आया :

ओह! हमारी आत्माओं की आवाजों को सुनो,
तुम सभी, जो निर्जनभूमि में, असुरक्षित सिकुड़ते हो।
हमारी आत्माओं की आवाजों को सुनो,
ताकि, हम असुरक्षितों को सुरक्षित कर सकें।

ज्यों ही पहली अगरबत्ती जलाई जाती है और धूम ऊपर की ओर उठता है,

अपनी आत्मा और अपनी आस्था को भी ऊपर उठने दें,
ताकि, तुम को सुरक्षित किया जा सकें।

* * * * *

ओह! हमारी आत्माओं की आवाजों को सुनो,
तुम सभी, जो रात्रि में, डर के कारण घबराते हो।
हमारी आत्माओं की आवाजों को सुनो,
क्योंकि, हम अंधकार में जलती हुई लालटेन की तरह हैं,
ताकि, हम रात्रि के यात्रियों का पथ–प्रदर्शन कर सकें,

ज्यों ही दूसरी अगरबत्ती जलाई जाती है और जीवन के साथ जलती है,

अपनी आत्माओं को, हमारी जलाई रोशनी को देखने दो ताकि, तुम्हारा पथ प्रदर्शन किया जा सके,

ओह! हमारी आत्माओं की आवाजों को सुनो,
तुम सभी, जो अज्ञान की खाड़ी में, असहाय फॅसे हुए हो।

हमारी आत्माओं की आवाजों को सुनो,
हमारी सहायता, शून्यता को पार करने के लिये, तुम्हारे लिये, एक सेतु के समान होगी,
पथ पर और आगे ले जाने में सहायक होगी।

ज्यों ही तीसरी अगरबत्ती जलाई जाती है और धूम ऊपर की ओर पुंछल्ले बनाकर उठता है,

अपनी आत्मा को साहस के साथ प्रकाश में आगे की ओर कदम बढ़ाने दो।

* * * * *

ओह! हमारी आत्माओं की आवाजों को सुनो,
तुम सभी, जो जीवन की श्रान्ति में, मंद पड़ गये हो।
क्योंकि, हम तुम्हारे लिये विश्रान्ति लाते हैं, ताकि तुम्हारी आत्मा, एक नवीन उत्साह के साथ विश्राम करें,

ज्यों ही चौथी अगरबत्ती जलाई जाती है और धूम धीमे से ऊपर की ओर रेंगता है,

हम विश्रान्ति लाते हैं, ताकि तुम ताजगी पाकर, नवीनता के साथ उठ सको।

* * * * *

ओह! हमारी आत्माओं की आवाजों को सुनो,
तुम सभी, जो पवित्र शब्दों का उपहास करते हो।
हमारी आत्माओं की आवाजों को सुनो,
हम तुम्हारे लिये शान्ति लाते हैं! ताकि तुम अमर सत्यों में, निवास कर सको।

ज्यों ही पॉचवी अगरबत्ती, जीवन में सुगन्ध लाने के लिये जलाई जाती है,

अपने मन को खोलो ताकि तुम जान सको!

मंत्रजाप की आवाजें, धीमे धीमे समाप्त हो गईं। एक लामा ने अपनी घण्टी उठाई और उसे हल्के से, कोमलता से बजाया; दूसरों ने अपनी–अपनी घंटियॉ उठाईं और उन्हें बजाया। पहले उन्होंने अलग–अलग बजाईं, फिर, पूर्व–व्यवस्थित (pre-arranged) ढ़ंग से एक साथ मिलकर बजाईं, जो एक विशेष सुरीली योजना बनाते हुए प्रतिध्वनित हुई और गूॅजती रही, और तारत्व (pitch) और तीव्रता (intensity) में बदलती रही। ''ओह! हमारी आत्मा की आवाजों को सुनो,'' दुबारा से दुहराते हुए, उछलते हुए अपनी घंटियों को बजाते हुए, लामाओं ने अपनी गहरी उछलकूद को जारी रखा। प्रभाव सम्मोहनकारी, रहस्यमय था।

मैंने अपने आसपास के लोगों को देखना जारी रखा–अथवा क्या वे मेरे आसपास थे ? क्या मैं किसी दूसरे विश्व में था ? या क्या मैं क्रिस्टल में देख रहा था ? मेरी मजबूत छाप (impression) ये थी कि मैं दूसरे लोक में था, जहॉ घास और ज्यादा हरी थी, जहॉ आकाश और ज्यादा नीला था, जहॉ

हर चीज, विविध विभेद (contrast) में, तीखी खड़ी थी, वहॉं, मेरे पैरों के नीचे, घास का हरा मैदान था–भला, भव्य, मैं इसे अनुभव कर सकता था। अपनी पोशाक में होकर रिसते हुए, जहॉं मेरे घुटने सम्पर्क में थे, अपने नंगे पंजों से, मैं नमी को अनुभव कर सकता था। मेरे हाथ भी, जैसे ही मैंने उनको कोमलता से रगड़ा, घास को और शायद यहॉं एक या दो पत्थरों को महसूस करते हुए लगे। मैंने उत्साहित दिलचस्पी के साथ देखा। सामने के ऑगन में, यहॉं–वहॉं सफेद धारियों को बनाते हुए, हरे से रंग के बड़े–बड़े पत्थर, थे। दूसरे बड़े पत्थर विभिन्न रंगों के थे; जिनमें से एक, जिसने मुझे विशेषरूप से आकर्षित किया, उसमें चलती हुई दूधिया सफेद धारियों के साथ, कुछ लाल से रंग का था परन्तु जिसने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, वह था वह ढ़ंग, जिसमें हर चीज अपनी नग्न सत्यता के साथ खड़ी हुई थी, वह ढ़ंग, जिसमें हर चीज, चमकीले रंगों से, तीखी बाहरी रेखाओं के साथ, सामान्य से भी, अधिक सामान्य दिख रही थी।

कोमल, हल्की हवा चल रही थी, मैं अपने बांये गाल के ऊपर इसका अनुभव कर सकता था। तथापि ये, आश्चर्यचकित करनेवाली थी क्योंकि, इसमें अनोखी सुगंधें, उत्तेजक सुगंधें भरीं थीं। कुछ दूरी पर मैंने कुछ देखा, जो मक्खी जैसा लगा। ये उतरा और एक छोटे फूल, जो घास में उग रहा था, की नाल (trumpet) में घुस गया। ये सब मैंने, समय के गुजरने के प्रति, चेतना के बिना देखा, परन्तु तब मैं सजग, सावधान, खबरदार हो गया, क्योंकि वहॉं मेरे रास्ते में आता हुआ, लोगों का दूसरा पूरा समूह था। मैंने उनको देखा और मैं चलने के लिये शक्तिहीन हो गया; वे मेरी तरफ आ रहे थे और मैं कमोवेश उनके रास्ते में था। यहॉं जैसे ही मैंने उनकी तरफ देखा, मैंने कुछ एकदम अनुचित चीज देखी। तारतार फटे हुए चिथड़ों में लपेटे हुए लोगों में, कुछ बूढ़े लोग थे, जो लकड़ी पर झुके हुए थे और जो अपने नंगे पैरों पर लंगड़ा रहे थे। दूसरे लोग, स्पष्टरूप से संपत्तिवान थे, परन्तु स्वस्थ होने की सामान्य हवा, जो सामान्यतः प्रचुरता लाती है, के साथ नहीं, क्योंकि इन आदमियों और औरतों के संबंध में एक चीज विशेषरूप से स्थिर हुई–वे कृशकाय, दुर्बल और डरे हुए थे, हल्की सी हलचल भी उन्हें उछाल देती थी और उनके हाथ उनकी छातियों पर जकड़ जाते थे। वे अवसादग्रस्त होकर अपने आसपास देखते थे, और उनमें से कोई भी अपने पड़ौसी के लिए सजग नहीं था; वे ये महसूस करते हुए प्रतीत हुए कि वे भूले हुए, तनहा और किसी विदेशी लोक में छोड़े हुए, अकेले थे।

वे, हर एक अलग–अलग, केवल अपने स्वयं के अस्तित्व के प्रति सावधान, चलते आए, फिर भी वे समूहों में आए, कोई भी दूसरे को छू नहीं रहा था, कोई भी दूसरे की उपस्थिति के प्रति सावधान नहीं था। वे आवाजों, जिनको मैं भी सुन सकता था, के द्वारा मोहित किये हुए आए : ''ओह! हमारी आत्माओं की आवाज को सुनो, सभी, जो बिना दिशानिर्देशन के घूम रहे हो।'' जाप और आवाज का ऊॅचा–नीचा सुर चलता गया और लोग भी आते गए, और जैसे ही, वे एक निश्चित स्थान पर पहुॅचे–मैं नहीं देख सका कि वास्तव में क्या हो रहा था–एक अलौकिक प्रकार के आनन्द से, हर चेहरा चमक उठा, हर व्यक्ति अधिक सीधा खड़ा हुआ, मानो वह एक आश्वासन पा चुका है और इसप्रकार पहले से अच्छा महसूस करता है। वे साथ–साथ, मेरी निगाह के बाहर चले गए। अचानक वहॉं कर्कशता में, घंटियों की एक टकराहट हुई और मैंने अपने अंदर, एक तगड़ा झटका महसूस किया, मानो कोई मुझे अंदर की ओर खींचकर लपेट रहा हो, मानो मैं एक डोरी के सिरे पर एक पंतग हूॅ, जिसने और अधिक ऊॅचाई पर जाने का प्रयास किया और जो तूफान के विरुद्ध खींची जा रही है।

जैसे ही मैंने, इस अनौखे दृश्य के ऊपर, बाहर की तरफ देखा, मेरे ऊपर ये प्रभाव पड़ा कि रात बढ़ती जा रही है, क्योंकि आसमान काला होता जा रहा है और रंग धीमे–धीमे कम पहिचानने योग्य हो रहे हैं। चीजें सिकुड़ती हुई, सिकुड़ती हुई दिखाई दीं? वे कैसे सिकुड़ सकतीं हैं? परन्तु निस्संदेहरूप से वे सिकुड़ रही थीं और न केवल वे छोटी हो रही थीं परन्तु कोहरे जैसे बादल, उस विश्व के चेहरे को, उनको ऊपर की तरफ से ढ़कने की कोशिश कर रहे थे और जैसे ही मेरी डरी हुई ऑखें उस दृश्य

में, छोटे, और छोटे होते जाने वाले दृश्य में टिकीं, कोहरा, कड़कती हुई बिजली के साथ, काले गजरते हुए बादलों के रूप में, बदल गया।

दुनियॉ, छोटी, और छोटी, होती चली जा रही थी, और मैं ऊपर, और ऊपर, चढ़ता जा रहा था। ज्यों ही मैंने नीचे देखा, मैं उसे अपने पैरों के नीचे घूमते हुए, देख सकता था और तब मैंने निश्चय किया कि ये वास्तव में, मेरे पैरों के नीचे नहीं घूम रहा था क्योंकि, मैं मन्दिर में, अपने हाथों और घुटनों के बल था, या मैं कहॉ था, मैं दुविधा में और आश्चर्यचकित भौंचक्का था और तब एकबार फिर, भयानक तीखा झटका लगा, एक झटका, जिसने मेरे मस्तिष्क को लगभग मेरे सिर के बाहर निकाल दिया, घुमा दिया।

हलचल के लिए, चक्करों से काफी आक्रान्त, मैंने अपने हाथों को, अपनी ऑखों को मलने के लिए उठाया। और तब मैंने दुबारा ध्यान से देखा, और मैंने अपने सामने देखा कि, क्रिस्टल एकबार फिर, क्रिस्टल था, और अब और अधिक विश्व नहीं, सुस्त सा पड़ा हुआ, जीवनरहित, इसमें प्रकाश के कोई बिन्दु नहीं, मात्र एक क्रिस्टल। ये अपने गढ़े हुए (carved) आधार पर खड़ा था, यद्यपि ये एक पत्थर था, या एक प्रतिमा, या कोई भी चीज, आश्चर्यजनक अनुभवों का, सर्वाधिक आश्चर्यजनक उपकरण नहीं। एक लामा, धीमे से अपने पैरों पर खड़ा हुआ और उसने आधार से एक कपड़ा लिया–यह एक काले मखमल की तरह दिखाई देता था। आदरपूर्वक, उसने कपड़े को खोला और उसे क्रिस्टल के ऊपर लपेट दिया और तब (क्रिस्टल को) इसमें समेट लिया। वह क्रिस्टल की दिशा में तीन बार झुका, और अपने स्थान को पाने के लिए मुड़ गया। जैसे ही उसने ये किया, वैसे ही उसकी आश्चर्यचकित निगाहें, मेरे ऊपर पड़ीं। कुछ सेकेण्डों के लिए वहॉ स्तब्धता थी, धक्का खायी हुई शांति; समय, अपने आप में लकवा खाया हुआ जैसा दिखाई दिया। मैं, अपने दिल को, एक तेज प्रहार के रूप में, सुन सकता था!'' और इससे अधिक कुछ नहीं। यहॉ एकप्रकार का प्रभाव था कि संपूर्ण प्रकृति, पूरे समय, शान्त असमंजस में, यह देखने के लिए कि अगले क्षण क्या होता है, सुन रही थी।

लामाओं में आपस में फुसफुसाहट हुई। एक, जो मेरे सबसे करीब था, खड़ा हुआ और मेरे ऊपर हाबी होने लगा। वह इस समूह में सबसे वरिष्ठ था, परन्तु मेरी डरी हुई ऑखों को, वह स्वयं, पोटाला से भी अधिक बड़ा दिखाई दिया। वह मेरे ऊपर तनकर खड़ा हो गया और उसने कहना शुरू किया, परन्तु तब, दूसरा लामा मुझे पहिचान गया। ''ये मिंग्यार का लड़का है, लोबसांग,'' उसने कहा, मानो कि मुझे थोड़ा आराम मिला, ये हमारा, सर्वाधिक दूरानुभूतिवाला लड़का है, उसे यहॉ लाओ।'' दैत्याकार लामा नीचे पहुॅचा और अपने हाथों को, मेरी भुजाओं के नीचे लगाया और मुझे ऊपर उठा लिया, क्योंकि, ये बताये जाने के बाद कि, मैं मिंग्यार का लड़का था और ये जान लेने के बाद कि, मैं आसानी से चल नहीं सकता था, और इसलिए उसने मुझे तकलीफ से बचा लिया। उसने मुझे, हर एक मेरी तरफ देखते हुए, मानो वे मेरी आत्मा में झांक रहे हों, मानो वे मेरी आत्मा में होकर, दूसरे लोकों में, और उसके भी परे, जो अधिस्वयं की तरफ ले जाते हैं, झॉक रहे हों, लामाओं के वृत में घुमाया।

मैं बड़े डर की अवस्था में था क्योंकि, मैं नहीं जानता था कि, मैंने कुछ विशेष गलत किया है। मैंने इस विशेष मंदिर को चुना था, क्योंकि दूसरों में से कुछ एक, हमेशा छोटे बच्चों के द्वारा, जो ध्यान लगाने में गंभीररूप से दिलचस्पी नहीं रखते थे, जमावग्रस्त रहते थे। मैं था। लेकिन ये क्या था ? ''लोबसांग'' एक छोटे, सूखे से लामा ने कहा, ''तुम यहॉ क्या कर रहे थे ?'' ''आदरणीय स्वामी,'' मेरा जवाब था,'' निजी ध्यान लगाने के लिये छोटे मंदिरों में आना, ये मेरी बहुत पुरानी आदत है और मैं इन पवित्र आकृतियों के पीछे बैठता हूॅ, जहॉ मैं किसी को, जो वहॉ ध्यान लगा रहा हो, विक्षुब्ध नहीं कर सकता। वास्तव में, आपकी सेवा में हस्तक्षेप करने का मेरा कोई इरादा नहीं था''–मुझे अपना चेहरा शर्म से भरा हुआ प्रतीत हुआ–''मैं सो गया था, और मैं केवल तभी जागा, जब मैंने आपकी प्रार्थनाओं को, जो शुरू होनेवाली थीं, सुना।''

बांयी ओर काफी दूर, रिसते हुये मक्खन के दीपक, ''थुकथुकाते हुए! थुकथुकाते हुए!'' समाप्त हो गए थे और जैसे ही अब, मक्खन से वंचित हुई, तैरती हुई बत्ती, समाप्त हुई और बुझ गई, अचानक ही, वहॉ धातु के विरुद्ध घिसावट की एक छोटी सी आवाज आई। कुछ सेकण्डों के लिए, ये (बत्ती) लाल सुलगती रही, और तब वहॉ, कोयला बनती हुई बत्ती की बदबूदार, कटु गंध आई। हमारे वृत के बाहर से ''मॉ (Mrrow)! मॉ (Mrrow)!'' की एक परिचित आवाज आई। बिल्ले मित्र ने, महत्वपूर्ण ढ़ंग से, दो लामाओं के बीच में होकर, अपना रास्ता धकेला, सीधी खड़ी हुई पूंछ के साथ, मेरी तरफ टहलता हुआ आया और उसने दोस्ती में मुझे टक्कर मारी। मैं कंपकपाते हुए हाथ तक पहुॅचा और अपनी उॅगलियों को उसकी खाल के ऊपर फेरा। वह मेरी तरफ मुड़ा, एक दूसरी टक्कर दी, और कहा ''अरे! अरे!'' और दो और लामाओं के बीच में अपने आपको धकेलते हुए, संयत ढ़ंग से, छिपकर चला। लामाओं ने एक दूसरे की तरफ देखा, और उनके ओठों के ऊपर मंद–मंद मुस्कान खिल गई। ''इसलिए, हमारा संरक्षक, तुम्हें यहॉ अच्छी तरह जानता हैं, लोबसांग! उसने तुम्हारे लिए ठीक कहा हैं, उसने अपनी भक्ति से तुम्हें आश्वासित भी किया है और हमें बताया है कि तुमने सत्य बोला है।''

कुछ और क्षणों के लिए वहॉ शान्ति थी। नौजवान लामाओं में से एक ने, अपना सिर मोड़ा और बिल्ले को अकड़कर चलते हुए देखा। वह दबी जुबान से हॅसा और मुड़कर समूह की तरफ वापस आ गया। बूढ़ा झुर्रीदार सूखा लामा, जो बहुत वरिष्ठ दिखाई देता था, और जो सेवा का प्रभारी था, उसने मेरी ओर देखा और फिर ये कहते हुये, अपने हर एक मित्र की तरफ मुड़ गया, ''हॉ, मुझे याद है, ये वह लड़का है, जो विशेष निर्देश प्राप्त करनेवाला था। उसको यहॉ बुलाने से पहले, हम इसके शिक्षक के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे परन्तु चूॅकि वह यहॉ हैं, हमें उसके अनुभवों और उसकी क्षमता की परीक्षा करनी चाहिए ताकि, उसके शक्तिशाली शिक्षक के प्रभाव के बिना, हम उसका अनुमान कर सकें।'' वहॉ एक फुसफुसाहट भरी सहमति हुई और नीची आवाज में सुझाव हुए, जिनको समझने के लिए मैं, काफी भ्रम में पड़ गया। ये उच्च दूरानुभूतिवाले लामा थे, उच्च दूरानुभूतिवाले, वे जो दूसरों को मदद करते थे, और अब मैं डर के साथ, कॉपता हुआ, उनके साथ बैठा हुआ था, ये सत्य है, परन्तु फिर भी उनके पास बैठा हुआ था। उनमें से एक मेरी तरफ मुड़ा और उसने कहा, ''लोबसांग, हमने तुम्हारे बारे में, तुम्हारी प्राकृतिक शक्तियों के बारे में, तुम्हारी संभावनाओं के बारे, और तुम्हारे भविष्य के बारे में, बहुत कुछ सुना है। वास्तव में, हम लोग ही हैं, जिन्होंने ये देखने के लिए कि, तुम्हारे मामले में क्या होगा, संभावनाओं के अभिलेखों की जॉच की थी। अब, क्या तुम किसी कठिन परीक्षा के लिए तैयार हो ताकि, हम, तुम्हारी शक्तियों की सीमाओं के बारे में निश्चय कर सकें ? हम तुम्हें सूक्ष्मशरीर से टहलाने के लिए ले जाना चाहते हैं, और हम तुम्हें, ''प्रेत के रूप में, अपने पोटाला में होकर,'' सूक्ष्मशरीर से नीचे के लोकों में ले जाना चाहते हैं।''

मैंने संदिग्धता से उसकी तरफ देखा। चलें ? उन्होंने कैसे सोचा कि मैं चल सकूॅगा ? मैं लंगडाता हुआ, गलियारों में चला परन्तु मेरी टॉगें, आत्मविश्वास की किसी भी कोटि के साथ, मुझे चलने के लिए योग्य बनाने के लिए, अभी काफी ठीक नहीं हुई थीं।

मैं हिचकिचाया, इसके सम्बंध में सोचा, और (मैंने) अपनी पोशाक की मगजी को थोड़ा मरोड़ा। तब मैंने उत्तर दिया, ''आदरणीय स्वामियो! मैं पूरी तरह से आपकी शक्तियों के अन्तर्गत हूॅ, परन्तु मुझे ये कहना है कि चूॅकि, मैं अपनी दुर्घटना के कारण, अधिक चलने के योग्य नहीं हूॅ; परन्तु जैसे कि, एक भले भिक्षु को करना चाहिए, मैं ये आशा करते हुये कि मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, मेरे निर्णय का अनुमोदन करेंगे, स्वयं को आपके विवेक के ऊपर छोड़ता हूॅ।'' कोई हॅसा या मुस्कुराया भी नहीं, जो शानदार बयान दिख सकता था, क्योंकि मैं छोटा और अुनभवहीन था, और कुल मिलाकर मैं अपना सर्वोत्तम कर रहा था और अपने सर्वोत्तम से अधिक कौन कर सकता है। ''लोबसांग, हम तुम्हें औंधे मुॅह (prone) लेटे हुए देखना चाहते हैं, हम तुम्हें अधोमुख लिटाना चाहेंगे, क्योंकि तुम्हारी टॉगें तुम्हें

पुरानतनपंथी (orthodox) स्थिति में, होने की आज्ञा नहीं देंगी। इसलिए, तुम लेटने के लिये उन्मुख हो।'' बूढ़े लामा ने सावधानीपूर्वक एक गद्दी ली और उसे मेरे सिर के नीचे लगाया, और तब उसने मेरे हाथों को उँगलियों के साथ बाँधा ताकि, उँगलियों सहित, मेरे दोनों हाथ, छाती की पसलियों के सिरों और नाभि के बीच में, एक दूसरे में उलझे रहें, और तब उन्होंने स्वयं को पुर्नव्यवस्थित किया; उन्होंने क्रिस्टल को एक तरफ को खिसका दिया : उसे आदरपूर्वक, पवित्र आकृति के आधार में, उस स्थान में, जिसको मैंने पहले ध्यान नहीं दिया था, रखते हुए, वे मेरे आसपास बैठे ताकि मेरा सिर, उनके वृत के ठीक केन्द्र में हो। एक लामा, समूह से अलग हट गया, और एक छोटे अगरबत्तीदान के साथ, अगरबत्तियों के साथ लौटा। चूँकि धुंऐ का खिंचता हुआ बादल, मेरे चेहरे के सामने से होकर गुजरा और उसने मेरे नकुओं में खुजली कर दी, मैंने छींकते हुए, स्वयं को लगभग अपमानित (disgrace) करा लिया।

मेरी ऑखें अनोखे रूप से भारी हो रही थीं, मुझ में थकावट का बढ़ता हुआ आभास हो रहा था, परन्तु लामा मेरी ओर नहीं देख रहे थे, वे मुझसे काफी दूर, एक बिन्दु की ओर देख रहे थे। मैंने अपनी ऑखों पर जोर डाला, और मैं उनकी ठोड़ियों के नीचे देख सका, मैं उनके नकुओं में देख सकता था, उनके सिर इतने झुके हुए थे कि मैं उनकी ऑखों को अलग से नहीं पहचान सकता था। नहीं, वे मेरी तरफ नहीं देख रहे थे, वे देख रहे थे– कहॉ ?

एक छोटा सा गरमागरम शोर करते हुए जो मैंने इससे पहले नहीं देखा था, अगरबत्ती सुलगने लगीं। अचानक ही, मैंने अपने हाथ, और अधिक कसकर, जकड़ लिए क्योंकि, पूरा भवन नाचता हुआ दिखाई पड़ा। मैंने भूकम्पों के बारे में सुना था, मैंने सोचा कि अचानक ही, पोटाला के हम लोग, किसी भूकम्प से घिर गए हैं। मेरे अंदर भगदड बढ़ने लगी और ये सोचते हुए कि, यदि मैं अबोधगम्य बन जाऊँ या अपने पैरों से धक्का मुक्की करूँ और मंदिर पर तेजी से रवाना हो जाऊँ, जबकि लामा मेरे सामने शांति से बैठे हैं, ये मेरे शिक्षक के प्रति असम्मानजनक होगा। कड़े प्रयासों के बाद, मैं इसे दबाने की व्यवस्था कर पाया।

हिलना–डुलना जारी रहा, और एक क्षण के लिए, मैंने लगभग बीमार अनुभव किया। एक क्षण के लिए, मैंने महसूस किया कि मैं ऊपर तैर रहा हूँ, मैंने पाया कि छत की शहतीरों (beams) में से एक, मेरे हाथ से केवल कुछ इंच ऊपर थी। आलस्यपूर्ण ढ़ंग से, मैंने अपना हाथ अपने आपको बचाने के लिए रखा, और मेरे डर के साथ, धूल तक को विक्षुब्ध न करते हुए, जो उसकी सतह पर पड़ी थी, मेरा हाथ शहतीर में से सीधा पार हो गया।

उस अनुभव के डर के साथ, मैं जल्दी से नीचे डूब गया और एक पवित्र आकृति के बगल से अपने पैरों पर खड़ा हो गया। ये जानते हुए कि मेरी टॉगें मुझे सहारा नहीं देंगी, शीघ्र ही, मैंने अपना हाथ, खुद को स्थिर करने के लिए लगाया। परन्तु फिर, मेरे हाथ ठीक, उस पवित्र प्रतिमा में होकर गुजरे, और मेरी टॉगों ने कड़ा और कठोर अनुभव किया। मुझे कोई दर्द नहीं था, कोई असुविधा नहीं। मैं शीघ्र ही घूम गया–लामाओं का समूह, अभी भी वहॉ था। परन्तु नहीं ! उनमें से एक अनुपस्थित था। मैंने महसूस किया, वह, मेरे बगल में खड़ा हुआ था और उसका हाथ, मेरी कोहनी को छूनेवाला था। वह चमकदार दिखाई दिया, वह दूसरों की तुलना में, अधिक बड़ा दिखाई दिया और जब मैंने पवित्र आकृति को देखा, मैंने पाया कि मैं भी, अपनी सामान्य स्थिति से अधिक लम्बा हो गया हूँ। फिर, डर की एक बड़ी गांठ मेरे अंदर दिखाई दी और मेरा पेट, डर के साथ खलबला गया। परन्तु लामा ने, मुझे फिर से आश्वासन देते हुए, मेरी कोहनी संभाली, ''सब ठीक है, लोबसांग; तुम्हारे डरने के लिये यहॉ कुछ भी नहीं है, मेरे साथ आओ।'' मेरी दांयी कोहनी के ऊपर, उसने अपने हाथ से मुझे रास्ता दिखाया। सावधानीपूर्वक, हमने लामाओं की, जो अभी भी एक वृत में बैठे हुए थे, परिक्रमा की। और मैने–वृत के केन्द्र में देखा, परन्तु मेरा शरीर वहॉ नहीं था, वहॉ कुछ भी नहीं था। सावधानीपूर्वक, मैने स्वयं को

अनुभव किया, और मैंने स्वयं को ठोस महसूस किया। लुकता–छिपता, मैं बाहर पहुँचा और अपने बगल में लामा को छुआ, और वह भी ठोस था। मैंने अपनी चेष्टाओं को देखा और हँसता गया और हँसता गया। ''लोबसांग! लोबसांग! अब तुम पूरी तरह से अपने शरीर की दूसरी अवस्था में हो। केवल वे, जो महानतम गूढ़ रहस्यवादी क्षमताओं, जन्मसिद्ध क्षमताओं के साथ हों, इसतरह की, ऐसी चीज कर सकते है। परन्तु मेरे साथ आओ।''

हम मंदिर के बगल से गए, और दीवार, समीप, और समीप, आती गई। मैंने उसकी पकड़ से छुड़ा लिया और लगभग चीखते हुए, एक बगल से मुड़ने की कोशिश की, ''नहीं। जबतक कि हम रुकते नहीं हैं, हम अपने आपको घायल कर देंगे। ये दीवार ठोस है !'' लामा ने, मेरी पकड़ को और अधिक बढ़ा दिया, और आदेश दिया, ''साथ आओ! जब तुमको अधिक अनुभव हो जाएगा तुम खोजोगे कि ये कितना सरल है!'' वह मेरे पीछे चला और अपना हाथ मेरी एक स्कन्धसंधि (shoulder blade) के ऊपर रख दिया। एक ठोस दीवार, भूरे पत्थरों की दीवार, आगे चलती दिखी। जैसे ही, उसने धकेला, मैंने दीवार के पत्थर में प्रवेश किया, और वास्तव में, अपने जीवन का सब से महत्वपूर्ण, मेरे सामने आया। ऐसा लगा मानो, मेरा पूरा शरीर खुजला रहा (tingling) है, ऐसा लगा मानो मुझमें से, लाखों करोड़ों बुलबुले, निकलकर बाहर उछल रहे हैं, मेरी बाधा नहीं बन रहे, केवल मुझे गुदगुदा रहे हैं, गुदगुदी, मुझे आनन्ददायक तरीके से गुदगुदी मचाते हुए, केवल मेरे बालों को, अपने सिरों पर खड़ाकर रहे हैं। मैं किसी भी प्रकार की, किसी परेशानी के बिना चलता हुआ प्रतीत हुआ, और जैसे ही मैंने देखा मेरे ऊपर प्रभाव पड़ा कि मैं धूल के एक तूफान में से गुजर रहा हूँ, परन्तु धूल मुझे परेशान नहीं कर रही थी, ये मेरी ऑखों को बिल्कुल परेशान नहीं कर रही थी, और मैंने अपने हाथों को बाहर की तरफ खोल दिया और धूल को पकड़ने की कुछ कोशिश की। परन्तु ये मेरे अंदर होकर निकल गई या मैं इसमें से सीधा निकल गया, मैं नहीं जानता कि दोनों में से कौन सा सही है। मेरे पीछेवाला लामा बन्द मुँह से मुस्कराया और मुझे थोड़ा सा कड़े ढ़ंग से धकेल दिया, और मैं दीवार में से ठीक आरपार और गलियारे में से होता हुआ और आगे निकल गया। एक बूढ़ा लामा, अपने प्रत्येक हाथ में, मक्खन के एक दीपक को हुए आ रहा था, और कुछ चीज उसके बांयी कोहनी और उसके शरीर के बीच में दबाई हुई थी। मैंने उसके साथ स्पर्श से बचने का प्रयास किया परन्तु काफी देर हो चुकी थी। अपने बेढंगेपन के लिए, तुरन्त ही, मैं उससे माफी मॉगने के लिए तैयार हुआ परन्तु बूढ़ा आदमी चलता गया; वह मेरे अंदर होकर, और मैं उसके अंदर होकर गुजर गया, और हममें से कोई भी इस स्पर्श के प्रति जागरूक नहीं था, किसी को भी हल्का सा भी ये अनुमान नहीं था कि हम, एक दूसरे मानवों के बीच से होकर गुजर गए हैं।

लामा के द्वारा मुझे पथप्रदर्शन किये जाते हुए, हम भवनों में होकर गुजरे, दूसरों के निजत्वों का आक्रमण करते हुए कभी नहीं, उनके कमरों में अकेले, परन्तु भण्डारगृहों में घूमने के बदले में और एक जलानेवाली टिप्पणी या लामा, जो मुझे अच्छी तरह जानता था, के पक्ष में एक भावभंगिमा (gesture)– हमने रसोईघर की भी यात्रा की।

बूढ़ा रसोईया भिक्षु, जौ के चमड़े के बड़े कंटेनर के पीछे, वहॉ आराम कर रहा था। वह अपने आपको खुजा रहा था और कहीं से (प्राप्त) डंठल के एक टुकड़े से, अपने दांतों को कुरेद रहा था; बहुधा (every so often) वह हरबार घूम जाता और कोने में थूकता, और तब फिर, अपने को खुजाने लगता और दांत को कुरदने लगता। अंत में, जैसे ही हम उसे देखते हुए खड़े हुए, वह मुड़ गया, (उसने) एक भारी आह भरी, और कहा, ''ए! ए! मैं सोचता हूँ, दुबारा खाना तैयार करने का समय हो गया। ओह! ये कैसा जीवन है; त्सम्पा, त्सम्पा, और फिर भी और अधिक त्सम्पा, और इन सभी भुक्खड़ लोगों का पेट भरना है।''

हम भवनों में होकर, आगे, और आगे, चले। मेरी टॉगों ने मुझे बिल्कुल कष्ट नहीं दिया, वास्तव

में, इस संबंध में एकदम सच्चा होते हुए, मैं अपनी टॉगों के बारे में ये सोच भी नहीं पाया, क्योंकि ऐसा करने का कोई कारण नहीं था–उन्होंने मुझे परेशान नहीं किया। हम, किसी भी दूसरे व्यक्ति की निजता में अतिक्रमण न करने के लिए सावधान, बहुत सावधान थे। जहॉ तक हम जा सकते थे और व्यक्तिगत निवास के स्थानों में प्रवेश न करते हुए, हम गलियारों में मुड़े। हम, गहरे नीचे, भण्डारकक्षों में आए। वहॉ बाहर, अपनी पूरी लंबाई में अपनी करवट से फैलकर लेटा हुआ, थोड़ा सा अंगड़ाई लेता हुआ, मेरा पुराना दोस्त, आदरणीय पुस पुस था। उसके कान चपटे थे और उसके सिर के ऊपर, गलगुच्छे (whiskers) हिल रहे थे। हमने सोचा, हम बिना आवाज के, उसके समीप से जा रहे थे, परन्तु अचानक ही वह, उघड़े हुए जहर के दांतों के साथ गुस्से में आते हुए, पूरी सजगता के साथ जागा और अपने पैरों पर कूदा। परन्तु जैसे ही उसने सूक्ष्मस्तर पर देखा (जैसे कि सारी बिल्लियॉ देख सकती हैं), तब उसकी ऑखें हमसे मिलीं, और जैसे ही उसने मुझे पहिचान लिया, उसने प्यार करना प्रारम्भ किया। मैंने उसे थपथपाने का प्रयास किया, परन्तु वास्तव में, मेरे हाथ ठीक उसमें होकर गुजर गए, एक अत्यधिक ध्यान देने योग्य अनुभव, क्योंकि मैं हमेशा ही बूढ़े आदरणीय बिल्ला, बिल्ला, को थपथपाता था और पहले कभी मेरे हाथ उसके अंदर से नहीं गुजरे थे। वह आश्चर्यचकित होता हुआ दिखाई दिया, जबकि मैं परेशान था, परन्तु उसने मुझे एक टक्कर दी, जो इससमय, उसके आश्चर्य के अनुसार, मेरे अंदर होकर गुजरी और तब उसने पूरी चीज को अपने दिमाग से बर्खास्त कर दिया, लेटा और फिर से सो गया।

लंबे समय के लिए, हम ठोस दीवारों में होकर, फर्शों में होकर, ऊपर उठते हुये, घूमते रहे और तब अंत में लामा ने कहा, ''फिर से नीचे, अब हम नीचे चलें, क्योंकि इस अवसर पर, हम काफी दूर तक यात्रा कर चुके हैं।'' उसने मेरी भुजा को पकड़ा, और हम फर्श में होकर नीचे उतर गए, छत के नीचे दिखते हुए, और दूसरे फर्श में होकर गुजरते हुए, जबतक कि हम गलियारे में काफी दूर तक नहीं आ गए, जहॉ वह मन्दिर था। एकबार फिर, हम दीवार पर पहुॅचे, परन्तु इसबार मुझे कोई हिचकिचाहट नहीं हुई, मैं इसमें होकर गुजरा, गोया कि, इन आनेवाले बुलबुलों में होकर, अनजान अनुभवों से होकर वह सभी आनन्ददायक खुजली। अन्दर, लामा अभी भी अपने वृत में थे, और मेरे लामा–एक वह जो मेरी बॉह को पकड़े हुए थे–ने मुझे बताया कि मैं, उस स्थिति में, जो मैं मूलरूप से था, लेट सकता हूॅ। मैंने ऐसा किया, और तत्क्षण मुझे नींद आ गई।

अध्याय आठ

कहीं, थोड़ी दूर पर, घण्टी बुला रही थी, पहले शान्त, फिर ये तेजी से तीव्रता में बढ़ी। झंकार! झंकार! ये चलता गया। अनौखा, मैंने सोचा, एक घण्टी ? अच्छी भव्यतापूर्ण, ये समय में, मेरे दिल की धड़कन के साथ, घंटी बजा रही थी। एक क्षण के लिए, मुझे भगदड़ ने डरा दिया; क्या मैं ज्यादा सोया था और मन्दिर की सेवा के लिए विलंबित हो गया था? धुंधलेपन से मैंने अपनी ऑखों को खोला और ये देखने का प्रयास किया कि, मैं कहॉ था। ये अनजान था! मैं केन्द्रित नहीं कर सका। जो कुछ भी मैं समझ सका था, एक केशरिया धारीदार बाने के ऊपर, नौ भयानक सफेद बिन्दु, टंके हुए थे। मेरा मस्तिष्क, विचारों के प्रयास से चटक गया। मैं कहॉ था ? क्या हुआ ? क्या मैं छत से गिरा या ऐसा कुछ हुआ ? अच्छे प्रर्दशन के साथ मैं सावधान हुआ कि, मेरी चेतना में, तेजी से उभरते हुए, कुछ विभिन्न प्रकार के दुःख और दर्द थे।

आह, हॉ ! ये तेजी से पीछे वापस आया, और इस ज्ञान के साथ, मेरी ऑखों को केन्द्रित करने की और ये देखने की कि मेरे सामने क्या था, ये योग्यता भी आई। मैं ठण्डे–ठण्डे पत्थर के फर्श पर अपनी पीठ के बल लेटा हुआ था। मेरा कटोरा, कैसे भी, मेरी पोशाक में, सामने से पीछे की तरफ खिसक गया था और मैं अपने बजन को, अपने कंधों की हड्डियों के बीच में संभाले हुए था। मेरा जौ का थैला–कड़े चमड़े का–(मेरे) नीचे आ गया था और लगभग मेरी बांयी पसली को तोड़ रहा था। मैं संवेदना के साथ चला और नौ लामाओं को, जो मुझे देखते हुए बैठे थे, घूरकर देखने लगा। उनकी केशरिया धारियों के ऊपर भयानक सफेद धब्बे टॉके हुए थे! मैंने आशा की कि वे, जो मैं सोच रहा था, नहीं जान पाऐं।

''हॉ, लोबसांग, हम भी जानते हैं!'' एक मुस्कुराया; ''इस विषय के ऊपर, तुम्हारे दूरानुभूति सम्बन्धी विचार बहुत स्पष्ट थे। परन्तु धीमे से उठे। तुमने ठीक किया है और अपने शिक्षक की टिप्पणियों को पूरी तरह से युक्तिसंगत बनाया है।'' अपनी पीठपर एक हार्दिक थपकी पाकर, मैं सतर्कतापूर्वक उठ बैठा और मैंने एक जोरदार प्यार जैसा किया। बूढ़ा बिल्ला, मेरे सामने बगल में आया और इस संकेत के रूप में कि उसकी खाल को रगड़ा जाए, उसने मेरे हाथ को छुआ। आलस्यपूर्ण तरीके से, मैंने ऐसा किया, मैंने अपने बिखरी हुई बुद्धि को इकट्ठा किया और आश्चर्य किया कि आगे क्या होगा। ''ठीक है, लोबसांग, शरीर से बाहर जाने का ये अच्छा अनुभव था,'' उस लामा ने कहा, जो मेरे साथ गया था। ''हमें इसका बहुधा प्रयास करना चाहिए ताकि तुम, उतनी आसानी से जैसे कि अपनी पोशाक को समेट सकते हो, अपने शरीर से बाहर जा सको'' ''परन्तु, आदरणीय लामा, मैंने कुछ भ्रम में कहा, ''मैंने अपने शरीर को नहीं छोड़ा–मैं इसे अपने साथ ले गया था!'' मार्गदर्शक लामा का जबड़ा आश्चर्य से बंद हो गया। ''तुम्हारा क्या मतलब है ?'' वह विस्मय से चिल्लाया। ''तुमने मेरे साथ, आत्मा में, यात्रा की।'' ''आदरणीय लामा,'' मेरा अतिरिक्त जवाब था। ''मैंने विशेषरूप से देखा, और मेरा शरीर फर्श पर नहीं था, इसलिए मुझे इसे अपने साथ ले गया होऊॅगा।''

बूढ़ा विद्वान लामा, जो नौ में से सबसे छोटा था, मुस्कुराया और (उसने) कहा, ''तुम एक सामान्य गलती कर रहे हो, लोबसांग, क्योंकि तुम अभी भी संज्ञानों (senses) के द्वारा बेहोशी में हो।'' मैंने उनको देखा और मैं पूरी ईमानदारी के साथ, नहीं जानता था कि वे किस सम्बन्ध में बात कर रहे थे; मुझे ऐसा लगा कि उन्होंने अपने संज्ञानों से छुटटी ले ली है, क्योंकि मैंने सोचा, निश्चितरूप से मुझे जानना चाहिए था कि मैंने अपने शरीर को देखा या नहीं, और यदि मैंने अपने शरीर को नहीं देखा तो उसे वहॉ नहीं होना चाहिए था। मैं मानता हूॅ, उन्होंने मेरी शंकालु नजर से देखा होगा कि मैं, उसे जिसे वे कह रहे थे, नहीं ले जा रहा हूॅ। उनका क्या मतलब था क्योंकि, दूसरे लामाओं में से एक ने, मुझे ध्यान देने का इशारा किया। ''मैं तुम्हें अपनी दृष्टि दे रहा हूॅ, लोबसांग,'' इस दूसरे लामा ने कहा, ''और मैं तुम्हें, और समीप से ध्यान देते हुए, देखना चाहता हूॅ क्योंकि जो कुछ मुझे कहना है, वह एकदम

प्रारंभिक है, फिर भी, यह ऐसा मामला है, जो लोगों को बहुत अधिक परेशान करता है। तुम फर्श पर लेटे हुए थे, और चूँकि सूक्ष्मशरीर से यात्रा करने का ये तुम्हारा पहला ही सचेतन अवसर था, हमने तुम्हें सहायता की, हमने तुम्हारे सूक्ष्मशरीर की, तुम्हारे भौतिकशरीर से सरलता से बाहर निकालने में मदद की, और चूँकि यह कार्य हमारे द्वारा, जिन्हें जीवनभर का अनुभव है, किया गया था, तुम्हें किसी प्रकार की कोई परेशानी या झटका महसूस नहीं हुआ। कारण स्पष्ट है कि तुम्हें इस बात का कोई अनुमान नहीं है कि, तुम शरीर के बाहर थे।'' मैंने उसकी तरफ देखा, और इसके सम्बंध में सोचा। मैंने सोचा, हॉ, ये ठीक है, मुझे कोई खयाल नहीं था कि मैं शरीर के बाहर हूँ, किसी ने नहीं कहा कि मैं शरीर के बाहर होनेवाला हूँ, इसलिए यदि उन्होंने मुझे नहीं बताया कि क्या आशा की जानी है, तो मुझे शरीर को छोड़ने के अनुभव कैसे हो सकते थे ? परन्तु, तब, ये सब, जो मैंने नीचे देखा था, मुझे वापस याद आया, और निश्चितरूप से, मैंने अपने फर्श पर लेटे हुए शरीर को नहीं देखा, जो मुझे, जबतक कि मैं, अभी भी शरीर में था, कर लेना चाहिए था। मैंने अपना सिर हिलाया, मानो कि, मकड़ी का जाला खुलकर हिल गया हो; मैंने महसूस किया कि ये सब, मुझ से काफी अन्दर जा रहा है। मैं शरीर के बाहर था, फिर भी मेरा शरीर वहॉ नहीं था, इसलिए यदि ये वहॉ नहीं था, तो ये कहॉ था, और मैंने उसे कहीं भी जमीन पर लेटे हुए क्यों नहीं देखा ? ठीक तभी, बूढ़े बिल्ले ने मुझे दूसरी थप्पी दी और मेरी गोद में, ऊपर नीचे, उछलते कूदते, अपने पंजों को मेरी पोशाक में घुसाते हुए, और जोर से प्यार करते हुए, और जोर से मुझे ये ध्यान दिलाते हुए कि, मुझे उसकी उपस्थिति का भी ध्यान रखना चाहिए, बुनना शुरू किया। लामा, जो अभी तक बोलता रहा था, हॅसा और उसने टिप्पणी की, ''वहॉ! बूढ़ा बिल्ला तुमसे, अपने दिमागों को खुरचने को, साफ करने को, कह रहा है ताकि तुम देख सको!''

मैंने अपनी उॅगलियों को फैलाया और बिल्ले की पीठ को खरोंचा। उसकी प्यार भरी आवाज तीव्रता में बढ़ती गई, तब अचानक ही, वह ठीक अपनी लम्बाई पर फैल गया। वह बूढ़ा था, उसका सिर मेरी गोद में एक तरफ चिपका हुआ था और उसकी टॉगें दूसरी तरफ को बाहर निकल रही थीं, उसकी पूंछ फर्श पर बाहर की तरफ, सीधी तनी हुई थी। ये बिल्लियॉ, दूसरी सामान्य प्रकार की बिल्लियों की तुलना में, अधिक तेजी से बढ़ती हैं। ये सामान्यतः अधिक तीखी होती हैं, परन्तु हमारी मन्दिर की बिल्लियॉ, मुझे भाई के रूप में या ऐसा ही कुछ, पहिचानती हुई सी लगतीं थीं क्योंकि, निश्चितरूप से मैं उनके साथ परिचित था और वे मेरे साथ परिचित थीं।

लामा, जो मुझे इससे पहले बोलता रहा था, ये कहते हुए मेरी तरफ मुड़ा, ''उसे जाने दो, जबतक कि हम तुमसे बात करें, वह तुम्हारे ऊपर आराम कर सकता है। शायद, वह तुम्हें अक्सर हर बार, उसकी तरफ ध्यान देने की याद दिलाने के लिए, एक अच्छा धक्का देगा। अब! लोग वह देखते हैं, जिसे देखने की वे अपेक्षा करते हैं। अक्सर वे, उसे नहीं देखते, जो सर्वाधिक प्रकट है। उदाहरण के लिए,'' जैसे ही उसने ये कहा, उसने कडाई से मेरी तरफ देखा ''गलियारे में सफाई करनेवाले कितने लोग थे, जो तुम्हें मिले? वह आदमी कौन था, जो जौ के भण्डार में झाडू लगा रहा था? और यदि स्वामी मठाध्यक्ष ने तुम्हें बुलाने के लिए भेजा होता और तुम्हें, उन्हें ये बताने के लिए कहा होता कि क्या तुमने अन्दरवाले गलियारे में किसी को देखा था, तो तुम उन्हें क्या बताते ?'' वह एक क्षण के लिए, ये देखने के लिए कि मैं क्या कोई टिप्पणी करने जा रहा हूँ, रुके और जैसे ही मैंने उनकी तरफ–खुले मुॅह से ताका, मुझे डर है–उन्होंने (कहना) जारी रखा, ''तुमने कहा होता कि अन्दरवाले गलियारे में, तुमने किसी को नहीं देखा क्योंकि, व्यक्ति जो अंदरवाले गलियारे में था, वह एक व्यक्ति था, जिसे वहॉ रहने का पूरा अधिकार था, वह हमेशा वहॉ है, और जो उस गलियारे में इतना सही होता कि तुमने उस पर ध्यान तक नहीं दिया होता, इसलिये–तुम ये कहते कि, तुमने गलियारे में किसी को नहीं देखा।''

जैसे ही उसने होशियारी के साथ, अपने टुकड़े को जोड़ा, अपने सिर को हिलाते हुए, दूसरा लामा फूट पड़ा : ''कुलानुशासकों की, जब वे जॉच कर रहे होते हैं, अक्सर कुछ परेशानियॉ होती है; वे

पूछ सकते हैं क्या यहॉ कोई अजनबी थे, या क्या किसी निश्चित इमारत में कोई था और उस इमारत का एक संरक्षक सदैव यही कहता कि नहीं, नहीं, वहॉ कोई नहीं था और फिर भी, वहॉ तुमने आदमियों के एक जुलूस को देखा होता, वहॉ से कुलानुशासक गुजर रहे होते, वहॉ शायद, एक या दो लामा भी होते, और शायद वहॉ, दूसरे लामामठ से आया हुआ कोई संदेशवाहक भी होता। परन्तु चूँकि ये लोग इतने सामान्य हैं–अर्थात् क्योंकि उनके लिए उस क्षेत्र में होना, इतना सामान्य था–उनका रास्ता बिना ध्यान दिए ही गुजर जाता, और जहॉ तक देखे जाने का सवाल है, वह ठीक अदृश्य ही रहे होते।''

जो अभी तक नहीं बोला था, उस (लामा) ने अपना सिर हिलाया, ''हॉ ये ऐसा ही है। अब मैं तुमसे पूछता हूँ, लोबसांग, तुम इस मन्दिर में कितनी बार आए हो ? और फिर भी तुम्हारी नजर से ऐसा लगता है कि अभीतक तुमने इस स्टेण्ड को, जिसके ऊपर हमने क्रिस्टल को टिकाया, नहीं देखा है। ये स्टैण्ड, लगभग दो सौ साल से यहॉ है, ये कभी इस मंदिर के बाहर नहीं रहा, फिर भी, तुम इसको ऐसे देखते हो मानो तुम इसे पहली बार देख रहे हो। ये पहले यहॉ था, परन्तु ये तुम्हारे लिए सामान्य स्थान था, इसलिए ये तुम्हारे लिए अदृश्य था।''

लामा, जो मेरे साथ, पोटाला में होकर, सूक्ष्मशरीर की यात्रा में था मुस्कुराया और उसने (कहना) जारी रखा : ''तुम, लोबसांग, जो हो रहा था, तुम्हें इसका कोई ख्याल नहीं है, तुम नहीं जानते थे कि तुम शरीर के बाहर जानेवाले हो, इसलिए, तुम अपने शरीर को देखने के लिए तैयार नहीं थे। इस प्रकार, जब तुमने देखा, तुमने लामाओं को एक वृत में बैठे हुए देखा, और तुम्हारे ध्यान ने, सावधानीपूर्वक, तुम्हारे खुद के शरीर को अनदेखा कर दिया। सम्मोहन में भी हमें ऐसी चीज प्राप्त होती है; हम एक व्यक्ति को ये विश्वास करने के लिए कि वह कमरे में पूरी तरह अकेला है, सम्मोहित कर सकते हैं, और तब वह व्यक्ति सम्मोहन की उस स्थिति में, कमरे में हर जगह देखेगा सिवाय उस व्यक्ति के, जो उस कमरे को उसके साथ साझा करता है, और सम्मोहित हुआ व्यक्ति, जग जाने पर कसम खाकर के ये कहेगा कि वह अकेला था। ठीक इसीतरह से, तुमने सावधानीपूर्वक अपने शरीर को देखने को अनदेखा किया, जबकि ये साधारण दृष्टि में था। बदले में, तुमने वृत की परिधि के आसपास देखा, तुमने, उस अकेले स्थान को छोड़ते हुए, जिसको तुमने सोचा कि तुम देखना चाहते थे, मन्दिर के आसपास देखा।''

इसने वास्तव में, मुझे विचार करने के लिए बाध्य किया; मैं इससे पहले भी कुछ इसप्रकार की चीजें सुन चुका था। मैंने एकबार, एक बूढ़े भिक्षु को देखा, जिसपर सिर दर्द का भारी बुरा झटका लगा था। जैसा उसने मुझे बाद में बताया, जिन चीजों के ऊपर उसने वहॉ देखा, वे वहॉ नहीं थीं, जो चीजें उसने अपने सामने देखीं, केवल उसके बगल में हो सकती थी, परन्तु यदि उसने बगल में देखा तो, उन चीजों को देख सकता था, जो उनके सामने थी। उसने मुझे बताया कि ये वैसे ही देखने जैसा था, उसकी ऑखों के ऊपर रखी हुई, जैसेकि दो नलियों के युग्म में होकर देखना ताकि, इस प्रभाव में वह ऑखों पर पट्टी बांधे हुए जैसा दिखाई दिया।

एक लामा ने–तबतक मैं एक से दूसरे को नहीं जानता था–कहा, ''स्पष्टरूप से, अक्सर दिखने वाला, अदृश्य हो सकता है क्योंकि चीज जितनी अधिक सामान्य होती है, जितनी ही अधिक परिचित होती है, वह उतनी ही कम ध्यान देने योग्य हो जाती है। उस आदमी का, जो जौ लाता है, विचार करो : तुम उसे हर दिन देखते हो, और तुम फिर भी, उसे नहीं देखते। वह इतनी परिचित आकृति है कि यदि मैंने तुमसे पूछा होता कि इससमय, यहॉ कौन आया था, तुम कह गए होते, कोई नहीं, क्योंकि तुम उस जौ लानेवाले को, एक व्यक्ति को, ठीक वैसे ही जैसे कि, कुछ चीज, जो हमेशा, कुछ विशेष समय पर, कुछ काम करती है, नहीं समझोगे।''

मुझे ये अधिक ध्यान देने योग्य प्रतीत हुआ कि मैं जमीन पर लेटा हुआ होऊँ, परन्तु मैं अपने

आपके शरीर को देखने में अयोग्य हूँ। तथापि, मैं सम्मोहन और सूक्ष्मलोकों की यात्राओं के बारे में इतना अधिक सुन चुका था कि मैं, उनके इस स्पष्टीकरण को स्वीकार करने के लिए पूरीतरह से तैयार था।

बूढ़ा विद्वान लामा मेरे ऊपर मुस्कराया और उसने टिप्पणी की, ''हमें जल्दी ही तुमको विशिष्ट निर्देश देने पड़ेंगे ताकि, तुम किसी भी समय, आसानी से अपने शरीर को छोड़ सको। हर दूसरे आदमी की तरह, तुम हर रात को सूक्ष्मलोक की यात्रा करते रहे हो, दूरस्थ स्थानों पर जाते रहे हो और तब इसके बारे में भूलते रहे हो। परन्तु कुल मिलाकर, हम तुम्हें ये दिखाना चाहते हैं कि, तुम्हारे लिए किसी भी समय, शरीर से बाहर आ जाना, सूक्ष्मलोक की यात्रा पर जाना, और तब उस पूरे ज्ञान को संभाले रखते हुए, जो तुमने देखा है, जो सब तुमने किया है, अपने शरीर में वापस लौटना, तुम्हारे लिए कितना आसान है। यदि तुम ऐसा कर सको तो तुम दुनियॉ के बड़े शहरों की यात्रा भी कर सकते हो और तुमको यहॉ तिब्बत से अलग नहीं हटाया जायेगा परन्तु सभी सभ्यताओं के ज्ञान को प्राप्त कर सकते हो।''

मैंने उसके सम्बंध में सोचा। मुझे आश्चर्य हुआ कि कैसे हमारे कुछ ऊॅचे लामा, सभी (प्रकार के) ज्ञानों को रखनेवाले प्रतीत होते थे, वे रोजमर्रा की जिन्दगी की शुद्धताओं से दूर रहते हुए, अलग से प्राणी दिखाई देते थे, हमारे देश के किसी भी भाग में, किसी भी क्षण, जो रहा है, उसे कहने में सक्षम–मुझे याद है ऐसे ही एक अवसर पर, मैं अपने शिक्षक के साथ, एक बूढ़े आदमी से मिलने गया था। मुझे उसके सामने प्रस्तुत किया गया और हम बात करते रहे, या मेरे शिक्षक और वह, बात करते रहे और मैं आदरपूर्वक उनको सुन रहा था। अचानक उस बूढ़े आदमी ने ये कहते हुए, अपने हाथ को रोक लिया ''मुझे बुलाया गया है!'' तब उसने अपने आपको वहॉ से हटा लिया, उसके शरीर में से प्रकाश बाहर निकलता हुआ दिखाई दिया। वह एक मृत आदमी की तरह से दिखते हुए, एक खोखले खम्बे की तरह से दिखते हुए, वहॉ स्थिर होकर बैठा रहा। मेरे शिक्षक काफी शांत बैठे और मुझे भी शांत और स्थिर बैठने का इशारा किया। हम अपने हाथों को फंसाकर, अपनी गोदी में रखे हुए, बिना बोले हुए, बिना हिले हुए, साथ–साथ बैठे। हमने बड़ी दिलचस्पी के साथ, जो उस खाली आकृति के साथ होता हुआ दिखा, सो देखा; क्योंकि शायद दस, शायद बीस मिनट–इन परिस्थितियो में समय का नापना मुश्किल था–कुछ नहीं हुआ। तब वहॉ बूढ़े आदमी में, जीवन में लौटने के, जीवन्त होने के, रंग दिखाई दिए। अंत में वह हिला और उसने अपनी ऑखें खोली और तब–मैं इसे कभी भूलूॅगा नहीं–उसने मेरे शिक्षक को ठीक वह बताया, जो सिंगस्ते में हो रहा था, जो हमसे एकदम अलग था। मुझे ऐसा लगा कि दूसरी सभी विशेष युक्तियों की तुलना में, ये संचार के किसी भी तंत्र से, जो मैंने बाहरी दुनियॉ में, इस बारे में सुने थे, अच्छा था।

मैं कहीं भी सूक्ष्मशरीर की यात्रा में सक्षम होना चाहता था। मैं पहाड़ों के आरपार, समुद्रों के आरपार और विदेशी देशों में चलने में सक्षम होना चाहता था। ये सभी आदमी, ये नौ लामा, मुझे ये सब पढ़ानेवाले थे!

बूढ़े बिल्ले ने, अपने गलगुच्छों को कंपाते हुए जम्हाई ली, और तब वह खड़ा हुआ और जबतक कि मैंने ये नहीं सोचा कि वह दो हिस्सों में टूट जाएगा, अंगड़ाई ली और अंगड़ाई ली। तब वह गर्वपूर्वक धक्का देते हुए, दो लामाओं के बीच में से होकर अपने रास्ते पर आराम से टहलता हुआ चला गया और पवित्र आकृतियों में से एक के पीछे, अंधेरे में गायब हो गया। बूढ़ा विद्वान लामा, ये कहते हुए बोला कि, ''ठीक है, ये समय है कि हम इस सत्र को समाप्त कर दें, क्योंकि इस अवसर पर, हम यहॉ लोबसांग को पढ़ाने के लिए नहीं आए, ये मात्र एक घटनावश हुआ। हमें अपने दूसरे काम की तैयारी करनी चाहिए, और जब उसके शिक्षक वापस लौट आएंगे, हम लोबसांग को दुबारा मिलेंगे।''

दूसरा मेरी तरफ मुड़ा और (उसने) एक कड़ी निगाह से मुझे घूरा : ''तुम्हें बड़ी सावधानी से

सीखना पड़ेगा, लोबसांग। तुम्हें अपने जीवन में बहुत कुछ करना है, तुम्हें कठिनाइयॉ, उत्पीड़न होंगे, तुम बहुत दूरी तक और अक्सर यात्रा करोगे। परन्तु अन्त में, तुम वह प्राप्त करोगे, जो तुम्हारा कार्य है, जिसको करने के लिए तुम्हें कहा गया था। हम तुम्हें मूलभूत प्रशिक्षण देंगे।'' वे अपने पैरों पर खड़े हुए, स्टैण्ड को वहीं छोड़ते हुए, क्रिस्टल को उठाया और मन्दिर को छोड़ दिया।

मैं आश्चर्य करता हुआ बैठा रहा। एक काम ! कठिनाई ? परन्तु मुझे हमेशा ये बताया गया था कि मेरे सामने एक कठोर जीवन है, हमेशा बताया गया था कि मुझे एक काम करना है, तो वे क्यों, बार–बार, इस चीज को चर्चा में लाते हैं। कैसे भी, मुझे ये काम क्यों करना है, क्यों मैं हमेशा पीड़ित होने वाला व्यक्ति था ? मैं इसके बारे में जितना ज्यादा सुनता, उतना ही कम, मैं इसको पसन्द करता था। परन्तु मैं सूक्ष्मलोक में यात्रा करना चाहता था और सभी चीजों को, जिनके बारे में सुन रखा था, देखना चाहता था। जैसे ही, दर्द मेरी टॉगों से दुबारा फूटा, सतर्कतापूर्वक, झिझकता हुआ, और कठोर शब्दों को बड़बड़ाता हुआ, मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ। पिन और सुईयॉ, और तब, जहॉ मैं कुछ बार गिर पड़ा था, कुछ एक उभार और खरोंच और मेरे कंधों के बीच एक दर्द, जहॉ मैं अपने कटोरे के ऊपर लेटा रहा था। ये सोचते हुए, मैं अपनी पोशाक में, अन्दर पहुॅचा और मैंने, उनकी अभ्यस्त स्थितियों में, अपने सामान को छॉटा। तब, एक अंतिम नजर के साथ, मैंने मन्दिर को छोड़ दिया।

मैं हिचकिचाते हुए दरवाजे पर, मुड़ा और उन टिमटिमाते हुए मक्खन के दीपकों की ओर वापस गया। एक–एक करके, मैंने उनको बुझा दिया, क्योंकि ये मेरा कर्तव्य था। मैं वहॉ से जानेवाला आखिरी व्यक्ति था, इसलिए मुझे उन सब दीपकों को बुझाना था। जैसे ही अंधेरे में होकर, मैंने, वहॉ के लिए, जहॉ खुले दरवाजे में से थोड़ी सी हल्की सी रोशनी आ रही थी, अपना रास्ता महसूस किया। मेरे नकुए, बुझती हुई बत्तियों के धुंए से घायल हो रहे थे। कहीं दूर एक कोने में, एक लाल अंगार जैसी बत्ती समाप्त होने को थी, जो अब कालेपन में जलकर कोयला बन रही थी।

मैं एक क्षण के लिए, ये निर्णय करते हुए, कि मैं किस रास्ते से जा जाऊॅगा, दरवाजे पर खड़ा हुआ। तब, मैं अपना मन पक्का करके, मुड़ा और दांयी ओर को अपना रास्ता लिया। तारों की चमकीली रोशनी, हर एक को चांदी के नीले से रंग का प्रदर्शन देते हुए, खिड़कियों में से होकर, वहॉ भर रही थी। मैं गलियारे में, एक कोने की तरफ मुड़ा और ये सोचते हुए कि, हॉ, वास्तव में, वे ठीक थे, अचानक रुक गया। मैं एक क्षण के लिए वहॉ खड़ा हुआ और सोचा। मुझे ऐसा लगा कि, समय–समय के बाद, मैं एक छोटे प्रकोष्ठ में बैठे हुए, एक बूढ़े भिक्षु के पास से गुजरा और फिर भी, यद्यपि, मैं उसे हर दिन देखता था, मैंने कभी उन पर ध्यान ही नहीं दिया। मैंने अपने कदमों को, शायद दस गज के लिए वापस किया और अंदर झॉक कर देखा। वह, वहॉ गलियारे के दूर वाले छोर पर, खिड़कियों के सामने वाली पत्थर की छोटी कोठरी में था। वह अंधा था, वहॉ अंतहीनरूप से, गोया कि अपने एक बड़े प्रार्थनाचक्र को घुमाते हुए, घुमाते हुए, घुमाते हुए, घुमाते हुए वह फर्श पर बैठा था। जब कभी, कोई वहॉ से गुजरता, वहॉ बूढ़े भिक्षु के प्रार्थनाचक्र की चट, चट, चट की शाश्वत आवाज होती। घण्टों के बाद घण्टे, दिनों के बाद दिन, गुजरे और वह ये विश्वास करते हुए वहीं बैठा रहा, कि इस प्रार्थनाचक्र को घुमाते रहना, ये ही उसके जीवन का दिया गया कार्य है और यही वह सब कुछ था, जिसके लिए वह जिन्दा था। हम लोग, जो इस रास्ते से गुजरते थे, अक्सर इसके प्रति, उसके चक्र के घुमाने के प्रति, बेखबर थे। हम इतने अभ्यस्त हो चुके थे कि हम न तो हम बूढ़े भिक्षु को देखते थे और न ही हम उसके चक्र की चट–चट की आवाज को (सुनते थे)।

मैं वहॉ अंधेरे दरवाजे पर खड़ा हुआ और जैसे ही चक्र ने चट–चट करना शुरू किया, (मैंने) आश्चर्य किया और वह बूढ़ा लामा कोमलता से उछला, ''ओम मनी पद्मे हुम, ओम मनी पद्मे हुम, उसकी आवाज कर्कश थी और उसकी उॅगलियॉ मरोड़ी हुई और जिद्दी गॉठदार थीं। मैं उसे, केवल अंधियारे से, बाहर कर सकता था और चूॅकि वह अनेक वर्षों से चक्र को घुमाता था, चक्र को घुमाते हुए,

वह मेरे प्रति पूरी तरह भुलक्कड़ था। (वह) मेरे पैदा होने के काफी पहले से, लम्बे समय से, चक्र को घुमा रहा था। कितने लम्बे समय तक, वह इसको घुमाएगा ? मैंने आश्चर्य किया। परन्तु इस (घटना) ने मुझे बताया कि लोग, यदि वे इतने परिचित हों कि किसी को उनकी तरफ ध्यान न देना पड़े, अदृश्य (के समान) थे। ये भी मेरे दिमाग में आया कि आवाजें, यदि कोई उनके प्रति अत्यधिक अभ्यस्त हो जाता है, चुप्पियॉ (साबित) होती थीं।

मैंने उन समयों के बारे में सोचा, जब मैं एक अंधेरे प्रकोष्ठ में, पूरी तरह अकेला था और तब कुछ समय बाद, मैंने शरीर के गुड़गुड़ाने और खुदबुदाने, शरीर की धमनियों और शिराओं में होकर उफनते हुए खून की सरसराने की आवाजों को सुना, और तब मैंने, बाहर की तरफ पम्प करते हुए, अपने दिल के माध्यम से, उसकी स्थाई धक, धक, धक को सुना। एक समय बाद, मैं वास्तव में, हवा को अपने फैंफड़ों में आह भरते हुए भी सुन सकता था, और जब मैं हल्का सा हिला मांसपेशियों के चटखने की मंद सी आवाज, एक भिन्न स्थिति में हड्डियों को खींचती हुई मांसपेशियों का झटका। हम ये सब देख चुके हैं, हम सब शोरयुक्त मशीनें हैं, मैंने सोचा, और फिर, वहॉ दूसरी आवाजें भी हैं, जो हमारे ध्यान को आकर्षित करती हैं। जिनके साथ हम लगातार घिरे हुए हैं और जो बिल्कुल हस्तक्षेप नहीं करतीं, हम उनको ठीक सुन नहीं पाते।

मैं एक पैर पर खड़ा हुआ और अपने सिर को खरौंचा और तब सोचा कि रात पहले से ही गुजर चुकी है, शीघ्र ही वहॉ मन्दिर से, आधीरात की सेवा का बुलावा आएगा। इसलिए मैंने और अधिक संकोच नहीं किया परन्तु अपने दोनों पैर जमीन पर रखे, अपनी पोशाक को अधिक कसकर अपने चारों ओर पकड़ा, और गलियारे में होकर, ऊपर शयनबीथिका की तरफ चल दिया। जैसे ही मैं लेटा, मैं नींद में चला गया।

नींद, लम्बे समय तक, मेरी साथी नहीं रही; जैसे ही मैं लेटा, मैंने अंगड़ाई ली और घूम गया, चटक गया और और जीवन, जो लामामठ में था, के बारे में सोचा, दुःख मनाने लगा। लड़के, मेरे बारे में कष्ट से सांस लेते थे, रात की हवा में उनके खर्राटों की उठती और गिरती हुई आवाजें, और अपनी नींद में बड़बड़ाते थे। एक लड़का, जो कंठशूल (adonoids) से पीड़ित था, जबतक कि मैं निराशा में नहीं उठा और उसे एक तरफ बगल से घुमा नहीं दिया एक ''ग्लोबल– ग्लोबल–ग्लोबल–ग्लोबल'' बना रहा था। मैं सोचते हुए, सुनते हुए अपनी पीठ के बल लेटा। कहीं से प्रार्थनाचक्र की एक नीरसता भरी चट, चट की आवाज, जैसे कि कुछ भिक्षु, उसे अनन्तरूप से घुमाते रहते हैं ताकि उनकी प्रार्थनाऐं आगे उठती, बढ़ती रहें। जैसे ही कोई अपने रास्ते पर, हमारी खिड़की के बाहर की तरफ, घोड़े पर चढ़ा, दूर से, धक–धक की गूंगी सी आवाजें आईं। रात चलती गई। समय शान्त बना रहा। जीवन, प्रतीक्षा की शाश्वतता थी, प्रतीक्षा, जहॉ कुछ नहीं हिला, जहॉ कुछ खर्राटों, प्रार्थनाचक्रों की चिटचिटाहट और घोड़ों की दौड़ती हुई टापों के सिवाय, हर चीज शान्त थी। मुझे सो जाना चाहिए था .....

कमजोरी से मैं उठ बैठा। फर्श कठोर और न झुकनेवाला था। पत्थर की ठण्डक, मेरी हड्डियों के अन्दर, रेंग रही थी। कहीं से एक लड़का बड़बड़ाया कि उसे अपनी मॉ चाहिए। कठोरतापूर्वक, मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ और अपने आसपास सोते हुए, उन शरीरों को सावधानीपूर्वक बचाते हुए, खिड़की की तरफ चला। ठण्ड बहुत तेज थी और बर्फ के गिरने का खतरा था। हिमालय की पहाड़ियों की बड़ी श्रृंखला के ऊपर, सुबह कोमल प्रकाश की अपनी किरणों को, एक अगले दिन को प्रकाशवान बनाने की प्रतीक्षा में, हमारी घाटी को देखती हुई, (अपनी) रॅगीन उंगलियों को भेज रही थी।

हमेशा ऊॅची से ऊॅची चोटियों से गिरते हुए, बर्फ की धूल के उड़ते हुए झाग, अब उसके अंदर की तरफ चमकते हुए सुनहरी प्रकाश के द्वारा, जबकि चोटी से, चमकता हुआ इन्द्रधनुषी अर्द्धचन्द्र, जो ऊॅची हवाओं के उतार–चढ़ाव से हिल और फल–फूल रहा था, चमक रहा था। जैसे ही सूर्य पर्वतों के दर्रों के बीच से झांका और शीघ्र ही अगला दिन होने का वायदा किया, आकाश के आरपार, प्रकाश की

सजीव किरणें फूट पड़ीं। सितारे मन्द पड़ने लगे। अब आकाश, बैंगनी रंग का खजाना नहीं था; यह प्रकाशित हुआ, प्रकाशित हुआ और ये सर्वाधिक हल्का सा नीला हो गया। जैसे ही आकाश अधिक चमकीला हुआ, पूरे पर्वत सोने से रच गये। धीमे धीमे, अंधा करनेवाला सूर्य का गोला, पहाड़ों के दर्रों से चढ़कर ऊपर आया और हमारी घाटी की ज्वलंत भव्यता में बढ़ते हुए चमका।

ठण्ड बहुत तेज थी। बर्फ के रवे (टुकड़े) आकाश में से गिरे और एक संगीतमय खनखनाहट के साथ छत पर आकर टूट गए। हवा में, जो सुबह हमारी हड्डियों में लगभग जमी हुई थी, थोड़ा कड़वापन, नुकीलापन था। कितना विशिष्ट मौसम, मैंने सोचा, कईबार बर्फ से भी अधिक ठण्ड और तब कईबार, दोपहर में, ये असुखदरूप से गर्म हो जाती। तब, ऑख के झपकने भर में, हवा का एक बड़ा सा तूफान उठता और सब को उड़ाते हुए उसके सामने भेज देता। हमेशा, पहाड़ों में, वहॉ बर्फ रहती थी, गहरी बर्फ, परन्तु बर्फ के खुले हुए विस्तार पर, हवा, बर्फ को इतनी तेजी से उड़ाती, जितनी तेजी से कि वह गिरती। हमारा देश ऊॅचा, और विरली हवा वाला था। हवा इतनी पतली और इतनी साफ थी कि ये हमें मुश्किल से ही, पराबैंगनी किरणों से ''या सूर्य की गर्मी पैदा करने वाली किरणों से'' बचा पातीं। हमारी गर्मियों में, भिक्षु अपनी पोशाकों में, झुलसते थे। जब, एक बादल, क्षणिकरूप से, सूर्य को ढक लेता, तब केवल कुछ क्षणों में, तापक्रम गलनांक के ताप से कई डिग्री नीचे गिर जाता।

हम तूफानों से बुरी तरह पीड़ित हुए। कईबार, हिमालय की बाधाओं ने बादलों को रोका, जो तापक्रम के उत्क्रमण के कारण, भारत के ऊपर बनते थे। तब अद्‌भुत तूफान, पहाड़ों के ओठों में (वर्षा) उड़ेल़ देते और तूफान, अपने सामने से सबको समेटते हुए, हमारी घाटी में नीचे आते। लोग, जो वहॉ तूफानों के बीच, दूर घूम रहे होते, उनको चमड़े के अपने मफलर पहनने पड़ते या सबसे ऊॅची पहुॅच से होकर, अपनी खाल को हवाओं में भरी हुई, धूल और कंकड़ों से, जो धाराओं के रूप में लगातार नीचे आ रहे थे, उधेड़वाना पड़ता। हवा से उड़ा दिये जाने के जोखिम से भरे हुए यात्री, जबतक कि वे सावधान नहीं हों और सक्रिय होने के लिए तेज नहीं हों, पहाड़ों के दर्रों के बीच, खुले में फॅस जाते। उनके तम्बू और दूसरे सामान हवा में उड़ा दिए जाते, घुमाते हुए फाड़ दिये जाते और विचारहीन हवा के द्वारा खेल–खेल में बरबाद हो जाते।

नीचे कहीं, एक धुंधली सी सुबह में, एक याक दुःख के कारण डकरा उठा। संकेत पर मानो, ऊॅची छत पर से, पहले से ही तुरहियॉ बज उठीं और ध्वनि और प्रतिध्वनि करते हुए शंख गूंजे और जैसे कि अनेक सुरों वाले किसी भारी भरकम ऑरगन को बजा दिया हो, ध्वनियों की खिचड़ी पकाते हुए धड़कने लगे। यहॉ मेरे आसपास, एक नये दिन पर, जीवन के एक दूसरे दिन के लिए, एक बड़े समुदाय के जग जाने की, मंदिर में से स्तुति की, और घोड़ों के पास आने की, सोते हुए छोटे बच्चों के कठोर, ठण्डी हवा मे नंगे ठिठुरते हुए बड़बड़ाने की, और शान्त अंतर्निहित स्वर के रूप में कभी समाप्त न होने वाली प्रार्थना की, भवनों के ऊपर स्थित, बूढ़े–बूढ़े भिक्षुओं द्वारा, जो सोचते थे कि उनके जीवन का ये ही एकमात्र उद्देश्य है, शाश्वतरूप से लगातार घुमाये जाते हुए प्रार्थनाचक्रों की चटाख की, असंख्य आवाजें थीं।

स्थान गतिशील था। क्षण–क्षण, सक्रियता बढ रही थी। आशापूर्ण मुंडे हुए सिर, एक गर्म दिन की इच्छा में, खुली खिड़कियों में होकर ताक रहे थे। एक आकारहीन, आकृतिहीन, गहरा मिश्रण, कहीं ऊपर से हिला। मेरी दृष्टि की रेखा को काटा, नीचे की चट्टानों के ऊपर, एक तीखी चटकने की आवाज के साथ टकराया। किसी का कटोरा, मैंने सोचा, जबतक कि उसे दूसरा प्राप्त न हो जाए, अब उसे बिना नाश्ते के रहना पड़ेगा! नाश्ता ? वास्तव में! हमने एक अगले दिन की शुरूआत कर दी थी, एक दिन जब मुझे अपनी सामर्थ्य को बढ़ाने के लिये, शक्ति की आवश्यकता होगी, क्योंकि मैं आशा कर रहा था कि मेरे प्रिय शिक्षक, आज के दिन लौट रहे होंगे, और इससे पहले कि मैं उन्हें देख सकूॅ, सुबह की कक्षाऐं, मंदिर की सेवा होनी थी–परन्तु इन सबसे पहले–नाश्ता!

त्सम्पा भूख मिटानेवाला पदार्थ है, परन्तु भारत से यदाकदा आनेवाले, कुछ अलग से स्वादों के बहुत विरले मामलों के सिवाय, मैं उसके बारे में केवल यही जानता था। इसलिए मैं, बच्चों की पंक्ति के पीछे–पीछे और भिक्षुओं के हॉल की तरफ, जहॉ हम खाते थे, अपने रास्ते पर चलते हुए, पैर घसीटता हुआ, गलियारे में नीचे चला।

प्रवेशद्वार पर, दूसरे कुछ लोगों के स्थिर होने तक के लिए, मैं थोड़ा सा ठिठक गया क्योंकि, कुछ हद तक अपने कदमों के प्रति अनिश्चित, मैं अपनी टॉगों के ऊपर, कॉप रहा था और जब हर कोई साथ वाले को पीसे (दबाये) डाल रहा था, अपने स्थायित्व के लिये, मुझे ये एक निश्चित खतरा दिखाई दिया। अंत में, मैं अन्दर गया और फर्श पर बैठे हुए आदमियों और बच्चों की पंक्तियों के बीच, अपना स्थान लिया। हम, (मुझे छोड़कर सभी लोग, और मैं अपनी टॉगों को अपने में लपेटते हुए) पालथी मारकर बैठे। हमारी लाइनें थीं, और हम एकबार में, लगभग दो सौ पचास होते थे। ज्यों ही हम वहॉ बैठे, पंक्तियों के साथसाथ गुजरते हुए, सेवक भिक्ष आए और हममें से हर एक को, काफी हद तक बराबर भाग देते हुए, कलछी से त्सम्पा को बॉटा। भिक्षु, हर पंक्ति की बगलों से खड़े हुए और तब एक निश्चित संकेत पर, वे हमारे खाने के साथ, हमारी श्रेणियों के बीच गए। यद्यपि, जबतक कि सेवादार स्वामियों ने संकेत नहीं दिया, कोई खा नहीं सकता था। अंत में, हर भिक्षु और लड़के को, त्सम्पा से भरा हुआ, अपना पूरा बाउल मिला; सेवादार हमारे बगल में खड़े रहे।

वृद्ध लामा, व्याख्यानपीठ पर गया। व्याख्यानपीठ को हम से ऊॅचा उठा दिया गया था, जिससे कि वह नीचे, हमारी तरफ देख सके। वह वहॉ खड़ा हुआ और अपनी किताब के सबसे ऊपर के कागज को उठाया, क्योंकि ध्यान रखें, हमारे पेज, लम्बे होते थे तथा एक दूसरे के साथ जिल्द में बंधे हुए नहीं होते थे, जैसे कि पश्चिमी तरीके के होते हैं। इस लामा ने, सबसे ऊपर के पन्ने को उठाया और तब संकेत दिया कि वह प्रारम्भ करने के लिए तैयार है, तुरन्त ही, सेवक लामा ने अपना हाथ उठाया और उसे हमें ये संकेत देने के लिए कि हम खाना शुरू कर सकते हैं, नीचे लाया। जैसे ही हमने ये किया, वाचक ने, पवित्र पुस्तकों में से, पढ़ना शुरू कर दिया, उसकी आवाज ऊपर नीचे होती हुई, और पूरे स्थान में चारों तरफ गूंजती हुई, और अमिट प्रभाव छोड़ती हुई, बढ़ती जाती, बढ़ती जाती।

भोजनकक्ष के आसपास, हमेशा उपस्थित रहने वाले कुलानुशासक, यदाकदा उनकी अपनी पोशाकों की सरसर के सिवाय, कोई आवाज नहीं करते हुए, धीमे से पधारे।

पूरे तिब्बत में, लामामठों में, ये निश्चित रिवाज था कि, जब हम खा रहे हों, वाचक को हमारे लिए पढ़ना चाहिए, क्योंकि किसी व्यक्ति के लिए, खाना और खाने के सम्बंध में सोचना, गलत माना जाता था; खाना बहुत बड़ी चीज थी, अपने शरीर को बनाये रखने मात्र के लिए आवश्यक, ताकि इसे कुछ समय के लिए, इस अमृत्य आत्मा द्वारा उपयोग में लाया जा सके। इसलिए यद्यपि खाना आवश्यक था, हमसे ये उम्मीद नहीं की जाती थी कि हम, इसमें आनन्द लेंगे। वाचक, हमारे लिए, हमेशा पवित्र पुस्तकों में से पढ़ता ताकि, जब हमारे शरीर, शरीर के लिए, खाना ले रहे हों, हमारी आत्मा के लिए खाना लें।

वरिष्ठ लामा, अधिकांशतः कुछ पवित्र पुस्तकों के बारे में सोचते हुए या पवित्र वस्तुओं या पुस्तकों पर देखते हुए, हमेशा अकेले खाते थे। खाने के समय बोलना, बहुत बड़ा अपराध माना जाता था और यदि कोई अभागा, बेचारा बात करता हुआ पकड़ा गया, तो वह कुलानुशासक द्वारा खींच लिया जाता था और दरवाजे पर लेटा दिया जाता था ताकि, जो कोई वहॉ से निकले, उस पर, उस लेटे हुए व्यक्ति के ऊपर पैर रखता हुआ जाए और तब उस शिकार को अपने ऊपर बहुत शर्म आती थी।

हम बच्चे, हमेशा ही (खाना) खत्म करने में सबसे आगे होते थे, परन्तु हमें तबतक चुप रहना पड़ता था, जबतक कि दूसरे सभी, अपना खाना खत्म न कर लें। वाचक, अक्सर इस तथ्य से पूरी तरह बेखबर होकर पढ़ता जाता कि, हर कोई उसके लिए प्रतीक्षा कर रहा है। अक्सर, हम लोग कक्षाओं के

लिए विलंबित हो जाते, क्योंकि वाचक, विषय में डूब जाने के साथ, समय और स्थान को भूल जाते थे।

अंत में वाचक ने, अपने पृष्ठ को खत्म किया और कुछ प्रारम्भिक आश्चर्य के साथ ऊपर देखा, और तब अगले पृष्ठ को आधा पलटा परन्तु, बदले में, अपनी पुस्तक के ऊपर कवर रखा और उसके फीतों को बॉध दिया; पुस्तक को उठाते हुए, एक सेवक भिक्षु को दिया, जिसने उसे झुककर लिया और पुस्तक को सुरक्षित रखने के लिए, वहॉ से हटा दिया। तब स्वामी ने, हमको वहॉ से बर्खास्त करने के लिए संकेत दिया। हम हॉल के बगल में गये, जहॉ महीन रेत के भरे, चमड़े के बैग रखे रहते थे और तब, मुट्ठीभर रेत लेकर, हमने अपने खानेवाले कटोरे को, एकमात्र बर्तन, जो हमारे पास था, साफ किया, क्योंकि, वास्तव में हम–कुल मिलाकर सबसे पुराने बर्तन–अपनी उॅगलियों का उपयोग करते थे और चाकू और छुरियों का प्रयोग विल्कुल नहीं कऱते थे।

''लोबसांग! लोबसांग! कागज वाले स्वामी के पास, नीचे जाओ और वहॉ से मेरे लिए, कुछ कागज, जो एक तरफ खराब हों लाओ।'' मुझे आदेश देता हुआ एक जवान लामा, मेरे सामने खड़ा हुआ। मैं चिड़चिड़ेपन से बड़बड़ाया और नीचे की तरफ कूदकर गलियारे में चला। ये उन कामों में से एक प्रकार का काम था, जिनसे मैं घृणा करता था क्योंकि, इस विशेष चीज के लिए, मुझे पोटाला से बाहर और श्यो के गॉव तक, नीचे तक जाना पड़ेगा, जहॉ वांछित कागजों को प्राप्त करने के लिए, मुझे मुद्रक स्वामी से मिलना पड़ेगा।

तिब्बत में, कागज बहुत ही दुर्लभ, बहुत ही मॅहगी वस्तु है। ये वास्तव में, पूरी तरह हाथ से बनाया हुआ होता है। कागज, एक छोटी धार्मिक चीज के रूप में माना जाता है, क्योंकि लगभग हमेशा ही इसका उपयोग, पवित्र ज्ञान, पवित्र शब्दों के लिए किया जाता था। इसप्रकार कागज का कभी दुरुपयोग नहीं किया जाता था और न ही इसे कभी फैंका जाता था। यदि किसी किताब को छापने में, छपाई गंदी, मैली हो गयी, तो कागज को फाड़ा नहीं जाता था वल्कि उसकी खराब न हुई वाली पर्त, हम बच्चों को पढ़ाने के लिए उपलब्ध कराई जाती थी। ऐसे उद्देश्यों के लिए, जैसे कि हम हाथ से गढ़े हुए लकड़ी के ब्लॉकों के द्वारा छपाई करते थे, हमेशा ही, खराब कागज की बहुतायत से उपलब्धता बनी रहती थी और वास्तव में, एक ब्लॉक को उल्टी तरह से गढ़ा जाता था, ताकि, ये सीधी तरह से छपाई कर सके। इसप्रकार, ब्लॉकों को बनाने के प्रयास में, अपरिहार्यरूप से, कागज के अनेक पन्ने (sheets) बेकार हो जाते थे।

मैंने अपना रास्ता, नीचे वाले पिछले प्रवेशद्वार से होते हुए, जहॉ रास्ता बहुत ही तीखे उतार वाला, ढ़ालवाला परन्तु काफी छोटा था, और वहॉ मेरी टागों को थकाने के लिए, कोई सीढ़ियॉ नहीं थीं, पोटाला की तरफ लिया। यहॉ, हम बच्चे, निचले पिछले प्रवेशद्वार तक, अपने आपको झाड़ी से झाड़ी तक नीचे करते हुए, नीचे चले जाते, या यदि हम अपने कदमों को चूक जाते तो हम, नीचे धूल के बादल पर, फिसल जाते और अपनी पोशाकों में बड़े छेद पाते, एक मामला, जिसे बाद में समझाना बहुत मुश्किल होता।

मैं, एक छोटे से दरवाजे में, खाली स्थान में होकर, तंग–तंग रास्ते पर, सिर के ऊपर लटकती हुई झाड़ियों में से होकर, नीचे चला। मैं रुका और ल्हासा की दिशा में, ये आशा करते हुए बाहर झांका कि, एक विशिष्ट केशरिया पोशाक, कछुआ पुल से, या संभवतः–क्या अच्छा मजाक दिमाग में आया– मुद्रिका पथ पर होते हुए, आ रही होगी। परन्तु नहीं, वहॉ केवल तीर्थयात्री, आवारा भिक्षु और एक या दो साधारण लामा थे, इसलिए, दुःख तथा भुनभुनाहट और अप्रसन्नता के साथ, मैंने अपना लुढ़कनेवाला, नीचे की तरफ जानेवाला, रास्ता जारी रखा।

अंत में, मैं न्याय के प्रांगण के नीचे पहुॅचा और अपना रास्ता, उसके पीछे होकर छापेखाने के कार्यालय की तरफ लिया। एक बूढ़ा, बूढ़ा भिक्षु वहॉ अंदर था। वह पूरी तरह स्याही से रंगा हुआ दिखाई दिया, और कागज और छापे जानेवाले ब्लॉकों को पकड़ते–पकड़ते, उसके अॅगूठे और उॅगलियॉ,

चम्मच की तरह हो गईं थीं।

मैं गया और आसपास देखा, क्योंकि कागज और स्याही की गंध मुझे हमेशा मोहित करती थी। मैंने, नक्काशी किए गए लकड़ी के बोर्डों को, जो नई पुस्तकों को छापने के लिए काम में लाए जाने वाले थे, विस्तारपूर्वक देखा और मानो कि मैंने, समय में आगे देखा, जब मैं गढ़ाई के काम में हाथ डाल सकूँगा क्योंकि, ये मेरा बहुत बड़ा शौक था और हम भिक्षुओं को, समाज के भले के लिए, अपनी कुशलताओं को प्रदर्शित करने का, हमेशा अवसर दिया जाता था।

''ठीक है, बच्चे, ठीक है! तुम क्या चाहते हो ? जल्दी, ये क्या है ?'' बूढ़ा छापनेवाला भिक्षु, मेरी तरफ गहराई से देख रहा था, परन्तु मैं उस बूढ़े को जानता था, उसके काटने (bite) की तुलना में, उसकी खाल (bark), निश्चितरूप से खराब थी, वास्तव में, मानो कि वह एक अच्छा, बूढ़ा आदमी था, जो मात्र इतने से ही परेशान था कि छोटे बच्चे, मूल्यवान कागज के पन्नों पर सलवटें डालने जा रहे थे। शीघ्र ही, मैंने इस आशय का अपना संदेश दे दिया कि मुझे कागज के तीन पन्ने (sheets) चाहिए। वह जवाब में गुर्राया, मुड़ा और झॉका, और झॉका, और झॉका, और देखा मानो कि, वह अपने कागज के प्रिय टुकड़ों को देना सहन नहीं कर सकता। उसने हर शीट को देखा, और अपना दिमाग बदलता रहा। अंत में, मैं इस से थक गया और ये कहते हुए, तीन शीट उठा लिए, ''धन्यवाद, आदरणीय मुद्रक, मैंने ये तीन शीट ले लिए हैं, इनसे काम चल जायेगा।''

वह आसपास घूमा और (उसने) अपना मुँह पूरी तरह फुला रखते हुए, मेरी तरफ देखा, स्तब्धता का एक चित्र। उस समय तक, मैं तीन पन्नों के साथ, पूरी तरह से, दरवाजे तक पहुँच चुका था और जब उसे कुछ कहने का ख्याल आया, मैं सुनने के क्षेत्र से बाहर निकल चुका था।

मैंने तीनों शीटों को सावधानीपूर्वक, इसप्रकार लपेट लिया कि उनकी खराब की हुई सतह बाहर की तरफ रही। तब मैंने उनको, अपनी पोशाक में, बाहर की तरफ टॉक लिया, और मैंने स्वयं को, अपने हाथों से ऊपर, और ऊपर, कठिन झाड़ियों में से खींचते हुए, ऊपर की तरफ अपना रास्ता लिया।

रिक्त स्थान पर, मैं फिर से रुका, औपचारिकरूप से, ये मेरी सांस को दुबारा प्राप्त करना होता, परन्तु वास्तव में, मैं एक चट्टान पर बैठा और कुछ समय के लिए, जंगली गुलाबबाड, सेरा, की दिशा में देखा। परन्तु नहीं, वहॉ केवल सामान्य परिवहन था, कुछ अधिक नहीं। संभवतः कुछ अधिक व्यापारी, सामान्य से कुछ अधिक। परन्तु वह नहीं, जिसको मैं देखने की इच्छा रखता था।

अंत में, मैं अपने पैरों पर उठा और छोटे दरवाजे में होकर दुबारा जाते हुए, और उस नौजवान लामा को तलाश करते हुए, जिसने मुझे भेजा था, ऊपर की ओर अपनी यात्रा जारी रखी।

वह स्वयं, एक कमरे में था और मैंने देखा कि वह कुछ रचना कर रहा था। शान्ति से, मैंने तीनों पन्ने उसको दे दिए और उसने कहा, ''ओह! तुम्हें बहुत लम्बा समय लग गया। क्या तुम कागज बना रहे थे ?'' उसने बिना कोई शब्द आगे कहे हुए और बिना धन्यवाद का एक शब्द कहे हुए, उन्हें ले लिया। इसलिए मैं मुड़ा और, ये सोचते हुए कि मैं दिन को, जबतक मेरे शिक्षक लौटकर नहीं आ जाऐं, किसी प्रकार पूरा कर लूँगा, उसको छोड़ दिया, और मैंने अपना रास्ता, कक्षा की तरफ लिया।

अध्याय नौ

मैं, आसपड़ौस के मैदान से काफी ऊँचा, भण्डारगृह की छत पर खड़ा हुआ। मेरे सामने, हरी और सुन्दर, रंगीन घरों और कछुए के नीले पुल के साथ, ल्हासा की घाटी पूरी तरह फैली हुई थी। उसके आगे, ल्हासा के प्रार्थनाघर (cathedral) की, स्वर्णिम छतें चमक रही थीं, सीधे खड़ी हुई, मानोकि ये मौसम और तूफानों का सामना करते हुए, शताब्दियों से खड़ी थीं। जबतक कि कोई अपना सिर न घुमाए और ल्हासा के अंततक न देखे, मेरे पीछे, यद्यपि इसबार मैंने अपना सिर नहीं घुमाया, प्रसन्नता की नदी और पर्वतों की ऊँची–ऊँची श्रंखलाओं के परे, आगे ले जानेवाले, हमेशा तेजी से ऊँचे उठनेवाले दर्रे थे और ढलानयुक्त महान घाटी थी। तब सीधा होते हुए और भारत की दिशा में आगे बढ़ते हुए, और नेपाल के एक भाग, सिक्किम के एक भाग, और भारत के सामने फैले हुए भाग, को देखते हुए, अंगड़ाई लेकर सामने खड़ा हुआ। परन्तु वह मेरे लिए जाना–पहचाना स्थान था, मैं इसके बारे में सब कुछ जानता था। मेरा पूरा ध्यान अब ल्हासा के शहर के ऊपर टिका हुआ था।

मेरे नीचे दांयी तरफ, या लगभग, ठीक मेरे नीचे, शहर का प्रवेशद्वार, हमेशा की तरह, भीख मांगते हुए भिखारियों, किसी पवित्र (लामा) से आर्शीवाद के लिए उछलते हुए तीर्थयात्रियों और व्यापारियों की भीड़ से भरा पश्चिमी दरवाजा था। जैसे ही मैं, बेचैन करने वाली तेज रोशनी से अपनी ऑखों को बंद करते हुए, ताकि मैं, अधिक स्पष्टता के साथ देख सकूँ, वहॉ खड़ा हुआ, बढ़ती हुई आवाजों ने, जो मुझे संदेश देने आ रही थीं, संदेश दियाः ''भिक्षा! पवित्र के प्रेम के लिए भिक्षा! भिक्षा, जो अपने तनाव भरे एक घण्टे में, आपको काफी सहायता भी दे सकती है!'' तब दूसरी दिशा से, ''ओह! ये सही सौदा है, केवल दस रुपये, दस भारतीय रुपये और तुम इस पवित्र सौदे को पा जाओगे; तुम्हें इस जैसा दोबारा फिर नहीं मिलेगा क्योंकि, हमारे समय बदलते हैं। या मैं आपको बताऊँगा कि–आप एक अच्छे ग्राहक रहे हैं, आप इसे नौ रुपये कर लें। तुम मुझे अब नौ रूपये दो, और मैं इसे दे दूँगा और हम अच्छे दोस्तों की तरह जुदा होंगे!''

ठीक नीचे, तीर्थयात्री मुद्रिका पथ (ring road) से गुजर रहे थे, कुछ अपनी लम्बाई को बढ़ाते, उठते और फिर से लंबाई को (लेटकर परिक्रमा करते हुए) बढ़ाते, मानो कि, इस विशेष प्रकार की चाल, उन्हें कुछ मोक्ष प्रदान करेगी। परन्तु दूसरे, पहाड़ियों पर, उनकी गढ़ाई पर, रंगीन चट्टानों की गढ़ाई पर, जो इस पर्वत का सुन्दर गुण थी, टकटकी लगाए हुए सीधे चल रहे थे। जैसे ही वे नजर में आए, मैंने उन्हें बड़बड़ाते हुए सुना, ''ओह, कोई वहॉ छत पर है, जो (हमें) घूर रहा है। क्या तुम सोचते हो कि ये एक लामा है ?'' इस विचार ने मुझे हॅसने को बाध्य किया। मैं, हवा से फड़फड़ाती, अपनी फटी हुई पोशाक में ऊपर खड़ा हुआ, एक छोटा बच्चा। मैं, एक लामा ? नहीं, अभी नहीं, परन्तु मैं कुछ समय में हो जाऊँगा।

बड़बड़ाते हुए तीर्थयात्री, अपने शाश्वत पथ पर बढ़ते रहे ''ओम ! मनी पद्मे हुम!'' व्यापारियों ने उन्हें तंत्र–मंत्र, गण्डे, ताबीज, प्रार्थनाचक्र और जन्मकुण्डलियॉ बेचने का प्रयास किया। अधिकांश जन्म कुण्डलियॉ, तंत्र–मंत्र, गण्डे, ताबीज, भारत में बने और आयातित थे, परन्तु तीर्थयात्री न तो इसे जानते थे और न वे जान पाऐंगे कि, इनमें से कोई भी चीज, वायदे अथवा दावे के ढ़ंग के अनुसार आशीर्वादयुक्त नहीं थी। परन्तु, क्या ये सभी देशों में, सभी धर्मों में नहीं होता ? क्या व्यापारी, सभी जगह एक जैसे नहीं हैं ?

मैं अपने ऊँचे ठिकाने पर से घूरता रहा, हल्की सी बाड़, जो घरों को गर्म करने के लिए जलाये गये, याक के गोबर की आग से पैदा हुई थी, को भेदने का प्रयास करते हुए, क्योंकि हवा में एक चुभन आ रही थी, ल्हासा की दिशा में घूरता रहा। मौसम, निश्चितरूप से खराब होता जा रहा था। मैंने बर्फ से लदे हुए बादलों को सिर के ऊपर दौड़ते हुए देखा, और मुझे कंपकंपी हुई। कईबार ये, विशेषरूप से दिन के इस समय, शायद चालीस डिग्री फेरेनहाईट तक, गर्म होता था, परन्तु तब रात होने तक, ये

गलनांक से नीचे गिर जाता था। परन्तु इस विशेष क्षण में, मेरे लिए मौसम भी, काफी दुःख का कारण नहीं था।

मैंने, अपना कुछ भार, कोहनियों पर, जो मैंने अपने सामने की दीवार पर टिका ली थीं, लेने का प्रयास करते हुए, अपने आपको आराम में किया और मैं, जबतक कि मेरी ऑखों में दर्द पैदा नहीं हुआ, और जबतक कि मैंने ये कल्पना नहीं की, कि जो मैं देखना चाहता था, वह मैंने देख लिया, टकटकी लगाकर देखता रहा, घूरता रहा। एक समय, मैं ऊॅची उत्तेजना में दौड़ पड़ा; एक लामा, चमकते हुए केशरिया बाने में, मेरी दृष्टि में आ रहा था, मैंने इतनी उत्तेजना में दौड़ना शुरू किया कि, मेरी कमजोर धोखेबाज टॉगों ने मुझे धोखा दे दिया, और मैं पीछे से धक्का देती हवा के कारण, औंधा होकर गिर गया, और इससे पहले कि मैं अपने पैरों पर फिर से चल सकूॅ और ल्हासा की दिशा में देख सकूॅ, मुझे कुछ समय के लिए हॉफनी आ गई। परन्तु नहीं, उस केशरिया बाने को पहननेवाला वह लामा नहीं था, जिसे मैं चाहता था। मैंने उसे, अपने सेवकों के साथ चढ़कर आते हुए, मुद्रिका पथ पर प्रवेश करते हुए देखा, और तीर्थयात्रियों को उनके लिए रास्ता बनाते हुए, और जिस रास्ते से वह गुजरे, उसमें छुप कर अभिवादन करते हुए देखा। तब आधे घंटे बाद, या ऐसे ही कुछ समय में, वह रास्ते पर मेरे सामने आए, जैसे ही उन्होंने ऊपर देखा और मुझे देखा और हाथों से इशारा किया, जिससे मैं ठीक से समझ पाया कि, मेरे शिक्षक शीघ्र ही आनेवाले हैं।

ये उनकी दयालुता थी, एक दयालुता, जिसकी मैं महानरूप से प्रशंसा करता हूॅ क्योंकि, उच्च लामा, छोटे बच्चों के प्रति ध्यान देने की आदत में नहीं थे, परन्तु चूंकि मेरे पास, पहले से ही इसे जानने का पर्याप्त कारण था, वहॉ लामा ही लामा थे–कुछ दूर थे, जीवन की भावनाओं को पूरी तरह त्यागे हुए, पूरी तरह से पवित्र, जबकि दूसरे हॅसमुख थे, अपनी श्रेणी या आयु या जीवन के पड़ाव का विचार न करते हुए, हमेशा दूसरों की सहायता करने, और वे जो अधिक अच्छे अधिक कठोर या अधिक कृपालु थे, ये कहने के लिए के लिए तत्पर (रहते) थे। मैं करुणापूर्ण लोगों को, जो छोटे बच्चों की दुर्बलताओं और उनकी पीड़ा को समझ सकते थे, पसन्द करता था।

ऊॅची खिड़की, एक खिड़की, जिसतक मै नहीं पहुॅच सकता था, क्योंकि मैं मात्र, एक वेदी सेवक था, से एक सिर बाहर निकला और उसने नीचे की ओर देखा। चेहरे पर मूछें थी। मैंने आदर के साथ अपना सिर झुकाया, और जब मैंने दोबारा चेहरे को देखा वह गायब हो चुका था। एक या दो क्षण के लिए, ये आशा करते हुए कि यहॉ इस छत पर चढ़ने के साथ, मैंने कोई मुसीबत पैदा नहीं की है, मैं विचारमग्न होकर खड़ा रहा और जहॉ तक मैं जानता था, मैं किसी नियम को नहीं तोड़ रहा था। इस बार, मैं काफी हताशा के साथ, व्यवहार करने और ऐसा कोई काम, जो मुझे, अपने शिक्षक को लौटते समय देखने में देरी कर सके, न करने का प्रयत्न कर रहा था।

चाकपोरी से थोड़ा सा ऊपर, मैं भिक्षुओं को अपने कामों के लिए जाते हुए देख सकता था। वे दीवार के आसपास, जलूस में जाते हुए दिख रहे थे, और मैंने सोचा कि निस्संदेह वे धन्यवाद दे रहे थे कि, जड़ीबूटियों की दूसरी खेप, उच्चदेश से, जहॉ वे पैदा होती थीं, आ पहुॅची है। मैं जानता था कि उच्चदेशों (highlands) से वार्षिक जड़ीबूटी एकत्र करने वाले भिक्षुओं का एक दल, हाल ही में आ पहुॅचा था, और मैं आशान्वित था कि बहुत लम्बे समय से पहले, मैं भी इस दल का एक सदस्य बनूॅगा।

काफी दूर से धुंए का एक पुंछल्ला आया। मैं, आदमियों के, एक दूसरे को रोंदते हुए, एक छोटे समूह को देख सकता था, अनुमान है, वे अपनी चाय बना रहे थे ताकि वे त्सम्पा बना सकें। व्यापारी, ये स्पष्ट था, क्योंकि कोई रंगीन पोशाकें, वहॉ उनके बीच नहीं थीं, व्यापारियों के हल्के भूरे रंग मात्र, और ये सभी, अपने खाल के टोप पहने हुए थे।

ठण्डी हवा, एकबार फिर बढ़ रही थी। नीचे, व्यापारी अपने सामान को इकट्ठा कर रहे थे और शरण लेने के लिए भाग रहे थे। तीर्थयात्री, पर्वत के पीछे की तरफ, दुबककर बैठे थे और भिखारी विशेष

चुस्ती दिखा रहे थे। कुछ, वास्तव में, जब वे धूल भरे तूफान, इस समीप पहुँचने वाले धूल भरे तूफान, से बचने की जल्दी में थे, अपनी बहाने बनाई हुई बीमारियों को भी भूल गए।

ल्हासा की घाटी, पर्वतों से नीचे आनेवाले, अपने सामने हर चीज को फूंक में उड़ाते हुए, आदतन तूफानों के द्वारा साफ झाड़ दी जाती थी। केवल बड़े पत्थर, अपने स्थान में बचे रहते थे। धूल, गिट्टी, बालू, सब झाड़कर साफ कर दिया जाता था। परन्तु हर तेज हवा के साथ, ताजी धूल और बालू, हम पर आ गिरती थी। बड़े–बड़े पत्थरों पर पड़ी हुई धूल, जो पर्वतों में नाच रही होती और हिल रही होती और तब शायद, दूसरी चट्टानों से टकरा जाती और पिस जाती थी। पिसी–पिसाई चट्टान की शक्ल में, जो हवा के द्वारा रुला दिए जाने के साथ, हमारे ऊपर आ गिरती थी।

हवा, मुझे अपनी पीठ के विरुद्ध दबाते हुए, मुझे कसकर पत्थर की दीवार के साथ, अपने सामने, पोशाक के साथ चिपका देते हुए, इतनी कड़ी तरह से दबाती हुई, कि मैं चल नहीं सका, अचानक उठी। मैं उँगलियों से पकड़ने की जगह पाने के प्रयास में, अपने आपको समेट लेने के प्रयास में, ताकि मैं छत पर वण्डल बन सकूँ और इसप्रकार हवा की हल्की पकड़ को, जो मुझे उठानेवाली थी सहन कर सकूँ, कठोरता के साथ, दीवार से चिपक गया। कष्ट के साथ, मैंने अपने घुटने मोड़ लिए, अनन्त सावधानी के साथ, मैंने अपने को नीचा किया ताकि मैं, अपने चेहरे और सिर को, पत्थर भरे तूफान से बचाने के लिए, मात्र एक कड़ी गेंद की तरह बन जाऊँ।

मिनटों के लिए तूफान ने चीख मारी और विलाप किया, और खुद को पहाड़ों से दूर बहने के लिए, धमकी देता सा प्रतीत हुआ। तुरहियों, जो कभी गूंजी हों, की तुलना में, तूफान और तेज हो गया और तब क्षणभर में ही, विशेषरूप से, अनजानरूप से, एकदम पूरी शान्ति हो गई, मौत की शान्ति। शान्ति में, अचानक मैंने, कहीं नीचे झाड़ियों में से हँसी, एक लड़की की हँसी, सुनी। ''ओह! उसने कहा। ''इस पवित्र स्थान में, यहाँ, नहीं ये अपवित्रीकरण होगा।'' तब एक खीस, और एक नौजवान आदमी और एक लड़की, जैसे ही उन्होंने पश्चिमी द्वार की तरफ पार किया, हाथ में हाथ डाले हुए, चहलकदमी करते हुए, नजर में आए। कुछ क्षणों के लिए, मैंने उन्हें अलसाए हुए देखा, तब वे टहलते हुए मेरी नजर और मेरे जीवन से भी, ओझल हो गए।

मैं खड़ा हुआ, और ल्हासा की दिशा में, पेड़ों के चोटियों के ऊपर, दुबारा टकटकी लगाकर, देखा। परन्तु तूफान हमें छोड़ गया था और अब वह ल्हासा में था। दृश्य पूरी तरह खाली हो गया, जो कुछ भी मैंने देखा, एक भूरे कम्बल की तरह से एक बड़ा बादल था, जिसे मानो, दृश्य को रोकने के लिए पकड़ा गया हो। बादल आकृतिहीन था, परन्तु ये तेजी से चल रहा था, इसने अपने आपको, दो देवताओं के प्रभाव दिए, जिनमें से प्रत्येक, उस भूरे कम्बल को पकड़े हुए था, और इसके साथ दौड़ रहा था। ज्यों ही मैंने और अधिक देखा और अधिक इमारतें दिखने लगीं, जब ल्हासा के दूसरी तरफ स्वयं भिक्षुणियों का मठ दिखने लगा, और बादल, घाटी में नीचे की तरफ, छोटा और छोटा होता हुआ तेजी से घटने लगा मानो कि हवा का बल खर्च होता गया और धूल और गिट्टी के भारी कण, नीचे गिरते गए।

परन्तु मैं, ल्हासा की दिशा में, किसी मूर्ख धूल भरे बादल को, जिसे मैं किसी भी समय देख सकता था, नहीं देख रहा था। मैंने अपनी ऑखों को रगड़ा और दुबारा से घूरा। मैंने अपने आपको जबरदस्ती, जो (मैं) वहाँ वास्तव में था, उससे अधिक दिखाने का प्रयास किया परन्तु अंत में, मैंने आदमियों के एक छोटे दल को देखा, जो कुछ इमारतों के ठीक परे दिखाई दे रहे थे। उनमें से कुछ, केशरिया बाना पहने हुए थे। व्यक्तियों को अलग–अलग देखना मुश्किल था क्योंकि, वे बहुत अधिक दूर थे, परन्तु मैं जानता था–मैं जानता था!

मैंने मंत्रमुग्ध होकर देखा, और मेरी दिल की धड़कनें, अपनी अभ्यस्त स्थिति से और अधिक तेज हो गईं। आदमियों का छोटा दल, एक क्रमबद्ध जलूस, जल्दी करते हुए नहीं, संयत ढ़ंग से चढ़ा। धीमे

–धीमे वे कछुआ पुल के प्रवेशद्वार पर पहुँचे, और उस सुन्दर घेरनेवाली संरचना के द्वारा, जबतक कि वे समीप के सिरे पर दुबारा प्रकट नहीं हुए, तबतक मेरी निगाहों से छिपे रहे।

ये कल्पना करने का प्रयास करते हुए कि कौन–कौन था, मैं घूरता रहा, और घूरता रहा। धीमे–धीमे, दर्दभरी मन्दता के साथ, वे समीप, और समीप, आए। मेरा दिल, मेरे अन्दर उछलने लगा चूँकि अन्त में, मैं एक केशरिया बाने को, जिसमें मेरी दिलचस्पी थी, पहचान सका। मैंने, छत पर आनन्द से नाचने का प्रयास किया, परन्तु मेरी टागें मुझे इजाजत नहीं देती थीं, इसलिए, इस अवसर पर, अपनी टॉगों की सिहरन को नियंत्रित करने के एक असफल प्रयास के रूप में, कमजोरी की तुलना में, उत्तेजना से और अधिक कॉपते हुए, मैंने अपनी भुजाओं को, फिर से, दीवार के विरुद्ध कस लिया।

छोटा जलूस, जबतक कि अन्त में, वह नीचे श्यो गॉव की बड़ी इमारतों के द्वारा, मुझसे छिप नहीं गया, समीप, और समीप, आ गया। मैं घोड़ों के टापों की आवाज को सुन सकता था, और मैं घोड़े की जीन की सरसराहट की आवाज तथा शायद, घुड़सवार और घोड़ों के बीच दबाये जाने के कारण, चमड़े के एक थैले की यदाकदा चरचराहट, को नहीं सुन सकता था।

मैं पंजे की उँगलियों के बल खड़ा हुआ और अपने आपको थोड़ा लम्बा बनाने का प्रयास किया ताकि मैं और अधिक देख सकूँ। जब मैंने किनारे की तरफ झॉका, और मैं केवल ये समझ सका कि सिर धीमे–धीमे, सीढ़ीदार रास्ते पर, मुख्य प्रवेशद्वार की तरफ, अपने रास्ते पर चलते आ रहे थे। संक्षेप में, केशरिया बाने में से एक ने ऊपर देखा, मुस्कुराया, और अपना हाथ हिलाया। मैं, वापस हाथ हिलाने के लिए, उबर नहीं सका। मैं वहॉ खड़ा रहा और ताकता रहा और आराम के साथ कॉपता रहा क्योंकि शीघ्र ही, वह फिर मेरे साथ होंगे।

दूसरे लामा से कुछ शब्द कहा गया और उसने भी ऊपर देखा और वह भी मुस्कराया। इसबार मैं, अपनी मुखाकृतियों को, जबरदस्ती एक छोटी मुस्कान के रूप में वापस करने के योग्य था क्योंकि, मैं भावना से उबर चुका था, मैं अपने अन्दर, ठीक करनेवाली भावनाओं को अनुभव कर सकता था और मैं निराशाजनक स्थिति तक डरा हुआ था कि, मैं टूटने और सिद्ध करने जा रहा था कि, मैं आदमी नहीं था।

छोटा जलूस, पोटाला के मुख्य प्रवेशद्वार की ओर बढ़ता हुआ, ऊँचा, और ऊँचा, चढ़ता चला गया, जो ऐसे पवित्र दल के लिए ठीक ही था। अब, जैसा कि मैं अच्छी तरह जानता था, थोड़ी और देर लगेगी क्योंकि मेरे शिक्षक, पहले अंतरतम से मिलने जाऐंगे और अपनी रिपोर्ट उनको देंगे, और तब उन्हें पोटाला के ऊपरी हिस्से में, अपने कमरे तक जाने का, अपना रास्ता तय करने का, पूरा समय मिलेगा, जहॉ से एक उचित अंतराल के बाद, वे मेरी तलाश में, लड़के को भेजेंगे।

मैं अपने खम्भे से रेंग कर नीचे गया और अपने हाथों से, घुटनों से, धूल झाड़ी और ये निश्चित करने का प्रयास किया कि मेरी वेशभूषा, काफी हद तक, दिखने लायक हो। तब मैंने अपना रास्ता, छत पर छोटे घर की ओर लिया, और अत्यन्त सावधानी के साथ इसमें प्रवेश किया और धीमे से, फर्श की सीढ़ी पर नीचे उतर गया। मुझे ये सुनिश्चित करना था कि जब भी कोई संदेशवाहक मेरी तलाश में यहॉ आए, मैं यहॉ उपलब्ध रहूँ और मैं सबसे पहले ये निश्चित करना चाहता था कि, मैं ऐसा ही सुव्यवस्थित था, जितना कि मैं खुद को बना सकता था।

हमारी सीढ़ियॉ, किसी के लिए भी, जिसको टॉग की परेशानी हो, गोया कि खतरनाक युक्तियॉ थीं। वे एक, अच्छी तरह चिकने और उसमें हर तरफ खॉचे कटे हुए मोटे खम्भे की बनी होती थीं ताकि, कोई आदमी एक टॉग–या एक पैर–उसकी बांयी तरफ और दूसरी टॉग को दांयी तरफ, उससे ऊँचे खॉचे में रख सके और इसतरह से कोई, अपने दोनों घुटनों के बीच में खम्भे को रखता हुआ चढ़े। यदि कोई सावधान नहीं होता, या खम्भा ढ़ीला होता तो, कोई गलत तरफ से गिर सकता था, अक्सर अति उत्साह में छोटे बच्चे, गिरते रहते थे। एक खतरा, जिससे किसी को चौकस रहना ही होता था, ये था

कि अक्सर, खम्भे की सीढ़ियॉ, मक्खन के कारण फिसलनभरी होती थीं क्योंकि जब कभी, कोई मक्खन के दीपक को हाथ में लिए हुए, इस खम्भे पर चढ़ता, अक्सर पिघला हुआ मक्खन गिर जाता और किसी की मुसीबतों को बढ़ा देता। परन्तु ये सीढ़ियों या मक्खन के ऊपर सोचने का समय नहीं था। मैं फर्श पर पहुॅचा। सावधानी से, अपने आपको फिर से, धूल झड़ाकर साफ किया और जमे हुए मक्खन की थोड़ी सी पपड़ी को उधेड़कर निकाल दिया। तब मैंने अपना रास्ता, इमारत के बच्चों वाले भाग की ओर बनाया।

मैं अपनी शायकवीथिका में, धैर्यहीन होकर, खिड़की की तरफ चला और अपने अधैर्य के संकेत के रूप में, अपनी एड़ियों को दीवार के विरुद्ध मारते हुए, बाहर को झॉका। इसबार, मात्र अपनी ऊब के कारण, मैंने बाहर झॉका, क्योंकि वहॉ ऐसा कुछ नहीं था, जिसे मैं बाहर देखना चाहता था। जिसे मैं देखना चाहता था, वह अन्दर था!

तिब्बत में हम लोग दर्पणों का उपयोग नहीं करते–अर्थात् औपचारिकरूप से नहीं, क्योंकि दर्पण एक प्रकार का दिखावा समझा जाता था; यदि किसी व्यक्ति को दर्पण में देखते हुए पकड़ा जाता तो ये समझा जाता था कि वह आध्यात्मिक चीजों की तुलना में, कामुक चीजों के बारे में अधिक सोच रहा था। इस रवैये को बनाए रखने में कि हमारे पास कोई दर्पण नहीं थे, ये एक महान सहायता होती थी! तथापि, इस विशेष अवसर पर, मैं तत्काल ही ये देखने की इच्छा रखता था कि मैं कैसा दिखता हूॅ, इसलिए मैंने चोरी छिपे, अपना रास्ता, मन्दिरों में से एक की ओर लिया, जहॉ एक बहुत चमकदार तांबे की प्लेट थी। ये इतनी चमकदार थी कि जब मैंने अपनी पोशाक का एक किनारा, कई बार रगड़ा, तब मैं सतह में अन्दर देखने के लिए और एक विचार पाने के लिए कि मैं कैसा दिखता हूॅ, योग्य बनसका। मेहनत से और लंबे समय तक देखने के बाद और जो मैंने देखा उसके ऊपर, दिल से निराश महसूस करते हुए, मैंने प्लेट को वापस रख दिया और अपना रास्ता, नाई भिक्षु की तलाश के लिए लिया, क्योंकि मैं एक ''काले सिर (black head)'' की तरह से दिखाई दे रहा था।

तिब्बत में ''काले सिर'' वे लोग कहलाते हैं, जो पवित्रक्रमों (Holy orders) में नहीं होते। भिक्षु और वे सभी, जो वेदीसेवक, चेला, भिक्षुक, या लामामठ के क्रम में आते हैं, अपने सिरों को मुड़ाते हैं, इसलिए उन्हें हमेशा ''लाल सिर (red heads)" कहा जाता था क्योंकि ये वह है, जब सूर्य अपना सबसे खराब (प्रभाव दिखाता) था, तब हमारे पास होता था। दूसरी तरफ, सामान्य लोग, अपने सिरों को काले बालों से ढ़कते थे, और इसप्रकार वे ''काले सिर'' कहलाते थे यहॉ ये और जोड़ा जाना चाहिए कि जब हमारा तात्पर्य उच्चस्तरीय लामा से होता, हमें ''केशरिया बाने (Saffron Robes) ''के रूप में संदर्भित किया जाता था; हम कभी, ''केशरिया बाने को पहननेवाला (the wearer of the saffron robe),'' नहीं कहते थे परन्तु केवल ''केशरिया बाना'' कहते थे। इसी ढंग से, हम ''लाल बाने (Red Robes)'' या ''भूरे बाने (Gray Robes)'' की भी बात करते थे क्योंकि हमारे लिए, बाना वह चीज थी, जो उसके अन्दर के आदमी के पद को इंगित करती थी। तिब्बतीय तर्क के अनुसार, ये भी हमें स्पष्ट था कि इस बाने के अन्दर, एक आदमी होना चाहिए, अन्यथा पोशाक चलने फिरने के काबिल नहीं होगी!

मैं अपने रास्ते पर, पोटाला के गलियारों में, गहरे और गहरे नीचे उतरता हुआ, चलता गया, और तब अंत में, मैं एक बड़े कमरे में पहुॅचा, जहॉ नाई भिक्षु, अपने काम में लगा हुआ था। ये वह आदमी था, जिसे (मात्र) सौहाद्रतावश, भिक्षु कहा जाता था क्योंकि मुझे ऐसा लगता था कि, उसने अपने विशेष कमरे को कभी नहीं छोड़ा, और निश्चितरूप से उसने कभी प्रार्थनाओं में भाग नहीं लिया। मैं गलियारे में चलता चला गया और उसके दरवाजे में प्रवेश हुआ। सामान्य की भांति, स्थान, नाई भिक्षु, रसोई भिक्षु, बिना पारी के भिक्षु, जो घूम रहे थे, प्रतीक्षा करनेवालों से भरा हुआ था, वास्तव में, वे यहॉ कहीं भी छिप सकते थे और खुद का तथा दूसरों का भी समय गंवा सकते थे। परन्तु स्थान के संबंध में, वहॉ की हवा आज काफी उत्तेजित थी, और मैं इसका एक कारण दिखाई देता था।

वहॉ एक नीची बेंच के ऊपर, फाड़ी गईं और चिथड़ी पत्रिकाओं का, देखने योग्य ढ़ेर था। प्रकटरूप से भिक्षुओं में से एक ने, व्यापारियों के एक समूह के लिए, कुछ सेवा की थी और व्यापारियों ने अपने दिलों की दयालुता के कारण, उसे पत्रिकाओं और समाचार पत्रों का, जिसे वे विभिन्न उद्देश्यों के लिए भारत से लाए थे, पूरा का पूरा भार ही दे दिया था। अब वहॉ नाई भिक्षु के कमरे में, भिक्षुओं की बड़ी भीड़ थी और वे किसी दूसरे भिक्षु की, जिसने भारत में कुछ समय गुजारा हो और इसप्रकार, वह इन पत्रिकाओं में से कुछ समझने के लिए ठीक समझा जाता हो, प्रतीक्षा कर रहे थे।

दो भिक्षु हॅस रहे थे और एक पत्रिका में किसी चित्र के ऊपर चर्चा कर रहे थे। एक ने दूसरे से हॅसते हुए कहा, ''हमको, इस सबके बारे में, लोबसांग से पूछना चाहिए, वह इन सब मामलों में विशेषज्ञ होना चाहिए। यहॉ आओ लोबसांग! मैं वहॉ गया, जहॉ वे लोग, चित्रों को देखते हुए फर्श पर बैठे थे। मैंने उनसे पत्रिका ले ली, और तब एक ने कहा, ''लेकिन, देखा, तुमने पत्रिका को उल्टा पकड़ा है; तुम ये भी नहीं जानते कि चीजों को कैसे पकड़ा जाए।'' दुर्भाग्यवश, शर्मिन्दा होकर, मैंने पाया कि वह ठीक था। मैं उनके बीच में बैठा और उस सबसे अधिक विशिष्ट चित्र पर देखा। ये भूरे से रंग का था, गहरे काले रंग का कहना, अधिक सही शब्द होगा, और इसमें एक खतरनाक सी दिखनेवाली औरत को चित्रित किया गया था। वह एक बड़ी मेज के सामने, एक ऊॅची मेज पर बैठी हुई थी, और बड़ी मेज पर किसी चीज में बने, मढ़े हुए ढ़ांचे में, एक चित्र या उस औरत का परावर्तन था।

उसकी पोशाक ने, मुझे वास्तव में, कैद कर लिया क्योंकि वह एक भिक्षु की पोशाक से भी अधिक लम्बी दिखती थी। उसकी कमर विशेषरूप से पतली थी, जो पेटी से कसकर बांधी हुई दिखती थी, ये उसे पतली, और पतली, बनाने का प्रयास था। फिर भी, उसकी भुजाऐं काफी मांसल थीं और जब मैंने उसकी छाती पर देखा, मैंने भौंचक्केपन में, खुद का चेहरा लाल होते हुए पाया क्योंकि, उसकी पोशाक विशेषरूप से नीची–मुझे कहना चाहिए–खतरनाक नीची थी और मुझे शर्म लगी। मैंने आश्चर्य किया कि, क्या होता यदि वह सामने को झुकती। परन्तु, इस चित्र में, वह अपनी पीठ पर कसकर तनी हुई, सीधी रख रही थी।

जैसे ही, चित्र को देखते हुए हम वहॉ बैठे, एक दूसरा भिक्षु अन्दर आया और हमारे पीछे खड़ा हो गया; हमने उसपर कोई ध्यान नहीं दिया। आसपास में झुण्ड लगाए हुए लोगों में से एक ने कहा, ''ये जो कुछ भी कर रही हो ?'' भिक्षु, जो अभी अन्दर आया था, नीचे झुका और उसने, जो उसके नीचे लिखा था, पढ़ा और तब उसने जोर से कहा, ''ओह, ये तो मात्र अपने चेहरे का श्रंगार कर रही है, ये लिपस्टिक लगा रही है, और जब वह इसे पूरा कर लेगी, तो वह भौं की पेंसिल (eyebrow pencil) का उपयोग करेगी। ये सौन्दर्य प्रसाधनों का एक विज्ञापन है।'' इसने मुझे, अपने विश्वास के परे, दुविधा में डाल दिया। अपने चेहरे का बनाव श्रंगार, लिपस्टिक लगाना ? भौं पर पेंसिल का चलाना ?

मैं अपने पीछे अंग्रेजी जाननेवाले भिक्षु की ओर बढ़ा और कहा, ''परन्तु ये उन चीजों को, जहॉ उसका मुॅह है, क्यों चिन्हित करना चाहती है ? क्या वह जानती नहीं है ?'' वह मेरे ऊपर हॅसा और उसने कहा ''इनमें से कुछ लोग, लाल या नारंगी अपने ओठों के असपास लगाते हैं, ऐसा माना जाता है, ये उन्हें अधिक आकर्षक बनाता है। और जब वे इसको कर लेते हैं तो वे अपनी भौंह के साथ, और शायद अपनी पलकों पर भी, ऐसा करते हैं और जब वे इतना सब करने के बाद, पूरा कर लेते हैं तो अपने चेहरे के ऊपर धूल, विभिन्न रंगों की धूल ड़ाल लेते हैं।'' ये सब मुझे एकदम अनोखा लगा, और मैंने कहा, ''परन्तु उसने अपनी पोशाक को, अपने शरीर के ऊपरवाले हिस्से को ढ़कने के लिए, क्यों नहीं डाला है ?'' हर आदमी मेरे ऊपर हॅसा, परन्तु ये देखते हुए कि मैं क्या समझ रहा था, हर आदमी ने एक प्रसन्न चेहरा दिखाया। अंग्रेजी जाननेवाला भिक्षु, सबसे तेज, जोर से हॅसा, और उसने कहा, ''यदि तुम इन पश्चिम के लोगों को, अपनी पार्टियों में देख लो, तो तुम समझोगे कि वे क्या पहनते हैं अपनी छाती पर सबसे कम, परन्तु कमर से नीचे बहुत भारी!''

मैं चित्रों के ऊपर, ये समझने की कोशिश करते हुए कि ये सब किस सम्बन्ध में था, ऑख गढ़ाकर देखता रहा। मैं देख सका कि, ऐसे असुविधाजनक कपड़ों में, औरत कैसे चल पाती होगी। उसके पैर ही नहीं दिखाई दिए, परन्तु लटकता हुआ कपड़ा, नीचे जमीन तक गया और उसके पीछे–पीछे घसीटता हुआ चलता रहा। परन्तु जब मैंने अंग्रेजी जाननेवाले भिक्षु को, दूसरों को, पत्रिकाओं के सम्बंध में बात करते हुए, कुछ बताते हुए सुना, मैं इस सबके बारे में शीघ्र ही भूल गया।

''इसको देखो, इसकी तारीख 1915 बताती है। यहॉ पश्चिम में एक महान युद्ध हो रहा है और ये पूरे संसार को लपेट लेनेवाला है। लोग लड़ रहे हैं, एक दूसरे को मार रहे हैं, वे जमीन में गड्ढे खोदते हैं और वे इन गड्ढों में रहते हैं, जब बारिश होती है, वे लगभग डूब जाते हैं।

''ये युद्ध, किस सम्बंध में है ?'' दूसरे भिक्षु ने पूछा। ''ओह, मत सोचो, ये युद्ध किस सम्बंध में है, पश्चिमी लोग, लड़ने के लिए, किन्हीं कारणों को नहीं जानते, वे केवल लड़ते हैं।'' उसने उन दूसरी पत्रिकाओं को पलटा, तब वह दूसरों की तरफ आया। इसमें एक अत्यन्त ध्यान देनेवाली चीज दिख रही है, ये एक बड़ा लोहे का डिब्बा दिख रहा है, और चित्र के अनुसार, ये जमीन पर दौड़ रहा था, सैनिकों के ऊपर, जो भागने की कोशिश कर रहे थे, दौड़ रहा था। ''ये,'' अंग्रेजी जाननेवाले भिक्षु ने कहा, ''ये नवीनतम आविष्कार है; इसे टैंक कहा जाता है, और ये वह चीज हो सकती है, जो युद्ध को जीतेगी।''

हमने देखा, और हमने युद्ध के बारे में सोचा, हमने उन सब आत्माओं के लिए सोचा, और जब उनके भौतिक शरीर नष्ट हो रहे थे, वे घायल हो रही थीं। मैंने सोचा, इन सब घुमक्कड़ आत्माओं की मदद करने के लिए, कितनी अगरबत्तियॉ जलानी पड़ेंगी।

''मैं समझता हूॅ, अंग्रेज लोग, गोरखा लोगों की दूसरी बटालियन खड़ी कर रहे हैं,'' उस भिक्षु ने कहा, जो अंग्रेजी जानता था। ''परन्तु वे तिब्बत से आध्यात्मिक मदद पाने के लिए कहने की कभी नहीं सोचते'' मैं मानो कि प्रसन्न था, वे ऐसा नहीं करते क्योंकि मैं, इस सब मारधाड़ में कोई अर्थ नहीं देखता था, पूरा खून बहाना, पूरी पीड़ा। मुझे ये इतना मूर्खतापूर्ण दिखाई दिया कि, बड़े आदमी, केवल इसलिए कि लोगों का एक समूह, दूसरे समूह के साथ सहमत नहीं होता, झगड़ा करते हैं और झटके देते हैं। मैंने आह भरी और ये सोचते हुए कि बाद में पश्चिमी विश्व में यात्रा करना, मेरा दुर्भाग्य था, विचारणीय खीझ के साथ, अपने सिर को हिलाया। मेरा वह सब भविष्य, जो पहले से ही बता दिया गया था, मुझे अत्यधिक स्पष्टता के साथ बता दिया गया था, परन्तु मैंने उन चीजों को पसन्द नहीं किया, जो मुझे कहीं गई थीं, इसने अत्यधिक पीड़ा, अत्यधिक कठिनाईयों को, मेरे लिए अपरिहार्य बताया था!

''लोबसांग !'' एक आवाज जोर से मेरे ऊपर चीखी। मैंने ऊपर देखा, वहॉ नाई भिक्षु, मुझे आने का, और उसके तीन टॉगवाले स्टूल पर बैठने का, इशारा कर रहा था। मैंने ऐसा किया, और वह मेरे पीछे खड़ा हुआ और बड़े उस्तरे को, जिसके साथ वह हमारे सिरों को मूड़ा करता था, उठा लिया। उसने साबुन या पानी का उपयोग नहीं किया। वास्तव में, उसने उस्तरे के ब्लेड के साथ, मात्र कुछ हाथ मारे, एक पत्थर के टुकड़े के ऊपर धार लगाई और तब अपने बांये हाथ से, मेरी ठोड़ी को कसकर पकड़ते हुए, उसने मेरे कड़े बालों को, मेरी खोपड़ी से अलग हटाने का कार्यक्रम शुरू किया। हममें से कोई भी इस विधि को पसन्द नहीं करता था, और हम इसे समाप्त करने की आशा रखते थे। एक खून भरे सिर से–एक सिर, जिस पर खरोंच लगी हैं, छॉटा हुआ है और गहरे घाव हैं। तथापि, तिब्बती लोग कोमल नहीं होते, वे दुःख के पहले ही संकेत पर, चीखते हुए भागते नहीं हैं। इसलिए मैं वहॉ बैठा, जबकि नाई भिक्षु ने मेरे बालों को साफ किया और खरोंच लिया। ''मैंने सोचा मैं अच्छी तरह से संवारा गया हूॅ, तुम्हारी गर्दन, ए ?'' उसने कहा। ''समझो तुम्हारे शिक्षक वापस लौट आए हैं– तुम्हें दौड़कर जाना पड़ेगा ए ?'' इसके साथ उसने मेरे सिर को, लगभग मेरे दोनों घुटनों के बीच, नीचे खिसका दिया, और तब उद्यमतापूर्ण तरीके से, जहॉ मेरा सिर, मेरी गर्दन से जुड़ा था, लम्बे बालों को सफाचट कर दिया। हर समय, वह मुझ पर मुक्के मारता रहा, बालों पर, जो उसने काट लिए थे, मुक्के मारता

रहा और हर बार (यदि मैं समय का सही अनुमान करता हूँ!), मैंने अपनी सांस रोकी क्योंकि, उसकी सांस–ठीक–अच्छी, नहीं थी, स्पष्टरूप से उसके दांत, किसी चीज से सड़ रहे थे। अंत में, यद्यपि, उसने अपना खरोंचने का काम समाप्त किया, हमने खून को पौंछने का, जो अनेक खरोंचों से आ रहा था, काम शुरू किया। किसी ने कहा, ''इसे सबसे जल्दी रोकने का तरीका है, इसके हर घाव के ऊपर, कागज का एक टुकड़ा रखना। हम इसको करके देखें।'' इसलिए उन खून भरे घावों से चिपकाने के लिए, मैं, तीन कोनेवाले कागज की एक हौआ जैसी छोटी, किसी चीज को देखने लगा।

कुछ समय के लिए मेरे पास इससे अच्छा करने के लिए कुछ और नहीं था, इसलिए मैं नाई भिक्षु के कमरे में ठहरा और पूरे वार्तालाप को सुना। ऐसा लगा कि पश्चिमी विश्व में, मामले बड़ी खराब स्थिति में हैं, ऐसा लगा कि पूरा संसार लपटों के ऊपर है। रूस में कष्ट दिखाई देता था, इंग्लैंड में कष्ट, आइरिश लोग कुछ बड़बड़ाहट कर रहे थे–केवल हम तिब्बत के लोग शांति में थे। जैसे ही मैंने उन भविष्यकथनों को याद किया, जो शताब्दियों पहले, तिब्बत के बारे में किए गए थे, और मैं जानता था कि हमारे जीवनकाल में, वास्तव में, तिब्बत का हर व्यक्ति अपने खुद की मुसीबतों में होगा, मैं शांत होकर गिर गया। मैं ये भी जानता था कि हमारे अपने प्रिय दलाईलामा, वास्तव में, अंतिम दलाईलामा होंगे और यद्यपि, इसके बाद में एक और होंगे परन्तु, उनका वैसा आध्यात्मिक महत्व नहीं होगा।

सुस्ताते हुए, मैंने एक पेज पलटा और एक विशेष, असामान्य चित्र की ओर देखा; ये तमाम डिब्बों, जिसमें से बगल से टुकड़े काट दिए गए हों, और बगल से लोगों के चेहरे झांक रहे हों, से बना हुआ लगा। सभी डिब्बे आपस में जुड़े हुए थे और वे किसी प्राणी द्वारा, जो धुंए को उगल रहा था, साथ–साथ बनाए गए थे। वहॉ, उन डिब्बों के नीचे, वृत्ताकार चीजें थीं और तब उन दोनों के बीच में दो लाइनें दिखाई दीं। मैं इसके महत्व को नहीं समझ सका कि ये क्या था। उस समय मैं नहीं जानता था कि ये पहिए थे, और जो मैं देख रहा था वह रेल थी क्योंकि, तिब्बत में केवल प्रार्थना के पहिये ही हुआ करते थे। मैं अंग्रेजी जाननेवाले भिक्षु की ओर मुड़ा और उसकी पोशाक को खींचा। अंत में वह मेरी ओर मुड़ा और मैंने उसे ये बताने कि लिए कहा कि ये (चित्र) क्या कहता है। उसने मेरे लिए इसका जो अनुवाद किया, वह यह था कि ये ब्रिटेन की सेनाओं को ले जानेवाली रेल थी, जो सैनिकों को लड़ाई के लिए फ्लैंडर (Flanders)[5] के मैदानों में ले जा रही थी।

दूसरा चित्र, जिसने मुझे मोहित किया और स्पष्टीकरण के परे उत्तेजित किया; ये एक युक्ति थी, जो मुझे पतंग जैसी दिखी, जिसमें इसे पृथ्वी से जोड़े रखने के लिए कोई डोरी नहीं थी। ये पतंग एक ढ़ॉचे जैसी दिखी, जो कपड़े से ढ़का हुआ था और इसके सामने के भाग में एक चीज दिखी, जो प्रदर्शित चित्र के अनुसार, घूमनेवाली होनी चाहिए, और मैंने देखा इस पतंग में दो लोग थे, एक सामने और एक पीछे, समीप में ही बैठा हुआ। अत्यधिक मित्रवत् उस अंग्रेजी जाननेवाले भिक्षु ने मुझे बताया कि ये एक हवाई जहाज था, एक ऐसी चीज जिसके बारे में मैंने इससे पहले नहीं सुना। मैंने तय किया कि, यदि मुझे कभी लामामठ या इस क्रम में से निकाल दिया गया, तो मैं नाविक नहीं बनूंगा, परन्तु मैं बदले में, इन लोगों में एक होऊॅगा, जो इन अजीब पतंगों को, जो पश्चिम में होती हैं, उड़ाते हैं। और तब, जब मैंने उन पन्नों को पलटा, तो मैंने एक और चीज देखी, जिसने मुझे डराकर –थोड़े समय के लिए–अवाक् कर दिया था और जो अपने आप में एक डर था–क्योंकि ये चीज, कपड़े या वैसी ही किसी चीज से ढ़की हुई, एक लम्बी नली जैसी दिखाई दी और ऐसा दिखाया गया था, मानो ये एक शहर के ऊपर उड़ रही हो और शहर के ऊपर, बड़ी, काली चीजें गिरा रही हो। दूसरे चित्रों ने काली चीजों को जमीन पर उतरते हुए दिखाया और एक झटके में, उन इमारतों के नुकसान को दिखाया, जो

5अनुवादक की टिप्पिणी : फ्लेंडर्स (Flanders), पश्चिमी यूरोप का एक मध्यकालीन देश था, जो उत्तरी सागर के साथसाथ, डोवर की पट्टी (strait of Dover) से लगाकर शेल्ट नदी (Scheldt river) तक विस्तारित था। इसके वर्तमान संगत क्षेत्रों में बैल्जियम के उत्तरी और दक्षिणी फ्लेंडर्स प्रान्त, उत्तरी फ्रांस तथा दक्षिण–पश्चिम नीदरलैंड के समापवर्ती भाग सम्मिलित है।

हवा में उड़ गईं। भिक्षु ने मुझे बताया कि ये वह चीज थी, जिसे जैपेलिन (zeppelin)[6] कहते हैं, जो इंग्लैंण्ड में बम गिराने के लिए काम में लाया गया था, और यह बम, अत्यधिक विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ एक धातु का डिब्बा होता था, जब ये जमीन पर गिरता था तो अपने रास्ते में आई हर चीज को उड़ा देता था। मुझे ऐसा लगा कि इन पत्रिकाओं में शान्ति की कोई चीज नहीं है, बदले में ये भी केवल युद्ध को बताती हैं। मैंने सोचा कि मैंने इन चित्रों को, जो केवल आदमी के गुस्से को उभारते हैं प्रज्वलित करते हैं, काफी देख लिया है। इसलिए मैंने पत्रिकाओं को रख दिया, अंग्रेजी जाननेवाले भिक्षु का और नाई भिक्षु का धन्यवाद किया और फिर से, अपनी ऊपर की तरफ की शयनबीथिका, जहॉ मैं जानता था कि, शीघ्र ही, एक संदेशवाहक के आने की अपेक्षा कर सकता था, चला।

अंतहीन दिन बढ़ता गया। एकबार फिर, ये त्सम्पा का समय था। मैं नीचे हॉल में गया और दूसरों के साथ अपना खाना खाया, परन्तु मैं स्वीकार करता हूँ कि दिन अंतहीन था, अंतहीन। मुझे थोड़ी भूख लगी थी, परन्तु मैंने सोचा कि मुझे इसका लाभ उठाना चाहिए और जबतक समय है, तबतक खाना खा लेना चाहिए। अपने कटोरे को साफ करते हुए, मैंने भोजन–कक्ष को छोड़ दिया। अपना रास्ता फिर से, शयनवीथिका की ओर बनाया, और थोड़े समय के लिए, खिड़की में से बाहर देखते हुए, दौड़–धूप, जो हमारी इमारतों के आसपास हो रही थी, को देखते हुए खड़ा हुआ।

6अनुवादक की टिप्पिणी : यह एक प्रकार का हवाईजहाज होता है, जो हवा से हल्की गैस, की सहायता से चलता है।

अध्याय दस

जल्दी ही वहॉ, एक लड़का, चीखता हुआ गलियारे में आया ''लोबसांग! लोबसांग!'' मैं जल्दी से कमरे से बाहर निकला और वह ज्यों ही दरवाजे पर प्रवेश करने वाला था, मैं उसे मिला। ''फ्यू (phew)!'' अपनी भोंह से, काल्पनिक पसीने को पोंछते हुए, उसने प्रसन्नता से कहा, ''मैंने तुम्हें सब जगह देख लिया। क्या छिप रहे थे या ऐसा ही कुछ कर रहे थे ? तुम्हारे शिक्षक तुम्हें मिलना चाहते हैं।'' ''वह कैसे दिख रहे हैं ?'' मैंने उसी भॉति उत्सुकता से पूछा। ''कैसे दिखते हैं ? कैसे दिखते हैं ? तुम उन्हें कैसे देखना चाहते हो ? तुमने उन्हें केवल कुछ दिन पहले ही देखा था, तुम्हें क्या परेशानी है, कैसे भी, बीमार हो या ऐसा ही कुछ ?'' लड़का मूर्ख .....के बारे में बड़बड़ाता हुआ चला गया। मैं मुड़ा और अपनी पोशाक को खींचकर सीधा किया और ये सुनिश्चित किया कि मेरे कटोरे, और चीजों के डिब्बे, अपने स्थान में थे। तब मैं ऊपर गलियारे में चला।

बच्चों के क्वार्टर को छोड़ना, अच्छी तरह सफेदी की हुई और लिपी–पुती दीवारें और अधिक अच्छे सजाए गए लामाओं के क्वार्टरों में प्रवेश करना, आनन्दपूर्ण था। जैसे ही मैं कोमलता से चला, मैं अधिकांश कमरों को जहॉ से होकर मैं गुजरा, देख सकता था; अधिकांश लामा, अपने कमरों के दरवाजे खुले रखते थे। यहॉ एक बूढ़ा आदमी, अपनी माला के मनकों को फेर रहा था और अनन्तरूप से ''ओम मनी पद्मे हुम'' जप रहा था, दूसरा आदरपूर्वक, पवित्र धर्मग्रन्थों में से दूसरा अर्थ निकालने के लिए, किसी पुरानी, पुरानी पुस्तक को दखते हुए, लगातार देखते हुए, उसके पन्नों को पलट रहा था। इसने मुझे परेशान किया। इन बूढ़े आदमियों को देखना, जो पंक्तियों के बीच में (betbeen the lines) पढ़ने का प्रयास करते हैं, उन चीजों को पढ़ने का प्रयास करते हैं, जो पहली बार में वहॉ नहीं लिखे गए हैं। तब वे ऐसा कहते हुए उबल पड़ते हैं, ''अमुक–अमुक लामा के द्वारा–धर्मग्रन्थों का एक नया भाष्य''। छितरी हुई सफेद दाढ़ी वाले, एक अत्यन्त बूढ़े व्यक्ति, धीमे से एक प्रार्थनाचक्र को घुमा रहे थे और ऐसा करते हुए, अपने आप कुछ गुनगुना रहे थे। फिर भी एक दूसरा, धर्मचर्चा के अंतर्गत होने वाले आगामी वादविवाद, जिसमें उसे प्रमुख भूमिका निभानी थी, के लिए, अपने आप अभ्यास करते हुए–अपने आपको सुना रहा था ।

''अब क्या तुम यहॉ, मेरे साफ फर्श पर, धूल लेकर नहीं आ रहे हो, तुम मामूली से नौजवान आदमी!'' एक बूढ़े, सफाई करते हुए लामा ने कहा, जैसे ही वह अपनी झाड़ू लेकर झुका और मुझे धमकी भरे ढ़ंग से देखा, ''मै, तुम्हारी तरह से, पूरे दिन काम नहीं करता!'' ''जाओ और खिड़की से बाहर कूद जाओ, बूढ़े!'' मैंने रूखेपन से कहा और उसे पीछे छोड़ता हुआ, चला। वह फैल गया और उसने मुझे पकड़ने की, मुझसे उलझने की कोशिश की, परन्तु, अपने झाड़ू के लंबे हत्थे से अटककर, एक जबरदस्त ध्वनि के साथ, फर्श पर गिर गया। इससे पहले कि वह अपने पैरों पर उठ खड़ा हो, मैंने, स्वयं को भगाने के प्रयास में, अपने कदम तेज किए। किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया; प्रार्थनाचक्र अब भी, भिनभिना रहे थे और खटपट कर रहे थे और सुनानेवाले, अभी भी सुना रहे थे और ध्वनियॉ, अभी भी, अपने मन्त्रों को गुनगुना रही थीं।

समीप के किसी कमरे में, एक वृद्ध आदमी फेरी लगा रहा था और भयानक आवाजों के साथ, अपने गले को साफ कर रहा था। ''हर्रर्रक! हर्रर्रक!'' उहाह'' वह आराम पाने के लिए अपने अंतहीन प्रयास में चलता रहा। मैं चलता गया। ये गलियारे लम्बे थे और मुझे क्वार्टरों से होते हुए, निचली श्रेणी के लामा–जीवन से, लगभग सबसे ऊॅचे–बड़े, वरिष्ठ लामाओं के क्वार्टरों तक जाना था। अब, जैसे –जैसे मैं बेहतर क्षेत्र (better area) की ओर आगे बढ़ा, और, और अधिक, दरवाजे बंद मिले। अंत में, मैं मुख्य गलियारे की तरफ मुड़ा और एक छोटे उपभवन (annex)–''विशिष्ट लोगों के क्षेत्र (The domain of Special Ones)'' में प्रविष्ट हुआ। मेरे शिक्षक जब पोटाला में होते, तब यहॉ, इस गरिमामय स्थान में रहते थे।

लगातार तेजी से धड़कते हुए दिल के साथ, मैं दरवाजे पर रुका और उसे थपथपाया। ''अंदर आओ!'' एक भली, प्रेमपूर्ण आवाज ने कहा। मैं घुसा और मैंने अपने रिवाज के अनुसार, उन चमकीले व्यक्तित्व की ओर, जो खिड़की तरफ पीठ किए बैठे थे, झुककर नमन किया। लामा मिंग्यार डोंडुप, कृपा के साथ, मुझ पर मुस्कुराए और ये देखने के लिए कि पिछले सात या ऐसे ही कुछ दिनों में मैंने क्या किया है, अत्यन्त सावधानीपूर्वक मुझे देखा। ''बैठो, लोबसांग, नीचे बैठो!'' मेरे सामने रखी हुई एक गद्दी की ओर इशारा करते हुए, उन्होंने कहा। कुछ समय के लिए, जबकि उन्होंने मुझे प्रश्न पूछे– उनमें से कुछ, उत्तर देने के लिए अत्यन्त कठिन भी थे, हम बैठे! ये महान आदमी, मेरे प्रति प्रेम की अत्यधिक गहराई से और समर्पण की भावना से भरे हुए थे; उनके लगातार सानिध्य के अलावा, मैं इससे अधिक कुछ नहीं चाहता था।

''अंतरतम (inmost) तुमसे अत्यधिक प्रसन्न हैं,'' आसानी से जोड़ते हुए उन्होंने टिप्पणी की, ''और मैं समझता हूँ कि, वह तुम्हें किसी प्रकार के उत्सव के लिए बुलानेवाले हैं।'' उन्होंने अपना हाथ फैलाया और अपने छोटी चांदी की घंटी को बजाया। एक सेवक भिक्षु प्रविष्ट हुआ और एक नीची मेज, उन सुन्दर चीजों में से एक, जो नक्काशी की हुई और रंगों की तमाम परतें चढ़ाई हुईं हैं, को लाया। मैं खरोंच से या खराब चीजों के द्वारा चिन्हित किए जाने से, हमेशा डरा रहता था। ये मेज मेरे शिक्षक के दांयी ओर रखी गई थी। मझ पर मुस्कुराते हुए, लामा, सेवक भिक्षु की ओर मुड़े और कहा, ''तुम एक सादा मेज को लोबसांग के लिए तैयार रखो ?'' ''हॉ, स्वामी,'' आदमी ने उत्तर दिया। ''मैं अभी लाता हूँ।'' वह, जल्दी ही एक सादा मेज, जिसपर सबसे अच्छी ''सजावट'' थी, को लाने के लिये गया; ये भारत से लाई गई चीजों से लदी हुई थी। मीठी और चिपकनेवाली टिक्कियॉ, जो किसी प्रकार की चासनी द्वारा ढ़की हुई थीं, जिनपर मिश्री छिड़की गई थी, आचार के अखरोट, विशेष प्रकार के काजू, जो दूर देश से, काफी दूर से लाए गए थे, और दूसरी तमाम चीजें, जिन्होंने मेरे हृदय को प्रसन्न कर दिया। सेवा करनेवाला भिक्षु, जब उसने जड़ीबूटियों का एक बड़ा जार, जिसे हम बदहजमी होने की अवस्था में उपयोग में लाते थे, मेरे बगल से रखा, थोड़ा सा मुस्कराया।

सेवा करने वाले दूसरे भिक्षु ने, छोटे कपों और एक बड़े जग को, जो भाप देती हुई भारतीय चाय से पूरा भरा था, लेकर प्रवेश किया। मेरे शिक्षक के इशारे पर, वे चले गए और मुझे, त्सम्पा से एक आनन्दमय परिवर्तन, प्राप्त हुआ! मैं दूसरे वेदीसेवकों, जिन्होंने शायद, अपने जीवन में, कभी भी, त्सम्पा के अलावा कुछ भी नहीं चखा था, के बारे में सोचकर परेशान नहीं हुआ। मैं बहुत अच्छी तरह से जानता था कि जबतक वे जिन्दा रहेंगे, शायद, त्सम्पा ही उनका एकमात्र खाना होगा और मैंने इस विचार के साथ कि, यदि उन्हें अचानक, भारत से आनेवाले इन मजेदार खानों का स्वाद मिल जाए तो यह उन्हें असंतुष्ट कर देगा, अपने आपको सॉत्वना दी। मैं जानता था कि मैं जीवन में एक कठोर समय से गुजरनेवाला हूँ, मैं जानता था कि, जल्दी ही मुझे बहुत अलग प्रकार के खाने मिलेंगे। इसलिए मैं छोटे बच्चे जैसी आत्मसंतुष्टि में सोचता था कि, उन खराब चीजों की, जिन्हें मैं पहले से ही झेल चुका हूँ, क्षतिपूर्ति करने के लिए, बढ़िया चीजों के पूर्वानुभव लेने में कोई खराबी नहीं है। इसलिए पूरी तरह शान्ति और धैर्य के साथ, जितना मुझे खाना चाहिए था, मैंने उससे ज्यादा खाया। मेरे शिक्षक शांत रहे, और उन्होंने केवल–भारतीय किस्म की चाय ली। परन्तु अन्त में, अत्यधिक खेद के चिन्ह् के साथ, मैंने तय किया कि मैं एक कौर भी, और अधिक, नहीं लूँगा, वास्तव में, उस निन्दनीय खाने का विचार मात्र ही, मुझे बेस्वाद होता हुआ दिखाई दिया। ये मेरे चेहरे के रंग को बदल रहा था और मैंने अनुभव किया–ठीक–मानो कि मेरे अन्दर दुश्मन लड़ रहे थे–मैं सावधान हो गया कि कुछ निश्चित, असामान्य धब्बे, मेरी ऑखों के सामने तैर रहे थे, इसलिए मुझे और अधिक नहीं खाना था और मुझे दूसरे स्थान से निकालना पड़े, उससे काफी पहले खाना बंद कर देना चाहिए, क्योंकि खाने ने मेरे पेट को गोया कि कष्टपूर्ण ढ़ंग से मरोड़ दिया था।

जब मैं, कुछ–कुछ पीला, काफी हल्का, और थोड़ा सा कांपते हुए लौटा, मेरे शिक्षक, अभी भी, शांत, अक्षुब्ध, एकदम शुभेच्छा के साथ बैठे थे। जैसे ही मैं दुबारा व्यवस्थित हुआ, वे मुझे देखकर, ये कहते हुए मुस्कराये, ''ठीक है! अब तुम ले चुके हो और अपनी चाय को ज्यादातर खत्म कर चुके हो, तुम्हें कम से कम इसकी याद रहनी चाहिए, और ये तुम्हें मदद कर सकती है। हम विभिन्न चीजों के बारे में बात करेंगे।'' मैंने अपने आपको, बहुत आराम के साथ व्यवस्थित किया। निस्संदेह इस पर आश्चर्य करते हुए कि कितने घाव थे, उनकी ऑखें घूम रही थीं, तब उन्होंने मुझे कहा : ''मेरी अंतरतम से बात हुई है, जिन्होंने मुझे तुम्हारे बारे में बताया, उस स्वर्णिम छत के ऊपर उड़ते हुए, तुम्हारी गलती के बारे में बताया। पवित्रतम ने मुझे, इस सबके बारे में बताया, उन्होंने मुझे बताया जोकि उन्होंने देखा था, और मुझे बताया कि तुमने उन्हें सत्य बताते हुए, अपने निकाले जाने को दॉवपर लगा दिया था। उन सूचनाओं के बारे में, जो उन्हें तुम्हारे बारे में मिली हैं, जो उन्होंने देखा है, उससे वह काफी प्रसन्न हैं, वह तुमसे अत्यधिक प्रसन्न हैं, अत्यधिक प्रसन्न, क्योंकि जब तुम मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे, वह तुम्हें देख रहे थे और अब मेरे पास, तुम्हारे सम्बंध में, विशेष आदेश हैं।'' लामा ने थोड़ा मुस्कुराते हुए, मेरी तरफ देखा, संभवतः उस प्रभाव पर झांसा देते हुए, जो, मैं जानता था, मेरे चेहरे पर था। अधिक कष्ट, मैंने सोचा, अब और अधिक, मुश्किलें झेलने के लिए विषाद की अनेक कहानियॉ आनेवाली हैं, ताकि वे भविष्य में, तुलनात्मक दृष्टि से, इतनी खराब न दिखाई दें। मैं परेशानियों से परेशान हूँ, मैंने स्वयं के लिए सोचा। मैं दूसरे लोगों की तरह, जो युद्ध में पतंग उड़ाते हैं या तमाम सारे सैनिकों के साथ, उन घरघराते हुए भाप के डिब्बे को चलाते हैं, क्यों नहीं हो सकता ? मैंने सोचा, मैं भी, धातु की उन चीजों का, जो पानी पर तैरती हैं और काफी सारे लोगों को देशों के बीच में ले जाती हैं, प्रभारी होना चाहूँगा। तब मेरा ध्यान घूम गया, और मैंने इस प्रश्न के ऊपर आश्चर्य किया–वह धातु कैसे हो सकती है ? हर आदमी जानता है कि धातु पानी से भारी होती है, इसलिए डूब जाएगी। इसमें कुछ न कुछ बंदिश जरूर होनी चाहिए, मैंने तय किया, वे कुल मिलाकर, धातु नहीं हो सकतीं। वह भिक्षु, मुझे कहानी सुना रहा होगा। मैं ये देखता हुआ उठा कि मेरे शिक्षक, मेरे ऊपर हॅस रहे थे; वे दूरानुभूति से मेरे विचारों को समझ रहे थे, और वे वास्तव में चकित थे।

''वे पतंगें हवाई जहाज हैं, भापवाला अजगर रेल है, और वे लोहे के डिब्बे पानी के जहाज हैं, और हॉ–लोहे के पानी के जहाज, वास्तव में तैरते हैं। इसके बारे में, मैं तुम्हें बाद में बताऊॅगा, परन्तु इस क्षण के लिए, हमारे दिमाग में दूसरी चीजें हैं।'' उन्होंने अपने घंटी दुबारा बजाई और एक सेवक भिक्षु अंदर आया और उसने उस पूरी गड़बड़ के ऊपर, जो मैंने भारतीय खाने के साथ की थी, अफसोस के साथ मुस्कराते हुए, मेरे सामने रखी मेज को हटा दिया। मेरे शिक्षक ने कहा हमें और अधिक चाय चाहिए और हमने, जबतक कि हमारे लिए ताजा थोक (lot) दुबारा लाया गया, इन्तजार किया। ''मैं चीनी चाय की तुलना में, भारतीय चाय पसन्द करता हूँ,'' मेरे शिक्षक ने कहा। मैं उनके साथ सहमत हुआ, चीनी चाय ने मुझे हमेशा बीमार किया है, मैं नहीं जानता क्यों ? चूँकि स्पष्टरूप से, मैं चीनी चाय का अधिक अभ्यस्त था, परन्तु भारतीय चाय अधिक अच्छी लगती थी। सेवक भिक्षु के द्वारा ताजी चाय लाने पर, चाय के मामले में मेरा वार्तालाप, बीच में रुक गया। जैसे ही मेरे शिक्षक ने ताजा चाय कपों में डाली, उन्होंने (खुद को) अलग हटा लिया।

''पवित्रतम ने कहा है कि तुमको सामान्य स्तर की कक्षाओं से हटा दिया जाए। बदले में, तुमको मेरे घर के आगे वाले घर में रहना है, और तुमको मेरे और विशेषज्ञ अग्रणी लामाओं के द्वारा पढ़ाया जायेगा। तुम्हें अधिकांश पुरातनज्ञान के भण्डार के संरक्षण करने का कार्य करना है और बाद में, तुम इसमें से अधिकांश ज्ञान को, हमारे अधिकांश सजग दृष्टाओं के लिए लिखित में प्रस्तुत करोगे, क्योंकि अत्यधिक चेतन भविष्यदृष्टाओं ने हमारे देश का भविष्य, ये कहते हुए बताया है कि हमको अतिक्रमित किया जाएगा और इस लामामठ और दूसरे लामामठों में जो है, उसके अधिकांश को बिगाड़ा और नष्ट

कर दिया जाएगा। अंतरतम की बुद्धि के माध्यम से, कुछ निश्चित अभिलेखों की पहले से ही प्रतिलिपियॉ बनाई जा रहीं हैं, ताकि नष्ट किए जाने के लिए नकलें यहॉ रहेंगी और मूल (अभिलेख) काफी दूर ले जाए जाऐंगे, काफी दूर जहॉ कोई भी घुसपैठिया पहुॅचने में समर्थ नहीं होगा। पहले तुम्हें अमूर्त भौतिकीय कलाओं (metaphysical arts) के संबंध में अत्यधिक विस्तार के साथ पढ़ाया जाएगा।'' उन्होंने कहना बन्द किया और अपने पैरों पर खड़े हुए और दूसरे कमरे में गए। मैंने उन्हें सरसराते हुए सुना, और तब वह लकड़ी के एक सादा डिब्बे को लिए हुए वापस लौटे, जिसे वे लाए और सजावटवाली मेज के ऊपर रखा। वे मेरे सामने बैठे और एक या दो क्षण के लिए मौन रहे।

''सालों साल पहले, लोग जैसे वे अब हैं, उससे काफी अलग थे। सालों साल पहले, लोग प्रकृति के नियमों से चलते थे और अपने ज्ञान, जिसे इसके कुछ निश्चित विरले उदाहरणों के सिवाय, मानवता अब खो चुकी है, का उपयोग करते थे। अनेक सैंकड़ों शताब्दियों पहले, लोग दूरानुभूतिपूर्ण और अतीन्द्रियज्ञानी होते थे, परन्तु इन सब शक्तियों का खराब उद्देश्यों के लिए उपयोग करते हुए, सम्पूर्ण मनुष्यजाति ने इस क्षमता को खो दिया, ये सम्पूर्ण शक्तियॉ अब घट गई हैं। सबसे खराब–मानव अब सामान्यतः, ऐसी शक्तियों के अस्तित्व को नकारते हैं। जब तुम विभिन्न देशों में जाने के लिए तैयार होगे, जब तुम तिब्बत और भारत को छोड़ोगे तुम पाओगे कि, अतीन्द्रियज्ञान, सूक्ष्मशरीर से यात्रा, गुरूत्वाकर्षण के विरुद्ध उठना (levitation) या दूरानुभूति के संबंध में बात करना, विद्वतापूर्ण नहीं होगा क्योंकि लोग मात्र ये कहेंगे, ''इसे सिद्ध करो, इसे सिद्ध करो, तुम रहस्य की बातें करते हो, तुम बकवास करते हो, यहॉ और वहॉ ऐसी चीजें नहीं हैं, या कोई दूसरी बात भी, यदि वहॉ ऐसा कुछ है, तो विज्ञान ने इसे अबतक खोज लिया होता।''

उन्होंने एक क्षण के लिए, अपने आपको हटा लिया और उनके गुणों (features) से एक छाया गुजरी। वह काफी विस्तार से यात्रा कर चुके थे और यद्यपि वह जवान दिखाई देते थे–ठीक है वास्तव में, वह आयुहीन (ageless) दिखाई पड़ते थे, कोई नहीं कह सकता था कि वह बूढ़े या जवान आदमी थे, उनका मास पक्का था और उनका चेहरा पूरी तरह से बिना झुर्रियोंवाला था, स्वास्थ्य और जीवन्तता–उनसे फूटी पड़ती थी। फिर भी, मैं जानता था कि वे यूरोप में काफी दूर तक यात्रा कर चुके हैं, जापान, चीन और भारत में यात्राऐं कर चुके हैं, मैं यह भी जानता था, कि उनके पास अत्यधिक आश्चर्यचकित कर देनेवाले कुछ अनुभव हैं। कईबार, जब वह बैठे होते, वे किसी पत्रिका, जो पहाड़ों से होकर बाहर से लाई गई थी, को देखते और तब वह, इस युद्धरत् मानवता की नादानियों के ऊपर, दुःख की आह भरते। एक विशेष पत्रिका थी, जो उन्हें वास्तव में अच्छी लगती थी, और जब कभी ला सकते थे, वे इसे बाहर से लाते थे। ये एक विशेष प्रकार की पत्रिका थी, जो ''*लन्दन सचित्र (London Illustrated)*" कहलाती थी। मैं इस पत्रिका की विषम प्रतियों को, मुझे उन चीजों के चित्र प्रदान करते हुए, जो मेरी समझ के एकदम काफी परे हों, सूचना का महान स्रोत मानता था। मैं उसमें दिलचस्पी रखता था, जिसे ''विज्ञापन'' कहते हैं और जब कभी मैं कर सकता था, जब मौका मिलता, मैं चित्रों को पढ़ने की कोशिश करता था और तब, अपने आप, मैं किसी को, जो मुझे, इस अनजान भाषा को, शब्दों में बताने के लिए, काफी जानता हो, ढूंढ़ लेता था।

मैं बैठा और मैंने अपने शिक्षक को देखा। आकस्मिकरूप से, मैंने उस लकड़ी के डिब्बे को देखा, जिसे बाहर निकाला गया था, और आश्चर्यचकित हुआ कि इसमें क्या हो सकता है। ये, मेरे लिए पूरी तरह विदेशी, किसी लकड़ी का, एक डिब्बा था। इसमें आठ भुजाऐं थीं जबकि, किसी भी दूसरे के लिये, ये लगभग गोल था। मैं कुछ समय के लिए, आश्चर्य करता हुआ बैठा कि ये किस संबंध में था, इसमें क्या था, वह अचानक ही मौन क्यों हो गए। तब उन्होंने कहा, ''लोबसांग, तुम्हें अपने स्वाभाविक अतीन्द्रियज्ञान को और अधिक ऊॅची स्थिति तक ले जाने के लिए विकसित करना होगा और पहली चीज यह है कि इसको जाना जाए।'' संक्षेप में, उन्होंने लकड़ी के इस अष्टभुजावाले डिब्बे की ओर

इशारा किया, मानो वह प्रत्येक चीज की व्याख्या कर देगा, परन्तु इसने केवल मुझे दुविधा की गहराइयों में डाल दिया। ''यहॉ, मेरे पास एक भेंट है, जो स्वयं अंतरतम के आदेश से तुम्हें दी जानेवाली है। ये तुम्हें काम में लाने के लिए दी गई है और तुम इससे काफी अच्छा कर सकते हो।'' वह आगे झुके और दोनों हाथों से डिब्बे को उठा लिया और मेरे हाथों में देने से पहले, कुछ क्षणों के लिए इस पर देखा। उन्होंने इसे अत्यन्त सावधानीपूर्वक, मेरे हाथों में रखा और अपने हाथों को भी वहॉ समीप ही रखा। मैं लड़कपन में, अनाड़ी होना चाहिए था, और उसे गिरा देता। यह आश्चर्यजनकरूप से भारी था, और इतना भारी होने के कारण, मैंने सोचा, इसके अन्दर पत्थर का एक डेला होगा।

''इसे खोलो लोबसांग!'' लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा। ''डिब्बे के ऊपर देखते रहने मात्र से तुम्हें इसके बारे में कोई जानकारी नहीं मिलेगी।''

मूर्खतापूर्ण ढंग से, मुश्किल से यह जानते हुए कि इसे कैसे खोला जाए क्योंकि, ये आठ भुजावाला था और मैं नहीं जानता था कि इसका ढ़क्कन कैसे लगाया गया है, मैंने अपने हाथों से उस चीज को खोला। परन्तु तब मैंने ढ़क्कन को पकड़ा और कैसे भी इसे आधा घुमाया। गुम्बदाकार सिर वाला ढ़क्कन, मेरे हाथों में बाहर आ गया। मैंने इसमें झांका और देखा कि ये केवल ढ़क्कन था, इसलिए मैंने इसे अपने बगल से रख दिया, जबकि मैंने अपना ध्यान, जो डिब्बे में अन्दर था, उस पर लगाया। जो कुछ भी मैं देख सकता था कपड़े का ढ़ेर था, इसलिए मैंने उसे उठा लिया और उसे बाहर निकालने के लिए चला, परन्तु उसका बजन काफी चकित करनेवाला था, मैंने अपनी पोशाक को सावधानी से फैलाया ताकि यदि इसके अंदर कोई चीज खुली हुई हो तो वह जमीन पर न गिरे, और तब अपने हाथ डिब्बे पर रखने के बाद, मैंने इसे उल्टा कर दिया और इसके अन्दर के सामान का बजन अपनी उॅगलियों पर ले लिया। तब मैंने खाली डिब्बे को उठाया और अपना ध्यान गोलाकार वस्तु की ओर लगाया, जो एकदम गहरे काले रंग के कपड़े में लपेटी हुई थी।

जैसे ही मेरी घिरी हुई उंगलियों ने उस चीज को खोला, मैं आदर के साथ मोहित होते हुए धक से रह गया, क्योंकि मेरे सामने, एक अत्यन्त सुन्दर, आश्चर्यजनक, दोषरहित, एक क्रिस्टल खुला हुआ था। ये उस कॉच की तरह का नहीं था, जो भाग्य बतानेवालों के द्वारा उपयोग में लाया जाता है, वल्कि वास्तव में, एक क्रिस्टल था, परन्तु ये क्रिस्टल इतना शुद्ध था कि, कोई मुश्किल से ही देख पाता था कि इसका प्रारम्भ और अन्त कहॉ है, जब मैंने इसे अपने हाथों में नहीं पकड़ा–ये लगभग, कुछ नहीं के गोले जैसा था, अर्थात्, जबतक मैंने इसके बजन पर विचार नही किया, और इसका वजन काफी विकट था। ये उतना ही भारी था, जितना कि इसके समान आकार का एक पत्थर का होता।

मेरे शिक्षक ने मेरी ओर मुस्कुराते हुए देखा। जब मैंने अपनी ऑखें उनसे मिलाईं, उन्होने कहा, ''तुम्हें ठीक स्पर्श मिला है, लोबसांग, तुम्हें इस ठीक ढ़ंग से पकड़े हुए हो। अब, इससे पहले कि तुम इसका उपयोग करो, तुम्हें इसे धोना पड़ेगा और अपने हाथों को भी धोना पड़ेगा!'' उन्होंने प्रसन्नता से कहा। ''इसे धोओ, आदरणीय लामा!'' मैंने कुछ आश्चर्य से कहा। ''जो कुछ भी हो, मैं इसे क्यों साफ करूॅ ? ये पूरी तरह से साफ है, पूरी तरह से साफ।'' ''हॉ, परन्तु यह आवश्यक है कि, किसी भी क्रिस्टल को, जब वह एक हाथ से दूसरे हाथ में बदलता है, धोया जाना चाहिए क्योंकि ये क्रिस्टल मेरे द्वारा हाथ में लिया गया है, और तब गहनतम ने अपने हाथ में लिया, और फिर मैंने बाद में इसे अपने हाथ में लिया, इसलिए अब, तुम मेरे भूतकाल में या मेरे भविष्यकाल में नहीं रहना चाहते, और वास्तव में, ऐसा है कि किसी भी अंतरतम के भूत, भविष्य और वर्तमान में रहना मना है। इसलिए दूसरे कमरे में जाओ,'' उन्होंने उस दिशा में जहॉ मुझे जाना चाहिए था, हाथ से इशारा किया और अपने हाथों को धोओ, तब क्रिस्टल को धोना, ये सुनिश्चित करो कि तुम इसके ऊपर पानी उड़ेलते रहो ताकि पानी इस पर बहता रहे। जबतक कि तुम समाप्त नहीं कर लोगे, मैं यहॉ प्रतीक्षा करूॅगा।''

अत्यन्त सावधानी के साथ, मैंने क्रिस्टल को लपेटा और अपने आपको आराम में किया, गद्दी

जहॉ मैं, क्रिस्टल को उसके केन्द्र पर रखे हुए, ताकि ये जमीन पर गिर नहीं सके, पर बैठा रहा था, को उठाया। जब मैंने अपने पैरों को दुबारा जमाया और कमोवेश निश्चिंतता के साथ खड़ा हुआ, मैं पहुॅचा और कपड़े में लपेटे हुए बण्डल को उठाया और कमरे के बाहर गया। इसे पानी में पकड़कर रखना, एक सुन्दर चीज थी। मैंने इसके आसपास पानी में अपने हाथों को रगड़ा, जिससे यह जीवन से चमकता हुआ दिखाई दिया, ऐसा लगा, मानो ये मेरा ही एक अंश हो, ऐसा लगा, मानो यह मेरा ही हो, और वास्तव में, इसने ऐसा ही किया। मैंने धीमे से इसे एक बगल को रखा और ये निश्चित करते हुए कि काफी मात्रा में महीन रेत का उपयोग किया जाये, मैंने अपने हाथों को धोया, और तब मैंने उनको खंगाला और वापस गया और एक जग, जो जबकि पानी क्रिस्टल के ऊपर डाला जा रहा था, उल्टा किया हुआ मेरे पास था, के नीचे पकड़ में रखते हुए फिर से क्रिस्टल को धोया, और जब गिरती हुई बूंदे, आनेवाली सूर्य की रोशनी की किरणों के साथ टकराती थीं, इससे एक छोटा इन्द्रधनुष बन रहा था। क्रिस्टल और अपने हाथ भी, साफ हो जाने के साथ मैं अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप के कमरे की तरफ लौटा।

''तुम और मैं, भविष्य में, एक दूसरे के काफी करीब होने जा रहे हैं, हम एक दूसरे के अगल बगल में रहनेवाले हैं, इसके लिए अंतरतम ने आदेश कर दिया है। आज रात के बाद, तुम शयनवीथिका में नहीं सोओगे। कल जब हम चाकपोरी से लौटेंगे तो तुम्हें मेरे बगल का कमरा मिल जाएगा, इसके लिए व्यवस्था की जा रही है। तुम मेरे साथ अध्ययन करोगे और तुम उन प्रबुद्ध लामाओं के भी साथ अध्ययन करोगे, जिन्होंने काफी कुछ देखा है, काफी कुछ किया है, और सूक्ष्मशरीर से यात्राऐं की हैं। तुम क्रिस्टल को भी अपने कमरे में रखोगे, और कोई दूसरा इसको छुएगा नहीं क्योंकि, वह इसे एक भिन्न प्रभाव दे देगा। अब तुम अपनी गद्दी पर चलो और अपनी पीठ को रोशनी की तरफ करते हुए बैठो।''

मैंने स्थान बना लिया और अपनी पीठ, रोशनी की तरफ करके बैठा। मैं क्रिस्टल को अपने हाथों में जकड़ते हुए, सावधानीपूर्वक, खिड़की के समीप बैठा परन्तु मेरे शिक्षक संतुष्ट नहीं थे। ''नहीं, नहीं, ये पक्का कर लो कि प्रकाश की कोई भी किरण, क्रिस्टल पर नहीं पड़े, क्योंकि यदि ये गिरती है तो तुम्हें इसके अन्दर मिथ्या परावर्तन दिखाई देंगे। ये आवश्यक है कि क्रिस्टल में प्रकाश का कोई बिन्दु न हो, बदले में तुम इसके प्रति सावधान हो, परन्तु इसकी ठीक परिधि के बारे में सावधान नहीं।'' वह अपने पैरों पर खड़े हुए, और (उन्होंने) सूर्य की रोशनी को कम करते हुए, और कमरे को पीली–नीली सी आभा के साथ भरते हुए, लगभग मानो कि, सांझ हमारे ऊपर घेर आई हो, एक पुराने चिकने रेशमी पर्दे को खिड़की के ऊपर खींचा।

ये कहा जाना चाहिए कि, हमारे ल्हासा में कॉच बहुत कम होते हैं अथवा तिब्बत में बहुत कम कॉच होते हैं, क्योंकि सभी कॉचों को पर्वतों के पार से व्यापारियों की पीठपर या उनके लदे हुए जानवरों की पीठपर लाना पड़ता है और सहसा तूफानों में, जो हमारे शहरों को घेर लेते हैं, हवा में तूफान में आनेवाले पत्थरों के द्वारा, कॉच तत्काल ही टूट जाएगा। इसप्रकार, हमारे कपाट अलग पदार्थों के बने हुए होते है, कुछ लकड़ी के थे और दूसरे तेलीय रेशम के या लगभग वैसे ही, जो हवा और धूल को बन्द करते थे, परन्तु तेलिया रेशम सबसे अच्छा होता था क्योंकि, इसमें से छनकर सूर्य की रोशनी पार आ सकती थी।

अंत में मैं एक स्थिति में था, जिसे मेरे शिक्षक ठीक समझते थे। मैं अपनी टॉगों को अपने अंदर लपेटे हुए बैठा था– पद्मासन की मुद्रा में नहीं, क्योंकि मेरी टॉगें उसके लिये इतनी ज्यादा खराब हो चुकी थीं– परन्तु मैं अपनी टॉगों को अपने अंदर लपेटते हुए बैठा था और मेरे पैर दांयी ओर को बाहर निकल रहे थे–मेरी गोदी में बंधे हुए हाथों में क्रिस्टल रखा था, नीचे पकड़ा हुआ ताकि मैं अपने हाथों को, गोले की उभरती हुई बगल से नहीं देख सकूॅ। मेरा सिर झुका हुआ था, और मुझे वास्तव में बिना

देखे हुए, बिना यथार्थ में केन्द्रित किए हुए, क्रिस्टल पर या क्रिस्टल के अन्दर देखना था। बदले में, क्रिस्टल में ठीक से देखते हुए, अनन्त में अपनी नजर को केन्द्रित किए हुए, क्योंकि यदि कोई सीधे ही क्रिस्टल के ऊपर केन्द्रित करता है तो स्वतः ही वह किसी दाग धब्बे या धूल को या किसी परावर्तन को देखता है और ये सामान्यतः प्रभाव को खराब कर देता है। इसलिए मुझे, प्रकटरूप से क्रिस्टल में झांकते हुए, जबकि हमेशा अनन्त में किसी बिन्दु पर केन्द्रित होना सिखाया गया था।

मुझे अपने मन्दिर के अनुभव के लिए याद दिलाया गया, जब मैंने घूमती हुई आत्माओं को, अपने क्षेत्र में आते हुए, और जहॉ नौ लामा, हर संदर्भ पर रुकते हुए, अपने जाप को कर रहे थे, अगरबत्ती की एक काड़ी पर चांदी की घंटियों को टुनटुनाते हुए, देखा था।

मेरे शिक्षक मेरे ऊपर मुस्कुराए और कहा, ''अब क्रिस्टल गेजिंग (crystal gazing) करने के लिए, और एक क्षण के लिए, क्रिस्टल से कोई परिणाम निकालने के लिए, कोई समय नहीं है क्योंकि तुम्हें ठीक तरह से पढ़ाया जाएगा और ये ''नौ दिन चले अढ़ाई कोस (more haste less speed)" का मामला है। तुम सीखना चाहते हो कि चीज को ठीक तरह से कैसे पकड़ा जाए, वास्तव में, जैसा तुम इस समय कर रहे हो, परन्तु तुम विभिन्न अवसरों के लिए, विभिन्न प्रकार के पकड़ने तरीके, सीखना चाहते हो। यदि तुम वैश्विक प्रकरणों (world affairs) को जानना चाहते हो तो तुम्हें क्रिस्टल को एक स्टेज पर रखना चाहिए, या यदि तुम किसी व्यक्ति विशेष के बारे में जानना चाहते हो, तो तुम क्रिस्टल को लो और पहले इसे प्रश्न पूछनेवाले को पकड़ाओ, जिसके बाद तुम इसे उससे वापस लो और यदि तुमको ठीक तरह से प्रशिक्षण दिया गया है, तो तुम, जो वह जानना चाहता है, देख सकते हो।''

ठीक उसी क्षण, हमारे ऊपर कोलाहल (pandemonium) फूट पड़ा; वहॉ शंखों की गहरी गूंजती हुई, बेसुरी आवाजें थीं, जैसे कि घास के मैदान में याक रंभा रहे हों, जैसे कि एक अत्यधिक मोटा भिक्षु, ठुमकते हुए चलने का प्रयास कर रहा हो। मैं शंखों में, कभी कोई संगीत नहीं पहचान पाया; दूसरे लोग (ऐसा) कर सकते थे और उन्होंने मुझे बताया कि ऐसा इसलिए था, क्योंकि मैं सुरों के प्रति बहरा था। शंख के आने के बाद, मंदिर की तुरहियों की गॅूज, फिर घंटियों का बजाना, और तब लकड़ी के ढ़ोल पीटने की आवाजें आई। मेरे शिक्षक मेरी ओर मुड़े और उन्होंने कहा, ''ठीक है, लोबसांग, अच्छा हो, मैं और तुम सेवा के लिए जाऐं क्योंकि, अंतरतम भी वहॉ होंगे, और यहॉ पोटाला में, अपनी अंतिम शाम में, हमारे लिए वहॉ जाना, ये सामान्य सौहार्द्रता है। मुझे जल्दी से जाना चाहिए और तुम अपनी चाल से आओ।'' ऐसा कहते हुए, वह अपने पैरों पर खड़े हुए, मुझे कंधे पर एक थपकी दी और तेजी से बाहर निकल गए।

मैंने अत्यधिक सावधानी के साथ क्रिस्टल को लपेटा, वास्तव में इसे बहुत–बहुत सावधानी के साथ लपेटा, और तब सर्वाधिक सावधानी के साथ मैंने इसे आठ भुजावाले लकड़ी के डिब्बे में वापस रखा। मैंने इसे अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के बैठने के स्थान के पास मेज पर रखा और तब मैं भी, गलियारे में नीचे, (उनके) पीछे–पीछे चला।

सभी दिशाओं से, वेदीसेवक, भिक्षु, और लामा, जल्दी करते हुए आ रहे थे। इसने मुझे, चींटियों, जो भीड़ बनाकर चलती हैं, की एक विक्षुब्ध कॉलोनी का, ध्यान दिलाया। लोग जल्दी में दिखाई देते थे ताकि वे अपने लिए, उनकी अपनी श्रेणी में, दूसरों की तुलना में, अधिक अच्छा स्थान पा सकें। जबकि मैं कहीं अन्दर घुसा, और देखे गये बिना, बैठ सका, मैं कोई जल्दी में नहीं था, ये सब था, जिसके लिए मुझे कहा गया था।

शंखों की आवाजें बंद हुईं। तुरहियों का बजना बंद हुआ। अबतक मन्दिर में प्रविष्ट होनेवाली धारा घटकर, रिसाव जैसी रह गयी थी और मैंने स्वयं को पीछे चलते हुए, उसकी पूंछ पर, अंत पर, चलते हुए पाया। ये महान मन्दिर था। मन्दिर, जिसमें अंतरतम, जब उनको अपने सांसारिक कर्तव्यों से (निपट कर) आने का समय मिलता, स्वयं शामिल होते थे और लामाओं में मिल जाते थे।

रात के अंधेरे में, छत को समर्थन देनेवाले बड़े खम्भे, फैले हुए दिखाई दिए। हमेशा मौजूद रहनेवाले धुंए के, सुगन्ध के भूरे, नीले, और सफेद, भंवराते हुए और मंडराते हुए, और फिर भी, एक विशेष रंग में, कभी स्थिर होते न दिखते हुए बादल, हमारे ऊपर थे, क्योंकि सुगन्ध के इन सभी बादलों को, उनके स्वयं के व्यक्तित्व को बनाए रखने के लिये, कुछ राह दिखाई देती थी।

जलती हुई मशालों को और अधिक जलाते हुए और घी के दियों, जो थुकथुकाते और घिस जाते थे, और तब लपटों में टूट पड़ते थे, को और अधिक जलाते हुए छोटे बच्चे, आसपास दौड़े रहे थे। यत्र–तत्र, वहॉ एक दीपक था, जो ठीक से जलाया नहीं गया था क्योंकि, किसी को पहले तो मक्खन को पिघलाना पड़ता है ताकि, ये पिघलकर तेल की तरह हो जाए, अन्यथा बत्ती, जो तैर रही होती केवल कोयला बन जाती और थुकथुकाती और हमको धुंए से छींकने के लिए मजबूर करती।

अंत में पर्याप्त दीपक जलाए गए, और अगरबत्तियॉ काफी मात्रा में लाई गईं और वे भी जलाई गईं, और तब बुझाई गईं ताकि वे लाल जलें और धुंए के बड़े–बड़े बादल निकालें। मैंने अपने बारे में देखा। मैंने देखा कि, सभी लामा एक समूह में, पंक्तियों में, एक दूसरे का सामना करते हुए, और अगली लाईन पीठ से पीठ मिलाए हुए और इसीप्रकार एक दूसरे को सामने रखते हुए, और इससे अगली लाइन पीठ से पीठ मिलाए होती और इसीप्रकार, इसी ढ़ंग से, उनसे आगे भिक्षु बैठे हुए होते और इनके परे वेदीसेवक होते। लामाओं के पास एक फुट ऊॅची छोटी मेजें होतीं, जिनके ऊपर, हमेशा उपस्थित रहनेवाली चांदी की घंटियों के समीप, वे अपने छोटे–छोटे सामानों को जमा कर लेते; कुछ के पास लकड़ी के ढ़ोल होते और बादवाले (later), जैसे ही सेवा शुरू होती, पाठक अपने व्याख्यान पीठपर खड़ा होता, पवित्र पुस्तकों में से अपने गद्यांशों को पढ़ रहा होता, और लामा और भिक्षु, उसको साथ साथ गाते, और लामा हर पद्यांश के पूरा होने पर, अपनी घंटियों को बजाते, जबकि दूसरे अपनी उॅगलियों से ड्रम के ऊपर थाप देते। बारबार (again and again), किसी विशेष हिस्से की समाप्त होने की सूचना देने के लिए, कहीं से दूरी से, मन्दिर के कहीं दूर स्थान से, धुंधले दूर स्थान से, वहॉ शंखों की घर्र–घर्र का शब्द होता। मैं देखता गया, परन्तु ये केवल मेरे लिए एक चश्मा था, ये केवल धार्मिक अनुशासन था, और मैंने किसी समय ये निर्णय किया, कि जब भी मुझे समय मिलेगा, मैं अपने शिक्षक से पूछूॅगा कि इस उत्सव में जाना आवश्यक क्यों था। मैंने आश्चर्य किया, क्या ये लोगों को अधिक, और अधिक, अच्छा बनाता है, क्योंकि मैं तमाम भिक्षुओं को देख चुका था, जो काफी श्रद्धापूर्ण, वास्तव में, अपनी सेवाओं में शामिल होने में अत्यधिक समर्पित, परन्तु मन्दिर के बाहर, सेवाओं के बाहर, वे परपीड़क और दादा होते थे। फिर भी, दूसरे जो मन्दिरों के पास कभी नहीं आते थे, काफी दयालु और सहानुभूतिपूर्ण होते थे, और गरीबों की, भटके हुए छोटे बच्चों की, मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे, जो ये नहीं जानते थे कि हमें आगे क्या करना है और हमेशा परेशानी में आने से डरते रहते थे क्योंकि इतने सारे प्रौढ़, इन चीजों को छोटे बच्चों द्वारा पूछे जाने पर, बताने से घृणा करते थे।

मैंने मन्दिर के केन्द्र की ओर, लामाओं के समूह के केन्द्र की ओर देखा, और मैंने अपने आदरणीय, प्रिय अंतरतम को वहॉ शान्त, और धीमे–धीमे, एक काफी शक्तिशाली आध्यात्मिक प्रभामण्डल के साथ बैठे हुए देखा और ये तय किया कि मैं, उनके सामने और अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के सामने, हर समय अपने आपको, आदर्श बनाने का प्रयास करूॅगा।

सेवा चलती गई और चलती गई, और मुझे डर है कि मैं एक खम्भे के पीछे नींद में गिर गया होता क्योंकि मैं और कुछ अधिक नहीं जानता था, जबतक कि वहॉ घण्टों की बजने की, और शंखों के गूंजने की दुबारा से तेज आवाज न हो, और तब अनेक लोगों के पैरों पर खड़े होने की आवाज और तब अपरिभाषनीय शोर न हो, जो आदमियों का समूह, जबकि वे बाहर निकल रहे होते, बनाता। इसलिए मैंने अपनी उॅगलियों के जोड़ों के साथ अपनी ऑखों को रगड़ा, और देखने का प्रयास किया, जगते हुए जगने का प्रयास किया मानो कि मैं पूरा ध्यान दे रहा था।

कमजोरी से, मैं, अपनी साझे की शयनवीथिका में, यह सोचते हुए कि मैं कितना प्रसन्न था कि आज की रात के बाद, मुझे लड़कों की इस पूरी भीड़ में नहीं सोना पड़ेगा, जो रात भर, अपने खर्राटों से चीखों से, परेशान करते हैं, परन्तु इस रात के बाद, मैं अकेला सोने योग्य हो जाऊँगा, पूंछ के अंत के सिरे तक, दुबारा साथ गया।

शयनवीथिका में जैसे ही मैंने अपने आपको, अपने कम्बल में लपेटने का प्रयास किया, एक लड़का मुझसे, ये कहते हुए कि ये विचार कितना आश्चर्यजनक होगा कि, वह कैसे मेरा स्थान खुद पानेवाला है, बात करने की कोशिश करने लगा। परन्तु अपने वाक्य के बीच में उसने जोर से जंभाई ली और जमीन पर गहरी नींद में सो गया। मैं अपने कंबल में लपेटा हुआ, खिड़की की तरफ गया और तारोंभरी रात को, झागभरी बर्फ को, जो पहाड़ों की चोटियों को फाड़ रही थी और उगते हुए चन्द्रमा की रोशनी से अत्यधिक सुन्दरता के साथ चमक रही थी, फिर से बाहर देखा। फिर, मैं भी लेट गया और कोई भी विचार नहीं, और सो गया। मेरी नींद, बिना स्वप्न के और शान्तिपूर्ण थी।

अध्याय ग्यारह

हम साथ–साथ गलियारे में नीचे की तरफ चले, जबतक कि हम अंदरवाले ऑगन में नहीं पहुँचे, जहॉ साईस भिक्षु, पहले से ही दो घोड़ों को पकड़े खड़े थे, एक मेरे गुरू लामा मिंग्यार डोंडुप के लिए और दूसरा, दुर्भाग्यशाली! मेरे लिए। मुझे चढ़ाने में मदद करने के लिये, मेरे गुरू ने एक साईस को इशारा किया और मैं प्रसन्न था कि मेरी टॉगें खराब थीं क्योंकि, मैं और घोड़ा, मुश्किल से ही समान बिन्दु पर साथ आ पाते हैं; यदि मैं घोड़े पर चढ़ने के लिए गया, तो घोड़ा आगे चला जाता है और मैं जमीन पर गिर पड़ता हूँ और यदि मैंने घोड़े के चलने की आशा की और एक छलॉग उछाल ली, तो घोड़ा नहीं चलता और मैं, कम्बख्त प्राणी के ठीक ऊपर कूद जाता। परन्तु, इसबार मेरी घायल टॉगों के बहाने से, मुझे उस घोड़े पर चढ़ने में मदद की गई, और तुरंत मैंने उन चीजों में से एक की, जो नहीं की गई थी! मैं अपने गुरु के बिना आगे की ओर दौड़ने लगा। जैसे ही, यह जानते हुए कि उस हवा के घोड़े के ऊपर मेरा कोई नियंत्रण नहीं है, उन्होंने मुझे देखा, वह जोर से हॅसे। घोड़े ने ऑगन से बाहर की ओर, रास्ते पर छलांग लगाई, पहाड़ के बगल से लुढ़कने से डरा हुआ, मैं प्रिय जीवन को पकड़े हुए था।

मैं बाहरी दीवार के आसपास चढ़ा। एक मोटे और मित्रवत् चेहरे ने ठीक ऊपर खिड़की में से झांका और कहा, अलविदा ''लोबसांग, जल्दी फिर आना, हम अगले हफ्ते में, कुछ ताजा जौ रखेंगे, अच्छा माल, अच्छा माल, जो हमें बाद में मिला है। जैसे ही तुम आओ, तुम मुझे मिल लेना और बात करना।'' रसोईया भिक्षु ने दूसरे घोड़े को आते हुए सुना और अपनी ऑखों को बांयी ओर घुमा दिया, और जाने दिया ''ओह! ए! ए! आदरणीय चिकित्सीय लामा, मुझे क्षमा करें!'' मेरे शिक्षक आ रहे थे और वेचारे गरीब रसोइया–भिक्षु ने सोचा कि उसने 'एक अशिष्टता' कर दी है, परन्तु मेरे शिक्षक की मित्रवत् मुस्कान ने उसे शीघ्र ही, सरल बना दिया।

मैं पहाड़ में नीचे की तरफ, सवार होकर चलता गया, मेरे शिक्षक धीमे–धीमे मुस्कराते हुए, मेरे पीछे चले। ''तुम्हारे लिए, हमें घोड़े को सरेस से चिपकाकर, जीन पहनानी पड़ेगी, लोबसांग,''। वह खुशी से हॅसे। मैंने उदास होकर, उनकी तरफ, पीछे देखा। ये उनके लिए एकदम ठीक था। वह काफी लम्बे–चौड़े, बड़े आदमी थे, छः फुट लम्बे और भार में दो सौ पाउण्ड से अधिक, उनकी मांसपेशियॉ अच्छी थीं, उनके पास दिमाग था, और निस्संदेह, यदि उन्होंने ऐसे सोचा तो बजाय इसके कि घोड़ा उनको ले जाए, वे उस घोड़े को, पहाड़ के बगल से और नीचे ले जाने के लिए पकड़ सकते होंगे। दूसरी तरफ, मैं जानवर के ऊपर टिका हुआ, एक मक्खी की तरह महसूस कर रहा था। मेरा उस चीज के ऊपर, बहुत थोड़ा ही नियंत्रण था और अक्सर हरबार, उसके स्वभाव की विकृति के कारण और ये जानते हुए कि मैं अत्यधिक डरा हुआ हूँ, वह रास्ते के एकदम किनारे की ओर गया और ठीक नीचे, काफी नीचे, फर (willow) के झुण्ड की ओर घूरा, अनुमानतः आनन्द के साथ हिनहिनाते हुए, उसने ऐसा किया।

हम पहाड़ की तलहटी में पहुँचे और डोडपाल मार्ग पर चले क्योंकि, चाकपोरी जाने से पहले, श्यो गॉव के सरकारी दफ्तरों में किसी एक में, किसी से मिलने के लिए, हमें एक बुलावे पर जाना था। हम वहॉ पहुँचे, मेरे काफी मिलनसार शिक्षक ने, मेरे घोड़े को एक खम्भे से बांधा और मुझे ये कहते हुए उतारा, ''अब तुम यहॉ आसपास रुको, लोबसांग, मुझे दस मिनट से अधिक नहीं लगेंगे।'' उन्होंने अपने बैग को उठाया और मुझे पत्थरों के ढेर पर बैठा हुआ छोड़कर, कार्यालयों में से एक में चले गए।

''वहॉ! वहॉ!'' एक देहाती गॅवार आवाज ने मेरे पीछे से कहा, ''मैंने केशरिया बाने के लामा को उस घोड़े से उतरते हुए देखा था और उसका लड़का घोड़ों को देखने के लिए यहॉ है। तुम क्या करते हो नवयुवक स्वामी ?'' मैंने आसपास देखा और तीर्थयात्रियों के एक छोटे समूह को देखा। उनकी जीभें, पारम्परिक तिब्बती अभिवादन के रूप में बाहर निकली हुईं थीं, जिसके साथ निम्नवर्ग के लोग उच्चवर्ग

के लोगों का अभिवादन करते थे। भव्यता में परावर्तित होने के कारण, वेशर्मी से, 'केशरिया बाने के लामा का लड़का होने के कारण', मेरी छाती गर्व के साथ फूल गई, ''ओह!'' ये मेरा उत्तर था। ''तुमको, एक इसतरह से, अप्रत्याशितरूप से, पुजारी के पास नही आना चाहिये, तुम जानते हो, हम हमेशा ध्यान में रहते हैं, और एक अचानक धक्का, हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत खराब होता है।'' जब मैंने उनकी तरफ देखा, मैंने मानो कि, उसका अनुमोदन न करते हुए त्यौरियॉ चढ़ाईं और कहना जारी रखा, ''मेरे स्वामी और शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप, केशरिया बाने के पहननेवाले, यहॉ एक काफी महत्वपूर्ण लामाओं में से एक हैं, वे वास्तव में, बहुत महान व्यक्ति हैं, और मैं तुम्हें उसके घोड़े के और अधिक पास आने की सलाह नहीं दूँगा क्योंकि, ऐसे महान सवार का होने के कारण, उनका ये घोड़ा, भी महत्वपूर्ण है। परन्तु अब तुम चलते बनो, चलते बनो, अपने मुद्रिका पथ की परिक्रमा को मत भूलो, ये तुम्हारे लिए बहुत भला करेगी!'' इसके साथ, आशा करते हुए कि मैंने ठीक वैसा ही अभिनय किया है जैसा कि एक वास्तविक भिक्षु को करना चाहिए, यह कि मैंने एक उचित प्रभाव बनाया है, मैं मुड़ गया।

मेरे पास एक दबी हुई मुस्कान ने, मुझे (स्वयं को) दोषी के रूप मे देखने को विवश किया। एक व्यापारी, एक हाथ कूल्हे पर रखे हुए, दूसरा हाथ अपने मुँह में बहुत व्यस्त, अपने दांत को तिनके से कुरेदते हुए, वहॉ खड़ा हुआ था। जल्दी से मैंने घूमकर देखा और तीर्थयात्रियों को देखा कि जैसा उन्हें आदेश दिया गया था उन्होंने अपनी परिक्रमा शुरू कर दी थी, ''ठीक है ? तुम क्या चाहते हो ?'' मैंने बूढ़े व्यापारी से कहा, जो अपनी टेढ़ी ऑखों से मेरी ओर ताक रहा था, उसका झुर्रीदार चेहरा, और वर्षों से झुर्रियॉ पड़ा हुआ था। ''मेरे पास खराब करने के लिए समय नहीं है!'' मैंने कहा। बूढ़ा आदमी शुभेच्छा के साथ मुस्कराया ''अब, अब, नोजवान स्वामी, बेचारे बूढ़े व्यापारी के लिए इतने कठोर मत बनो, जिसका समय, इन कठोर दिनों में जीने के लिए, इन कठोर, कठोर दिनों में, इतना मुश्किल है। क्या तुम्हारे पास कोई सस्ती सी, तुच्छ वस्तु है, कोई भी चीज, जिसे तुमने वहॉ ऊपर, बड़े घर से लाये हो ? मैं तुम्हें उसके लिए, लामा के बालों की कतरन के लिए, या लामा की पोशाक के एक टुकड़े के लिए, बहुत अच्छी कीमत दे सकता हूँ, मैं तुम्हें किसी भी चीज के लिए, जिसको उच्चकोटि के लामाओं, जैसे कि तुम्हारे केशरिया बाने वाले स्वामी, के द्वारा आर्शीवाद दिया गया हो, अच्छा प्रस्ताव दे सकता हूँ। बोलो, नोजवान स्वामी बोलो, इससे पहले कि वह वापस आऐं और हमको पकड़ लें।''

जैसे ही मैंने उसको देखा, मैं नाक सिडक़ने लगा और सोचा, नहीं, यदि मेरे पास एक दर्जन पोशाकें होती तो क्या मैं उन्हें, उन चीजों को, ठगों और कपटियों द्वारा बेचे जाने के लिए, बेच देता। ठीक तभी मेरी खुशी के लिए, मैंने अपने शिक्षक को आते हुए देखा। बूढ़े व्यापारी ने भी उन्हें देखा और वह पैर घसीटते हुए, धीमी चाल से चला गया।

''तुम यहॉ क्या करने का, व्यापारियों से क्या खरीदने का, प्रयास कर रहे हो ?'' मेरे शिक्षक ने पूछा। ''नहीं, आदरणीय स्वामी,'' मेरा जवाब था, ''वह आपके बालों के टुकड़े, (अन्य) कोई टुकड़े या कतरन, आपकी पोशाक की कतरन, या कोई भी चीज, वह सोचता है, जो मैं आपसे चुराने में सक्षम रहा होऊँ, खरीदने की कोशिश कर रहा था।'' लामा मिंग्यार डोंडुप हॅसे परन्तु वहॉ उनकी हॅसी में एक उदासीन प्रकार का वलय था, जब वह मुड़े और व्यापारी की तरफ ताका, जो रुक नहीं रहा था वल्कि वास्तव में, तेजी से भागने की जल्दी में था, जिससे वह पुकारे जाने की परिधि से बाहर चला जाए। ''इन लोगों के ऊपर दया आती है, ये हमेशा, हमेशा, कमाने के फेर में रहते हैं। ये हमेशा कुछ चीज पाने की फिराक में रहते हैं और उसे एक नकली कीमत देने की कोशिश करते हैं। कुल मिलाकर, ये केशरिया बाना नहीं है, जिसका कोई अर्थ है, परन्तु ये केशरिया बाना पहननेवाली की आत्मा है।'' ऐसा कहते हुए उन्होंने एक ही बार में, आसानी से मुझे उठा लिया और मुझे घोड़े पर, जो उतने ही आश्चर्य से देख रहा था, जितना मैंने समझा, दोनों तरफ पैर रखकर बैठा दिया। तब उन्होंने लगामों को ढ़ीला किया, और मुझे देते हुए (मानो कि मैं जानता था कि उनके साथ क्या करना है!) खुद अपने घोड़े पर

चढ़ गए और हम सवार होकर आगे बढ़े।

हम, श्यो के बाकी गॉव को पीछे छोड़ते हुए, पार्गो कलिंग को पीछे छोड़ते हुए, मनी लखांग के नीचे और तब उसके छोटे पुल के ऊपर होकर, जो कलिंग च्यू की सहायक नदी के ऊपर बना था, चले । हमने छोटे कुंडू (Kundu) पार्क को पीछे छोड़ते हुए, और अपनी खुद की चाकपोरी के बांयी तरफ को अगली सड़क पर अगला बांया मोड़ लिया।

ये बड़ी खराब और पत्थरवाली सड़क थी, चलने के लिए एक कड़ी सड़क, एक सड़क जिसको पक्के पैर (नाल) वाले घोड़ों की आवश्यकता थी। लोह पहाड़ी, जैसा कि चाकपोरी के लिए हमारा नाम था, उस पहाड़ से ऊॅची है, जिसपर पोटाला को खड़ा किया गया है, और हमारी चट्टानों की पराकाष्ठा छोटी थी, तीखी, और तीखी। मेरे शिक्षक ने मुझे रास्ता बताया, उनका घोड़ा, बार–बार, अक्सर, छोटे पत्थरों को उखाड़ डालता, जो लुढ़ककर मेरी तरफ आते। मेरा घोड़ा, रास्ते को सावधानीपर्वूक पकड़ते हुए, पीछे चल रहा था। जैसे ही हम चढ़े, मैंने अपने दांयी तरफ देखा–दक्षिण की तरफ–जहॉ प्रसन्नता की नदी, क्यी चू बहती थी। मैं ठीक नीचे नगीना पार्क में नोरबूलिंगा को भी देख सका, जहॉ अंतरतम, अपने आनन्द के कुछ क्षण गुजारते थे। वर्तमान में पार्क पूरी तरह वीरान था, सिवाय कुछ माली भिक्षुओं के, जो हाल में आए हुए तूफान के बाद उसे संवार रहे थे, कोई वरिष्ठ लामा नजर में नहीं आया। मैंने सोचा, अपनी टॉगों के खराब होने से पहले, कैसे, मैं पहाड़ के बगल से फिसलना और छिपकर लिंगखोर रोड़ के आरपार निकलना और नगीना पार्क या नोरबू लिंगा में जाना, जिसको मैं खुद का अधि गुप्त रास्ता (super secret way) समझता था, पसन्द करता था।

हम पहाड़ की चोटी पर पहुॅचे, हम चाकपोरी की दीवारों के सामने वाले, पथरीले स्थान में पहुॅचे, दीवारें, जो उस पूरे मठ को घेरे हुए थीं। दरवाजे पर खड़े भिक्षु ने, शीघ्रता से हमारा स्वागत किया, दो दूसरे भिक्षु, हमारे घोड़ों को हमसे लेने के लिए आगे आए। मैं अत्यधिक आनन्द के साथ, परन्तु थोड़ा सा कराहता हुआ क्योंकि, मेरी टूटी टॉगपर एकबार फिर बजन पड़ गया था, अपने (घोड़े) पर से उतरा। ''मुझे तुम्हारी टॉगों के संबंध में देखना पड़ेगा, लोबसांग, वे उतने अच्छे तरीके से स्वस्थ नहीं हो रही हैं, जितनी मैं आशा करता था,'' मेरे शिक्षक ने कहा। एक भिक्षु ने लामा का सामान लिया और तेजी से उनके साथ चला। वह मुड़ गया और अपना रास्ता लामामठ की तरफ लिया, अपने कंधे को फटकारते हुए, उसने कहा ''मैं तुम्हें दुबारा फिर एक घन्टे के समय में मिलूॅगा।''

मेरे लिए पोटाला अत्यधिक सार्वजनिक स्थान जैसा था, अत्यधिक ''भव्य (grand)'', यदि किसी ने संयोगवश किसी वरिष्ठभिक्षु या किसी कनिष्ठलामा को नाराज कर दिया उसको हमेशा सजग रहना पड़ता था; वरिष्ठलामा इन अपराधों को गहराई से नहीं लेते थे। बजाय इसके कि कोई व्यक्ति, क्या उनकी दिशा में देख रहा था या जानबूझकर उनको अनदेखा कर रहा था, उनके पास चिन्ता करने के लिए बड़ी–बड़ी चीजें थीं। जैसा कि सभी मामलों में होता है, ये केवल निम्नकोटि के मनुष्य होते हैं, जो चकचक पैदा करते हैं, उनके वरिष्ठ दयालु, विचारशील, और समझदार होते हैं।

मैं, ये सोचते हुए कि, ये खाना खाने का एक अच्छा मौका होगा, ऑगन में टहलता रहा। अपनी भविष्यवृत्ति (carrier) के इस पड़ाव पर, खाना अत्यधिक महत्वपूर्ण चीजों में से एक था क्योंकि, अपने सभी मूल्यों के साथ त्सम्पा, भूखा रहने का थोड़ा सा भी कोई विचार नहीं छोड़ता था!

ज्यों ही मैं, उस सुपरिचित गलियारे में चला, मैं अपने अनेक समकालीन लड़कों से, जो लगभग उसी समय मठ में प्रविष्ट हुए थे, जब मैं आया था, से मिला। परन्तु अब, एक बड़ा परिवर्तन हो गया था, मैं प्रशिक्षण दिए जाने या लड़ने के लिए, ऐरागैरा नौजवान, दूसरा लड़का मात्र ही नहीं थीं; बदले में, मैं उस केशरिया पोशाक को पहननेवाले, महान लामा मिंग्यार डोंडुप के विशेष संरक्षण में था। बाहर पहले से ही ये अफवाह फैल चुकी थी कि, मुझे विशेषरूप से पढ़ाया जा रहा है, कि मुझे लामाओं के क्वार्टरों में कमरा मिलनेवाला है, कि मैं ये करनेवाला हूॅ, कि मैं वह करनेवाला हूॅ, और मैं ये देखकर

आश्चर्यचकित था कि मेरी वास्तविक या काल्पनिक, खोजें, पहले से ही सुपरिचित थीं। एक लड़का, दूसरे लड़के के साथ मुँह दबाकर हँसता था कि, हवा के एक बड़े झौंके द्वारा, उसने मुझे जमीन से उठाए जाते हुए देखा है और उसने मुझे उड़ाकर स्वर्णित छत की चोटी पर पहुँचा दिया था। ''मैंने इसे अपनी ऑखों से देखा,'' उसने कहा। ''मैं वहॉ, उस खास जगह पर खड़ा हुआ था और मैंने उसे नीचे जमीन पर बैठे हुए देखा है। तब ये बड़ा धूल भरा तूफान आया और मैंने लोबसांग को ऊपर की ओर खेये जाते हुए देखा, वह ऐसा लग रहा था मानो कि छत पर वह शैतानों से लड़ रहा हो। तब–'' लड़का नाटकीयरूप से रुक गया और उसने (अपनी बातों पर) बजन डालने के लिए अपनी ऑखों को घुमाया।'' और तब–वह, मन्दिर के रक्षक लामाओं में से एक की बॉह में गिर गया। वहॉ भयमिश्रित प्रशंसा और इर्ष्या की, सभी मिलीजुली आह थी, और लड़के ने कहना जारी रखा, ''और तब लोबसांग को अंतरतम के पास ले जाया गया, जिससे उसे विशिष्टता और हमारी कक्षा को सम्मान मिला!''

मैंने अपना रास्ता, चाहनेवालों की सनसनीखेज भीड़ में होकर निकाला, छोटे बच्चों का झुण्ड और कनिष्ठ भिक्षु, जो ये आशा कर रहे थे कि मैं देवताओं की तरफ से, कुछ चौंकानेवाली, कुछ भेद खोलनेवाले प्रकार की, घोषणा करूँगा परन्तु, मैं खाने की खोज में था; उस भीड़ में से धक्का देते हुए, मैंने अपना रास्ता निकाला और गलियारे में से जाकर, सीधे एक सुपरिचित स्थान पर–रसोईघर मे पहुँचा।

''आह! और ए! तुम वापस हमारे पास आ गए हो ? ठीक है, वहॉ बैठ जाओ, लड़के! तुम वहॉ बैठ जाओ, मैं तुम्हें ठीक से खाना खिलाऊँगा। तुम्हारे चेहरे पर देखने से ऐसा लगता है कि, तुमको पोटाला में ठीक से खाना नहीं मिला है। तुम बैठो और मैं तुम्हें खाना खिलाता हूँ'' बूढ़ा रसोईया भिक्षु आया और मेरे सिर को थपथपाया और मुझे वापस धक्का दिया ताकि मैं, एक खाली जौ के बोरों के ढ़ेर के ऊपर बैठ जाऊँ। तब उसने मेरी पोशाक को ठीक से अन्दर से टटोला और मेरे कटोरे को पाने की व्यवस्था की। मेरे कटोरे को, सावधानीपूर्वक, पूरी तरह से साफ, तैयार करता हुआ, वह दूर गया, (ऐसा नहीं कि उसे इसकी आवश्यकता थी!), और समीपतम पतीले के पास गया। वह त्सम्पा और चाय को पूरे स्थान पर फैलाते हुए, मेरे पैरों को बचाते हुए, ताकि ये मेरी पोशाक पर न गिरे, शीघ्र ही, वापस लौटा। ''वहॉ, वहॉ, लड़के,'' कटोरे को मेरे हाथ में पकड़ाते हुए उसने कहा। ''खाओ इसे, इसे खाओ क्योंकि मुझे मालूम है, तुम जल्दी ही इसके लिए भेजे जाओगे– मठाध्यक्ष वह सब, जो हुआ था, सुनना चाहते हैं।'' भाग्यवश, कोई दूसरा भी, जो ध्यान चाहता था, वहॉ आया और इसलिये मुझे त्सम्पा खाने के लिए अकेला छोड़ते हुए, मुड़कर, वह मुझसे दूसरी तरफ चला गया।

उस मामले का निपटारा करने के साथ ही, मैंने उसे नरमी से धन्यवाद दिया क्योंकि, वह एक भला, वृद्ध आदमी था, जो सोचता था कि बच्चे शरारती होते हैं, परन्तु यदि उन्हें ठीक से खाना दिया जाए तो वे इतने शरारती नहीं होते। मैं महीन बालू की बड़ी टोकरी के पास गया और झाड़ू लेते हुए और बालू पर, जो मैंने फर्श के ऊपर फैला दी थी, झाड़ू लगाते हुए, सावधानी से मैंने एकबार फिर, अपने कटोरे को साफ किया। मैं मुड़ा और उसके प्रसन्न आश्चर्य के लिए, उसकी दिशा में नमन किया और मैंने बाहर की तरफ अपना रास्ता पकड़ा।

मैं गलियारे के अन्त तक गया और जबकि मैं बाहर झॉक रहा था, अपनी भुजाओं को दीवारों के विरुद्ध टिकाया। मेरे नीचे दलदल था, और उसके थोड़ा आगे, एक बहती हुई धारा थी। परन्तु मैं काश्या लिंगा (Kashya linga) के ऊपर, नाव की तरफ देख रहा था क्योंकि नाविक, आज विशेषरूप से अधिक व्यस्त दिख रहा था। वहॉ वह, कड़े परिश्रम के साथ उन्हें धकेलते हुए, अपने चप्पू पर झुका हुआ खड़ा था, और उसकी याक की खाल की नाव, लोगों और उनके सामानों से, पूरी तरह लदी हुई दिख रही थी और मुझे आश्चर्य हुआ कि ये सब, किसके संबंध में था, इतने सारे लोग झुण्ड बनाकर, हमारे पवित्र शहर में क्यों (उपस्थित) थे। तब मुझे याद आया कि रूसी लोग, हमारे देश के ऊपर काफी हद

तक, दवाब डाल रहे थे क्योंकि, अॅंग्रेजों ने भी वहॉ हलचलें करना शुरू कर दिया था, और अब रूसी लोग, ये सोचते हुए कि हम बेचारे बेवकूफ देहाती, शायद इसे कभी नहीं जान पाऐंगे, बड़ी संख्या में जासूसों को व्यापारियों के छद्मवेश में, ल्हासा में भेज रहे थे। वे भूल गए कि, या शायद कभी जानते भी नहीं थे, कि लामाओं में से अनेक, दूरानुभूतिपूर्ण और अतीन्द्रियज्ञानी थे और लगभग उतनी ही तेजी से, जितनी से वे स्वयं सोचते थे, जान जाते थे कि, वे क्या सोच रहे थे।

मैंने खड़ा रहना और देखना और विभिन्न प्रकार के सभी लोगों को देखना, और उनके विचारों को समझना, ये निश्चय करना चाहा कि क्या वे सही थे या गलत। अभ्यास के द्वारा ये आसान था, परन्तु अब दूसरों पर ताकते हुए खड़े रहने का, मुश्किल से ही समय था। मैंने जाना और अपने शिक्षक को देखना चाहा, मैं लेटना चाहता था। मेरी टॉगें मुझे परेशान कर रही थीं और मैं वास्तव में थका हुआ था। मेरे शिक्षक ने, वास्तव में, मेरे पूरी तरह ठीक हो जाने से पहले, मेरे कार्य के संबंध में जानने के लिए, वहॉ जंगली गुलाबबाड़ की तरफ जाने के लिए कहा था। वास्तव में, मुझे एक और हफ्ते के लिए, अपने कम्बलों के बीच में, फर्श पर होना चाहिए था, परन्तु चाकपोरी–यद्यपि ये अच्छा स्थान था–ये वास्तव में, छोटे बच्चों का, जो बीमार होते हों, जो घायल हों, जो ठीक होने में धीमे हों, और जो नियमित दिनचर्या को तोड़ते हों, स्वागत नहीं करता था। इसलिए ऐसा था कि मुझे पोटाला जाना पड़ा, जहॉ काफी उत्सुकुता के साथ ऐसे ध्यान के लिए, हमारे ''स्वास्थ्य के मन्दिर'' की तुलना में अधिक सुविधाऐं थीं।''

चाकपोरी में उपयुक्त विद्यार्थियों को स्वस्थ होने की कलाऐं पढ़ायी जाती थीं। हमको शरीर के सम्बन्ध में सब कुछ पढ़ाया जाता था, शरीर के विभिन्न भाग कैसे काम करते हैं, हमको सूचीबेध (accupuncture) जिसमें निश्चित स्नायुकेन्द्रों को उत्तेजित करने के लिए, शरीर में अत्यन्त पतली सुईयॉ घुसाई जाती हैं, पढ़ाया जाता था, और हमें जड़ीबूटियों के बारे में, उन्हें पहचान लेने में योग्य होने के बाद उन्हें कैसे इकट्ठा किया जाए, उन्हें भण्डार में रखने के लिए कैसे तैयार किया जाए और कैसे सुखाया जाए, पढ़ाया जाता था। चाकपोरी में हमारे पास बड़ी–बड़ी इमारतें थीं, जिनमें लामाओं की देखरेख में, भिक्षु हमेशा मरहम और जड़ीबूटियॉ तैयार करते थे। मैंने याद किया, जबकि मैंने उन्हें पहली बार देखा था।

मैंने, हिचकिचाते हुए, बचते हुए, ये नहीं जानते हुए कि मैं क्या देखूॅगा, नहीं जानते हुए कि कौन मुझे देखेगा, दरवाजे में से झॉका। मैं उत्सुक था क्योंकि यद्यपि, अभी मेरा अध्ययन, जड़ीबूटियों की दवाइयों की उस स्थिति तक पहुॅच नहीं पाया था, फिर भी, मैं गहराई से उसमें दिलचस्पी रखता था। इसलिए मैंने झॉका।

कमरा बड़ा था, इसमें ऊॅचे शहतीरों वाली छत थी, और बड़ी बीम से, जो एक तरफ से दूसरी तरफ विस्तृत थी और एक त्रिकोणात्मक ढ़ॉचे की, जिससे रस्से नीचे की तरफ बंधे थे, व्यवस्था करती थी। थोड़े समय के लिए, ये समझने के लिए योग्य न होते हुए भी कि इन रस्सों का उद्देश्य क्या है, मैंने देखा। तब जैसे ही मेरी ऑखें तेज हुईं, कुछ–कुछ धुंधियारे से अंदर के भागों में, मैंने देखा कि रस्सों के दूसरे सिरे, खाल के चमड़े के थैलों से बंधे थे, चमड़े के थैले, जो उचित प्रक्रिया द्वारा इतने कड़े बनाए गए थे, जैसे कि लकड़ी। चमड़े के हर थैले पर, उसके ऊपर एक शब्द चित्रित किया गया था, शब्द जिसका अर्थ मेरे लिए, कोई चीज नहीं था। मैंने ध्यान से देखा और किसी (दूसरे) ने मुझे नहीं देखा, जबतक कि अन्त में, एक लामा मेरी ओर मुड़ा और उसने मुझे देखा। वह काफी नम्रता से मुस्कुराया और उसने कहा, ''आओ, मेरे बच्चे, अन्दर आओ। मैं वास्तव में खुश हूॅ कि, एक इतना छोटा बच्चा, पहले से ही इतनी रुचि ले रहा है। अन्दर आओ।'' हिचकिचाते हुए, मैं उसकी तरफ चला, और उसने एक हाथ मेरे कंधे पर रखा और मेरे आश्चर्य के लिए, भिन्न–भिन्न जड़ीबूटियों की ओर इशारा करते हुए, मुझे जड़ीबूटियों के चूर्ण, जड़ीबूटियों की चाय और जड़ीबूटियों की मरहम के बीच अन्तर

बताते हुए, उसने स्थान के बारे में बताना शुरू किया। मैंने बूढ़े आदमी को पसन्द किया, वह अपनी जड़ीबूटियों के द्वारा विशिष्टरूप से मीठा हो चुका दिखाई दिया!

हमारे ठीक सामने, पत्थर की, एक खुरदरे प्रकार के पत्थर की एक लम्बी मेज थी। मैं ये नहीं कहना चाहूँगा कि ये किस प्रकार का पत्थर था, परन्तु शायद ये ग्रेनाइट (granite) था। ये समतल था और लगभग पन्द्रह फीट, गुणा छः फीट आकार का, एक बड़ा, ठोस, पत्थर था। इसके बगल से जड़ीबूटियों के ढ़ेरों को फैलाते हुए भिक्षु, बहुत व्यस्त थे, केवल यही शब्द हैं, जो मैं उनका वर्णन करने के लिए पा सका क्योंकि, वे जड़ीबूटियों के ढ़ेर, वनस्पति के भूरे पिण्ड से दिखाई दिए। वे इन जड़ीबूटियों को मेज पर फैलाते थे और तब पत्थर के, कुछ–कुछ ईंटों जैसे, चपटे टुकड़ों के द्वारा, वे जड़ीबूटियों को एक तरफ से पत्थर से दबाते हुए अंत की ओर खींचते थे। मैंने पाया कि जब वे उठाते थे जड़ीबूटियॉ तर हो जाती थीं–टुकड़े–टुकड़े हो जाती थीं। वे इसको करते रहे, करते रहे, जबतक ऐसा नहीं लगा कि एक रेशेदार लुग्दी तैयार हो गई है। जब वे इस स्थिति में पहुँचे, वे वापस खड़े हुए और दूसरे भिक्षु, चमड़े की बाल्टियॉ, और दांतेदार किनारेवाले पत्थर लिए हुए पहुँचे। सावधानी से, भिक्षुओं के एक नये समूह ने, पत्थर की बेंच को, सभी रेशेदार पदार्थ को, चमड़े की अपनी बाल्टियों में खुरचा। इसके अन्दर डाला, तब पहलेवाले भिक्षुओं ने, बेंच के ऊपर महीन बालू फैलाई और इसे रगड़ना शुरू किया और अपने पत्थरों से इसे साफ करते हुए और इसीसमय ताजे खरोंच बनाते हुए, जिसमें जड़ीबूटियॉ फंस जाऐं, ताकि उन्हें पीसा जा सके। भिक्षु चमड़े की अपनी बाल्टियों के साथ, उस रेशेदार पदार्थ को, कमरे के दूसरी तरफ, बहुत दूर ले गए, जहॉ, अब मैं देखता हूँ, भाप देते हुए पानी के, कढ़ाव थे। एक के बाद एक, उन्होंने अपनी बाल्टियों को लिया और उन कढ़ावों में, उनके माल को डाल दिया। मैं ये देखने में रुचि रखता था कि ये बुलबुले और भाप देता रहा, परन्तु जैसे ही इसमें एक नया रेशेदार पदार्थ डाला गया, तो उबलना रुक गया। बूढ़े लामा मुझे आरपार ले गए और उसके अन्दर झांका और तब उन्होंने एक छड़ी उठाई और मसाले को ये कहते हुए, हिलाकर मिलाया, ''देखो! हम इसे उबाल रहे हैं, और इसे तबतक उबलता हुआ रख रहे हैं जबतक कि पानी पूरी तरह उबल नहीं जाए और हमें एक मोटा, गाढ़ी, चासनी जैसा (syrup) सीरप न मिल जाए। मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि हम इसके साथ क्या करते हैं।

वह मुझे हॉल के दूसरे हिस्से की तरफ ले गया, और वहॉ मैंने सीरपों से भरे हुए, सभी पर उनके अन्दर भरे हुए विभिन्न सीरपों के परिचयं के साफ लेबिल चिपकाए हुए, बड़े–बड़े जार, देखे। एक विशेष जार की तरफ संकेत करते हुए, उसने उल्लेख किया, 'ये' वह है जिसे हम सर्दी जुकाम संक्रमण से पीड़ित लोगों को देते हैं। उन्हें इसको कम मात्रा में पीना पड़ता है और यद्यपि, इसका स्वाद बहुत अच्छा नहीं है फिर भी, ये जुकाम खॉसी की पीड़ा से अच्छा है। कैसे भी, ये उन्हें अच्छा करता है!'' वह अच्छे हास्य के साथ, जोर से हॅसे, और तब मुझे पड़ौसवाले कमरे में दूसरी मेज की तरफ ले गये। यहॉ मैंने पाया कि भिक्षुओं का एक समूह, पत्थर की एक बेंच पर काम कर रहा था, ये एक खोखली नांद जैसी दिखाई दी। उनके हाथ में लकड़ी के पैडल थे और एक दूसरे लामा के निर्देशन में, वे चीजों के पूरे समूह को मिला रहे थे। बूढ़ा लामा, जो इतना सुखद संचालित भ्रमण (conducted tour) करा रहा था, उसने कहा, ''यहॉ हमारे पास, कपूर के तेल (camphor oil) के साथ यूकलिप्टस का तेल (eucliptus oil) है। इसे हम अत्यधिक मंहगे आयातित जैतून के तेल (olive oil) के साथ मिलाते हैं, और तब भिक्षु, इन लकड़ी के करछों से, हर चीज को मक्खन के साथ मिलाते हैं। मक्खन, मरहम के लिए एक अच्छा महीन आधार (fine base) बनाता है। जब हमारे पास छाती में संक्रमणवाले लोग होते हैं, जब ये उनकी छाती और पीठ पर मला जाता है, वे काफी अच्छा आराम पाते हैं।'' सतर्कतापूर्वक, मैंने अपनी एक उंगुली को फैलाया और उस पदार्थ में से थोड़ी सी बूंद को नांद की किनारे के ऊपर, स्पर्श किया एवं और अधिक, सतर्कता के साथ मैंने इसे सूंघा और मैंने महसूस किया कि मेरी ऑखें

आरपार (cross) हो रही थीं। इसकी गन्ध, पूरी तरह मुझे अन्दर से जलाती हुई सी लगी, ऐसा लगा मानो मेरे फैंफड़े, अन्दर से जलते जा रहे हैं, और मैं खांसने के लिए डरा, यद्यपि मैं बुरी तरह से ऐसा करना चाहता था, उस सम्बंध में यदि मैं विस्फोटित हो जाता। बूढ़ा लामा हॅसा और हॅसते हुए उसने कहा, ''अब उसे अपनी नाक पर रखो और वह नकुओं से तुम्हारी खाल उधेड़ देगा। ये बहुत ही सान्द्रित किया हुआ पदार्थ है, इसको अभी अधिक मक्खन के साथ हल्का किया जाना है।''

भिक्षुओं की तरफ थोड़ी दूरी पर, एक निश्चित सूखे पौधे की पत्तियॉ तोड़ी जा रही थीं और सावधानी से फटक कर, एक कपड़े में होकर, जो एक बहुत महीन चलनी जैसा था, छानी जा रहीं थीं। ''ये भिक्षु विशेष चायों को तैयार कर रहे हैं। परन्तु चाय से हमारा आशय है, जड़ीबूटियों का एक संम्मिश्रण (admixture), जिसे पिया जा सकता है। ये विशेष चाय,'' वह मुड़ा और उसने इशारा किया, ''एक ऐंठन–मरोड़रोधी (antispasmodic) चाय है और ये स्नायुओं में फड़कन होने पर लाभ देती है। जब तुम अपनी बारी पर यहॉ आओगे, तब तुम इसे अत्यधिक दिलचस्प पाओगे।'' ठीक उसी समय कोई उससे मिलने आया, परन्तु जाने से पहले उसने कहा, ''आसपास देखो, मेरे बच्चे, आसपास देखो। मैं ये जानकर वास्तव में प्रसन्न हूॅ कि कोई एक है, जो हमारी कलाओं में इतनी दिलचस्पी रखता है।'' इसके साथ ही वह मुड़ा और शीघ्र ही दूसरे कमरे की तरफ चला गया।

कभी इसको और कभी उसको सूंघते हुए, मैं आसपास टहलता रहा। मैंने एक विशेष चूर्ण लिया और उसे इतना अधिक सूंघा कि वह मेरे नकुओं में अन्दर चला गया और गले के नीचे तक जा पहुॅचा, और जबतक कि दूसरा लामा नहीं आ गया, और उसने मुझे चाय नहीं पिलायी, मुझे खांसी, खांसी, खांसी के लिए विवश कर दिया, और ये भी काफी बेकार पदार्थ था।

मैं उस घटना से उबरा और दूर दीवार की तरफ गया, जहॉ एक बड़ा ढ़ोल रखा हुआ था। मैंने उसे देखा और मैं चकित हुआ क्योंकि, ये पूरी तरह से छाल से भरा हुआ लगा, एक उत्सुक दिखनेवाली छाल, एक ऐसी छाल, जैसी मैंने इससे पहले कभी नहीं देखी थी। मैंने एक टुकड़े को छुआ और ये मेरी उंगलियों को भुरभुरी लगी। कुछ आश्चर्य में, मैंने अपना सिर बगल से रखा क्योंकि, मैं समझ नहीं सका कि ऐसी गन्दी छाल के पुराने टुकड़ों का क्या उपयोग हो सकता है, किसी भी चीज की तुलना में मोटी और खराब, शायद ही मैंने कभी अपने किसी उद्यान में देखी हो। एक लामा ने मेरी तरफ देखा, पास आया और उसने कहा, ''इसलिए, तुम्हें इसका ख्याल नहीं है कि ये क्या है, ए ?'' ''नहीं, आदरणीय चिकित्सीय लामा,'' मैंने जवाब दिया, ''ये मुझे एकदम बेकार लगती है।'' वह उस पर हॅसा, वह वास्तव में बहुत आश्चर्य में था जब उसने कहा, ''नौजवान, वह एक छाल है जो आज के दिन, विश्वभर में, अधिकांश सामान्य बीमारी में उपयोग में आती है एक छाल जो आराम पहुॅचाती है और जिसने अनेकों जीवन बचाए हैं, क्या तुम अनुमान कर सकते हो ये क्या है ? ये अधिकांश सामान्य बीमारी है ?''

यहॉ उसने मुझे, वास्तव में, पहेली में उलझा दिया, और मैंने सोचा, और सोचा, और किसी भी प्रकार से किसी उचित समाधान पर नहीं आ सका, और उसे ऐसा बताया। वह मुस्कुराया, जब उसने कहा, ''कब्ज, नौजवान आदमी, कब्ज। इस विश्व का सबसे खराब अभिशाप। परन्तु ये पवित्र छाल है, जिसे हम भारत से आयात करके, व्यापारियों से मंगाते हैं। ये पवित्र छाल कहलाती है क्योंकि ये, एक बहुत, बहुत दूर के देश, ब्राजील से आती है जहॉ वे इसे, कासकारा सागराडा (cascara sargada)[7] कहते हैं, अर्थात् पवित्र छाल। हम फिर, चाय के रूप में इसका उपयोग करते हैं या अपवाद के मामलों में, हम इसे उबालते है, उबालते हैं और उबालते हैं, जबतक कि हमें एक आसवन (distilate) न मिल जाए, जिसे हम खड़िया और चीनी के कुछ निश्चित समूह के साथ मिलाते हैं और तब हम उसे दबाकर

7अनुवादक की टिप्पिणी :कासकारा की सूखी छाल का जुलाब के रूप में उपयोग में लाया जाता है। यद्यपि इसका स्वाद कड़वा होता है, इसकी सूखी छाल को चाय के रूप में भी पिया जा सकता है। कासकारा की ताजी छाल का उपयोग नहीं किया जाता है क्योंकि यह खूनी दस्त और उल्टियॉ पैदा करती है। कुछ लोगों का कहना है कि छाल कम से कम एक वर्ष पुरानी होने के साथ–साथ विशेष प्रक्रिया से गुजारी हुई होनी चाहिये। इसमें ऐंथ्रोक्विनान (enthroquinones) नामक यौगिक पाये जाते हैं।

गोली के रूप में बनाते हैं। ये उन लोगों के लिए हैं, जो चाय के रूप में इसका कड़वा–कसैला स्वाद नहीं ले सकते।'' वह, स्पष्टरूप से, मेरी अभिरुचि से प्रसन्न होता हुआ, मेरी तरफ काफी कृपा के साथ मुस्कुराया, और ये वास्तव में दिलचस्प था।

वृद्ध लामा, जिसको मैं पहले मिला था, जल्दी करता हुआ, मुझे पूछता हुआ कि मेरा क्या चल रहा है, वापस आया और जब उसने देखा कि मैं अभी भी, कासकारा सागराड़ा के टुकड़े को हाथ में पकड़े हुए हूँ, तब वह मुस्कुराया। ''इसे चबाओ, मेरे बच्चे, इसे चबाओ। ये तुम्हारे लिए काफी अच्छा करेगी, ये तुम्हारी किसी प्रकार की खांसी को, जो तुम्हें है क्योंकि, तुम इसको चबाने के बाद खांसने से डरते हो!'' वह, एक छोटी अप्सरा की तरह से खुशी से हँसा यद्यपि, वह एक उच्चचिकित्सीय लामा था, वह अभी भी, पद में छोटा था।

''यहाँ, यहाँ'' उसने कहा, ''इसको देखो, ये हमारे खुद के देश से है। फिसलन भरा ऐल्म[8], हम इसे फिसलन भरे ऐल्म की छाल कहते हैं। यह उन लोगों के लिए, जिनको गैस सम्बंधी परेशानियाँ हैं, बहुत उपयोगी है। हम इसे मिलाते हैं, इसकी चटनी बनाते हैं, और अभागा रोगी इस पदार्थ को लेता है, और ये उसको दुःखों से छुटकारा दिलाती है। परन्तु तुम प्रतीक्षा करो, मेरे बच्चे, तुम प्रतीक्षा करो। जब तुम थोड़ा बाद में यहाँ आओगे, मुझे विश्वास है कि हम खोज लेंगे कि तुम्हारे पास, तुम्हारे सामने महान भविष्य है।''

मैंने उसे और दूसरे लामा को भी, उसकी दयालुता के लिए धन्यवाद दिया और मैंने अनेकों निरीक्षणों (visits) में से पहले, के बाद (वहाँ से) छोड़ दिया।

तेज कदम–तेज कदम; मेरे लिए, मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, जो अपने खुद के क्वार्टरों में, और जो अब, लगभग मेरा होगा, क्योंकि मैं उनके बगलवाले कमरे में जानेवाला था, मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे, का आदेश लेकर, एक लड़का आ रहा था। इसलिए नन्हा सा दिखने के प्रयास में, मैंने अपनी पोशाक को, अपने आसपास कसकर लपेटा और तेजी से, जितनी तेजी से, मैं चल सकता था, चला। मैं ये देखने के लिए कि मुझे किसप्रकार का स्थान मिलनेवाला है, तेजी से चला।

8अनुवादक की टिप्पिणी : एक छायादार, कड़ी मजबूत लकड़ी वाला, बड़ा पेड़, जिसका वैज्ञानिक नाम उल्माकेसी (Uimsceae) है। ये उत्तरी गोलार्ध के उत्तरी अमरीका, यूरेशिया, इंडोनेशिया में पाया जाता है। इसकी लगभग 40–50 उपप्रजातियाँ पायी जाती हैं। प्राप्रतिक सौंदर्य के दृश्यों के रूप में चित्रांकन में उपयोग किया जाता है। इसकी लकड़ी अपने मजबूत रेशों के कारण मूल्यवान होती है।

अध्याय बारह

मेरा कमरा आनन्ददायक था, छोटा, परन्तु फिर भी, मेरी आवश्यकताओं के अनुसार काफी बड़ा। मैं यह देखकर कृतज्ञ हूँ कि मेरे पास दो नीची मेजें हैं और इनमें से एक के ऊपर, काफी संख्या में पत्रिकाऐं और समाचारपत्र हैं। दूसरी मेज के ऊपर, मेरे लिए, कुछ बहुत अच्छी, सुन्दर चीजें–वे मीठी चीजें, जिनका मैं हृदय से अनुमोदन करता हूँ, रखी हुई थीं। जैसे ही मैं घुसा, एक सेवक भिक्षु मुझ पर मुस्कुराया और उसने कहा, ''निश्चितरूप से, सौभाग्य के देवता आपके ऊपर मुस्करा रहे हैं, लोबसांग। आप उच्चलामा मिंग्यार डोंडुप के ठीक बगल में दांयी ओर हैं।'' मैं जानता था कि वह जो चीजें बता रहा है, उन्हें मैं पहले से जानता था, परन्तु तब उसने कहा, ''यहॉ ये बीच का दरवाजा है; आपको याद रखना चाहिए कि इस दरवाजे में बिना अपने शिक्षक की आज्ञा के कभी भी प्रवेश नहीं करना है, क्योंकि वह गहरे ध्यान में हो सकते हैं। अब आप, थोड़े समय के लिए, अपने शिक्षक को नहीं देख सकते, इसलिए मेरा सुझाव है कि आप खाने के लिए नीचे जाऐं।'' इसके साथ ही वह मुड़ा और मेरे कमरे से निकल गया। मेरा कमरा! ऐसा सुनना अच्छा लगता था। दूसरे तमाम लड़कों के साथ, एक सार्वजनिक स्थान में सोना पड़ने के बाद, मेरा अपना खुद का कमरा होना, ये एक आश्चर्यजनक चीज थी।

मैं मेज के आरपार चला, झुका और सभी अच्छी चीजों की, जो उस पर रखी गई थीं, सावधानी से जॉच की। अनिश्चितता के उन्माद के बाद, मैंने तय किया कि मैं क्या रखूँगा, गुलाबी जैसी कोई, चीज, जिसमें शिखा पर, धूल झाड़ने के लिए, कुछ सफेद लगा हुआ हो। मैं अपने सीधे हाथ से उसे उठाया और तब एक अच्छे एतियात के तौर पर, मैंने दूसरे को अपने बांये हाथ से उठाया, तब मैं ये देखने के लिए कि, मैं इस इमारत में कहॉ पर था, खिड़की पर गया।

मैंने अपनी भुजाओं को, खाली खिड़की के फ्रेम के पत्थर पर टिकाया और एक बड़ा दुर्भाग्यशाली शब्द बड़बड़ाते हुए, क्योंकि इस प्रक्रिया में मैंने अपनी भारतीय चकतियों में से एक गिरा दी थी, अपना सिर बाहर की ओर घुसा दिया। जल्दी से मैंने दूसरी को निगल लिया, शायद ये भी उसी भाग्य को साझा करे, तब मैं अपने दृश्य की जॉच की तरफ लौटा।

यहॉ, मैं भवन के एकदम दक्षिण–पूर्वी भाग में था, मुझे उपभवन (annex) के कोने के दांयी तरफ का अंतिम कमरा मिला था। मैं नगीना पार्क–नोरबूलिंगा को देख सकता था। इस समय, वहॉ काफी संख्या में बाहर झांकते हुए लामा थे, वे काफी संख्या में संकेतों को देते हुए, आपस में वादविवाद करते हुए लगे। थोड़े से फालतू क्षणों के लिए, मैंने उन्हें देखा; वे बहुत आश्चर्यदायक थे, एक जमीन की तरफ इशारा कर रहा था और दूसरा उसको मना कर रहा था, तब उन्होंने अपने स्थान बदल दिए। ओह!– हॉ, मैं जानता था वे क्या कर रहे थे, वे एक सार्वजनिक वादविवाद के लिए पूर्व तैयारी (rehearsal) कर रहे थे क्योंकि, उन लामाओं के सार्वजनिक वादविवाद में दलाईलामा, स्वयं भाग लेने जा रहे थे। इससे संतुष्ट होकर कि मैंने किसी चीज, जिसके बारे में मुझे जानना चाहिये था, को चूका नहीं, मैं दूसरी चीजों की तरफ मुड़ा।

थोड़े से तीर्थयात्री, लिंगखोर सड़क के करीब, मक्खी मार रहे थे, इधर–उधर मटकते हुए, मानो कि वे हर झाड़ी के नीचे, या हर पत्थर के नीचे, सोने को पाने की आशा करते हों। ये एक पचमेल एकत्रीकरण था, उनमें से कुछ वास्तविकरूप से गंभीर, पुरातनपंथी तीर्थयात्री थे,; दूसरे, जैसा मैं बिना किसी परेशानी के कह सकता था, जासूस थे, रूस के जासूस, जो चीनियों की और हमारी, जासूसी कर रहे थे, और चीनी जासूस, जो रूसियों की और हमारी जासूसी कर रहे थे। मैंने सोचा कि जहॉतक वे एक–दूसरे के ऊपर जासूसी करते हैं, करें, उन्हें हमें अकेला छोड़ देना चाहिए! मेरी खिड़की के ठीक नीचे एक दलदल था, जिसमें होकर एक छोटी नदी गुजर रही थी और प्रसन्नता की नदी में मिल रही थी। नदी के ऊपर एक पुल था, जो लिंगखोर सड़क तक जाता था। मैंने कुछ मनोरंजन के साथ देखा क्योंकि वहॉ नगर के लड़कों का छोटा एक समूह था–काले सिर वाला, जैसाकि उन्हें हम कहते थे,

क्योंकि उनके सिर, हमारे भिक्षुओं की भॉति मुड़े हुए नहीं होते थे। लकड़ी के छोटे टुकड़ों को एक तरफ फैंकते हुए और उन्हें दूसरी तरफ दुबारा प्रकट होते हुए देखने के लिए आरपार दौड़ते हुए, वे इस पुल के ऊपर बेवकूफी कर रहे थे। एक लड़का, जिसका संतुलन ठीक नहीं था, अपने साथियों में से एक की उचित सहायता से वह बहुत अधिक झुका, उसका सिर पहले पानी में गया। तथापि, यह बहुत गम्भीर नहीं था, उसने अपने आपको, विशेषरूप से चिपकनेवाले दलदल में से किनारे की तरफ आने में व्यवस्थित कर लिया, जो मैं पहले ही, अपनी कीमत पर, इस नदी में भुगत चुका था। तब सभी लड़के किनारे की ओर दौड़े और उसको साफ करने में मदद की क्योंकि, वे जानते थे कि उनमें से हर एक के माता–पिता क्या कहेंगे यदि, वे वापस ल्हासा शहर में गए और लड़के को इस भयानक स्थिति में छोड़ गए।

दूर, पूर्व की तरफ, नाविक, इस आशा में कि, नदी के आरपार नाव को चलाते हुए, उसमें से अधिकतम उत्पादन करते हुए, वह अपने यात्रियों से, थोड़ा अधिक धन (कमा कर) ले जाएगा, अभी भी, अपना काम कर रहा था। ये वह चीज थी, जिसने वास्तव में, मुझमें रुचि जगा दी, क्योंकि मैं उस समय तक, पानी के ऊपर नाव में कभी नहीं रहा था, और उस समय ये मेरी अभिलाषा की, वास्तव में, चरम सीमा थी।

जलवाहन (ferry) के रास्ते के साथ, थोड़ा दूर आगे, सड़क के सहारे, एक और दूसरा छोटा पार्क था, काश्या लिंगा, जो चीनी मिशन की तरफ जाता था। मैं वास्तव में, चीनी मिशन की दीवारों को अपने कमरे में से, और मैं नीचे वाग में भी देख सकता था, यद्यपि ये पूरी तरह से पेड़ों से ढ़का हुआ था। हम बच्चे हमेशा सोचते थे कि चीनी मिशन में भयानकरूप से उद्दण्डता बढ़ती जा रही थी, और–कौन जानता है ? हो सकता है हम सही हों!

पूर्व में थोड़ी दूर, दलदली जमीन में स्थित, एक बहुत सुखद परन्तु कुछ–कुछ नमीवाला उद्यान, खाती लिंगा (Khati linga) था और थोड़ा दूर कछुआ पुल था, जिसे मैं देख सकता था, और उसकी नजर मुझे प्रसन्न कर देती थी। मैंने, लोगों को ढ़के हुए अहाते में प्रवेश करते हुए, बाद में दूसरे सिरे पर निकलते हुए, देखकर, पूरी तरह से आनन्द उठाया।

मैं कछुआ पुल के आगे, ल्हासा के शहर को, परिषद हॉल और वास्तव में, जो कांग (Jo kang) की सुनहरी छतों को, ल्हासा के प्रार्थनाघर को, जो शायद हमारे देश में सबसे पुरानी इमारत थी, देख सकता था। उसके काफी आगे, पहाड़ियों की श्रंखलाऐं और साधुओं के छितराए हुए आश्रम, और विभिन्न लामामठों के बड़े–बड़े समूह थे। हॉ, मैं अपने कमरे से, पूरी तरह से संतुष्ट था और तब मुझे ऐसा लगा कि मैं पोटाला को नहीं देख सकता था। साथ ही साथ, मेरे दिमाग में विचार कौंधा कि, पोटाला के उच्च स्तरीय अधिकारी भी, मुझे नहीं देख सकते थे, इसलिए यदि मैं असावधान तीर्थयात्रियों के ऊपर पत्थर या त्सम्पा के टुकड़ों को फैंकूॅ तो मुझे कोई देख नहीं सकेगा और तीर्थयात्री इसे चिड़ियों का कारनामा समझेंगे!

तिब्बत में, हमारे यहॉ पलंग नहीं होते, हम फर्श पर सोते थे। अधिकांश बार, हमारे पास फर्श के ऊपर गद्दियॉ या कोई भी दूसरी चीज नहीं होती थीं। हम अपने आपको कम्बलों में लपेट लेते थे और शायद, अपनी पोशाकों को तकिये के रूप में उपयोग में लाते हुए, लेट जाते थे। परन्तु ये समय थक जाने का नहीं था, बदले में, अपनी पीठ पर मैं खिड़की के पास बैठा ताकि, प्रकाश मेरे कन्धों पर उमड़ पड़े, और मैंने एक पत्रिका को उठा लिया। शीर्षक का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था क्योंकि, ये अंग्रजी, फ्रांसीसी या जर्मन में भी में हो सकता था। मैं इनमें से किसी को भी नहीं पढ़ सकता था परन्तु जैसे ही मैं, इस विशेष पत्रिका की ओर मुड़ा तो ये मुझे हिन्दुस्तानी दिखाई दी, क्योंकि, उसमें आवरण के ऊपर, एक प्रकार का नक्शा था और जिसे मैं दुनियॉ की कुछ शक्लों से, उनके नामों से, पहचान सका।

मैंने पन्ने पलटे, शब्दों का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था, मैंने अपना ध्यान पूरी तरह से चित्रों के

ऊपर लगाया। जैसे ही, उसके कलेवर को महसूस करते हुए, ये महसूस करते हुए कि, मेरे शुभ के लिए बहुत कुछ काफी बदल चुका है, मैं वहॉ बैठा। मैं चित्रों को देखते हुए बहुत प्रसन्न था क्योंकि, मेरे विचार, इससे काफी आगे के क्षेत्र में चल रहे थे। मैंने अलसाए हुए ढ़ंग से, पेजों को पलटा और तब रुका और हॅसा और अपने आप हॅसा; यहॉ मध्य के दो पेजों के बीच में, अपने सिरों पर खड़े हुए, अपने आपको बांधते हुए और उस प्रकार की दूसरी तमाम चीजें करते हुए, आदमियों के चित्रों का संग्रह था। अब मैं जानता था कि मैं क्या देख रहा था। योग के कुछ अभ्यास, जो उस समय भारत में बहुत अधिक प्रचलन में थे और मैं उनमें से कुछ के प्रभावों के ऊपर जोर से हॅसा। और तब, जैसे ही, मैंने ऊपर की तरफ, अपने शिक्षक को, लामा मिंग्यार डोंडुप को, आनेजाने वाले, बीच के खुले दरवाजे में से होकर, अपने ऊपर मुस्कराते हुए देखा, मैं अचानक रुक गया।

जबतक मैं, अपने पैरों पर जल्दी–जल्दी खड़ा हो सकूॅ, उन्होंने मुझे हाथ हिलाकर, ये कहते हुए अभिवादन किया, ''नहीं, हमें यहॉ कोई औपचारिकता नहीं करनी है, लोबसांग। औपचारिकता, औपचारिक अवसरों के लिए ठीक होती है, परन्तु ये कमरा तुम्हारा घर है, जैसे कि मेरा कमरा''– उन्होंने मुझे अपने खुले दरवाजे में होकर इशारा किया–''ये मेरा घर है। परन्तु तुमको कौन सी बात इतना हॅसा रही थी ? मैंने अपनी बढ़ती हुई प्रसन्नता को दबा दिया और योग के चित्रों की ओर इशारा किया। मेरे शिक्षक कमरे में आए और मेरे साथ फर्श पर बैठ गए।

तुमको, इन लोगों के विश्वासों के ऊपर हॅसना नहीं चाहिए, तुमको जानना चाहिए लोबसांग, क्योंकि, तुम दूसरे लोगों को, अपने विश्वासों के ऊपर हॅसते हुए देखना पसन्द नहीं करोगे। ''ये'' उन्होंने चित्रों की ओर इशारा किया–''योग का अभ्यास कर रहे हैं। मैं योग नहीं जानता, और न ही उच्च लामाओं में से कोई भी, इसको करता है, केवल वे ही, जो अमूर्तभौतिकी (metaphysical) के मामलों में जाने की क्षमता नहीं रखते, योग करते हैं।'' ''स्वामी!'' मैंने कुछ उत्तेजना में कहा। ''क्या आप मुझे योग के बारे में कुछ बताऐंगे, लोग उसे कैसे करते हैं, ये क्या है ? मैं इन सभी विचारों के ऊपर, बुरी तरह समस्या में हूॅ।'' मेरे शिक्षक ने कुछ क्षणों के लिए, अपनी उॅगलियों की तरफ देखा और तब मुझे ये कहते हुए उत्तर दिया, ''ठीक है, हॉ, तुम्हें इन बातों के बारे में पढ़ना पड़ेगा। अब हम इनके बारे में बात करें। मैं तुम्हें योग के बारे में भी कुछ बताऊॅगा।''

मैं बैठा और जबतक मेरे शिक्षक ने बातें कीं, सुनता रहा। वह वहॉ हर जगह रहे थे और हर चीज को देखा था, और हर काम को किया था, और वह मुझे, स्वयं को, इतना अधिक आदर्श नहीं दिखाना चाहते थे। जब उन्होंने मुझसे बातें कीं, मैंने एक सामान्य छोटे बच्चे की तुलना में, अधिक सावधानी के साथ उनको सुना।

''मैं योग में कोई रुचि नहीं रखता,'' उन्होंने कहा, ''क्योंकि योग, शरीर को अनुशासन सिखाने का एक माध्यम मात्र है। यदि एक व्यक्ति का शरीर पहले से ही अनुशासन में है, तब मोटेतौर से योग, समय को व्यर्थ गॅवाना हो जाता है। यहॉ, हमारे देश में, छोटे वर्गों को छोड़कर, कोई भी, कभी भी, योग का अभ्यास नहीं करता। भारतीयों में योग का चलन बहुत ज्यादा है, और मुझे खेद है, कि ये सीमा से अधिक है क्योंकि, ये वास्तविक सत्यों से दूर ले जा रहा है। ये माना जाता है कि कोई भी (व्यक्ति), जिसके शरीर के ऊपर, उसका स्वयं का नियंत्रण हो, अमूर्तभौतिकी के विभिन्न अभ्यासों को कर सकता है। किसी को अपने श्वसन के ऊपर, अपनी मांसपेशियों के ऊपर नियंत्रण की योग्यता होनी चाहिए, परन्तु''–वह मेरी ओर देखकर मुस्कराए–''मैं योग के खिलाफ हूॅ क्योंकि ये, क्रूर साधन के द्वारा उसे करना, जो कि आध्यात्मिक साधनों से प्राप्त किया जाना चाहिए, सिखाता है।

जब वह बात कर रहे थे, मैं चित्रों को देख रहा था, और ये टिप्पणी करने योग्य लगा कि लोगों को स्वयं के बंधन में बंधना, और ये सोचना कि ये आध्यात्मिक होना है, सीखना चाहिए। परन्तु मेरे शिक्षक ने कहना जारी रखा, ''निचले तबके के लोगों में से अनेक भारतीय, एक प्रकार की हरकत कर

सकते हैं। वे सम्मोहन और दूसरी तमाम चीजों को, जिसके बारे में उन्होंने स्वयं विश्वास बनाया हैं कि वास्तव में, ये आध्यात्मिक विचार हैं, करने में सक्षम हैं; बदले में, ये एक छल है, और इससे ज्यादा कुछ नहीं। मैंने कभी किसी चीज के संबंध में नहीं सोचा है, किसी को, अपने शरीर को इस तरह से गॉठ बांधने (आसन करने) में योग्य होने के आधार पर, स्वर्ग के क्षेत्रों में जाते हुए नहीं सुना है।'' एक हॅसी के साथ उन्होंने कहा।

''परन्तु लोग इन अनूठी बातों को क्यों करते हैं?'' मैंने पूछा, ''यहॉ कुछ निश्चित चीजें, कुछ निश्चित भौतिक भव्यताऐं हैं, जो योग के द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं, और कोई सदेह नहीं है कि यदि कोई योग का अभ्यास करता है तो शायद, वह कुछ मांसपेशियों का विकास कर सकता है, परन्तु वह केवल उसी दिशा में मनन नहीं करता, ये आध्यात्मिकता का विकास करता है। भारतीयों में से अनेक दिखावा करते है। भारतीयों में से अनेक प्रदर्शनी लगाते हैं, और ऐसे लोग फकीर कहलाते हैं। वे योग प्रदर्शनी लगाते हुए, और शायद जैसे तुम इसे कहोगे, अपने आपकी गॉठ बांधने (आसन करने) की कोशिश करते हुए, या किसी की बॉह को लम्बे समय तक सिर से ऊपर उठाते हुए, या दूसरे उल्लेखनीय कामों को करते हुए, गॉव–गॉव और शहर–शहर की यात्रा करते हैं। वे एक पवित्र मुद्रा धारण करते हैं, मानो वे सबसे सर्वाधिक आश्चर्यजनक चीजों को कर रहे हों, और चूॅकि वहॉ शोर मचाने वालों का, जो प्रचार का आनन्द लेते हैं, अल्पमत है,, लोग इस निष्कर्ष पर पहुॅचे चुके हैं कि योग, महान सत्य तक पहुॅचने का एक आसान तरीका है। ये पूरी तरह गलत है, योग किसी को केवल शरीर को नियंत्रित करने या विकसित करने या अनुशासित करने में सहायक हो सकता है और ये किसी को आध्यात्मिकता प्राप्त करने में मदद नहीं करता।''

वे हॅसे और उन्होंने कहा, ''तुम इसपर मुश्किल से ही विश्वास करोगे, परन्तु जब मैं बहुत जवान था, मैंने योग को स्वयं प्रयास करके देखा, और पाया कि व्यायामों के कुछ बचकाने अभ्यासों को करने की कोशिश में, वह मेरा इतना अधिक समय बर्बाद कर रहा था कि मेरे पास आध्यात्मिक प्रगति में लगाने के लिए, पर्याप्त समय बचा ही नहीं था। इसलिए, मैंने एक विद्वान की सलाह पर योग को छोड़ दिया और गम्भीर कार्य की तरफ आ गया।'' उन्होंने मुझे देखा और अपनी भुजा ल्हासा की दिशा में फैलाई, उन्होंने उसे पोटाला की दिशा को शामिल करते हुए, ये कहते हुए गोल–गोल झुलाया, ''हमारे पूरे देश में, तुम उच्चश्रेणी के किसी भी लामा को योग करते हुए नहीं पाओगे। वे वास्तविक चीजों के ऊपर जोर देते हैं, और'' –उन्होंने अपनी भोंहें चढ़ाईं और मेरी ओर घूरकर देखा, जब उन्होंने कहा– ''तुम हमेशा पाओगे कि योगी लोग, ये कहते हुए कि वे कितने आश्चर्यजनक हैं, वे कितने महत्वपूर्ण हैं, और उनके पास कैसे निर्वाण और आध्यात्मिकता की कुंजियॉ है, काफी हद तक सार्वजनिक हलचल करते हैं। फिर भी, अमूर्तभौतिकी का सही अनुशीलनकर्ता, उसके बारे में बात नहीं करता, जो वह वास्तव में, कर सकता है। दुर्भाग्यवश, योग में कोलाहलभरी एक अल्पसंख्यकता (minority) है, जो जनता की राय को हिलाती–डुलाती दिखती है। लोबसांग, तुम्हारे लिए मेरी सलाह है कि योग की चिन्ता कभी मत करो, कभी मत करो क्योंकि, तुम्हारे लिए ये काफी बेकार है। तुम कुछ निश्चित शक्तियों, अतीन्द्रिय ज्ञान, दूरानुभूति, आदि, आदि, के साथ पैदा हुए हो, और तुम्हें किसी भी प्रकार से योग में छटपटाने की, बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। ये नुकसानदेह भी हो सकता है।''

जब वे बात कर रहे थे, मैं बिना अच्छी तरह सोचे हुए, पन्नों को पलट रहा था, और जब मैंने नीचे देखा, मैंने ऑख गढ़ाकर देखा क्योंकि मैंने एक आदमी, जोकि, पश्चिमी–आदमी दिखाई दिया, को एक विकृत प्रभाव को प्रदर्शित करते हुए देखा मानोकि वह किसी व्यायाम को करने का प्रयत्न कर रहा हो। मैंने इसे इशारे से, अपने शिक्षक को दिखाया, जिन्होंने उसे देखा और कहा, ''हॉ, ए, ये योग का एक शिकार है। एक पश्चिमी आदमी, जिसने व्यायाम का अभ्यास किया और इस प्रक्रिया में अपनी एक हड्डी को विस्थापित कर लिया। पश्चिमी लोगों का योग का प्रयास करना, ये बहुत, बहुत,

अविद्वतापूर्ण है, क्योंकि उनकी मांसपेशियॉ और हड्डियॉ उतनी अधिक लचीली नहीं होती हैं, किसी को योग, तभी करना चाहिए (यदि कोई वास्तव में ऐसा चाहता है!) जब किसी को एकदम बचपन से ही, शुरू से प्रशिक्षित किया जाए। मध्य–आयु के लोगों का इन्हें करना–ठीक है, ये मूर्खतापूर्ण और निश्चित ही, धन्यवादरहित होगा। यद्यपि, ये कहना हास्यास्पद है, कि योग का अभ्यास बीमारियॉ पैदा करता है या नहीं करता। जो कुछ ये करता है, वह है, कुछ मांसपेशियों का उपयोग करना, और कई बार एक व्यक्ति की हड्डियॉ खिसक जाती हैं या मांसपेशियॉ खिंच जाती हैं, परन्तु ये उस व्यक्ति का निजी दोष है, उन्हें ऐसी चीजों में दखल नहीं देना चाहिए।'' जैसे ही उन्होंने अखबार की तह की, वे हॅसे और उन्होंने कहा। ''एकमात्र योगी, जिससे मैं मिला था, एक वास्तविक सनकी था, उन्होंने सोचा था कि वे सदैव से ही, सबसे विद्वान लोग रहे थे, उन्होंने सोचा कि वे हर चीज जानते थे और उन्होंने सोचा कि योग का अभ्यास, इस संसार से मोक्ष पाने का एक तरीका था। बदले में, ये मात्र एक व्यायाम है, ठीक वैसे ही, जैसे तुम, एक पेड़ पर चढ़कर या वैसाखियों के ऊपर चलकर, करते हो और जब तुम दौड़ते हो ताकि एक पतंग को उछाला जा सके, करते हो। योग ? मात्र एक भौतिक व्यायाम है, इससे अधिक नहीं, कुछ भी आध्यात्मिक अवस्था नहीं। संभवतः ये किसी को अपनी भौतिक अवस्था को सुधारने के लिए मदद कर सके, ताकि कोई योग के संबंध में सोचना भूल जाए और उन चीजों की ओर ध्यान दे, जिनका प्रभाव पड़ता है, वे चीजें, जो आत्मा की हैं। कुल मिलाकर, कुछ वर्षों में हर एक, शरीर को छोड़ देता है, और तब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या कोई शरीर कठोर मांसपेशियों और मजबूत हड्डियों से से भरा हुआ था, तब केवल चीज जो मतलब रखती है, वह होती है आत्मा की स्थिति।''

वह विषय पर लौटते हुए बोले, ''ओह, और मुझे तुम्हें ये चेतावनी देनी चाहिए : योग के तमाम अभ्यासकर्ता, ये भूल जाते हैं कि ये केवल उनके भौतिक प्रशिक्षण का चलन है। बदले में, उन्होंने हमारे गूढ़विज्ञान के कुछ स्वस्थ करनेवाले अभ्यास ले लिए हैं और कहते हैं कि ये स्वस्थ अभ्यास, योग के सहायक अनुबंध हैं। यह पूरी तरह झूठा है, स्वस्थ करने वाली कलाओं में से कोई भी, किसी व्यक्ति के द्वारा, जो योग से पूरी तरह अनभिज्ञ हो, की जा सकती हैं, और अक्सर बहुत अच्छे तरीके से की जाती हैं। इसलिए''–उन्होंने कठोरता से मेरी ओर इशारा किया–''तुम कभी योग के प्रचार के शिकार क्यों नहीं हुए, वास्तव में, ये तुमको तुम्हारे पथ से दूर ले जा सकता है।''

वह मुड़े और अपने कमरे में गए, फिर वे ये कहते हुए वापस मेरी ओर मुड़े, ''ओह! मेरे पास यहॉ कुछ चार्ट हैं, जिन्हें मैं तुम्हारी दीवार के ऊपर लगाना चाहता हूॅ। अच्छा है, तुम आओ और उन्हें ले लो।'' तब वह मेरे पास आए और मुझे ऊॅचा उठाया ताकि मुझे, उनको प्राप्त करने में खुद संघर्ष नहीं करना पड़े। मैं उनके कमरे में उनके पीछे चला और वहॉ एक मेज के ऊपर, तीन कागज लपेटे हुए रखे थे। उन्होनें ये कहते हुए एक को उठाया, ''ये बहुत पुराना, एक चीनी चित्र है, जो सैंकड़ों साल पहले, मुलम्मा चढ़ी लकड़ी के, ऊपर बना था। ये आजकल पेकिंग के शहर में है, परन्तु इस प्रदर्शन में, मैं चाहता हूॅ कि तुम इसका सावधानी से अध्ययन करो, कि किसप्रकार शरीर के विभिन्न भाग, भिक्षुओं द्वारा उनके विभिन्न कार्यों को करते हुए, नकल किए गए हैं।'' वे रुके और उन्होंने एक विशेष चीज की ओर इशारा किया। ''यहॉ,'' उन्होंने कहा, भिक्षु खाने और तरल को मिलाने में व्यस्त है, ये पेट है। इससे पहले कि ये दूसरे भिक्षुओं तक पहुॅचे, भिक्षु, इस सारे खाने को विभिन्न नलियों में होकर गुजारने के लिये तैयार कर रहे हैं। यदि तुम इसका अध्ययन करो, तो तुम पाओगे कि, मनुष्य शरीर के कार्य करने के आधार को बताने के लिए, यह एक बहुत अच्छा विचार है।''

उन्होंने कागज को, एक छोटे फीते से जो पहले से ही इसके ऊपर लगा था, फिर लपेटा, सावधानी से बांधा। तब उन्होंने दूसरा उठाया और इसे ऊपर पकड़ा, जिससे मैं दिख सकूॅ। ''यहॉ,'' उन्होंने कहना जारी रखा, ''ये उसके विभिन्न चक्रों के साथ, रीढ़ (spine) की हड्डी का चित्र है। इससे तुम देखोगे कि शक्ति के विभिन्न केन्द्र, रीढ़ के मूल में और सिर के सर्वोच्च स्थानों के बीच, स्थित

हैं। ये चार्ट ठीक तुम्हारे सामने रहेगा, ताकि तुम इसको रात को अंतिम चीज और सुबह में सबसे पहली चीज के रूप में देखो।''

सावधानी से उन्होंने चार्ट को लपेटा और बांध दिया, तब वह अगले और तीसरे की ओर चले। उन्होंने बंधे हुए फीते को खोला और चार्ट को भुजा की लम्बाई की दूरी पर पकड़ा। ''यहॉ नाड़ी संस्थान (nervous system)[9] का प्रदर्शन है, उन चीजों को दिखाते हुए, जिन्हें तुम्हें पढ़ना है, जैसे कि गर्दन संबंधी केन्द्र (cervical ganglion), वेगस नाड़ी (vagus nerve), स्वाधिष्ठान चक्र (cardiac plexus), सहस्रार (solar plexus), और मूलाधार (pelvic plexus)। ये सारी चीजें तुम्हें जाननी हैं क्योंकि ये चिकित्सीय लामा के प्रशिक्षण में तुम्हारे लिए बहुत आवश्यक हैं।''

मैंने अधिक, और अधिक, हताश होते हुए, उन चीजों को देखा क्योंकि मुझे ऐसा लगा कि मैं इन सब चीजों के ऊपर, कभी भी स्वामित्व प्राप्त नहीं कर पाऊॅगा। ये मनुष्य के शरीर के सभी टुकड़े और अस्पष्ट लेख (squiggles) सभी छटपटाते हुए टुकड़े (wriggly bits), जो नाड़ियॉ थीं, और महान बूंदें (great blobs), जो चक्र थे। परन्तु, मैंने सोचा, मुझे मेरे पास काफी समय है, मैं मात्र अपनी खुद की चाल से चलूॅगा और यदि जितना वे समझते हैं, मुझे सीखना चाहिए, नहीं सीख सका–ठीक है, कोई आदमी अपने सर्वोत्तम से अधिक तो नहीं कर सकता।

''अब मैं तुमको सुझाव देता हूॅ कि बाहर जाओ और कुछ हवा लो। अभी, इन्हें अपने कमरे में रख दो और बाकी के दिन में, जो कुछ भी तुम करते हो, जबतक तुम शैतानियों के लिए,..... जो तुम्हारा खुद का मामला है, उठते नहीं हो, तब इसे करो।'' उन्होंने एक मुस्कराहट के साथ कहा। मैंने आदर के साथ, उनको नमन किया और इन तीनों रोलों (rolls) को उठा लिया। तब मैं, हम दोनों के बीच के दरवाजे को बंद करते हुए, अपने खुद के कमरे में वापस लौटा। थोड़े समय के लिए, मैं कमरे के बीच में, ये सोचते हुए कि मैं इन टेढ़ीमेढ़ी चीजों को कैसे टांगूॅगा, खड़ा रहा और तब मैंने देखा कि वहॉ पहले से ही दीवार में उचित प्रक्षेप (projections) बने थे। सावधानी से, मैंने एक मेज ली और उसे इन तकियों से में से एक के नीचे रखा; अंत में, मेज पर चढ़ते हुए, जिसने मुझे एकबार फिर अठारह इंच ऊॅचा उठा दिया, मैंने पहले चार्ट की डोरी को, पहले प्रक्षेप के ऊपर टॉगने की व्यवस्था की। सावधानी से, मैं कमरे के दूर वाली भुजा की तरफ वापस लौटा और अपने हाथ के कार्य को अनुमोदन करते हुए, मैंने देखा। नहीं, ये सीधा नहीं था। मैंने इस चीज को, आलोचनात्मक तरीके से, नजर में रखा और ये निश्चित करने के लिए कि हर चीज, जैसी कि होनी चाहिए थी, ठीक थी, आगे की तरफ जल्दी की। संतुष्ट होते हुए कि, एक सही और सही तल में, लटक रहा था, मैं बाकी दो के ऊपर काम करने के लिए चला। अंत में, मैं संतुष्ट हुआ और मैंने शिष्टाचार की हवा के साथ–साथ, अपने हाथों से धूल झाड़ी। मैं आत्मतुष्टि के साथ मुस्कुराते हुए, जिस तरफ जाना था, घूमता हुआ, अपने कमरे के बाहर गया परन्तु अपने शिक्षक के कमरे के दरवाजे से गुजरते हुए, जैसे ही मैं बाहर गया, मैंने देखा कि सेवा करनेवाला भिक्षु गलियारे के अंत में था। उसने मुझे मित्रवत् तरीके से अभिवादन किया, और कहा, ''ये सर्वाधिक त्वरित रास्ता है, ये निजीद्वार, लामाओं के लिए है, परन्तु मुझे

9अनुवादक की टिप्पिणी : नाड़ी संस्थान (nervous system), प्रत्येक पशु में शरीर का वह भाग होता है, जो उसकी ऐच्छिक और अनैच्छिक क्रियाओं के बीच समन्वय करता है और मष्तिष्क से विद्युतीय संकेतों को शरीर के भिन्न–भिन्न भागों के लिये प्राप्त करता तथा शरीर के भिन्न–भिन्न भागों से मष्तिष्क को भेजता है। नाड़ी तंतु, सर्वप्रथम कीटसम (wormlike) प्राणियों में लगभग 50–60 करोड़ वर्ष पहिले विकसित हुए थे। रीढ़ की हड्डी वाले प्राणियों में, नाड़ी संस्थान के दो प्रमुख भाग होते हैं, केन्द्रीय नाड़ी संस्थान (central nervous system; CNS) तथा सीमान्त नाड़ी संस्थान (peripheral nervous system; PNS)। केन्द्रीय नाड़ी संस्थान में मष्तिष्क (brain) तथा स्नायुविक नाड़ी (spinal cord) सम्मिलित हैं, जबकि सीमान्त नाड़ी संस्थान में प्रमुखतः नाड़ियॉ होती हैं, जो लम्बे तंतुओं (axons) के बंद बंडल होते हैं, जो केन्द्रीय नाड़ी संस्थान को शरीर के हर भाग से जोड़ते हैं। मष्तिष्क से संकेतों को लेजाने वाली नाड़ियों को वाहक नाड़ियॉ (motor or efferent nerves) तथा शरीर के भागों से सूचनाओं को मष्तिष्क तक लाने वाली नाड़ियों को संवेदक नाड़ियॉ (sensory or afferent nerves) कहते हैं। अधिकांश नाड़ियॉ दोनों प्रकार के कार्य करतीं हैं, उन्हें मिश्रित नाड़ियॉ (mixed nerves) कहते हैं। सीमान्त नाड़ी संस्थान में तीन प्रकार की नाड़ियॉ, (a) somatic, (b) autonomic (c) enteric होती हैं, ये अंग–संचालन, क्रिया, प्रतिक्रिया, इन्द्रियों से प्राप्त अनुभवों को मष्तिष्क तक लाती – ले जातीं हैं। समस्त ऐच्छिक क्रियायें मष्तिष्क द्वारा तथा अनैच्छिक क्रियायें, स्नायुविक नाड़ी द्वारा सम्पन्न की जाती हैं।

बताया गया है कि तुम्हें इसके प्रयोग की आज्ञा दी गई है।'' उसने इस तरफ का इशारा किया और मैंने उसे धन्यवाद दिया और शीघ्र ही ताजी हवा में खिसक लिया।

मैं बाहर खुले में खड़ा हुआ। पहाड़ी रास्ते का अंत, मेरे पैरों के ठीक नीचे था। ऊपर दांयी तरफ, भिक्षुओं की एक भीड़, काम करने में व्यस्त थी। मुझे ऐसा लगा कि वे सड़क की सफाई कर रहे थे, परन्तु मैं वहॉ नहीं अटका, मैं किसी भी काम के लिए भेजा जाना नहीं चाहता था। बदले में, मैं सीधा आगे की तरफ चला और थोड़े समय के लिए, एक बड़े पत्थर पर बैठा, जबकि मैं शहर के ऊपर, जो बहुत दूर नहीं था, जो तिब्बत की साफ हवा में, अपने भेद करने के लिए काफी समीप स्थान पर था, व्यापारियों, भिक्षुओं और लामाओं, जो अपने–अपने काम की तरफ जा रहे थे, का पहनावा देख रहा था।

शीघ्र ही, मैं नीचे की तरफ कुछ गज चला और बगल की दूसरी चट्टान, जिसके पीछे एक सुखद छोटी झाड़ी थी, पर बैठा। अब मेरा ध्यान, अपने नीचे, कीचड़ की ओर घूमा, कीचड़, जहॉ घास ताजी और हरी थी, और जहॉ मैं, बुलबुलों (bubbles) को, गहरे तालाब में मछलियों के दुबकने से अलग पहचान सकता था। जैसे ही मैं वहॉ बैठा, वहॉ एक मेरे पीछे अचानक भगदड़ हुई और एक कर्कश गलेवाली आवाज ने कहा, ''हर्राह ? मर्रा !'' इसके साथ वहॉ, मेरी पीठ पर बालदार (furry) ठोस सिर के हार्दिक सहवास (boink) ने मेरा अभिनन्दन किया। मैं गोल घूमकर पहुॅचा और उसे बूढ़े बिल्ले को थपथपाया, और उसने मुझे चाटा, जीभ, जो इतनी खुरदरी थी जैसे कि जमीन पर बजरी, से चाटा। तब वह सामने की ओर तेजी से दौड़ा, मेरी गोद में कूद गया, वहॉ से वापस कूदा और मेरे सामने आने के चक्कर में, झाड़ियों में जाकर गायब हो गया। उसने, जब अपनी नीली चमकती हुई ऑखों से मेरी ओर देखता हुआ वहॉ खड़ा था, पूछताछ के चित्र को देखा, पूंछ सीधी खड़ी हुई, कान सीधे खड़े हुए। मैंने कोई हरकत नहीं की, इसलिए वह फिर से मेरी तरफ ''मररॉ! मररॉ!'' कहते हुए, दौड़कर पहाड़ी पर आया और चूंकि अभी भी, मैंने कोई हरकत नहीं की, वह अपने पंजों में से एक के साथ बाहर पहुॅचा और अपनी पकड़ को, मेरी पोशाक की तली में कस दिया और धीमे से खींचा। ''ओह बिल्ले, तुम्हारे साथ भी क्या कुछ मामला (चक्कर) है?'' मैंने झुंझलाहट में पूछा। धीमे से, मैं अपने पैरों से दौड़ा और ये देखने के लिए कि बिल्ला किसलिए आंदोलित था, अपने आसपास देखा। वहॉ कुछ नहीं देखा जाना था, परन्तु बिल्ला मेरी पोशाक पर पंजा मारते हुए, और नौंचते हुए, कुछ दूरी पर एक झाड़ी की तरफ, तब वापस मेरी तरफ दौड़ रहा था। इसलिए मैं नीचे पहाड़ के बगल से देखने लगा और बिल्ले ने आसपास घूमती फिरती हुई हवा में, मुझे आवेशित करती हुई उत्तेजना के साथ, अच्छी तरह से नाचता हुआ, एक धीमे, होशियारी भरे उतार को शुरू किया।

जैसे ही मैने अपना धीमा रास्ता लिया, मैं झाड़ियों से चिपक गया और मैं उस जगह पहुॅचा, जहॉ बिल्ला मुझे देखने के लिए मुड़ा था, परन्तु वहॉ कुछ देखा जाना नहीं था। ''बिल्ले तुम मूर्ख हो!'' मैंने विषाद में कहा। ''तुम मुझे यहॉ केवल खेलने के लिए खींच लाए हो।'' ''मर्रो! मर्रो!'' बिल्ले ने फिर से मेरी पोशाक को खींचते हुए और मेरी टॉगों में उलझाते हुए, मेरी पोशाक के नीचे घुसते हुए और मेरे पैर की नंगी उॅगलियों को, जो मेरी चप्पलों में से बाहर दिख रही थीं, कुतरते हुए कहा।

त्याग की कराह के साथ, मैं थोड़ा सा आगे बढ़ा, अपना रास्ता एक झाड़ी में होकर धकेलते हुए बनाया, और उदासी से भर गया क्योंकि, यहॉ एक कगार थी और यदि मैं यहॉ इतनी उदासी से नहीं अटकता, तो मैं किनारे से नीचे गिर सकता था। मैं उस मित्र बिल्ले को, जो अब उत्तेजना के पागलपन में था, कुछ बहुत कठोर चीजों को कहने के लिए मुड़ा। वह मेरे आगे पीछे घूमता हुआ, किनारे के ऊपर उछला। धक्के से मेरा हृदय, लगभग रुक गया, क्योंकि ये बूढ़ा बिल्ला मेरा बहुत अच्छा दोस्त था और मैंने सोचा कि उसने आत्महत्या कर ली है!

बहुत सावधानीपूर्वक मैं अपने घुटनों पर झुका और झाड़ियों को पकड़ते हुए, मैंने किनारे की ओर झॉका। लगभग बारह फुट नीचे, मैंने एक बूढ़े भिक्षु की लाश देखी। मेरी डरी हुई ऑखों ने देखा

कि उसका सिर खून से रंगा हुआ था और उसकी पोशाक के ऊपर भी खून था। मैंने देखा, उसकी दांयी टॉग, एक अस्वाभाविक कोण पर मुड़ी हुई थी। मेरा हृदय डर, उत्तेजना और प्रयास से धड़क रहा था। मैंने अपनी तरफ देखा, और मैंने पाया कि बांयी तरफ के तुरंत आगे, एक छोटा ढलान था, जिस पर, तब मैं अपने आपको उस बूढ़े आदमी के सिर के ऊपर पाते हुए, नीचे उतरा।

डर के कारण, अपनी खाल से बाहर कूदने के लिए लगभग तैयार, मैंने उसे सावधानी से छुआ। वह जिन्दा था। ज्यों ही मैने उसे छुआ, उसकी ऑखें चमकीं, हल्की सी फड़कीं और उसने कराहा। मैंने देखा कि वह गिर गया था और उसका सिर एक चट्टान के ऊपर टकरा गया था। बिल्ला अभी भी, सावधानीपूर्वक, मुझे देखते हुए बैठा था।

धीमे से मैंने उस बूढ़े भिक्षु के सिर को थपथपाया, कान के नीचे, नाक के नीचे दिल की तरफ थपथपाया। कुछ समय बाद उसकी ऑखें खुलीं और उसने खालीपन से खुद को देखा। धीमे से उसकी ऑखें, मेरे ऊपर केन्द्रित होती हुईं फोकस हुईं। ''क्या ये सब ठीक है,'' मैंने शान्त करते हुए कहा, ''मैं ऊपर जाऊॅगा और तुम्हारे लिए मदद लाऊॅगा। मुझे अधिक देर नहीं लगेगी।'' बेचारे बूढ़े आदमी ने मुस्कराने का प्रयास किया और दुबारा अपनी ऑखें बंद कर लीं। मैं मुड़ा और सबसे सुरक्षित और सबसे तेज चाल वाला तरीका होने के कारण, हाथों और घुटनों पर चलते हुए, मैंने अपना रास्ता चोटी की तरफ बनाया और लामाओं के गुप्त दरवाजे में होकर रास्ते पर दौड़ पड़ा। जैसे ही मैं प्रविष्ट हुआ, मैं सेवाभिक्षु, जो वहॉ था, से टकरा गया। ''जल्दी, जल्दी'' मैंने कहा। ''वहॉ पहाड़ियों में घायल हुआ, एक भिक्षु है।'' जैसे ही वह बोलता, मेरे शिक्षक अपने कमरे के बाहर आए और उन्होंने शोरशराबे के ऊपर जानकारी करते हुए देखा।

''स्वामी, स्वामी'' मैंने कहा, ''मैंने, आदरणीय बिल्ले, बिल्ले की सहायता से, एक बूढ़े भिक्षु को, जो घायल हो गया है, अभी पाया है। उसके सिर में चोट लगी है और उसकी टॉग अस्वाभाविकरूप से मुड़ गई है उसे तुरन्त सहायता चाहिए।'' मेरे शिक्षक ने, तेजी से सेवक भिक्षु को निर्देश दिए और तब मेरी तरफ लौटे। ''आगे बढ़ो, लोबसांग, मैं तुम्हारे पीछे चलता हूॅ,'' उन्होंने कहा।

हम साथ–साथ चाकपोरी के बाहर गए और हमने छोटे रास्ते को पार किया। घबराहट को ध्यान में रखते हुए कि उनकी केशरिया पोशाक खराब होती जा रही थी और मेरी खुद की इतनी खराब हो गई थी कि कुछ और अधिक निशान पड़ने से वहॉ कोई फर्क नहीं पड़ता था, मैंने उन्हें तीखे रास्ते के नीचे तक का रास्ता दिखाया। आदरणीय बिल्ला, बिल्ला यहॉ रास्ते पर, हमारे आगे नाच रहा था, और वह ये देखते हुए कि लामा मिंग्यार डोंडुप मेरे साथ में थे, वास्तव में, आराम में दिखाई दिया।

शीघ्र ही हम बूढ़े भिक्षु के पास पहुॅच गए, जिसकी ऑखें अभी भी बन्द थीं। मेरे शिक्षक उसके बगल से घुटनों पर झुके और उसकी पोशाक के अन्दर की झोलियों में से विभिन्न पैकेटों को, पट्टियॉ और कुछ सामान, जो वह पकड़े हुए था, कपड़े के एक टुकड़े में ले लिया और उन्होंने भिक्षु की नाक के नीचे पकड़ा। भिक्षु ने जोर से छींका और अपनी ऑखों को खोला, ऑखें, जो चढ़ी हुई और दर्द से निचोड़ी हुईं थीं। उन्होंने वास्तव में, एक आराम पाते हुए भिक्षु को देखा, जब उसने देखा कि उसकी सेवा कौन कर रहा था। ''ये सब ठीक है दोस्त, तुम्हारे लिए मदद आ रही है,'' मेरे शिक्षक ने कहा। इसके साथ बूढ़े भिक्षु ने अपनी ऑखें फिर से बंद कर लीं और आराम से ठंडी आह भरी।

मेरे शिक्षक ने, भिक्षु की पोशाक उठाई और हमने हड्डी के टुकड़े को घुटनों के ठीक नीचे, टॉग की खाल के साथ चिपके हुए देखा। मेरे शिक्षक ने कहा, ''उसके हाथों को पकड़ो, लोबसांग, उसे कसकर पकड़ो। अपने भार को, उसपर डाल दो ताकि वह हिल न सके। मैं उसकी टॉग को सीधा खींचनेवाला हूॅ।'' इसके साथ ही, उन्होंने भिक्षु के टखने को पकड़ा और बहुत तेजी से, अचानक खींचा, टॉग सीधी हो गई और मैंने देखा, हड्डियॉ, खाल में अंदर की तरफ जाकर गायब हो गईं, ये इतना अचानक, इतना सावधानी से किया गया था कि बूढ़े आदमी को दुःखी होने के लिए भी समय नहीं

मिला।

मेरे शिक्षक, तेजी से, एक काफी बड़ी झाड़ी की दो शाखाओं, जो पक़ड़ने के लिए बहुत सुविधाजनक थीं, के समीप बाहर पहुँचे। उन्होंने एक चाकू से उसे काटकर अलग कर दिया, और उन्हें अपनी पोशाक के एक टुकड़े से गद्दी बनाते हुए, उन्हें एक खपच्ची के रूप में, उस भिक्षु की टॉग के ऊपर बांध दिया। तब हम प्रतीक्षा करते हुए बैठे रहे।

शीघ्र ही वहॉ, एक लामा के नेतृत्व में, जो रास्ते पर नीचे आता हुआ दिखाई दिया, भिक्षुओं के एक दल के रूप में, पैर घसीटकर चलते हुए और ठोकर मारते हुए लोग आए। हमने उन्हें बुलाया और उस स्थान का निर्देश दिया, जहॉ हम थे। सावधानीपूर्वक, वे बूढ़े भिक्षु के आसपास समूह बनाकर इकट्ठे हो गए। एक नौजवान भिक्षु ने, बिल्कुल भी सावधानीपूर्वक नहीं, अपने आपको दिखाने का प्रयास किया, ये दिखाने का प्रयास किया कि वह कितना दृढ़ था। उसका पैर, ढीले पत्थरों के फिसला, उसका पैर उसके नीचे से फिसला और उसने पहाड़ के बगल से लुढ़कना शुरू कर दिया। एक झाड़ी ने उसके पोशाक के निचले सिरे को पकड़ लिया और उसे सिर से ऊपर, ऊपर की ओर खींचा और तब वह, वहॉ मुद्रिका पथ पर, नीचे की तरफ, तीर्थयात्रियों को एक छिले हुए केले की तरह से, नंगा झूलता हुआ दिखता था। मेरे शिक्षक मंद–मंद मुस्कुराए और दूसरे दो (लोगों) को बिना विलंब किए हुए, उसको छुटकारा दिलाने के लिए आदेश दिए। जब उसे वापस खींचा गया, वह काफी शर्मिन्दा और बहुत लाल चेहरेवाला भी दिखाई दे रहा था। मैंने ध्यान दिया कि यदि वह सुख से रहना चाहता है, उसे खड़े होने में कुछ दिन लगेंगे क्योंकि, फर्श के साथ सम्पर्क वाला वह स्थान, बैठने के लिये बुरी तरह से पत्थरों से खरोंचा हुआ था!

भिक्षुओं ने सावधानी से घायल आदमी को पलटा ताकि वे एक मजबूत केनवास को उसके नीचे, लंबाई से फिसला सकें। तब उन्होंने उसे वापस पलटा और खींचा ताकि, वह एक आरामदायक शिविका (stretcher) पर आ जाए। उन्होंने कपड़े को, उसकी नली बनाते हुए, उसके चारों ओर ठीक से टॉक दिया, और तब उन्होंने, उसको चौडे फीते की लम्बाई से खम्भे से बांधते हुए, एक मजबूत खम्भे को अंदर खिसकाया। सौभाग्यवश वह अचेत था और तब दो भिक्षुओं ने उसे खम्भे के सिरों को उठाया और पीछे से दूसरों की मदद के साथ उसे धकियाते हुए और अपने कदमों को स्थिर करते हुए, वे झाड़ियों में होकर, धीमे से, पहाड़ी के पथ के ऊपर, और चाकपोरी की सुरक्षा में, सावधानीपूर्ण रास्ते पर चले।

मैं आदरणीय बिल्ले को थपथपाते, अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप को बताते हुए कि, इस बूढे भिक्षु की मदद करने के लिए, आदरणीय बिल्ले ने मुझे नीचे आने के लिए कैसे खींचा था। ''बेचारा बूढ़ा आदमी, शायद मर गया होता यदि आपने पुकारा नहीं होता, आदरणीय बिल्ले'' मेरे शिक्षक ने, बूढ़े बिल्ले के खाल को घिसते हुए, कहा। तब वह मेरी तरफ यह कहते हुए मुड़े, ''अच्छा काम, लोबसांग, तुमने ठीक शुरूआत की है। इसे जारी रखो।''

हम दोनों, हम साथ–साथ, आदरणीय बिल्ले, बिल्ले से, जो आगे–आगे नाच रहा था और उछल कूद कर रहा था, ईर्ष्या करते हुए, पहाड़ी रास्ते पर ऊपर की ओर, घसीटते हुए चले। मेरे शिक्षक चाकपोरी में प्रविष्ट हुए, परन्तु मैं, आदरणीय पुस पुस को, खाल के एक टुकड़े से, लचीली खाल का एक बढ़िया टुकड़ा, जिसका उसने एक खतरनाक दुश्मन के रूप में, बहाना किया था, चिढ़ाते हुए, वहॉ चोटी के ऊपर, बड़े पत्थर के ऊपर बैठा रहा। वह उछला और घुर्राया और जोर से चीखा, और खाल के ऊपर आक्रमण किया, और हमारे लोगों के बीच में गर्म दोस्ती का, एक शक्तिशाली अहसास हुआ।

अध्याय तेरह

चाकपोरी में वापस आना, उन लोगों के साथ होना, जिनसे मैं परिचित था, अच्छा था। यहॉ के शिक्षक, समर्पित लोग थे, चिकित्सीय लामओं को प्रशिक्षण देने के लिये समर्पित। मेरे शिक्षक ने मुझे समझाया था कि मुझे, जड़ीबूटियों, शरीर रचना और चिकित्सा की कक्षाओं में शामिल होना चाहिए, चूँकि चाकपोरी ऐसी शिक्षाओं के लिए अच्छा केन्द्र था।

दूसरे पच्चीस लोगों के साथ–लड़के मेरे जैसे, बड़े लड़के और दूसरे लामा मठों से–एक या दो–जवान भिक्षु, मैं एक व्याख्यानकक्ष में हमारे अपने फर्श पर बैठा; लामा शिक्षक अपने कार्य में दिलचस्पी ले रहे थे, हमें पढ़ाने में दिलचस्पी ले रहे थे, ''पानी !'' उन्होंने कहा। ''शरीर को अच्छी तरह से, ठीक से चलाने के लिए, पानी स्वास्थ्य की एक अच्छी कुंजी है। लोग पर्याप्त पानी नहीं पीते हैं। कोई खाता है–और उसमें अन्दर, लुग्दी जैसा पदार्थ बन जाता है, जो ऑत के लम्बे रास्ते में होकर आगे नहीं बढ़ सकता। इसका परिणाम यह होता है कि पूरा तन्त्र अवरुद्ध हो जाता है, हाजमा खराब, और अमूर्त भौतिकी का अध्ययन या अभ्यास करने के लिए, पूरी तरह से अयोग्यता हो जाती है।'' वे रुके और अपने आसपास देखा, मानो कि वे हमें दूसरी तरह से सोचने की चुनौती दी रहे हों! ''स्वामी,'' छोटे लामामठ से आनेवाले एक नौजवान भिक्षु ने कहा, ''निश्चितरूप से, जब हम खाते हैं यदि हम तभी पानी पीते हैं, तो हम अपने पेट के पाचन रसों को तनु (dilute) कर लेते हैं–या ऐसा मुझे बताया गया है।'' नौजवान भिक्षु, सहसा चुप हो गये और अपने आसपास देखा मानो कि वह, अपनी गुस्ताखी से दुविधा में पड़ गये हों।

''एक अच्छा प्रश्न!'' लामा शिक्षक ने कहा। ''अनेक लोग इसप्रकार की छाप (impression) लिए रहते हैं, परन्तु ये गलत है! शरीर में, एक अत्यन्त सान्द्रित पाचकरस को निकालने की क्षमता है। वास्तव में, इतना सान्द्रित, कि कुछ निश्चित अवस्थाओं में ये पाचक रस, शरीर को ही पचाना शुरू देते हैं!'' हम आश्चर्यचकित होकर धक से रह गए, और मैं इस विचार पर कि मैं स्वयं को खा रहा था, काफी डर गया। शिक्षक, जब उन्होंने खुसुर–पुसुर सुनी, जो उन्होंने ही पैदा की थी, मुस्कराए और उन्होंने कुछ क्षणों के लिए शान्ति रखी, जिससे कि हमारे ऊपर पूरा प्रभाव गिर जाए। ''पेट के घाव, पेट में जलन–ये कैसे पैदा होते हैं ?'' हम में से उत्तर पाने की आशा में, एक से दूसरे की तरफ टकटकी लगाते हुए, उन्होंने पूछा।

''स्वामी!'' मेरा नाजुक जवाब था। ''जब एक आदमी चिन्ता करता है, तो ठीक वैसे ही, जैसे कि उसके सिर में दर्द होता है, उसे घाव हो जाते हैं!'' शिक्षक मुझ पर मुस्कराये और (उन्होंने) उत्तर दिया,'' सही प्रयास! हॉ, जब आदमी चिन्ता करता है, उसके पेट में, आन्त्ररस (gesrtic juices) अधिक मात्रा में और अधिक सान्द्रित बनते हैं, जबतक कि अन्त में, पेट के सबसे कमजोर भाग पर आक्रमण न किया जाय और वह अम्ल, जो सामान्यतः खाने को पचाता है, उस सबसे कमजोर भाग को खाने लगता है, और अन्त में एक छेद बन जाता है, जो दर्द की टीस देता है, पेट के सामान को मथता है और रसों में और अधिक सान्द्रण पैदा करता है। अन्त में अम्ल छेदों में होकर, जो उसने किए हैं, रिस जाता है और जिन्हें हम पेट के फोड़े (peptic ulcers) कहते हैं, पैदा करता हुआ, पेट की परतों के अन्दर घुस जाता है। पानी की एक पर्याप्त आपूर्ति, बड़े तरीके से इस स्थिति को घटा देगी और घावों को भी रोक सकती है। शिक्षा– जब आप चिन्तित हों, पानी पिऐं और पेट में फोड़े पैदा होने की जोखिम को घटाऐं।

''स्वामी!'' एक मूर्ख लड़के ने कहा। ''मैं आशा करता हूँ, लोग इसपर बहुत अधिक जोर नहीं देते; मैं उनमें से एक हूँ, जिन्हें पानी को पहाड़ के ऊपर चढ़ाकर ले जाना पड़ता है–और ये काम बहुत मुश्किल होता है।'' अधिकांश लोग, तिब्बत जैसे देश की समस्याओं पर अधिक विचार नहीं करते। हमारे पास काफी पानी था, इसमें से अधिकांश गलत स्थानों पर है! पोटाला और चाकपोरी जैसे, लामामठों की आवश्यता के अनुसार आपूर्ति करने के लिए, पानी भरने वाले भिक्षुओं और लड़कों के दल, चमड़े के

बर्तनों में, पहाड़ी रास्ते से पानी को ऊपर लाते हैं। हमारे जिन्दा रहने के लिए, पानी से लदे हुए घोड़े और याक, आवश्यक उपयोग में लाए जाते थे। कार्यकर्ताओं के असंख्य दल, टंकियों को, जो आसानी से उपलब्ध होनेवाली स्थितियों में रखी गयीं थीं, पूरा भरा रखने में कठिन परिश्रम करते थे। हम सीधे नल के ऊपर नहीं जाते और पर्याप्त मात्रा में पानी की आपूर्ति नहीं पाते–गरम और ठण्डा–हमें टंकी में (बर्तन) डुबाकर पानी लेना पड़ता है। नदी के किनारे की अत्यधित महीन बालू भी साथ में इकट्ठी की जाती है, जो बर्तनों को मांजने के लिये और फर्शों को रगड़ने में, उपयोग में लायी जाती है। पानी बहुमूल्य था! कपड़े धुलाई की हमारी जगह, नदी का किनारा था; नदी को पहाड़ों के ऊपर लाने के बजाय, हम अपने कपड़ों को नदी पर ले जाते थे।

लामा शिक्षक ने इस बेवकूफी भरी टिप्पिणी को अनदेखा किया, और कहना जारी रखा, ''मानव जाति की सबसे खराब बीमारी है''–नाटकीय प्रभावों के लिए वह रुका, जबकि हमने महामारी और कैंसर के बारे में सोचा–''कब्ज!'' कब्ज, किसी भी दूसरी शिकायत की तुलना में, और अधिक खराब, सामान्य स्वास्थ्य पैदा करता है। ये दूसरी गम्भीर बीमारियों के लिये नींव रखता है। किसी को धीमा, खराब गुस्सेवाला, और दुर्बलतापूर्वक बीमार बना देता है। कब्ज का इलाज किया जा सकता है!'' एकबार फिर वह ठिठके और अपने आसपास देखा। ''कासकारा सागराडा की भारी खुराकें लेकर नहीं, और न ही अण्डी के तेल के कई गैलन पीने से, वल्कि काफी पानी पीने से।'' मान लो–हम खाते हैं। खाने में हम वह सब लेते हैं, जो हमारी ऑतों में होकर, हमारे पेट में बिल्कुल आगे नहीं चलता। बाद में, महीन रेशे, जिन्हें विली कहते हैं (वे पतली खोखली नलियों की तरह होते हैं) पाचन होनेवाले और पचे हुए खाने में से, खाने के पोषक तत्वों को खींच लेते हैं। यदि खाना बहुत अधिक गरिष्ट है, बहुत अधिक ठोस है तो ये विली (villi) के अन्दर नहीं घुस सकता। ये कड़े डेलों के रूप में, मार करता है। आतें तड़पती हैं, छटपटाती हैं, जैसे हम ''क्रमाकुन्चन गति (peristaltis) का वर्णन करते हैं, ये अधिक खाने के लिए, पीछे आनेवाले खाने के लिए, जगह बनाते हुए, आतों में होकर, खाने को आगे की ओर बढ़ाती है। परन्तु यदि खाना ठोस है तो, क्रमाकुन्चन की गति केवल दर्द के रूप में दिखाई देती है और खाने में कोई गति नहीं होती। इसलिए ठोस को नरम बनाने के लिए–अत्यधिक पानी आवश्यक है।''

ये एक दुःखपूर्ण तथ्य है कि चिकित्साशास्त्र के सभी विद्यार्थी मान लेते हैं कि उनमें सभी प्रकार के रोगों के, जिन्हें वे पढ़ रहे हैं, लक्षण हैं। मैंने अपना पेट दबाया–हॉ–मुझे ये निश्चित था कि वहॉ एक कठोर माल है। मुझे इसके लिए कुछ करना चाहिए, मैंने सोचा। ''स्वामी!'' मैंने पूछा। ''कोई विरेचक कैसे काम करता है ?'' शिक्षक की निगाहें मेरी ओर मुड़ी। उनकी ऑखों मे एक मुस्कराहट थी। मैंने अनुमान किया कि वह, हम में से अधिकांश को, यह महसूस करते हुए मानो कि हम में से हर एक के पास ''कठोर चीजें'' हों, हमको देख रहे हैं।''

''एक व्यक्ति, जिसे विरेचक (aperient) लेना पड़े, ऐसा व्यक्ति है, जिसके शरीर में पहले से ही पानी की कमी है। उसको कब्ज हुआ है, क्योंकि आनेवाले व्यर्थ पदाथों को निकालने के लिए, उसके शरीर में तरल, अपर्याप्त मात्रा में है। पानी प्राप्त किया जाना चाहिए, इसलिए विरेचक, पहले शरीर को, विली में होकर, पानी को उंडेल़ने के लिए प्रेरित करता है, जिससे कि मल, नरम हो जाए और कोमल बन जाए, तब क्रमाकुन्चन गति प्रबलित होती है। जब बने हुए डेले अन्दरवाली सतह पर चिपक जाते हैं–दर्द पैदा होता है और शरीर, पूरी तरह से पानी से कमी से ग्रसित (निर्जलीकृत) हो जाता है। विरेचक लेने के बाद, किसी को भी हमेशा काफी पानी पीना चाहिए।'' वे मुस्कुराए और उन्होंने आगे जोड़ा, ''वास्तव में अपने पानी ढोने वाले मित्रों के लिये मुझे कहना है कि, पीड़ित लोगों को नदी के किनारे रहना चाहिए और पानी को अधिकता से पीना चाहिए।''

''स्वामी! कब्ज से परेशान रहनेवाले लोगों की खाल खराब क्यों होती है और उनको मुँहासे (pimples) क्यों होते हैं ?'' एक बहुत खराब खाल वाले लड़के ने उनसे पूछा और चूँकि प्रत्येक सिर

उसकी दिशा में घूम गया, वह झेंपता हुआ लज्जित हुआ। ''हमें, प्रकृति के द्वारा इस उद्देश्य से बनाए गए मार्ग से, अपने व्यर्थ पदार्थों से छुटकारा पा लेना चाहिए '' हमारे शिक्षक ने उत्तर दिया। ''परन्तु यदि मनुष्य उस तरीके को रोकता है, तब ये मल, महत्वपूर्ण रक्त नलिकाओं को बन्द करते हुए, खून में चला जाता है, और शरीर, खाल के छिद्रों में से होकर, इस कचरे से छुटकारा पाना चाहता है। फिर यदि पदार्थ में, उन छिद्रों की पतली नलियों में होकर निकलने के लिए पर्याप्त में तरल नहीं है और तब उनको रोके रखने के कारण, 'खराब खाल', इसका परिणाम होती है। काफी पानी पिओ, उचित मात्रा में व्यायाम करो–फिर हमें कभी कासकारा सागराडा, अन्जीर के सीरप, अण्डी के तेल के लिए, इतना काफी खर्च नहीं करना पड़ेगा।'' वे हॅसे और उन्होंने कहा, ''हम इसे समाप्त करेंगे ताकि तुम सभी दौड़कर बाहर जाओ कट्टियॉ भरकर पानी लाओ!'' (कक्षा) बर्खास्त करने के संकेत के रूप में, उन्होंने अपना हाथ हिलाया और दरवाजे की ओर चले, तभी एक संदेशवाहक आ टपका।

''आदरणीय स्वामी, क्या यहॉ रम्पा नाम का एक लड़का है–मंगलवार लोबसांग रम्पा–यहॉ, कृपया?'' शिक्षक ने आसपास देखा और मेरी ओर इशारा करते हुए अपनी उॅगली को टेढ़ा किया। ''तुम–लोबसांग–अब इसबार तुमने क्या किया ?'' उन्होंने धीमे से पूछा। मैं, अपने सर्वोत्तम को, और सबसे खराब टॉग को रखते हुए, और यह आश्चर्य करते हुए कि अब और क्या तकलीफ है, अनिच्छुकरूप से आगे आया। संदेहवाहक ने लामा से कहा, ''इस लड़के को तुरंत ही मठाध्यक्ष स्वामी के पास पहुॅचना है, मैं उसे लेने आया हूॅ–मैं नहीं जानता क्यों।''

ओह! मैंने सोचा, अब ये क्या हो सकता है ? क्या किसी ने मुझे भिक्षुओं के ऊपर त्सम्पा डालते हुए देख लिया, क्या किसी ने मुझे वेदीसेवकों के स्वामी की चाय में नमक डालते हुए देख लिया ? और शायद–मेरा मन, निराशा से, विभिन्न पापों की ओर, घूमने लगा, जिन्हें मैं जानता था कि वे मेरे थे। क्या होगा, यदि मठाध्यक्ष स्वामी ने मेरे अनेक अपराधों को जान लिया ? संदेशवाहक, चाकपोरी के खाली, ठण्डे, गलियारों में होकर, रास्ते पर आगे चला। यहॉ पोटाला की तरह से, कोई विलासिता नहीं, कोई सजावट, सजावटी पर्दे नहीं। ये काम चलाऊ था। एक दरवाजे पर, जिसपर दो कुलानुशासक पहरा दे रहे थे, संदेशवाहक रुका और प्रवेश करने से पहले बड़बड़ाया ''प्रतीक्षा करो।'' मैं खड़ा हुआ और पैर से पैर को बदलते हुए, कुलबुलाया। कुलानुशासकों ने पथरीली निगाह से मेरी तरफ ताका मानो मैं, मानव जाति से कुछ हल्की किस्म का होऊॅ। संदेशवाहक दुबारा प्रकट हुआ। अन्दर जाओ!'' उसने मुझे धक्का देते हुए आदेश दिया।

मैं अनिच्छापूर्वक दरवाजे में प्रविष्ट हुआ, जो मेरे बाद खींचकर बंद कर दिया गया। प्रविष्ट हुआ–और अनिच्छुकरूप से, आश्चर्य में वहॉ रुका रहा। यहॉ कोई कठोरता नहीं थी। मठाध्यक्ष स्वामी, सबसे मंहगे, लाल और सुनहरे कपड़ों में लिपटे हुए, फर्श से लगभग तीन फुट ऊॅचे, एक प्लेटफॉर्म पर बैठे हुए थे। चार लामा, उनके पास, हाजिरी में खड़े थे। अपने झटके से उबरने के बाद, मैंने निर्धारित तरीके से इतने उत्साह के साथ नमन किया कि मेरे जोड़ चटक गए और मेरा कटोरा और गण्डे–ताबीजों का डिब्बा, एकसाथ उछलकर गिर गए। मठाध्यक्ष स्वामी के पीछे एक लामा ने, जब मैं वहॉ उस बिन्दु पर पहुॅचा, जहॉ मुझे रुकना चाहिए था, अपने हाथ को उठाते हुए, मुझे आगे की तरफ इशारा किया।

मठाध्यक्ष स्वामी ने, शान्ति से नजर टिकाकर, मेरी पूरी लम्बाई में, मेरी तरफ देखा, मेरी पोशाक का, मेरी खड़ाउओं का निरीक्षण किया, और शायद यह ध्यान देते हुए कि मेरा सिर, अच्छी तरह से मुड़ा हुआ है, वे हाजिर लामाओं में से एक की ओर मुड़े, ''अरुंफ (Arrumph)! ये लड़का है, ए ?'' ''हॉ, मेरे स्वामी,'' लामा ने, जिससे उन्होंने प्रश्न पूछा था, जवाब दिया और फिर उसने समीक्षा का हिसाब लगाते हुए, टकटकी लगाई। ''अरुंफ (Arrumph)! उर्राह! मेरे बच्चे, वह तुम ही हो, जिसने तेंगली (Tengli) नामक भिक्षु को सहायता पहुॅचाई थी ? उर्रहफ (urrhph)!'' लामा, जिसने मुझे, पहले संकेत दिया था,

ने अपने ओठ हिलाए और मेरी तरफ इशारा किया। मुझे विचार मिल गया; ''मैं इतना सौभाग्यशाली था, मेरे मठाध्यक्ष स्वामी,'' मैंने जवाब दिया, जो मैं आशा करता था, मैं पर्याप्त नम्रता में था।

फिर उसी टकटकी ने, मेरा निरीक्षण करते हुए, मानो मैं एक पत्ते के ऊपर, किसी प्रकार का कीड़ा होऊँ। अन्त में उन्होंने फिर कहा, ''एर्र ओह! हॉ, ओह! तुम्हारी प्रशंसा की जानी है, मेरे बच्चे। अरुंफ (Arrumph)!! '' उन्होंने अपनी टकटकी कहीं दूसरी तरफ कर ली, और उनके पीछे वाले लामा ने, मुझे, नमन करने और जाने का संकेत दिया। इसलिये–तीन और दण्डवत, और लामा को, जिसने ऐसे स्पष्ट संकेतों के द्वारा मुझे मार्गदर्शन दिया था, एक दूरानुभूतिपूर्ण धन्यवाद के साथ–पीछे की तरफ एक सावधानीपूर्ण वापसी की। दरवाजे ने मेरे पीछे की तरफ ठोकर मारी। प्रसन्नता से, मैंने अपने पीछे दरवाजे को बन्द होने को टटोला और एक दीवार के सहारे बैठ जाने से, मैं, दिली आराम के साथ एक ''फ्यू!!'' से थोड़ा आराम से हुआ। मेरी ऑखें, उन दैत्याकार कुलानुशासकों से मिलने के लिए ऊपर की तरफ चलीं ''ठीक है ? क्या आप स्वर्ग को जानेवाले हैं ? वहॉ सुस्ती मत कर देना, देर मत लगाना, लड़के!'' वह मेरे कानों में अटक गया। दो कुलानुशासकों को अपनी तरफ कष्ट से देखते हुए, उदास होकर, मैंने अपनी पोशाक को झटका और गलियारे में नीचे की तरफ चला। कहीं एक दरवाजा चटका और एक आवाज आई, ''रुको !'' ''मेरे भगवान, बुद्ध के दांत की कसम, अब मैंने क्या किया ?'' जब मैं रुका और ये देखने के लिए मुड़ा कि ये किस संबंध में था, मैंने निराशा में स्वयं को पूछा। एक–अच्छा भव्य–लामा मेरी तरफ आ रहा था और वह मुस्करा रहा था! तब मैंने उसे, उस लामा के रूप में पहचाना, जिसने मठाध्यक्ष स्वामी के पीछे से, मुझे संकेत दिए थे। ''तुमने ठीक प्रदर्शन किया, लोबसांग,'' वह प्रसन्न फुसफुसाहट के साथ बड़बड़ाया। ''तुमने हर चीज वैसे की, जैसे किसी को करनी चाहिए। तुम्हारे लिए ये उपहार है–मठाध्यक्ष स्वामी भी इन्हें पसन्द करते हैं!'' उसने एक बड़ा सा पैकेट मेरे हाथों की तरफ फैंका, मेरे कंधे थपथपाए और चला गया। पैकेट में उॅगली घुसाते हुए और उसमें रखे सामान का अनुमान करते हुए, मैं वहॉ बुत बनकर खड़ा रहा और मैंने ऊपर देखा–दो कुलानुशासक शुभेच्छा के साथ, मेरे ऊपर मुस्करा रहे थे–उन्होंने लामा के शब्दों को सुन लिया था। ''ओह!'' जब मैंने उनकी तरफ देखा, मैंने कहा। एक कुलानुशासक की मुस्कान, इतनी असामान्य थी कि, मुझे इस से डर लगा। बिना किसी अधिक परेशानी के, मैं वहॉ से, उतनी तेजी से, जितनी मैं कर सकता था, उस गलियारे के बाहर चला।

''तुम्हें क्या काम है, लोबसांग ?'' एक छोटी आवाज ने चिल्लाकर कहा। मैंने आसपास देखा वहॉ एक लड़का था, जिसे अभी हाल ही में (लामामठ में) स्वीकार किया गया था, वह मुझसे छोटा था, और उसे वहॉ जमने में कठिनाई हो रही थी। ''खाओ–मैं सोचता हूँ!'' मैंने जवाब दिया। ''ओ हमें चखाओ, मैंने अपना खाना छिपा दिया है,'' उसने अत्यधिक उत्साहपूर्वक कहा। मैंने उसकी तरफ देखा और वह भूखा दिखाई दिया। वहॉ उस बगल के एक तरफ, एक भण्डार कक्ष था; मैं उसे आगे चलाता हुआ अन्दर ले गया और हम दूर की दीवार पर, जौ के बोरों के के पीछे, जाकर बैठे। सावधानी से मैंने पार्सल को खोला और 'भारतीय खाने' को उघाड़ा। ''ओह!'' छोटे बच्चे ने कहा, ''मुझे इसप्रकार का खाना कभी नहीं मिला''' मैंने गुलाबी टिक्कियों में से एक, जिसके ऊपर सफेद पदार्थ लगा हुआ था, उसे दी। उसने काटकर खाया और उसकी गोल ऑखें, और गोल, हो गईं। अचानक, जब मैं दूसरी चकती को बांये हाथ में पकड़े हुआ था, वह मेरे ऊपर गिरा, परन्तु वह जा चुकी थी! मेरे पीछे की एक आवाज ने मुझे घुमा दिया; वहॉ बिल्लों में से एक था ... मेरी चकती को खाता हुआ! और इसका लुत्फ उठाता हुआ! निवृति की आह के साथ, अपने लिए एक और चकती लेने के लिए, मैं पैकेट में डूब गया।

''र्राह (Rarrh)'' ? एक आवाज ने मेरे पीछे से कहा। एक पंजे ने मेरी बॉह को छुआ। ''र्राह ? मुर्लो (Mrlaw)!'' आवाज ने दुबारा फिर कहा और जैसे ही मैं देखने के लिए मुड़ा, वह मेरी दूसरी चकती ले चुका था और उसे खा रहा था ''ओह तुम भयानक चोर हो!'' मैं जोर से चिल्लाया, और तभी

मुझे याद आया, ये बिल्ले कितने अच्छे थे–वे मेरे कितने अच्छे मित्र थे और उन्होंने मुझे कैसे सुख दिया था। ''मुझे खेद है, आदरणीय रक्षक बिल्ले,'' मैं खेदपूर्वक बोला। ''तुम अपने जिंदा रहने के लिए काम करते हो और मैं नहीं।'' मैंने अपनी टिकियों को नीचे और अपनी बांहों को बिल्ले के चारों तरफ, जो मुझे दुलार कर रहा था, और दुलार कर रहा था, रखा। ''ओह!'' छोटे बच्चे ने कहा। ''वे मुझे उसे छूने भी नहीं देंगे। आप इसे कैसे करते हैं?'' वह आगे बढ़ा, अपने हाथ को आगे बढ़ाया और संयोग से दूसरी शक्कर की टिकिया को उठा लिया। जब मैंने कोई टिप्पणी नहीं की तो, वह आराम से हुआ और पीछे बैठ गया कि शायद वह अब आराम से खा सके। बिल्ले ने म्याऊँ बोला और मुझे अपने सिर से ठोकर मारी। मैंने आधी टिक्की उसके लिए रखी, परन्तु वह पहले ही काफी खा चुका था; उसने फिर भी, जोर से म्याऊँ बोला और अपने खुद के सभी गलगुच्छों के ऊपर, चिपचिपे शर्बत को फैलाते हुए, अपने चेहरे की बगल को, इसके विरुद्ध घिसा। संतुष्ट होते हुए कि मैंने उसके धन्यवाद को समझ लिया है, वह धीमे–धीमे चला गया, खिड़की के नीचे की अलमारी में से कूदा और सफाई करता हुआ वहॉ गरम धूप में बैठ गया। उसे देखते हुए जैसे ही मैं पीछे मुड़ा, मैंने छोटे बच्चे को, उस टिक्की को, जिसको बिल्ले ने रगड़ा था, और उसे अपने मुँह में ठूँस लिया था, उठाते हुए देखा।

''क्या तुम धर्म में विश्वास करते हो ?'' छोटे बच्चे ने पूछा। क्या मैं धर्म में विश्वास करता हूँ, मैने सोचा, एक वास्तविक टिप्पिणी योग्य प्रश्न। यहॉ हम, चिकित्सीय लामा और बौद्ध पुजारी बनने के लिये प्रशिक्षित हो रहे थे और मुझे पूछा गया है, क्या तुम धर्म में विश्वास करते हो? पागलपन, मैंने सोचा, पागलपन। तब मैंने कुछ और आगे सोचा। क्या मैं धर्म में विश्वास करता था? मैं, क्या विश्वास करता था? ''मैं यहॉ आना नहीं चाहता था,'' छोटे बच्चे ने कहा। ''परन्तु उन्होंने मुझे यहॉ भेज दिया। मैंने पवित्र मां डोलमा से प्रार्थना की; मैंने यहॉ न आने के संबंध में, कड़ी प्रार्थना की, लेकिन फिर भी आ गया। मैंने प्रार्थना की कि मेरी मॉ नहीं मरेगी, परन्तु वह मर गई, और लाशों को ठिकानेवाले लोग आए और उसे ले गए और उसे पक्षियों को खिला दिया। मुझे कभी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिला, क्या तुम्हें मिला, लोबसांग?'' हम वहॉ भण्डार कक्ष में, जौ के बोरों के विरुद्ध झुकते हुए बैठ गए। खिड़की में बिल्ला साफ कर रहा था, और साफ कर रहा था, और साफ कर रहा था, अपने पंजे के अगले घाव को चाट रहा था, अपने चेहरे के बगल के आरपार पौंछ रहा था, उसने अपने अगले पंजे को फिर दोबारा चाटा, सिर के ऊपर, कानों के पीछे और नीचे फिर से अपने चेहरे के बगल में। जैसे ही वह बैठा और चाटा और साफ किया, चाटा और साफ किया, चाटा और साफ किया, ये लगभग सम्मोहित करनेवाला था।

प्रार्थना? ठीक है अब मैंने इसके बारे में सोचा, मेरे लिए भी प्रार्थनाऐं काम करती हुई नहीं लगती हैं! तब, यदि प्रार्थनाऐं काम नहीं करती हैं, हमने प्रार्थना क्यों की ''मैंने बहुत अगरबत्तियॉ जलाईं,'' छोटे बच्चे ने, नम्रता से कहा। ''उन्हें आदरणीय दादी मॉ के एक खास डिब्बे में से भी लिया; परन्तु प्रार्थनाओं ने कभी मेरे लिए काम नहीं किया। अब मेरी तरफ देखो–मैं चाकपोरी में कुछ–कुछ प्रशिक्षण पाने वाला नहीं होना चाहता, क्यों? मुझे भिक्षु क्यों होना पड़ेगा, जबकि ऐसी चीजों में मेंरी कोई रुचि नहीं है?'' मैंने अपने ओठ सीं लिए, अपनी भौंह को उठाया, और त्योरियॉ चढ़ाई जैसेकि मठाध्यक्ष स्वामी ने मेरे प्रति किया था। तब मैंने छोटे बच्चे का, सिर से पैर तक, क्रान्तिकरूप से (critically) निरीक्षण किया। अंत मैं मैंने कहा, ''कहो क्या, हम मामले को, थोड़े कुछ क्षणों के लिए छोड़ देंगे। मैं इसके संबंध में सोचूँगा और उचित समय में तुमको इसका उत्तर दूँगा। मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप हर चीज को जानते हैं और मैं इस मामले में सलाह देने के लिए, उन्हें पूछूँगा।'' जब मैं फौरन रवाना होने के लिए मुड़ा, मैंने देखा, भारतीय खानों का वह पैकेट, लगभग आधा खत्म हो चुका था। एक झटके में, मैंने उसके ढक्कन को वास्तव में, उसके अन्दर खाने के साथ, बण्डल में इकट्ठा किया, और भौंचक्के हुए छोटे बच्चे की भुजाओं में घुसा दिया। ''यहॉ!'' मैंने कहा। ''तुम इनको रखो, ये तुमको आध्यात्मिक मसलों के बजाय

दूसरी चीजों को सोचने में मदद करेगा। अब तुम जाओ क्योंकि मुझे सोचना है'' मैंने उसे कोहनी के सहारे से लिया और दरवाजे की तरफ बढ़ा दिया और उसे बाहर की ओर हल्का सा धक्का दिया। वह, इससे डरते हुए कि मैं कहीं अपना मन न बदल लूँ और उन भारतीय मिठाइयों को वापस न मॉग लूँ, जाते हुए प्रसन्न था। उसके साथ बाहर के रास्ते पर, मैं अधिक महत्वपूर्ण मामलों की ओर मुड़ा। मैंने, बोरों में से एक की तरफ, डोरी का एक सुन्दर टुकड़ा देखा था। मैं उसकी तरफ गया और सावधानी से उसे बोरे की गर्दन के बाहर की तरफ चढ़ाया। तब मैं खिड़की के पास गया और बिल्ला और मैं एक सुन्दर खेल खेलने लगे, वह, बोरों के ऊपर उछलते हुए, उनमें बीच में डूबते हुए और सामान्यतः अधिक आनन्द लेते हुए, डोरी के सिरे का पीछा कर रहा था। अंत में, वह और मैं, लगभग एक साथ थक गए। वह बाहर आया, मुझे ठोकर मारी, और अपनी पिछली टॉगों से लम्बा खड़ा हो गया और उसकी पूंछ, हवा में सीधी। ''मर्रा'' कहते हुए, वह खिड़की के नीचे के पत्थर से उछला और अपनी रहस्यमय यात्राओं में से एक पर, गायब हो गया। उसने मेरी पोशाक के सामने से धागे का एक टुकड़ा खींचा और जबतक कि मैं, अंत में, गलियारे में होकर, खुद के कमरे में नहीं पहुँच गया, दरवाजे में होकर मटरगस्ती करता हुआ चला गया।

कुछ समय के लिए, मैं एक महत्वपूर्ण चित्र के सामने खड़ा हुआ। ये एक नर आकृति थी, और कोई इसमें अन्दर देख सकता था। इसमें पहले एक हवा की नली थी; हवा की नली के बांयी ओर दो भिक्षुओं, जो हवा को फेंफड़ों (lungs) में भेजते हुए व्यस्त थे, का चित्र था। दांयी तरफ, दो भिक्षु हवा को फैंफड़ों के दांयी तरफ अन्दर, भर रहे थे। वे काफी कड़ी मेहनत भी, कर रहे थे, मैंने देखा। तब वहॉ हृदय (heart) का एक चित्र था। यहॉ भिक्षु खून को या गोया कि तरल को, क्योंकि कोई ये देख नहीं सकता था कि ये रक्त ही था, दिल में पम्प करने में व्यस्त थे। आगे एक बड़ा प्रकोष्ठ था, जो पेट (stomach) था। एक भिक्षु स्पष्टरूप से एक वरिष्ठ भिक्षु, एक मेज के पीछे बैठा था और पॉच भिक्षु, खाने के वण्डलों को वहॉ लाने में, काफी व्यस्त थे। प्रमुख भिक्षु, खाने की आनेवाली मात्रा का हिसाब रख रहा था।

इसके आगे भिक्षुओं का एक समूह, खाने को पतला करने के लिए और पाचन के मामलों में मदद करने के लिए, पित्ताशय (gall bladder) में से एक चमचे से पित्त (bile) डाल रहा था। फिर भी, अगले भिक्षु उसमें व्यस्त थे, जो स्पष्टरूप से एक रासायनिक कारखाना दिखता था– यकृत (lever)–वे अम्ल की कुंडियों में, विभिन्न पदार्थों को तोड़ रहे थे, और मैं पूरी तरह मोहित हुआ, इस चित्र को देख रहा था, क्योंकि तब हर चीज कुंडलों में चली गई और कुण्डलियॉ और कुंडलियॉ, जोकि केवल ऑतों (intestines) को दिखाती थीं। भिक्षु, विभिन्न पदार्थों को ऑतों में भर रहे थे। वहॉ और आगे थे गुर्दे, (kidney) जहॉ भिक्षु, विभिन्न तरलों को अलग कर रहे थे और उसे, जिसे दांयी दिशा में भेजा जाना था, देख रहे थे। परन्तु नीचे मूत्राशय (bladder), सर्वाधिक दिलचस्पी का दृश्य था; दो भिक्षु, वहॉ एक नली के सामने बैठे थे और वे स्पष्टरूप से, तरल के प्रवाह को नियंत्रित कर रहे थे। तब मेरी नजर उस चित्र के चेहरे के ऊपर वापस गई, और मैंने सोचा कोई आश्चर्य नहीं कि वह अपने अन्दर इतने सारे आदमियों को काम करते हुए, और उसके साथ छेड़छाड़ करते हुए, और देखने योग्य चीजों को, उसके लिए करते हुए इतना दुःखी दिखाई देता है। थोड़े समय के लिए, सुखद विचारमग्न और उन अंदर वाले छोटे आदमियों के संबंध में कल्पनाओं में, मैं वहॉ खड़ा रहा।

अंत में वहॉ, साथ वाले दरवाजे पर, प्रकाश का एक बिन्दु था और कुछ क्षणों बाद ये खोला गया, और मैं अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, जो वहॉ खड़े थे की ओर मुड़ा वह अनुमोदन के साथ मुस्कराए और ज्यों ही उन्होंने मुझे आकृति का अध्ययन करते हुए देखा। ''ये वास्तव में काफी पुराना चित्र है; इसे अपने मूलरूप में, एक महान चीनी दस्तकार ने बनाया था। मूल आकृति, ठीक जीवनाकार थी, और ये विभिन्न प्रकार की लकड़ियों की सजावटी चमक–दमक से बनाया गया था। मैंने मूल प्रति

देखी है और ये सही में जीवित जैसी है।''

''मैं समझता हूँ कि तुमने मठाध्यक्ष स्वामी के ऊपर अच्छा प्रभाव जमाया है, लोबसांग। उन्होंने मुझे बताया कि ठीक उसके बाद, उन्होंने सोचा था कि तुम्हारे अंदर उल्लेखनीय संभावनाऐं हैं।'' कटाक्षपूर्ण स्वर में उन्होंने जोड़ा, ''मैं उन्हें ये आश्वासन देने के योग्य था कि, अंतरतम भी इसी विचार के थे!''

धर्म के बारे में सोचते हुए, मेरा सिर भनभना रहा था, इसलिए मैंने नम्रता से कहा, ''स्वामी क्या मैं आपसे, एक विषय पर, जो मुझे बहुत परेशान कर रहा है, एक प्रश्न पूछ सकता हूँ ?'' ''सर्वाधिक निश्चितरूप से (तुम पूछ सकते हो)। यदि मैं तुम्हारी मदद कर सकूँ, तब मैं तुम्हारी मदद करूँगा। तुम्हें क्या परेशानी है? परन्तु आओ, हम अपने कमरे में चलें, जहाँ हम आराम से बैठ सकते हैं और जहाँ हम चाय भी पी सकते हैं।'' एक तेज नजर के बाद, मेरी खाद्य की छोटी आपूर्ति, जो तेजी से और घटती जा रही थी, पर ध्यान देते हुए, वे मुडे और अपने कमरे की तरफ चले। इस कमरे में शीघ्र ही उन्होंने एक सेवक को भेजा और हमारे सामने चाय रखी गई। जब हमने अपना खाना खत्म कर लिया, उसके बाद लामा मेरी तरफ देखकर मुस्कराए और कहा, ''ठीक है, अब तुम्हें क्या परेशानी है? अपने हिसाब से समय लो और इसके बारे में पूरा बताओ क्योंकि तुम्हें शाम की प्रार्थनासभा में जाने की जरूरत नहीं है।'' वह अपने हाथ अपनी गोदी में मिलाकर, वापस पद्मासन की मुद्रा में बैठ गए। मैं अपनी बगल से कुछ झुका हुआ बैठा, और अपने विचारों को छाँटने का प्रयास किया ताकि मैं मामले को जितना संभव हो सके, बिना किसी हड़बड़ाहट के, स्पष्टता से रख सकूँ।

''आदरणीय स्वामी,'' अंत में मैंने कहा, ''मैं धर्म के मामले में परेशान हूँ; मैं धर्म का कोई उपयोग नहीं देखता। मैंने प्रार्थना की है और दूसरों ने भी प्रार्थनाऐं की हैं और इन प्रार्थनाओं में से कुछ भी निकलकर नहीं आया है। हम मानो जंगल में प्रार्थना करते रहे हैं। ऐसा लगता है कि देवताओं ने हमारी प्रार्थना नहीं सुनी, ऐसा लगता है कि ये माया का संसार है। धर्म और प्रार्थनाऐं भी एक माया ही होनी चाहिए। मैं ये भी जानता हूँ कि अनेक तीर्थयात्री लामाओं की मदद चाहते हैं ताकि उनकी समस्याओं का निदान हो जाए, परन्तु मैंने कभी किसी का निदान होते हुए नहीं सुना। मेरे पिताजी भी—जब मेरे पिताजी थे—एक पूर्णकालीन पुजारी को नियुक्त करके रखते थे, परन्तु हमारे मामले में कुछ बहुत ऐसा अच्छा होता हुआ नहीं लगा। स्वामी, क्या आप बता सकते हैं, क्या आप, धर्म का कोई उपयोग बताऐंगे ?''

मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, अपने बंधे हुए हाथों की ओर देखते हुए, थोड़े समय के लिए शान्त रहे। अन्त में, उन्होंने एक आह निकाली और सीधे मेरी ओर देखा। ''लोबसांग,'' उन्होंने कहा, ''धर्म, वास्तव में, अत्यधिक आवश्यक चीज है। ये पूर्णरूप से आवश्यक है, एकदम नितान्त आवश्यक कि धर्म हो, जो अपने अनुयायियों के प्रति आध्यात्मिक अनुशासन को थोप सके। धर्म के बिना, लोग जंगली जानवरों की तुलना में और भी खराब हो जाऐंगे। बिना धर्म के, अंतरात्मा की कोई आवाज नहीं होगी। चाहे कोई हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, या यहूदी हो, मैं तुम्हें कहता हूँ कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; सभी लोगों का खून लाल होता है, और धर्म, जिनका वे पालन करते हैं, आवश्यकरूप से, अपने आप में सब समान होते हैं।'' वे रुके और ये निश्चित करते हुए कि क्या मैं, जिसके सम्बंध में वे बात कर रहे थे, उनका क्या तात्पर्य था, उसे समझूँगा, मेरी ओर देखा। मैंने हामी भरी, और उन्होंने कहना जारी रखा।

''यहाँ पृथ्वी पर अधिकांश लोग, बहुत कुछ हद तक बच्चों की तरह हैं, जो स्कूल में होते हैं, बच्चे, जो कभी प्रधानाध्यापक को नहीं देखते, बच्चे, जो कभी स्कूल के बाहर की दुनियाँ को नहीं देखते। कल्पना करो कि, स्कूल की इमारत पूरी तरह से, एक ऊँची दीवार में बंद है; यहाँ इस स्कूल में, कुछ निश्चित शिक्षक हैं, परन्तु प्रधानाध्यापक इस विशेष कक्षा में, कभी नहीं दिखाई दिया। स्कूल के शिष्यों के पास, तब यदि, उनके पास इसे देखने का कोई तरीका नहीं है कि यहाँ औसत शिक्षकों से कुछ अधिक अच्छे शिक्षक भी हैं, ये सोचने कि ये लिए कि यहाँ कोई प्रधान अध्यापक नहीं है, क्या कोई

आधार होगा। जैसे ही बच्चे अपनी कक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं और अगली कक्षाओं में जाने के लिए योग्य होते हैं, तब वे स्कूल की दीवारों के बाहर, आसपास जा सकते हैं, और शायद अन्त में, प्रधान अध्यापक को मिल सकते हैं और उससे आगे की दुनियॉ देख सकते हैं। बहुधा, लोग प्रमाण चाहते हैं, उन्हें हर चीज का प्रमाण चाहिए, उन्हें ईश्वर का भी प्रमाण चाहिए, और केवल एक ही तरीका, उन्हें इस प्रमाण को पाने के योग्य बना सकता है और वह है सूक्ष्मशरीर से यात्राऐं, अतीन्द्रियज्ञान की क्षमता, क्योंकि जब कोई, जो पहले से ही चार दीवारी में है, अपनी कक्षा की सीमाओं के बाहर यात्रा कर सकता है, वही आगे के महान सत्य को देख सकता है।'' फिर वह रुके और देखने की उत्सुकुता के साथ, मेरी ओर देखा, क्या मैं उनकी टिप्पणियों को संतोषजनकरूप से समझ रहा था। वास्तव में, मैं (समझ रहा) था और पूरे ज्ञान में, जिसमें वे कह रहे थे, देख रहा था।

''हम ये कल्पना करें कि हमारी कक्षा का एक कमरा है और हम विश्वास करें कि हमारे प्रधान अध्यापक, अमुक–अमुक कहलाते हैं। परन्तु हमारे समीप में ही एक दूसरी कक्षा का कमरा भी है और हम उन विद्यार्थियों से मिल सकते हैं; वे हमारे साथ बहस करते हैं और कहते हैं कि, प्रधान अध्यापक का नाम कुछ और है परन्तु, एक तीसरी कक्षा, जिससे भी हम मिल सकते हैं, अचानक बुरी तरह टूट पड़ती है और हमें बताती है कि हम मूर्ख हैं क्योंकि यहॉ कोई प्रधान अध्यापक है ही नहीं, यदि कोई होता तो हम उनसे मिले होते या हमने उन्हें देखा होता, यदि वे होते तो हमें उनके नाम के बारे में कोई संदेह नहीं होता। अब, लोबसांग,'' मेरे शिक्षक मुस्कराए, ''तुम देखोगे कि एक कक्षा पूरी तरह हिन्दुओं से भरी हुई है, वे अपने प्रधान अध्यापक को एक नाम से पुकारते हैं; अगली कक्षा ईसाइयों से भरी हो सकती है, वे अपने प्रधान अध्यापक को दूसरे नाम से पुकारते हैं। परन्तु जब हम नीचे आते हैं, जब हम हर धर्म का निचोड़ निकालते हैं, हम पाते हैं कि हर एक में कुछ सामान्य, मूल लक्षण हैं। इसका अर्थ है कि भगवान वहॉ हैं, एक सर्वोच्च सत्ता वहॉ है। हम अनेक विभिन्न तरीकों में उसकी पूजा कर सकते हैं, परन्तु जबतक हम विश्वास के साथ उसकी पूजा करते हैं, यही सब कुछ है, जो अर्थ रखता है।''

दरवाजा खुला और एक सेवक भिक्षु कुछ ताजी चाय लाया। मेरे शिक्षक ने आभारपूर्वक उड़ेली और पी, क्योंकि इतनी बात करने के बाद, वे प्यासे थे और–ठीक है–मैंने खुद को कहा कि मुझे भी एक चाय पीनी पड़ेगी, ठीक, क्योंकि मैं सुनने से प्यासा था–एक बहाना उतना ही अच्छा था, जितना कि दूसरा!

''लोबसांग, मान लो जंगली गुलाब बाड़ लामामठ के वेदीसेवक, भिक्षु और लामाओं में से कोई भी, उनके अनुशासन के लिए उत्तरदायी नहीं हो; उस लामामठ में सात हजार निवासी हैं, सात हजार। ये मानते हुए कि वहॉ कोई अनुशासन नहीं हो, मानते हुए कि वहॉ कोई पारितोषिक, कोई दण्ड नहीं होता, मानते हुए कि हर आदमी, किसी चीज के बारे में, अपनी अंतर्चेतना के बारे में, विचार न करते हुए, जो वह चाहता, कर सकता था। जल्दी ही वहॉ अराजकता हो जावेगी, वहॉ हत्याऐं होंगी, कुछ भी हो सकता है। ये लोग अनुशासन, आध्यात्मिक अनुशासन, इसके साथ–साथ भौतिक (अनुशासन) के द्वारा भी, ठीक रखे जा सकते हैं, परन्तु संसार के सभी लोगों के लिए एक धर्म का होना, ये एकदम आवश्यक है क्योंकि, किसी के पास भौतिक अनुशासन के साथ–साथ, आध्यात्मिक अनुशासन भी होना चाहिए क्योंकि यदि यहॉ केवल भौतिक अनुशासन होता, तो ये बलपूर्वक लगाया गया नियम होता, जिसमें हमेशा, सबसे अधिक शक्तिशाली जीतता है, परन्तु यदि यहॉ आध्यात्मिक अनुशासन है, किसी के पास प्रेम के नियम से अधिक है, ये शब्द, जो आज धर्म के लौटने के लिए, अत्यधिक आवश्यक हैं, कोई विशेष धर्म नहीं, परन्तु कोई भी धर्म, धर्म जो संबंधित व्यक्ति के अपने स्वभाव के लिये, सबसे ज्यादा ठीक बैठता हो।''

मैं वहॉ बैठा, और मैंने इसके संबंध में आश्चर्य किया। मैं अनुशासन के भाव को देख सकता था, परन्तु मैंने आश्चर्य किया कि हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिला, कभी क्यों नहीं मिला। ''आदरणीय

स्वामी,'' मैंने पूछा, ''ये सब बिल्कुल ठीक है, परन्तु यदि, धर्म हमारे के लिए इतनी ही अच्छी चीज है तो ऐसा क्यों है कि हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिलता ? मैंने प्रार्थना की कि, मुझे इस गड्ढे में–मेरा मतलब है लामामठ में नहीं आना पड़े, परन्तु मेरी सब प्रार्थनाओं के बावजूद यहॉ आना पड़ा। यदि धर्म कुछ भी अच्छा है, तो मुझे यहॉ क्यों भेजा जाना चाहिए, मेरी प्रार्थनाओं का जवाब क्यों नहीं मिला ?''

''लोबसांग, तुम कैसे जानते हो कि तुम्हारी प्रार्थनाऐं नहीं सुनी गईं ? प्रार्थनाओं के संबंध में तुम्हारा ये ख्याल गलत है। अनेक लोग सोचते हैं कि वे अपने हाथों को आपस में जोड़ेंगे और एक रहस्यमय भगवान, उन्हें, अपने भक्त को, तुरंत लाभ दे देंगे। लोग, धन के लिए प्रार्थना करते हैं, कई बार लोग प्रार्थना करते हैं कि उनका शत्रु, उनके हाथों में दे दिया जाए। युद्ध में विरोधी पक्ष, विजय के लिए प्रार्थना करते हैं, विरोधी पक्ष कहते हैं कि भगवान उनकी तरफ है और वह दुश्मन को दण्ड देने के लिए तैयार है। तुमको याद रखना चाहिए कि जब कोई प्रार्थना करता है, वास्तव में, कोई अपने लिए, प्रार्थना करता है। भगवान कोई महान आकृति नहीं है, जो प्रार्थनाओं के कमरे में, प्रार्थनाओं की शक्ल में याचिकाओं को सुनते हुए और उन्हें निपटाते हुए, क्या ये है, जिसके लिए कहा गया था, किसी मेज पर बैठती है।'' जब उन्होंने (कहना) जारी रखा, वे हॅसे, ''मठाध्यक्ष स्वामी की तरफ जाने की सोचो और उनसे कहो कि, तुम प्रार्थना कर रहे थे कि वह तुम्हें इस लामामठ से मुक्त कर दें, या वे तुम्हें एक बहुत बड़ी धनराशि दे दें। क्या तुम सोचते हो कि वह तुम्हारी प्रार्थना का (वैसा) उत्तर देंगे, जैसा तुम उनसे पाना चाहते हो ? अधिक संभावना है कि वह तुम्हारी प्रार्थना को एक तरह से, जो तुम उनसे किया जाना नहीं चाहते थे, उत्तर देंगे!'' इसका मतलब मेरी समझ में आया, परन्तु यदि वहॉ, उत्तर देने के लिए या जो चीजें चाही गई हैं, उनको देने के लिए, कोई है ही नहीं, तो लगातार प्रार्थना किए जाना, मुझे ये अधिक मतलब का नहीं लगा और मैंने ऐसा कहा भी।

''परन्तु तब, तुम्हारा प्रार्थना का विचार, पूरी तरह से स्वार्थी है। तुम हर समय, केवल अपने लिए ही कुछ चाहते हो। क्या तुम सोचते हो, क्या तुम भगवान से, उन्हें ये कहने के लिए कि वे तुम्हें अचार के अखरोटों का एक डिब्बा भेज दें, प्रार्थना करते हो ? क्या तुम सोचते हो कि तुम प्रार्थना कर सकते हो और अपनी हाथों में दी गई, बड़ी अच्छी भारतीय मिठाईयों के पैकेट पा सकते हो ? प्रार्थना, सदैव दूसरों के भले के लिए होनी चाहिए। प्रार्थना में, भगवान को धन्यवाद दिया जाना चाहिए। प्रार्थना, इस तरह के कथन की बनी होनी चाहिए, जोकि तुम दूसरों के लिए करना चाहते हो, अपने लिए नहीं। जब तुम प्रार्थना करते हो, तुम अपने विचारों को उच्चशक्ति दो, और यदि संभव हो या सुविधाजनक हो, तो तुमको जोर से प्रार्थना करनी चाहिए क्योंकि ये विचारों को शक्तियुक्त बनाता है। परन्तु तुम्हें यह निश्चित करना चाहिए कि तुम्हारी प्रार्थनाऐं निस्वार्थ हैं तुम्हें ये निश्चित करना चाहिए कि तुम्हारी प्रार्थनाऐं प्रकृति के नियमों के साथ विरोधाभासी नहीं हैं।'' मैं इस सबके साथ थोड़ी हामी भर रहा था, क्योंकि ऐसा लगता था कि प्रार्थना उतनी अच्छी नहीं होती।

मेरे शिक्षक, मेरे ध्यान की स्पष्ट कमी के ऊपर मुस्कराए और उन्होंने कहना जारी रखा, ''हॉ, मैं जानता हूॅ कि तुम क्या सोच रहे हो, मैं जानता हूॅ, जो तुम सोच रहे हो कि, प्रार्थना केवल समय को नष्ट करना है। परन्तु ये मानते हुए कि एक व्यक्ति अभी मरा है, एक व्यक्ति कुछ दिनों पहले मर चुका है, और ये मानते हुए कि तुमने प्रार्थना की कि वह आदमी जीवन में वापस आ जाए, तुम प्रार्थना का उत्तर चाहते हो। क्या तुम सोचते हो कि एक व्यक्ति के लिए, जो थोड़े समय के लिए मरा हुआ था, जीवन में वापस आना अच्छा होगा ? लोग प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर पृथ्वी पर कुछ फैंकेगा, जो प्रार्थना करनेवाले को, इस क्षण नाराज कर देगा। क्या तुम सोचते हो कि ये आशा लगाना ठीक होगा कि ईश्वर, कुछ लोगों को मारता हुआ, तुम्हारे आसपास आएगा और क्योंकि ताकतवर व्यक्ति ने, उस प्रभाव की प्रार्थना की थी ?

''परन्तु आदरणीय स्वामी, सभी लामा एक साथ मन्दिरों में प्रार्थना करते हैं, और वे विभिन्न चीजों

को मानते हैं। तब इस सबका उद्देश्य क्या है ?''

''लामा, कुछ विशेष चीजों को दिमाग में रखते हुए, मन्दिरों में एक साथ प्रार्थना करते हैं। वे प्रार्थना करते है–दूसरे शब्दों में–वे अपने विचारों को निर्देशित करते हैं, कि वे उन लोगों की मदद कर सकें, जो दुःख में हैं। वे प्रार्थना करते हैं कि जो कमजोर हैं, वे सहायता, दूरानुभूति की सहायता, के लिए आ सकें। वे प्रार्थना करते हैं कि जो इस जीवन के परे जंगल में खोई हुईं, घूमन्तू प्रेतात्माऐं हैं वे आऐं ताकि उनको मार्गदर्शन दिया जा सके, क्योंकि यदि एक व्यक्ति, कुछ नहीं जानते हुए मरता है तो वह मौत के दूसरे तरफ अज्ञानता के एक दलदल में खो सकता है या खो सकती है। इसप्रकार, लामा लोग प्रार्थना करते हैं–अपने दूरानुभूतिपूर्ण विचारों को भेजते हैं–ताकि, जिन्हें सहायता की आवश्यकता है, आ सकें और उनको सहायता दी जा सके।'' उन्होंने कठोरता से मेरी तरफ देखा, और कहा, ''लामा अपने खुद के लाभ के लिए, खुद के आगे बढ़ने के लिए, प्रार्थना नहीं करते। वे ये प्रार्थना नहीं करते कि उनको उन्नत कर दिया जाए, वे ये प्रार्थना नहीं करते कि अमुक–अमुक लामा, जो थोड़ा कठोर था, छत पर से या कहीं दूसरी जगह से गिर पड़े। वे केवल दूसरों को मदद की प्रार्थना करते हैं।''

मेरे विचार थोड़े से असंयुक्त (disjointed) होते जा रहे थे, क्योंकि मैं हमेशा सोचता रहा था कि एक ईश्वर, या आशीषमयी मॉ डोलमा, यदि उन्हें पर्याप्त तीव्रता के साथ कहा जाए, प्रार्थनाओं का उत्तर देने में समर्थ होगीं। उदाहरण के लिए, मैं लामामठ में प्रविष्ट नहीं होना चाहता था और मैंने प्रार्थना की, जबतक कि मेरी आवाज ने, लगभग पूरी तरह, जवाब नहीं दे दिया, प्रार्थना की। परन्तु कोई बात नहीं, मैंने कितना भी प्रार्थना की, परन्तु फिर भी मुझे लामामठ में आना पड़ा। ऐसा लगता है कि प्रार्थना मात्र कुछ वैसी ही थी कि वह संभवतः, दूसरे लोगों की मदद कर सकती थी।

''मैं तुम्हारे विचारों को ठीक से समझ सकता हूँ, और मैं कुल मिलाकर, इस मामले में, तुम्हारे दृष्टिकोण से सहमत नहीं हूँ '' मेरे शिक्षक ने टिप्पणी की। ''यदि किसी को आध्यात्मिक होना है तो, उसे दूसरों के लिए, वह करना चाहिए, जो वह अपने लिए करता। तुम्हें प्रार्थना करनी चाहिए कि तुम्हें दूसरों को मदद या शक्ति देने के लिए शक्ति मिले और या दूसरों को बुद्धि देने के लिए, बुद्धि मिले। तुमको अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए प्रार्थना नहीं करनी चाहिए क्योंकि ये अपव्यय और एक अनुपयोगी अभ्यास है।'' ''तब,'' मैंने पूछा, ''क्या धर्म, मात्र कुछ चीज है, जो हमें दूसरों के लिए करनी चाहिए ?''

''बिल्कुल नहीं, लोबसांग। धर्म, कुछ वह चीज है, जिसमें हम रहते हैं। ये चरित्र का मानक है, जिसे हम, स्वेच्छा से अपने ऊपर ओढ़ते हैं ताकि, हमारे अधिस्वयं (overselves) शुद्ध और शक्तिशाली हो जाऐं। शुद्ध विचारों के रखने से, हम अशुद्ध विचारों को बाहर रखते हैं, जब हम शरीर को छोड़कर वहॉ वापस जाते हैं, हम उसे (अधिस्वयं को) शक्तिशाली बनाते हैं। परन्तु जब तुम सूक्ष्मशरीरी यात्राओं में बहुत अधिक दक्ष हो जाओगे, तब तुम अपने खुद के सत्य को देखने के लिए सक्षम होगे। वर्तमान समय के लिए–थोड़े से कुछ और सप्ताहों के लिए–तुम मेरे शब्दों को स्वीकार करो। धर्म एकदम यथार्थ है, धर्म बहुत आवश्यक है। यदि तुम प्रार्थना करते हो और तुम्हारी प्रार्थना, उस वस्तु के रूप में नहीं उत्तर दी जाती–तब ये संभव है कि तुम्हारी प्रार्थना कुल मिलाकर उत्तरित की गई थी, क्योंकि जब हम इस पृथ्वी पर आए थे, उससे पहले हमने एक निश्चित योजना बना रखी थी कि हम इस पृथ्वी पर कौन–कौन से लाभ और हानियॉ पानेवाले हैं। हमने (यहॉ आने से पहले) पृथ्वी पर, अपने जीवन की योजनाऐं बनाईं, ठीक वैसे ही, जैसे कोई विद्यार्थी, एक बड़े महाविद्यालय में, अपने अध्ययन के पाठ्यक्रमों की योजना बनाता है ताकि, वह इन अध्ययनों के बाद वह, यह, या कोई दूसरी वह चीज–हो सके, जिसके लिए उसे प्रशिक्षण दिया गया था।''

''क्या आप सोचते हैं कि कोई भी एक धर्म, दूसरे से अच्छा है, आदरणीय स्वामी ?'' मैंने संकोच करते हुए कहा। ''कोई भी धर्म, उस मनुष्य से अच्छा नहीं है, जो उस धर्म का पालन करता है। यहॉ हमारे बौद्ध भिक्षु हैं; कुछ बौद्ध भिक्षु बहुत अच्छे रहनेवाले लोग हैं, दूसरे उतने अच्छे नहीं हैं। धर्म,

हर एक के लिए निजी होता है, हर व्यक्ति की धर्म के प्रति, अपनी पहुॅच अलग होती है, हर व्यक्ति अपने धर्म में, कुछ भिन्न चीजों को देखता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई व्यक्ति बौद्ध है, हिन्दू, यहूदी या ईसाई है, जिसका फर्क पड़ता है वह यह है कि, मनुष्य अपने धर्म का, अपने विश्वास के अनुसार सर्वोत्तम ढ़ंग से और अपनी सर्वोत्तम क्षमताओं से पालन करे।

''स्वामी,'' मैंने फिर पूछा, ''क्या एक व्यक्ति के लिए, अपना धर्म बदलना ठीक है, क्या एक बौद्ध के लिए एक ईसाई हो जाना या एक ईसाई का बौद्ध बन जाना, ठीक है ?'' ''मेरा खुद का व्यक्तिगत विचार, लोबसांग, ये है कि सिवाय बहुत असामान्य परिस्थितियों के, किसी व्यक्ति को अपना धर्म नहीं बदलना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति ईसाई धर्म में पैदा हुआ और वह पश्चिमी विश्व में रहता है, तब उसे निश्चय ही ईसाई धर्म को बनाए रखना चाहिए क्योंकि, कोई धार्मिक आस्थाओं को वैसे ही पीता है, जैसे कि वह अपनी भाषा की पहली आवाजों को, ध्वनियों को, और अक्सर ये होता है कि यदि एक व्यक्ति, जो ईसाई है, अचानक ही हिन्दू या बौद्ध बन जाता है, तो नए धर्म को किसी के द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के बाद, कुछ निश्चित आनुवांशिक कारणों से, जन्म से निश्चित अवस्थाऐं, कमजोर पड़ने लगती हैं और अक्सर उसकी क्षतिपूर्ति के लिए, वह व्यक्ति, उत्सुकतापूर्वक, नए धर्म के प्रति विशेषरूप से, पागलपन में होगा, क्योंकि सभी प्रकार के बिना हल किए गए सन्देह और उलझनें उसी समय सतह के नीचे होंगे। परिणाम, मुश्किल से ही, संतोषजनक होता है। मेरी खुद की सिफारिश यह है कि व्यक्ति जैसे पैदा होता है, वैसे ही वह धार्मिक विश्वासों को स्वीकार कर लेता है, और इसप्रकार उसे उन विश्वासों को बनाए रखना चाहिए।''

''मम्म!'' मैंने आश्चर्य किया। ''तब ऐसा लगता है कि धर्म के संबंध में मेरे सब विचार, पीछे से सामने आ गए हैं। ऐसा लगता है कि एक आदमी को केवल देना ही चाहिए और कभी मांगना नहीं चाहिए। किसी को, बदले में, आशा करनी चाहिए, कि कोई उसकी तरफ से कुछ मांगेगा।''

''समझने के लिए, कोई आदमी कह सकता है, कोई आदमी प्रार्थना में कह सकता है कि वह दूसरों की मदद करने के योग्य हो, क्योंकि दूसरों की मदद करने के माध्यम से, कोई अपने आपको सिखाता है, दूसरों को पढ़ाने में कोई स्वयं पढ़ता है, दूसरों को बचाने में कोई स्वयं को बचाता है, किसी को, हमेशा, लेने से पहले, देना चाहिए, कोई अपने आपको ही देता है, अपनी ही करुणा को देता है, अपनी ही कृपा को देता है। जबतक कि कोई स्वयं को देने में सक्षम नहीं है, वह दूसरों से लेने में भी सक्षम नहीं है। बिना पहले उसे प्रदर्शित किए हुए, कोई कृपा प्राप्त नहीं कर सकता। कोई, पहले दूसरों लोगों की समस्याओं में समय दिये बिना, समय प्राप्त नहीं कर सकता। धर्म बहुत बड़ी चीज है, लोबसांग, व्यवहार करने के लिए अत्यधिक बड़ी, जो इस छोटी वार्ता में, इसतरह नहीं बताई जा सकती। परन्तु इसके बारे में सोचो। सोचो कि दूसरों के लिए तुम क्या कर सकते हो, सोचो कि तुम दूसरों को आनन्द और उनकी आध्यात्मिक उन्नति, कैसे ला सकते हो और मैं आज तुमसे कुछ चीज पूछूं लोबसांग! तुम एक वेचारे बूढ़े भिक्षु, जिसके साथ दुर्घटना हुई थी, के जीवन को बचाने में उपकरण मात्र थे। यदि संभालते हुए, तुमने इसका सामना किया तो तुम पाओगे कि उस काम से तुम्हें इसमें आनन्द और उच्चस्तरीय संतुष्टि मिली। क्या ऐसा नहीं है ?''

मैंने इसके बारे में सोचा, और हॉ ये एकदम सही था, कि मुझे आदरणीय पुस पुस के पीछे, वहॉ नीचे जाने में और तब उस बूढ़े आदमी के लिये मदद को बुलाने में, काफी संतुष्टि मिली। ''हॉ, आदरणीय स्वामी, आप ठीक हैं, मुझे अत्यधिक संतुष्टि मिली,'' मैंने अंत में जवाब दिया।

शाम की छायाऐं गिर रही थीं, और रात का बैंगनी खोल, धीमे धीमे हमारी घाटी में पसर रहा था। बहुत दूर ल्हासा में रोशनियॉ टिमटिमाना शुरू हो रहा था और लोगों ने अपनी तेलीय रेशमी पर्दो के पीछे जाना शुरू कर दिया था। हमारी खिड़की के नीचे कहीं बिल्लियों में से एक में शोकार्त चीख निकाली, जिसका उत्तर दूसरी बिल्ली, जो उसके पास ही थी, की आवाज ने दिया। मेरे शिक्षक खड़े हुए

और उन्होंने अंगडाई ली। वे कड़े दिखाई दिए और मैं अपने पैरों पर, हाथ पैरों के सहारे से चढ़ने लगा तो मैं लगभग अपने चेहरे पर गिर गया क्योंकि हम काफी लम्बे, जितना मैंने सोचा था उससे ज्यादा, समय से बैठकर बातें करते रहे थे, और हॉ–मैं भी अकड़ गया था। हमने एक क्षण के लिए, साथ–साथ खिड़की के बाहर देखा तब मेरे शिक्षक ने कहा, '' रात में गहरा आराम करना, ये एक अच्छा विचार हो सकता है क्योंकि–कौन जानता है ?–कल हम अत्यधिक व्यस्त हों। तुम्हारे लिए शुभरात्रि, लोबसांग, शुभरात्रि।''

''आदरणीय स्वामी,'' मैंने कहा, ''आपको समय देने के लिए और आपने–मुझे समझाने में जो कष्ट उठाया है, उसके लिए धन्यवाद। मैं धीमा हूॅ और अपने मन में धीमे से समझता हूॅ परन्तु मैं थोड़ी समझ पैदा करने की शुरूआत कर रहा हूॅ। धन्यवाद, शुभरात्रि!''

मैंने उन्हें नमन किया और मुड़ा, और बीच के दरवाजे में होकर निकला। ''लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने मुझे पुकारा, मैं मुड़ा और उनके सामने पहुॅचा। ''मठाध्यक्ष स्वामी, वास्तव में, तुमसे प्रसन्न थे, और ये मामला है, जो अभिलेखों में जाना चाहिए। मठाध्यक्ष स्वामी कठोर हैं, कठोर आदमी। तुमने ठीक किया है। शुभरात्रि।''

''शुभरात्रि,'' मैंने, जब मैं अपने कमरे की तरफ मुड़ा, फिर से कहा। शीघ्रता से, रात के लिए, मैंने अपनी साधारण सी तैयारियॉ कीं, और तब मैं, तुरन्त सोने के लिए नहीं परन्तु, उन चीजों पर विचार करने के लिए, जो मुझे बताई गई थीं, लेट गया और जैसे मैंने इसके बारे में सोचा–हॉ–किसी का अपने धर्म में ठीक बने रहना सही था, ये उसे अधिकांशतः पूरे और सबसे अच्छे या उत्कृष्ट आध्यात्मिक अनुशासन को दे सकता था।

अध्याय चौदह

''ओह ! आप!!'' दुर्बलता से मैं लुढ़क गया और कुछ क्षणों के लिए, ये आश्चर्य करते हुए कि मैं कहॉ था, लेटा। अनिच्छापूर्वक मैं जाग गया, लगभग एकदम ठीक। पूर्व की तरफ का आकाश, हल्क़ा सा गुलाबी था। प्रारूप में ऊपर की तरफ (up-draft), बर्फ के रबे (crystals) त्रिपार्श्वीय (prismatic) इन्द्रधनुषीय रंगों (rainbow colours) से चमकते हुए, पर्वत की चोटियों से, ऊॅचे लटके हुए थे। मेरे ठीक ऊपर, जब मैंने देखा, अभी भी गहरा नीला, आसमानी आकाश था, जो पलपल हल्का हो गया। मेरे भगवान! ये ठण्डा था। पत्थर का फर्श, बर्फ की एक सिल्ली की तरह से था और मैं कॉप गया। मेरा एक पतला कम्बल, मुझे, जमानेवाले बिस्तर से, बचाने में कमजोर था। जॅभाई लेते हुए, नींद को भगाने का प्रयास करते हुए, और इस ठण्डी सुबह में, उठने के प्रयासों को, कुछ मिनटों के लिए उठा कर रखने का प्रयास करते हुए, मैंने अपनी ऑखों के वक्कलों को रगड़ा।

चिड़चिड़े ढंग से, अभी भी आधी नींद में, मैंने अपने 'तकिए' को, जो दिन में मेरी पोशाक थी, टटोला। गहरी नींद के बेहोशी वाले प्रभाव से, मैंने हाथ से अपनी पोशाक के ''ऊपर'' की तरफ को टटोला और कुछ पाने के प्रयास में (उसमें) घुसा। निराशा में–मैं ठीक से जाग नहीं सका–मैंने एक मोटा अंदाज लगाया और परिधान को अपने आसपास खींचा। बढ़ते हुए चिड़चिड़ेपन के साथ, मैंने पता लगाया कि ये उल्टा (अन्दर की पर्त बाहर) हो गया है। अपने आपसे बड़बड़ाते हुए, मैंने इसे सीधा किया। शाब्दिकरूप से मैंने ''इसे फाड़ दिया,'' क्योंकि सड़ीसड़ाई पुरानी चीज, पीठ की तरफ से, पूरी तरह फट गई। बर्फीली ठण्डी हवा, इतनी ठण्डी हवा कि, मेरी सांस में एक सफेद बादल की तरह से धुंआ निकल रहा था, में नंगे खड़े होते हुए, उदासी के साथ, मैंने नुकसान का जायजा लिया, अब मैं ''इसके लिए'' था। वेदीसेवकों के स्वामी क्या कहेंगे? लामामठ की सम्पत्ति को नुकसान पहुॅचाना–बेवकूफी भरी लापरवाही–मूर्ख लड़के की सुन्न खोपड़ी–मैं ये सब जानता था, जो वे कहेंगे। उन्होंने मुझसे कईबार ऐसा कहा था।

हमें नई पोशाकें नहीं जारी की जाती थीं। चूॅकि बच्चे अपनी पोशाक से ज्यादा बड़े हो जाते थे, इसलिए उसे दूसरे को, दूसरा लड़का जो बढ़कर उतना हो गया है, दे दिया जाता था। हमारी सभी पोशाकें पुरानी थीं; कुछ शक्ति के कारण कम, विश्वास के कारण अधिक, साथ बनी रहतीं थीं। जब मैंने उसके दुःखमय अवशेषों को देखा, मैंने निष्कर्ष निकाला कि, अब मेरी पोशाक पूरी तरह भुगत गई थी। मेरी उॅगलियों और अंगूठे के बीच, पतला, खाली, जीवन से वंचित, कपड़ा था। दुःखपूर्वक मैं नीचे बैठ गया और मैंने अपने कंबल को अपने आसपास खींचा। अब, मुझे क्या करना चाहिए ? मैंने विवेकपूर्ण ढ़ंग से, कुछ और दरारें बनाईं और तब, अपना कम्बल, एक पोशाक के रूप में, अपने चारों तरफ लपेटे हुए, मैं वेदी सेवकों के स्वामी की तलाश में बाहर गया। जब मैं उनके कार्यालय में पहुॅचा, वह पहले से ही एक छोटे बच्चे को, वास्तव में, खतरनाक चीजें कह रहे थे, जो चप्पलों की एक अलग जोड़ी चाहता था। ''पैर, सेंडिलों से पहले बने हुए थे, मेरे बच्चे, पैर, सेंडिलों से पहले बने हुए थे!'' वह कह रहे थे। ''यदि मैं अपनी तरह से चलूॅ, तो तुम सभी नंगे पैर रहोगे, परन्तु–यहॉ–एक दूसरी जोड़ी है। इनका ध्यान रखना। जैसे ही अपनी नजर में उन्होंने मुझे, अपने तारतार कम्बल में लिपटा हुआ देखा, ''ठीक है, तुम्हें क्या चाहिए ?'' उन्होंने पूछा।

ढंग, जिससे उन्होंने मुझे देखा! जिस ढंग से उनकी ऑखें, इस विचार पर पूरी तरह सफेद पड़ गयीं कि दूसरा वेदीसेवक, उनके मूल्यवान भण्डारों में से, कुछ चीज चाहता था! ''आदरणीय स्वामी,'' मैंने कुछ अच्छी कंपकंपी के साथ कहा, ''मेरी पोशाक फट गई है, परन्तु ये बहुत, बहुत पतली है और बहुत पहले खत्म हो चुकी थी।'' ''फट गई है ???'' वे जोर से चिल्लाए। ''मैं वो हूॅ, जो कहता हूॅ कि कोई चीज फट गई है, तुम नहीं, कमजोर लड़के। अब अपनी धृष्टता के लिए, चिथड़ों में लपेटे हुए, अपने काम से लगो।'' सेवादार भिक्षुओं में से एक, आगे को मुड़ा और उसने फुसफुसा कर कुछ बात

कही। वेदीसेवकों के स्वामी ने त्योरी चढ़ाई और गरजा, ''क्या ? क्या ? बोलो, क्या तुम बोल नहीं सकते ?''

सेवक भिक्षु वापस बोला, ''मैंने कहा कि ये बच्चा, अभी हाल ही में, अंतरतम के पास भेजा गया था। इसे अभी, मेरे मठाध्यक्ष स्वामी ने यहॉ भेजा था, और ये आदरणीय स्वामी लामा मिंग्यार डोंडुप का चेला है।''

''अरे! अरे!'' वेदीसेवकों का स्वामी हॉफते हुए जोर से चिल्लाया। ''बुद्ध की कसम से, तुमने मुझे ये क्यों नहीं बताया, वह कौन था। तुम मूर्ख हो, एक जड़बुद्धि, दूसरे वेदीसेवकों से भी खराब!'' वेदी सेवकों का स्वामी, एक बनावटी मुस्कान के साथ, मेरी ओर मुड़ा। मैं देख सकता था कि वह खुश दिखने के लिए, अपने तीखे नाकनक्श के ऊपर, पीड़ा झेल रहा था। उसने कहा, ''मुझे अपनी पोशाक को देखने दो, मेरे लड़के!'' काले हिस्से को ऊपर करते हुए, ताकि दरारें पहली बार में ही दिख जाऐं खामोशी से मैंने अपनी पोशाक उसको दे दी। उसने फटे हुए परिधान को लिया और बहुत धीमे से, उसे घसीटा और अंतिम बार खींचने के बाद, पोशाक के दो टुकड़े हो गए। वेदीसेवकों के स्वामी ने आश्चर्य में खुले मुॅह से मेरी ओर देखा, और कहा, हॉ ये आसानी से फट जाती है, तुमने नहीं फाड़ी ? मेरे साथ आओ, मेरे बच्चे, तुम्हें एक नई मिलेगी।'' उसने अपना हाथ मेरी कोहनी पर रखा और जैसे ही उसने ऐसा किया, उसने मेरे कम्बल को महसूस किया। ''हम्म! यह भी पूरी तरह जीर्णशीर्ण हो गया है, तुम अपने कम्बल के साथ वैसे ही अभागे रहे होगे, जैसे अपनी पोशाक के साथ। तुमको एक नया लेना चाहिए।'' हम साथ–साथ बगल के कमरे में–ठीक है–कमरे में गए ? ये हॉल जैसा अधिक लगता था सभी प्रकार की पोशाकें, उच्च लामाओं की पोशाकों से लेकर, निम्नश्रेणी के कामगारों के लिए, सबसे नीचे तक की पोशाकें, दीवार में गड़ी हुई खूटियों से लटक रही थीं। वह मुझे, मेरी भुजा को अपने हाथों में पकड़े हुए, अपने मुॅह को बंद किए हुए और हर चीज को रोकते हुए, अक्सर एक परिधान को ढूंढ़ते हुए ले गया; ऐसा लगा, मानो वह हर एक को, ऐसे ही प्यार करता हो।

हम उस हिस्से में आए, जहॉ वेदीसेवकों के लिए पोशाकें रखीं थीं। हम रुके, और उसने ठोड़ी को उॅगली लगाई और तब अपने कान को कुछ खींचा। ''ऐसा, तुम वह लड़के हो, जो पहले पहाड़ों की ओर फैंक दिए गए थे और तब सुनहरी छतों की ओर फैंके गए थे ? हम्म! और तुम वह लड़के हो, जो एक विशेष आदेश के द्वारा गए और अंतरतम को मिले, ए ? हम्म! और तुम वह लड़के हो, जिसके बारे में मैंने इस लामामठ के मठाध्यक्ष स्वामी से व्यक्तिगतरूप से सुना ? हम्म! और तुम–ठीक है, ठीक है, तुम सबसे ज्यादा खास हो–तुमने स्वयं मठाध्यक्ष स्वामी से सिफारिश पाई है। हम्म !'' उसने त्योरियॉ चढ़ाईं और बहुत दूर में देखता हुआ प्रतीत हुआ। मेरा अनुमान यह था कि वह यह निर्णय करने का प्रयास कर रहा था कि क्या मैं फिर, दुबारा अंतरतम को मिलूॅगा और क्या मैं फिर, मठाध्यक्ष स्वामी को मिलूॅगा। और–कौन जानता है ? एक महत्वकांक्षी व्यक्ति के आगे, एक छोटा बच्चा भी, उपयोग किया जा सकता है।

''मैं तुम्हारे लिए बहुत खास करनेवाला हूॅ। मैं तुम्हें पूरी पोशाक नयी, वह जो पिछले हफ्ते ही बनाई गई थी, देने जा रहा हूॅ। यदि अंतरतम ने तुम्हारा पक्ष लिया है, और मठाध्यक्ष स्वामी तुम्हारा पक्ष लेते हैं, और महान लामा मिंग्यार डोंडुप ने तुम्हारा पक्ष लिया है, तब मुझे देखना चाहिए कि तुम अच्छी तरह से पोशाकें पहनो ताकि, मुझे शर्मिन्दा किये बिना, तुम उनकी उपस्थिति में जा सको। हम्म'' वह मुड़ा और दूसरे कमरे, इस बड़े भण्डार के साथ जुड़े हुए एक उपभाग की तरफ चला। यहॉ नई पोशाकें थीं, जो भिक्षुओं द्वारा, लामाओं के निर्देशन में काम करते हुए, अभी बनाई गई थीं। उसने एक ढेर की ओर उॅगली लगाई और इशारा किया, जिन्हें अभी खूटियों पर, लटकाया नहीं गया था और उनमें से एक लेते हुए उसने कहा, ''इसे पहनो, इसे पहनकर देखो, ठीक है कि नहीं।'' जल्दी से मैंने इसे सावधानी से तह करते हुए, अपने कम्बल को हटाया, और तब एकदम नई पोशाक को पहनकर देखा। जैसा मैं

ठीक से जानता था, यदि किसी के पास एकदम नई पोशाक है, तो दूसरे वेदीसेवकों के लिए और भिक्षुओं के लिए भी, इसका आशय था कि इसकी कहीं से सिफारिश है और यह व्यक्ति किसी अधिकारी का आदमी है, जबकि एक पुरानी पोशाक, कईबार इस रूप में ली जाती थी कि कोई, बहुत लम्बे समय तक, वेदीसेवक रहा है, एक एकदम नई पोशाक संकेत थी–संहिता कि कोई महत्वपूर्ण था। इसलिए मैं एक नई पोशाक को पाकर, वास्तव में प्रसन्न था।

नई पोशाक मेरे ठीक से आ गई। ये अधिक मोटी थी और कुछ क्षणों के लिए, ये मेरे ऊपर रही थी और मेरे पहले से ठिठुरते हुए शरीर में, गर्मी का एक अहसास लाई थी। ''ये मुझे पूरी तरह ठीक बैठती है, स्वामी,'' मैंने कुछ खुशी के साथ कहा। ''हम्मममम! मेरा ख्याल है हम उसकी तुलना में इस से थोड़ा अच्छा कर सकते हैं। एक क्षण का इंतजार करो।'' उसने बड़बड़ाते और फुसफुसाते हुए, और बहुधा अपने मनकों में उंगलियॉ फिराते हुए, ढेर में नीचे तक देखा। अंत में, वह दूसरे ढेर के बगल से गया, और एक बहुत अच्छी गुणता वाले परिधान निकाले। एक आह के साथ, वह ठीक से गंभीर हुआ, ''ये खास खेप (batch) में से एक है, एक गलती से ये बहुत अच्छे कपड़े में से बन गई थी। अब इसे पहनकर देखो। मैं सोचता हूॅ कि ये तुम्हारे वरिष्ठों के ऊपर, बहुत अच्छा प्रभाव डालेगी।''

हॉ, इसके बारे में कोई सन्देह नहीं था। ये बहुत अच्छी पोशाक थी। ये मेरे ऊपर ठीक बैठी, मेरे पैरों तक ठीक नीचे आती हुई, शायद थोड़ी लम्बी, परन्तु इसका मतलब ये था कि मेरे बढ़ने की गुंजाइश थी, और ये एकदम नई पोशाक, मेरे लिए, अंतिम सबसे लम्बी होगी। कैसे भी, एक चीज, जो थोड़ी सी बड़ी थी, जिसे सामने से मोड़कर, हमेशा ही छोटा किया जा सकता था और सामने एक बड़ी जेब (pouch) लगाकर मैं अपने आसपास, इसमें अधिक सामान ले जा सकता था। मैं मुड़ा और घूमा, और वेदीसेवकों के स्वामी ने, सावधानी से मेरी ओर देखा, और तब अन्त में, उसने अपना सिर हिलाया और विचारणीय दुःख के साथ, ये टिप्पणी करने से पहले, अपने बटन खींचे, ''इतना दूर चला गया, हमें थोड़ा दूर जाना चाहिए था। तुम ये पोशाक रखोगे, मेरे बच्चे, और मैं तुम्हें दूसरी दूॅगा क्योंकि मैं देखता हूॅ कि एक तुम ही हो, जिसके पास कोई फालतू पोशाक नहीं है। मैंने इसे समझना मुश्किल पाया कि वह क्या कह रहा था क्योंकि वह फुसफुसा रहा था और वह अपनी पीठ मोडकर, पोशाकों में से ढ़ेर में से कुछ निकलता हुआ मेरी तरफ मुड़ा। अंत में, वह यह कहते हुए, एक दूसरी पोशाक के पास आया, ''इसे पहनकर देखो, क्या ये भी तुम्हें फिट बैठती है, मैं जानता हूॅ कि तुम वह लड़के हो, जिसे लामाओं के क्वार्टर में एक विशेष कमरा दिया गया है, इसलिए तुम्हारी पोशाक, अब तुमसे बड़े किसी लड़के के द्वारा नहीं छीनी जाएगी।''

मैं प्रसन्न हुआ। अब मेरे पास दो पोशाकें थीं, एक फालतू और एक रोज के काम के लिए। वेदी सेवकों के स्वामी ने काफी अरुचि के साथ मेरे कम्बल को देखा, और कहा, ''ओ हॉ, हम तुम्हें एक नया कम्बल देने जा रहे हैं। मेरे पास आओ और जो तुम्हारे पास है, उसे लाओ।'' उसने मेरे आगे और मुख्य भण्डारकक्ष में जल्दी की और एक भिक्षु को बुलाया, जो एक सीढ़ी अपने साथ ला रहा था। जल्दी से वह भिक्षु सीढ़ी के ऊपर गया और कुछ आलमारियों में से एक कम्बल निकाला। वह मेरी पोशाक से काफी भेद (contrast) कर रहा था, अलग हो रहा था, मात्र थोड़ी सी पीड़ा की कराह के साथ, वेदीसेवकों के स्वामी ने उसे खुद लिया और अपनी ऑखों को आधा बन्द किए हुए तथा एक अच्छी गुणबत्तता (quality) के कम्बल के साथ, थोड़े क्षणों के बाद वापस लौटते हुए, वापस बगल के कमरे में गया। ''इसे लो मेरे बच्चे, इसे लो'' वह थरथराया। ''ये हमारे अच्छे कम्बलों में एक है, जो गलती से, अच्छे माल से बन गया, इसे लो, और जब तुम मठाध्यक्ष स्वामी या अंतरतम से मिलो तो, जितना अच्छा मैंने तुम्हारे साथ व्यवहार किया है और जितनी भव्य पोशाकें तुम्हें दी हैं, उसे याद रखना।'' पूरी गंभीरता के साथ मैं तुम्हें कहता हूॅ कि, वेदीसेवकों के स्वामी ने, जब अपने अच्छी गुणता के इन अच्छे सामानों को जाते हुए देखा, उसने अपनी ऑखों के ऊपर अपने हाथ जोड़े।

''मैं तुम्हारा काफी ऋणी हूँ, आदरणीय स्वामी,'' ये मेरा जवाब था, ''मैं सुनिश्चित हूँ'' (यहॉ मेरी कूटनीति व्यवहार में आई!) ''कि मुझे इतने अच्छे कपड़े देने में, मेरे स्वामी लामा मिंग्यार डोंडुप, आपकी भलाई को बहुत जल्दी ही देख लेंगे। धन्यवाद!'' इसको अपनी छाती के साथ लगाए हुए मैं मुड़ा और भण्डारकक्ष से बाहर की ओर अपना रास्ता पकड़ा। जैसे ही मैंने ऐसा किया, सेवक भिक्षुओं में से एक ने दृढ़तापूर्वक मुझे बाहर इशारा किया, और जोर से नहीं हॅसने में, मुझे काफी दिक्कत हुई।

मैं, गलियारे में ऊपर की तरफ और लामाओं के क्वार्टरों के अहाते में पीछे गया। जब मैं अपने हाथों में एक पोशाक और एक कम्बल के साथ जल्दी कर रहा था, मैं अपने शिक्षक से लगभग टकरा गया। ''ओह, आदरणीय स्वामी!'' मैं जोर से चिल्लाया। ''मुझे खेद है, परन्तु मैं आपको देख नहीं सका।''

मेरे शिक्षक मेरी ओर ये कहते हुए मुझ पर हॅसे, ''तुम एक फेरी वाले विक्रेता की तरह दिखते हो, लोबसांग, ऐसा लगता है कि तुम सीधे ही, भारत के पहाड़ों से आते जा रहे हो। क्या तुमने किसी प्रकार से व्यापारी के रूप में शुरूआत कर दी है ?'' मैंने अपने दुर्भाग्य के विषय में बताया, और उन्हें बताया कि कैसे मेरी पोशाक नीचे की तरफ जाते हुए पूरी तरह फट गई थी। मैंने उन्हें ये भी बताया, कि वेदीसेवकों के स्वामी, एक लड़के को कह रहे थे कि उन्होंने सभी बच्चों को नंगे पैर जाने दिया होता। मेरे शिक्षक ने अपने कमरे की तरफ रास्ता लिया और हम वहॉ बैठे। तत्काल ही मेरे अन्दर ने मुझे ध्यान दिलाया कि वहॉ खाना नहीं है और सौभाग्य से, मेरे शिक्षक ने मेरे लिए, इस चेतावनी को सुन लिया, और वे मुस्कुराए और उन्होंने कहा, ''इसलिए, तुमने भी, अभी अपना नाश्ता नहीं लिया है ? हम दोनों एक साथ नाश्ता करें।'' इसके साथ उन्होंने अपने हाथ बाहर निकाले और चांदी की अपनी छोटी घण्टी को बजाया।

जबतक कि हमने अपना खाना समाप्त नहीं कर लिया, अपने सामने त्सम्पा रहते हुए, हमने कोई बात नहीं की। बाद में, जब भिक्षु ने सभी तश्तरियों को साफ कर दिया, मेरे शिक्षक ने कहा, ''इस प्रकार तुमने, वेदीसेवकों के स्वामी के ऊपर, अपनी छाप बनाई है ? तुमने अच्छी पोशाकों और नए कम्बल को को पाने के लिए एक पक्का प्रभाव बनाया है। मुझे देखना पड़ेगा, क्या मैं तुम्हारे साथ स्पर्धा कर सकता हूँ!''

''स्वामी, मैं कपड़ों के बारे में, बहुत उत्सुक हूँ क्योंकि यदि वेदीसेवकों के स्वामी कहते हैं कि हम सबको बिना चप्पल के जाना चाहिए, तो फिर हम सब बिना कपड़ों के क्यों नहीं जा सकते ?'' मेरे शिक्षक मेरे ऊपर हॅसे और उन्होंने टिप्पणी की, ''काफी वर्षों पहले, वास्तव में, लोग कपड़े नहीं पहनते थे और चूँकि वे कपड़े नहीं पहनते थे, वे किसी प्रकार भी कपड़ों की कमी महसूस नहीं करते थे, क्योंकि उन दिनों में, लोगों के शरीर, तापक्रम की बड़ी विस्तृत परास (wide range) की क्षतिपूर्ति करने के योग्य होते थे। परन्तु अब, कपड़ों का उपयोग करने के साथ, हम अशक्त हो गए हैं, और हमने अपने उष्मा–नियमन की यांत्रिकी (heat regulating mechanism) को उसका दुरुपयोग करते हुए नष्ट कर दिया है।'' वे, समस्या पर चिन्तन करते हुए, चुप हो गए। तब वह हॅसे और उन्होंने कहना जारी रखा, ''परन्तु क्या तुम, कुछ बूढ़े, मोटे, भिक्षुओं की, बिना किसी चीज के, यहॉ आसपास घूमते हुए, कल्पना कर सकते हो ? ये अक्सर दिख जाएगा! परन्तु कपड़ों का इतिहास बहुत दिलचस्प है क्योंकि, पहले प्रकरण में, लोग कपड़े बिल्कुल नहीं पहनते थे और इसप्रकार वहॉ कोई धोखेबाजी नहीं थी क्योंकि, प्रत्येक व्यक्ति, दूसरों के प्रभामण्डल को देख सकता था। परन्तु अंत में, उन दिनों की जनजातियों के नेताओं ने ये निर्णय किया कि, अपने आपको, नेताओं के रूप में दूसरों से भिन्न प्रदर्शित करने के लिये, उन्हें कुछ चीज चाहिए, इसलिए उन्होंने युक्तिपूर्वक सजाए गए, पंखों के गुच्छों का, या रंगों की कुछ पुताइयों (paintings) का, जो विभिन्न फलों, झरबेरियों आदि से बने थे, उपयोग किया परन्तु तब महिलाऐं सामने आईं; उन्होंने भी सजना चाहा। अतः और अधिक, युक्तिपूर्वक बनाये रखते हुए, उन्होंने

पत्तियों के गुच्छों का उपयोग किया।'' मेरे शिक्षक इन सब लोगों के विचारों के ऊपर हॅसे, और मैं अपने बारे में काफी अच्छी छवि निवेदन कर सका।

उन्होंने कहना जारी रखा, ''जब हर जाति के प्रमुख व्यक्ति और प्रमुख महिला ने अपने आपको पूरी तरह से सुसज्जित कर लिया, तब उस क्रम में अगली पंक्ति के लोगों को भी कुछ साजसज्जा की जरूरत हुई, और इसप्रकार वे प्रमुख व्यक्ति और प्रमुख महिला से, अपने आपको अविभेदनशील (indistinguishable) बनाने में समर्थ हुए, इसलिए प्रमुख महिला और प्रमुख पुरुषों ने सजावट में, कुछ और जोड़ना चाहा, और इस प्रकार ये मामला काफी लम्बे समय तक चलता रहा, नेतृत्व करने वाले हर व्यक्ति (leading man) ने और अधिक कपड़े पहने। अंत में नायिका महिलाओं (leading women) ने ऐसे कपड़े पहने, जो निश्चितरूप से सुझाव देने वाले (suggestive) थे, जिन अंगों को नहीं दिखाया जाना चाहिये था उनको आधा उधेड़ते हुए कपड़े–मुझे गलत मत समझना–जब लोग प्रभामण्डल देख सकते थे, तो उस समय कोई छलकपट, धोखेबाजी नहीं होती थी, युद्ध नहीं, कोई दो तरह का व्यवहार नहीं। ये केवल तभी से शुरू हुआ, जब लोगों ने कपड़े पहनना शुरू किया, उन्होंने प्रभामण्डल को देखने की योग्यता खो दी, और उनका अतीन्द्रियज्ञानी और दूरानुभूतिपूर्ण होना भी बंद हो गया।'' उन्होंने कठोरता से मेरी ओर देखा और कहा, ''अब तुम मेरी तरफ ध्यान दो, क्योंकि उस काम के लिए, जो तुम्हें बाद में करना होगा, ये तुम्हें, बहुत अधिक सहन कराने वाला होगा।'' मैंने ये दिखाने के लिए सिर हिलाया कि मैं वास्तव में ध्यान दे रहा हूँ।

मेरे शिक्षक ने कहना जारी रखा, ''एक अतीन्द्रियज्ञानी को, जो दूसरे के सूक्ष्मशरीर को देख सकता है, यदि वह किसी की बीमारी के, सही प्रेक्षण देने के लिए योग्य होना चाहता है, तो उसे बिना ढ़के हुए शरीर को देखने के योग्य होना पड़ता है, और जब लोग कपड़े पहनते हैं, उनका प्रभामण्डल दूषित हो जाता है।'' मैं कुछ आश्चर्य में उठ बैठा, क्योंकि मैं नहीं देख सकता था कि कपड़े किसप्रकार से प्रभामण्डल को प्रदूषित कर सकते हैं, और मैंने ऐसा कहा। मेरे शिक्षक ने शीघ्र ही मुझे उत्तर दिया : ''व्यक्ति नंगा है, इसलिए उस व्यक्ति का प्रभामण्डल, उस व्यक्ति से ही संभव होगा और दूसरी किसी चीज से नहीं। अब, यदि तुम याक के ऊन की पोशाक उस व्यक्ति पर डाल दो, तो तुम, याक के प्रभामण्डल के प्रभाव के साथ–साथ, व्यक्ति, जिसने याक को काटा, व्यक्ति, जिसने उसको धुना, और उससे ऊन बनाई, और वह व्यक्ति, जो वास्तव में उसे बुनता है, के प्रभावों को भी ले लेते हो। इसलिए, यदि तुम प्रभामण्डल, जब उसे कपड़ों में देखा जाए, को देखने के सम्बंध में परेशान हो रहे हो, तो तुम उस याक के इतिहास को, और उसके परिवार के संबंध में तत्काल बताने में सक्षम होओगे, जो तुम बिल्कुल नहीं चाहते।''

''परन्तु, स्वामी,'' मेरा उत्सुकतापूर्ण प्रश्न था, ''पहनावा प्रभामण्डल को कैसे दूषित करता है ?'' ''ठीक है, मैंने अभी तुम्हें बताया; हर चीज, जिसका अस्तित्व है, उसका खुद का प्रभाव क्षेत्र, उसका खुद का चुम्बकीय क्षेत्र होता है, यदि तुम खिड़की में से दृश्य को देखो, तो तुम चमकीली धूप को देख सकते हो, परन्तु यदि तुम खिड़की पर तेलीय रेशमी पर्दों को खींच दो, तुम देखोगे कि चमकीली धूप, तेलीय रेशमी पर्दों के प्रभाव के कारण, अब कुछ दूसरी तरह की हो गई है। दूसरे शब्दों में, जो तुम अब देख रहे हो, वह है नीले से रंग का प्रकाश और ये तुम्हें, ये बताने में कि सूर्य की धूप कैसी थी, बिल्कुल भी मदद नहीं करेगा।''

ज्यों ही उन्होंने कहना चालू रखा, वे कुछ व्यंगपूर्वक मेरे ऊपर मुस्कराए,'' वास्तव में, ये उल्लेखनीय है, कि लोग अपने कपड़ों को हटाने के लिए इतने अनिच्छुक हैं। मेरे पास हमेशा ये सिद्धांत रहा है कि लोगों के पास, एक पूरी प्रजाति, जिसके प्रभामण्डल को बिना कपड़ों के देखा जा सकता है, की स्मृति होती है। इसलिए आजकल, जो लोग बहुत से दोषयुक्त विचार रखते हैं और वे किसी दूसरे को इन्हें जानने देने का साहस नहीं कर पाते कि उनका खुद का दिमाग क्या है, वे शुद्धता और

भोलेपन के नाम पर, अपने शरीर के ऊपर ढोंग भरे, असंगत कपड़े पहनते हैं, जो दोषयुक्त होने का प्रतीक है।'' उन्होंने कुछ क्षणों के लिए प्रतिक्रिया की, तब टिप्पणी की, ''अनेक धर्म कहते हैं कि मनुष्य ईश्वर की छवि में बना है, परन्तु तब मनुष्य अपने शरीर के लिए, इतना शर्मिंदा क्यों होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य ईश्वर की छवि के लिए शर्मिंदा होता है। ये सब काफी उलझा देनेवाला है कि लोग कैसे चलते जाते हैं। तुम देखोगे कि, पश्चिम में लोग, कुछ खास क्षेत्रों में आश्चर्यजनक मात्रा में मांस को प्रदर्शित करते हैं, परन्तु वे दूसरे क्षेत्रों को इसप्रकार ढकते हैं कि ध्यान स्वतः ही, उधर आकर्षित हो जाए। दूसरे शब्दों में, लोबसांग, कई औरतें ऐसे कपड़े पहनती हैं, जो पूरी तरह से विचारोत्तेजक होते हैं; जब मैं पश्चिम में था, वे, जो ''समलैंगिक धोखेबाज (gay deceivers)'' कहे जाते थे, गद्दी लगाकर उन हिस्सों में पहनती थीं। ये सभी गद्दियॉ, इसप्रकार बनाई जाती हैं कि आदमी औरत की तरह, जो वह नहीं है, दिखाई दे। इसी तरीके से, मात्र कुछ वर्षों पहले, पश्चिम के पुरुष, अपने पाजामों में नीचे कुछ ऐसी चीज पहना करते थे, जिसे वे ''शिष्न खण्ड (cod pieces)'' कहते थे। अर्थात्, वहॉ पदार्थ की कुछ निश्चित गद्दियॉ होती थीं, जो ये प्रभाव बताने के लिए अर्थ रखती थीं कि आदमी उदारतापूर्वक सम्पन्न है और इसप्रकार एक वीर्यवान सहभागी होगा। दुर्भाग्यवश, सबसे अधिक गद्देवाला, सबसे कम वीर्यवान था! परन्तु कपड़ों के साथ, दूसरी बड़ी दिक्कत ये है कि ये ताजी हवा को बाहर रोकते हैं। यदि लोग कम कपड़े पहनें, तो उनको वायु का स्नान मिलेगा, जो उनके स्वास्थ्य को अच्छे तरीके से सुधारेगा; तब कैंसर कम होंगे, और क्षयरोग (TB) काफी कम होगी, क्योंकि जब कोई व्यक्ति पूरी तरह कपड़ों में लपेटा हुआ होता है, हवा वहॉ से प्रवाहित नहीं हो सकती और जीवाणु बहुगुणित होते रहते हैं।''

मैंने इसके संबंध में सोचा, और अभी एक क्षण के लिए भी यह नहीं समझ सका कि यदि कोई व्यक्ति कपड़े पहनता है तो जीवाणु कैसे बहुगुणित होंगे और मैंने अपने उस विचार को व्यक्त भी किया। मेरे शिक्षक ने उत्तर दिया : ''लोबसांग! यदि तुम जमीन की तरफ देखो तो तुम आसपास, तमाम कीट देखोगे, परन्तु यदि तुम अपने सड़े हुए लट्ठे को उठाओ या किसी बड़े पत्थर को खिसकाओ, तो तुम्हें उसके नीचे, सब प्रकार की चीजें, कीट, कीड़े, और विभिन्न प्रकार के प्राणी, जो वहॉ अंधेरे और निर्जन स्थानों में रहते हैं और बच्चे पैदा करते हैं, मिल जाऐंगे। इसीप्रकार, शरीर भी जीवाणुओं और कीटाणुओं से भरा हुआ है। प्रकाश की क्रिया, जीवाणुओं और कीटाणुओं को बहुगुणित होने से रोकती है, ये शरीर को स्वस्थ बनाए रखने का प्रभाव रखती है। परन्तु जैसे ही एक आदमी रुकी हुई हवा को, मोटे कपड़ों के अंधेरों के अन्दर, विश्राम में आने देता है तो, उसमें सबप्रकार के जीवाणु, बहुगुणित होने लगते हैं।'' उन्होंने मुझे काफी गम्भीरता से देखा, ज्यों ही उन्होंने कहा ''बाद में जब तुम डॉक्टर हो जाओगे, रोगियों को इलाज करते हुए, तुम देखोगे कि, यदि कोई पट्टी बहुत लम्बे समय तक उपेक्षित रहती है तो उसके नीचे तमाम कीड़े–मकोड़े हो जाते हैं, ठीक वैसे ही, जब जमीन से पत्थर को उठाया जाता है, कीटाणु, उसके नीचे इकट्ठे हो जाते हैं। परन्तु ये वह चीज है, जिसके साथ तुम भविष्य में व्यवहार करोगे।''

वे अपने पैरों पर खड़े हुए, अंगड़ाई ली और उन्होंने कहा, ''परन्तु अब हमें बाहर जाना है। मैं सोचता हूँ, मैं तम्हें तैयार होने के लिए पॉच मिनट दूँगा और तब हम घुड़साल की तरफ चलेंगे क्योंकि हम साथ–साथ एक यात्रा पर जा रहे हैं।'' इसके साथ उन्होंने मुझे अपनी फालतू पोशाक और कम्बल को उठा लेने और उन्हें मेरे अपने कमरे में ले जाने का इशारा किया। मैंने उनको नमन किया, और अपने बण्डल को इकट्ठा किया और बीच के दरवाजे से होता हुआ मुड़ा। एक क्षण के लिए, मैं तैयार होने में व्यस्त रहा और तब मैंने अपना रास्ता, जैसा निर्देश दिया गया था, घुड़साल की तरफ पकड़ा।

ज्यों ही मैं बाहर, आंगन के खुले हिस्से में गया, मैं आश्चर्य के साथ रुक गया; वहॉ एक बड़ी शोभायात्रा इकट्ठी हो रही थी। कुछ क्षणों के लिए, मानो मैंने आश्चर्य किया कि ये सब किसलिए था, मैं वहॉ एक दीवार के विरुद्ध लटका हुआ, एक पैर से दूसरे पैर तक हिलते हुए, घूमता रहा। एक क्षण के

लिए मैंने सोचा, मठाधीशों में से एक, चलने के लिए तैयार हो रहा है परन्तु तभी मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप प्रकट हुए और तेजी से आसपास देखा। मुझे देखते हुए उन्होंने इशारा किया। मेरा दिल डूब गया, जब मैंने अनुभव किया कि ये सारी हलचल हमारे लिए थी।

मेरे शिक्षक के लिए एक घोड़ा, और एक छोटा घोड़ा मेरे लिए था। इसके अतिरिक्त, हर एक–एक घोडे पर सवार, चार सेवक भिक्षु थे और इसतरह से वहॉ वण्डलों और पैकेटों से लदे, परन्तु इसतरह से लदे हुए कि वे अधिक वजन नहीं ले जा रहे थे, जिससे कि उनमें से दो को, किसी भी समय, फालतू के रूप में उपयोग किए जा सके, इसलिए कि भारी आदमी अपने घोड़ों को अधिक थका न दें, चार घोड़े और थे। वहॉ नकुओं से होकर, काफी गहरी सांस ली जा रही थी, टापों की भगदड़ हो रही थी, वे पूछों को हिला रहे थे। मैं, एकबार भी अपने घोड़े के पीछे न चलने की सावधानी रखते हुए, जिससे कि वह खिलाड़ी घोड़ा, मुझे ललचाए नहीं, और तब वह एक जोरदार बल के द्वारा मुझे धक्का देते हुए, मेरी छाती के बीच में अपनी टाप न मार दे, और वास्तव में कलावाजी खाते हुए जमीन पर न पटक दे, अत्यधिक सावधानी काम में लाते हुए आगे चला। तब से, मैंने सावधानी लेना शुरू कर दिया है।

''ठीक है, हम ऊपर पहाड़ों में जा रहे हैं, और तुम मेरे सहायक के रूप में जा रहे हो!'' जब उन्होंने कहा कि वास्तव में, ये मेरे प्रशिक्षण की एक दूसरी स्थिति है, दूसरा चरण है, उनकी आखें चमकीं। हम साथ–साथ अपने घोड़ों पर चढ़े, और मुझे आबंटित एक घोड़े ने, जैसे ही उसने मुझे पहचाना, अपना सिर तेजी से हिलाया; उसकी आखें लुढ़की और उसने कटु विरोध में मना किया। मेरी पूरी सहानुभूति उसके साथ थी, क्योंकि वह मुझे जितना पसन्द करता था, मैं उसे उतना ही अधिक नापसन्द करता था, परन्तु–एक साईस भिक्षु ने अपने जोड़े हुए हाथ आगे बढ़ाए और मुझे घोड़े पर चढ़ने में मदद की। मेरे शिक्षक पहले से ही अपने घोड़े पर सवार हो गए थे और प्रतीक्षा कर रहे थे। साईस भिक्षु ने फुसफुसा कर कहा, ''ये शान्त घोड़ा है, तुम्हें इससे कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए–तुमको भी नहीं !''

मेरे शिक्षक ने, ये जॉचते हुए कि मैं उनके ठीक पीछे था, अपने आसपास देखा, और चारों भिक्षु सेवक भी अपनी स्थितियों में थे, और चारों लदे हुए घोड़े, एक लम्बी लगाम से, साथ बंधे हुए थे। तब उन्होंने अपना हाथ उठाया और हम सवार होकर पहाड़ों के नीचे की तरफ चले। मुझे आबंटित घोड़ों में, सबमें एक समान बात लगी, जब कभी एक विशेष ढलानवाला टुकड़ा आता तो वह खतरनाक प्राणी अपने सिर को नीचे झुकाता और मुझे, अपने आपको फिसलने से रोकने के लिए, उसकी गर्दन से चिपकना पड़ता। इसबार मैंने अपने पैर, उसके कानों के पीछे चिपका दिए–उसने इसे उतना अधिक पसन्द नहीं किया, जितना कि मैंने उसके सिर को नीचे जाते हुए पसन्द किया। सीढ़ीदार सड़क झटके वाली थी, वहॉ काफी आवागमन था, और मैंने अपनी सारी क्षमताऐं, अपने घोड़े के ऊपर टिके रहने में केन्द्रित कर ली थीं। परन्तु मैं, जैसे ही हमने एकबार एक मोड़पर, ऊपर और उद्यानों के आरपार, जहॉ एकबार कभी मेरा घर था और अब वह मेरा घर बिल्कुल नहीं था, देखने के लिए मोड़ने की व्यवस्था कर सका।

हम नीचे, पहाड़ों में नीचे गये और लिंगखोर रोड में बांयी ओर मुड़े। हम नदी के पुल के ऊपर, पैर घसीटते हुए, धीमे–धीमे चले और जब हम चीनी मिशन के सामने आए, हमने, सड़क, जो काश्या लिंगा को जाती थी, पर अचानक ही, दांयी ओर का मोड़ लिया और मैंने आश्चर्य किया कि एक घेरा उस छोटे पार्क की ओर क्यों जा रहा होगा। मेरे शिक्षक ने मुझे, ''पहाड़ों के'' सिवाय, कोई संकेत नहीं दिया था कि हम कहॉ जा रहे थे और चूँकि वहॉ ल्हासा के सब तरफ, हमको कटोरे की शक्ल में घेरे हुए पहाड़ थे, तब वहॉ हमको लक्ष्य का निर्देशन करने के लिए कोई भी नहीं था। अचानक, मैं आनन्द से उछल पड़ा, इतना अचानक कि मेरे दुबले घोड़े ने, ये सोचते हुए कि मैं उस पर हमला या ऐसा ही

कुछ, कर रहा हूँ, नीचे दुबकना शुरू कर दिया। तथापि, मैं लटकने की व्यवस्था कर सका और इतनी कसकर उसकी लगाम खींची कि उसका सिर ठीक पीछे मुड़ गया, तब शीघ्र ही, मैं उसे शान्त कर सका और इसप्रकार मैंने एक सबक सीखा–लगाम को कसकर पकड़ो, और मैंने आशा की, तुम्हारी बैठक सुरक्षित है! हम एक स्थिर सैर पर गए और शीघ्र ही, एक चौड़ी होती हुई सड़क पर पहुँचे, जहाँ काफी संख्या में, नौकाओं में से उतरते हुए व्यापारी थे। मेरे शिक्षक घोड़े पर से उतरे और उनके वरिष्ठ भिक्षुसेवक भी घोड़े पर से उतरे और नाविकों की तरफ चले। कुछ क्षणों के लिए कुछ वार्तालाप हुआ और भिक्षु, ये कहते हुए वापस आ गए, '' सब ठीक है, आदरणीय लामा! अब हम चलते हैं।'' तत्काल ही, वहाँ हड़बड़ हुई और भ्रम पैदा हुआ। सेवक भिक्षु, अपने घोड़ों पर से उतर गए और सब लदे हुए घोड़ों के आसपास इकट्ठे हो गए। भारों को उतार लिया गया और नाववाले की नाव में चढ़ा दिया गया। तब सभी घोड़े, लम्बी रस्सी से, आपस में एक दूसरे के साथ, बांध दिए गए, और अलग–अलग घोड़ों पर चढ़े हुए, दो सेवक भिक्षुओं ने उन्हें नदी में अन्दर घुसाया। जब उन्होंने बाहर की तरफ चलना शुरू किया, मैंने भिक्षुओं को, अपने आसपास, अपनी कमरों के पीछे, अपनी पोशाकों को कसकर खींचते हुए और घोड़ों को बहादुरी के साथ दूसरी तरफ पार जाने के लिए सावधानी से पानी में उतरते हुए और तैरते हुए देखा। मेरे शिक्षक, मैंने देखा कुछ आश्चर्य के साथ, पहले से ही नाव में थे और मुझे भी प्रवेश करने का इशारा कर रहे थे। इसलिए अपने जीवन में पहली बार, अपने पीछे दूसरे दो सेवकों के आते हुए, कठिनाई से, मैं एक नाव पर चढ़ा। अपने सहायकों को कुछ शब्द कहते हुए, नाविकों ने नावों को आगे की तरफ चला दिया। एक क्षण के लिए, वहाँ चक्कर खाने जैसा, एक अनुभव हुआ क्योंकि नाव एक वृत के चारों तरफ नाची।

ये नाव, सावधानीपूर्वक एक दूसरे के साथ सिली हुई और जलरोधी बनाई हुई याक की खाल की बनी हुई थी। तब चीजों को हवा भरकर फुलाया गया। लोग और उनका सामान अन्दर आया, और नाविक ने लम्बी पतवारें, डाडें ली और धीमे से पैडल मारकर, नदी के पार चलाया। जब कभी हवा उसके विरुद्ध होती, वह लम्बा रास्ता, लम्बा समय लेता, परन्तु वह हमेशा ही, वापसी यात्रा में, इसकी पूर्ति कर लेता था क्योंकि तब ये मात्र मार्गनिर्देशन और हवा बहने का प्रश्न होता।

मैं, पानी से होकर, उस पहली यात्रा के संबंध में जानने के लिए, अत्यधिक उत्तेजित था। मैं जानता हूँ कि मैंने खाल की नाव के किनारे पकड़ रखे थे, इसलिए मेरी उँगलियों को, नुकीले नाखूनों से, घुस जाने का, थोड़ा खतरा था। किसी भी मामले में, मैं हलचल करने से डरा हुआ था क्योंकि हर बार, जब मैंने कुछ हिलाने की कोशिश की, मेरे नीचे कुछ हुआ। ये लगभग ऐसा था, मानो हम शून्य के ऊपर टिके हों, और ये कुल मिलाकर ऐसा नहीं था कि हम किसी बड़े ठोस पत्थर के फर्श के ऊपर, जो नाच नहीं रहा हो, टिके हों। इसके अतिरिक्त, पानी इतना अस्थिर था और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मैंने काफी खाना खा लिया है, क्योंकि उत्सुक पछतावे ने मेरे ऊपर पेट में प्रहार किया और मैं बहुत डरा हुआ था कि मैं इन सब लोगों के सामने दिल से बीमार हो जाऊँगा। तथापि, अपनी सांस को तर्क पूर्ण तरीके से अंतरालों के बीच रोकते हुए, मैंने अपने सम्मान को बचाए रखने की व्यवस्था की, और शीघ्र ही, नाव एक कंकड़युक्त छिछले किनारे पर जाकर टिकी और हम उतरे।

मेरे शिक्षक की अगुआई में, और उनसे आधे घोड़े की दूरी पर पीछे मैं, तब दो–दो करके चढ़ते हुए चार भिक्षु सेवक, और उसके बाद, चार लदे हुए घोड़े, हमारा जलूस दुबारा से इकट्ठा हुआ। मेरे शिक्षक ने, ये निश्चित करने के लिए कि हर आदमी तैयार था, आसपास देखा और तब उनका घोड़ा सुबह की तरफ, आगे बढ़ा।

हम बैठे, और, और बैठे (we sat and sat), जबकि हमारे घोड़े झूमझूम के चले। हम, हर समय, पश्चिम की ओर, दिशा जिसमें सुबह समाप्त हो गई थी, चल रहे थे। क्योंकि हम कहते हैं कि सुबह को अपने साथ लाता हुआ सूर्य, पूर्व में उदित होता है और पश्चिम की तरफ यात्रा करता है।

शीघ्र ही, सूर्य ने हमको पीछे छोड़ दिया और ऊपर जाकर मर गया। कोई बादल नहीं थे, और सूर्य की किरणें, वास्तव में, चुभ रही थीं, परन्तु जब हम बड़ी चट्टानों की छायाओं में आए, ठण्ड और कठोर हो गई थी क्योंकि वहॉ हमारी ऊॅचाई पर, सूर्य की गर्म किरणों और छायाओं की ठण्डक को संतुलित करने के लिए, हवा अपर्याप्त थी। हम शायद एक और घंटे के लिए सवारी करते रहे, और तब मेरे शिक्षक स्पष्टरूप से, पगडण्डी के उस भाग पर आए, जिसका वे रुकने के स्थान के रूप में प्रयोग करते थे। बिना किसी संकेत के, जो मैं देख सका, भिक्षु अपने घोड़ों से उतर गए और तुरन्त ही, और पड़ौस की तरफ, पर्वत की तरफ, झरने की तरफ, पानी लाने के लिए जाते हुए, सूखे हुए गोबर से, जिसको हम ईंधन के रूप में उपयोग करते थे, पानी को उबालना शुरू किया। लगभग आधे घंटे में, हम अपना त्सम्पा पाते हुए नीचे बैठे थे, और मैं निश्चितरूप से, इसकी आवश्यता महसूस कर रहा था। घोड़ों को भी चारा दिया गया, और तब उन सबको पर्वत की तरफ झरने की तरफ ले जाया गया ताकि उनको पानी पिलाया जा सके।

मैं अपनी पीठ को, एक बडी चट्टान, एक बड़े पत्थर, जो चाकपोरी के मन्दिर की इमारत के बराबर बड़ा दिखाई देता था, के सहारे टिकाकर बैठा। मैंने अपनी ऊॅची स्थिति से, ल्हासा की घाटी के पार, बाहर की तरफ देखा; हवा एकदम साफ थी, कोई कोहरा नहीं, कोई धूल नहीं, और हम हर चीज को एकदम स्पष्टता से देख सकते थे। हम पश्चिम द्वार पर जाते हुए तीर्थयात्रियों को देख सकते थे, हम व्यापारियों को देख सकते थे, और हम काफी पीछे देख सकते थे, पगडण्डी के नीचे और प्रसन्नता की नदी के आसपास, नाविकों को यात्रियों का अपना दूसरा फेरा लाते हुए देख सकते थे।

शीघ्र ही, ये चलने का समय था, इसलिए घोड़े दुबारा से लादे गए और हम सब उनपर सवार हुए, और तब ऊपर पहाड़ी रास्ते पर चले। गहरी–गहरी हिमालय की तलहटी में जाते हुए, शीघ्र ही, हमने स्थापित सड़क को छोड़ दिया, जो अन्त में भारत की तरफ जाती थी और हम बांयी तरफ मुड़े जहॉ, सड़क–एक पगडण्डी, इस समय–ढालू और ढालू होती चली गई, और जहॉ हमारी प्रगति धीमी और धीमी होती चली गई। हम देख सकते थे, कि हमारे ऊपर, एक छोटा लामामठ, एक पटिया के ऊपर टिका था। मैंने इसको बड़ी अभिरुचि के साथ देखा क्योंकि ये मेरे लिए, मोहित करनेवाला स्रोत था। ये थोड़े भिन्न श्रेणी का लामामठ था, एक श्रेणी, जिसमें भिक्षु और लामा, सभी विवाहित थे और वे अपने परिवारों के साथ भवनों में रहते थे।

हम घंटों के बाद घंटों तक, चलते गए और चलते गए और शीघ्र ही, इस भिन्न श्रेणी के लामामठ के तल में पहुॅचे। हम भिक्षुओं और भिक्षुणिओं को साथ–साथ घूमते हुए देख सकते थे और मैं ये देखकर पूरी तरह आश्चर्य में था कि, भिक्षुणियॉ भी अपने सिर को मुड़ाए हुए थीं। यहॉ उनके चेहरे काले थे, चेहरे इतने चमकते हुए कि तब मेरे शिक्षक ने मुझे फुसफुसाकर कहा, ''यहॉ काफी पथरीले तूफान होते हैं, इसलिए वे सभी ग्रीस (greese) का मोटा मुखोटा पहनते हैं, जो खाल को बचाकर रखता है। बाद में हमें भी, ये चमड़े के मुखोटे पहनने पड़ेंगे।''

ये बहुत सौभाग्यशाली चीज थी कि मेरा घोड़ा निश्चित पैरवाला (sure footed) था और पहाड़ियों की पगडंडियों के बारे में, मुझसे अधिक जानता था क्योंकि मेरा पूरा ध्यान, छोटे लामामठ की ओर था। मैं छोटे बच्चों को खेलते हुए देख सकता था, और इसने मुझे, वास्तव में, समस्या में उलझा दिया कि, जो ब्रम्हचारी जीवन जीते हैं और दूसरे जो विवाहित होते हैं, ऐसे भिक्षु क्यों होने चाहिए, और मैंने आश्चर्य किया कि समान धर्म की दो शाखाओं के बीच ये ऐसा अन्तर क्यों होना चाहिए। हमारे गुजरने पर, भिक्षुओं और भिक्षुणिओं ने ऊपर की ओर देखा और फिर हमारे ऊपर कोई ध्यान नहीं दिया, (उन्होंने) हमारे ऊपर थोड़ा ही ध्यान दिया, मानोकि हम व्यापारी रहे हों।

हम चढ़ते गए और चढ़ते गए, और हमने अपने ऊपर, सफेद और मटमैले रंग की एक इमारत देखी, जो चट्टान के किनारे पर, पूरी तरह से पहुॅचने योग्य, नए सिरे पर टिकी हुई थी। इस पर, मेरे

शिक्षक ने इशारा किया, ''उस आश्रम पर, ये वह स्थान है, जहॉ हम जा रहे हैं, लोबसांग। हमको वहॉ सुबह पहुॅचना है क्योंकि रास्ता, वास्तव में खतरनाक है, आज रात को हम यहीं चट्टानों पर सोऐंगे।''

हम सवार होकर, शायद एक और मील चले, और तब हम, चट्टानों के झुण्ड के बीच में रुके, बड़ी चट्टानें, जो लगभग एक कटोरा जैसा बना रही थीं। हम चट्टानों में होकर, पहाड़ों पर चढ़े और तब हम सभी उतरे। घोड़ों को रस्सी से बांधा गया और खिलाया गया; हमने अपना त्सम्पा लिया और तब–खीचे हुए पर्दे की तरह से, रात हमारे ऊपर थी। मैंने अपने आपको, कम्बल में लपेटकर लुढका लिया और दो चट्टानों के बीच में झांका। मैं चाकपोरी और पोटाला से जगमगाती विभिन्न रोशनियों को देख सकता था, चन्द्रमा बहुते तेजी से चमक रहा था और प्रसन्नता की नदी, चांदी के नदी के रूप में इसका नामकरण ठीक ही किया गया था, क्योंकि ये शुद्धतम चमकदार चांदी की पट्टी के रूप में चमक रही थी। रात शान्त थी, हवा की कोई झलक नहीं, कोई हलचल नहीं, रात की चिड़ियॉ भी नहीं बोल रही थीं। अपने विभिन्न रंगों की पराकाष्टाओं में, ऊपर तारे चमक रहे थे। तत्क्षण, मैं नींद में सो गया।

मुझे, मन्दिर की सेवाओं की किसी हड़वड़ी के बिना, किसी चीज की कोई खलबली नहीं, रात भर का अच्छा आराम मिला परन्तु सुबह, जब मैं जगा, मैंने महसूस किया कि मैं याक के झुण्ड द्वारा कुचला गया हूॅ। और मैंने महसूस किया कि हर हड्डी दर्द कर रही थी। जब मुझे याद आया कि, किसी भी प्रकार की सुविधा के साथ, मैं कम्बख्त घोड़े पर बैठने के योग्य भी नहीं होऊॅगा और मैं आशा करता था कि वे भी ऐसे ही दर्द कर रहे होंगे, यद्यपि इसके संबंध में मुझे गम्भीर संदेह थे। शीघ्र ही, हमारे छोटे शिविर में, सेवाधारी भिक्षुओं की, जो त्सम्पा तैयार कर रहे थे, हलचल हुई। जब वे ऐसा कर रहे थे, मैं दूर घूमता रहा और ल्हासा की घाटी के पार ताकते हुए बाहर खड़ा था। तब मैं मुड़ा और मैंने लगभग चौथाई मील दूर ऊपर, साधू की कुटी पर, ऊपर की ओर देखा। ये एक अनोखा स्थान दिखाई दिया, इसने मुझे उन चिड़ियों के घौंसले की याद दिलाई, जो किसी घर में, किसी दीवार के सहारे कसकर टिके रहते हैं, और जो हमेशा गिरने की उम्मीद में रहते हैं और किसी भी समय टूटकर खराब हो सकते हैं। मैं अपने रास्ते या किसी भी दूसरे रास्ते को, जो वहॉ साधू की कुटिया तक पहुॅच सकता हो, नहीं देख सका।

मैं टहलता हुआ पीछे आया और अपना त्सम्पा लिया, और लोगों की बातों को सुना। शीघ्र ही–जैसे ही हमने अपना नाश्ता खत्म किया–मेरे शिक्षक ने कहा, ''ठीक है, हमको चलना पड़ेगा, लोबसांग। घोड़े और सेवक भिक्षुओं में से तीन, यहॉ रहेंगे, हम और सेवकों में से एक, ऊपर चलेगा।'' मेरा दिल इस विचार पर डूब गया, मैं पहाड़ों के बगल से, पूरे रास्ते पर, कैसे चल पाऊॅगा ? मैं निश्चिंत था कि यदि घोड़े नहीं चल सके तो मैं नहीं जाऊॅगा। तथापि, घोड़ों में से एक से, रस्से प्राप्त किए गए और सेवक भिक्षु के ऊपर लपेट दिए गए। तब मैं एक थैला लेकर चला, मैं नहीं जानता किसका था, क्या था, और मेरे शिक्षक ने दूसरा लिया, जबकि भारी भिक्षुक सेवक ने तीसरा लिया। तीन सेवक भिक्षु पीछे छोड़े गए, वे अत्यन्त प्रसन्न दिखाई दिए क्योंकि, उनको अकेले, बिना किसी देखभाल के, सिवाय घोड़ों को देखने के, बिना कुछ किए हुए, कुछ समय मिल रहा था, और हम, चट्टानों के बीच में, मुश्किल से एक पैर टिकाने की जगह पाते हुए, जब हम कर सकते थे, परिश्रम से ऊपर की तरफ, यात्रा पर चले। शीघ्र ही रास्ता बहुत खराब, और बहुत खराब, हो गया, और सिरे से दो पत्थरों को बांधकर रस्सा फैंकते हुए, सेवक भिक्षु ने अगुआई की। वह (रस्सा) फैंकता, तेजी से एक झटका लगाता, और पत्थर, रस्से में फंदा लगाते हुए झूलते और तब वह उनको, ये देखने के लिए कि ये सीधा था, खींचता। इसके बाद, वह अपने आपको, रस्से के सहारे ऊपर की तरफ खींचता। तब सिरे पर पहुॅचते हुए, वह उसे स्थिर करता, जिससे कि मेरे शिक्षक और मैं, अपना खतरनाकनुमा धीमे वाला रास्ता, तय कर सकूॅ। ये विधि समय–समय पर दोहराई जाती थी।

अंत में, एक विशेष, विकट, प्रयास के बाद, हम चट्टान पर, एक सपाट जगह (platform), एक

सपाट जगह, जो शायद तीस फुट चौड़ी थी और स्पष्टरूप से, युगों पुराने हिमस्वखलन के द्वारा गढ़ी गई थी, पर पहुॅचे। जैसे ही, मैं धन्यवाद देता हुआ वहॉ पहुॅचा और पहले अपने घुटनों, और तब अपने पैरों को चढ़ाते हुए, अपने आपको किनारे से ऊपर खींचा, मैंने अपनी निगाह दांयी ओर को घुमाई और साधु की वह कुटी, वहॉ से कई फीट दूर थी।

कुछ क्षणों के लिए, हम में से हर एक हॉफते हुए, जबतक कि हमने अपनी सांस वापस प्राप्त की, हम वहॉ खड़े हुए। मैं दृश्य से मोहित हो रहा था; मैं नीचे, पोटाला की स्वर्णिम छत के ऊपर देख सकता था। मैं चाकपोरी के ऑगनों में भी देख सकता था। मैं स्पष्टरूप से देख सकता था कि जड़ी बूटियों का एक ताजा भार, अभी आकर पहुॅचा है, क्योंकि वह स्थान एक बिक्षुब्ध छत्ते की तरह से था। भिक्षु, सभी दिशाओं में भागदौड़ कर रहे थे, वहॉ पश्चिमी दरवाजे से भी काफी आवागमन था। परन्तु तब मैंने आह भरी, ये मेरे लिए नहीं था, बदले में मुझे बेवकूफी भरे पहाड़ों पर, चढ़ते हुए और साधुओं से मिलने के लिए, साधु की कुटियों में जाना पड़ा, जहॉ किसी मूर्ख को छोड़कर, ऐसी दीवारबन्द कुटियों में कोई रहेगा ?

अब वहॉ सक्रियता के कुछ चिन्ह् दिखे, क्योंकि साधू की कुटी में से तीन लोग पहुॅचे। एक बहुत, बहुत बूढ़ा था और दो जवानों द्वारा उसे सहारा दिया जा रहा था। जैसे ही वे हमारी तरफ आए, हमने दुबारा से अपना सामान उठाया और साधु की कुटी की ओर आगे बढ़े।

अध्याय पन्द्रह

बूढ़ा आदमी अन्धा–पूरी तरह अन्धा था। मैंने आश्चर्य के साथ उसकी ऑखों में देखा, वे विशिष्ट थीं। कुछ समय के लिए मैं ये तय नहीं कर सका कि वह क्या था, जिसने मुझे सोचने को मजबूर किया, वे इतनी अनजान थीं, और तब मैंने सुना कि उसे किस प्रकार अन्धा किया गया था।

तिब्बत में साधु, साधुओं के गहरे प्रकोष्ठों में कैद रहते हैं। ये प्रकोष्ठ पूरी तरह से, और एकदम बिना प्रकाश के होते हैं, और यदि व्यक्ति, तीन साल या सात साल के बाद, जब वह महसूस करता है कि उसका स्वयं थोपा हुआ त्याग समाप्त होना चाहिए, बाहर आना चाहता है, तब वह एक विचारणीय समय लेता है। पहले छत में एक बहुत छोटा छेद बनाया जाता है, जिससे कि प्रकाश के बहुत हल्के चिन्ह वहॉ प्रवेश कर सकें। कई दिनों के बाद, छेद को थोड़ा बढ़ाया जाता है ताकि शायद, एक महीने बाद, जब वह आदमी दुबारा देखने के योग्य हो, क्योंकि, कैद की इस अवधि में, ऑखों के तारे (pupil), पूरी तरह से फैल जाते (dilated) हैं और यदि प्रकाश अचानक उनमें प्रवेश करे, तो आदमी तुरन्त ही, एकदम अन्धा हो जाता है। ये बूढ़ा आदमी, एक प्रकोष्ठ के अन्दर, जिसकी एक कोर गिरती हुई पहाड़ी से टकरा गई थी और टूट गई थी, में रहा था। एक क्षण, साधु प्रकोष्ठ में बैठा हुआ था, जहॉ वह पिछसे कुछ बीस सालों से बैठा हुआ था; अगली चीज, भयानक टकराहट और शोर थी और उसकी खूँटी की बगली, पूरी तरह तोड़ दी गई और वह बूढ़ा आदमी, सीधे–सीधे जलते हुए सूर्य को देख रहा था। वह तुरन्त ही अन्धा हो गया।

मैंने वह सुना, जो वह बूढ़ा आदमी, मेरे शिक्षक को बता रहा थाः ''इसलिए परम्पराओं के अनुसार, हमने उसे, पहले दिन, और दूसरे दिन, और तीसरे दिन, खाना दिया परन्तु खाना छुआ नहीं गया, और इसप्रकार हमारे भाई ने कोई उत्तर नहीं दिया। हमारा विश्वास है कि उसकी आत्मा, उसके शरीर के खाली खोल में से बाहर उड़ चुकी थी।'' मेरे शिक्षक ने बूढ़े आदमी को, उसकी बॉह से यह कहते हुए उठाया, ''परेशान मत हो मेरे भाई, क्योंकि हम इस मामले में देखेंगे। शायद, तुम हमें प्रकोष्ठ की तरफ ले जाओगे ?''

दूसरे लोग मुड़े, और अपने छोटे आंगन में और उसके पार, रास्ते की अगुआई की। बांयी तरफ, छोटी–छोटी कोठरियों की एक श्रंखला थी। मैंने देखा, बहुत छोटी, सुविधाओं से पूरी तरह वंचित, पॉच कोठरियॉ, क्योंकि वे केवल कोठरियॉ थीं, पहाड़ की इस चट्टानी बगल से, केवल पत्थर की गुफाऐं, कोई मेज नहीं, कोई टंका नहीं, कुछ नहीं; केवल एक पत्थर का फर्श, जिसके ऊपर भिक्षु बैठ सकता है या नींद में लेट सकता है। हम उन पर से गुजरे और हम एक बड़े अंधेरे कमरे में गए। एक कमरा, जो जोखिम भरी चट्टान पर, एक पहाड़ के बगल से उकसाया हुआ टिका था। मुझे ये युक्ति हिलती हुई सी दिखाई दी, परन्तु स्पष्टरूप से, ये वहॉ सैंकड़ों सालों से थी।

इस उदास कमरे के केन्द्र में एक दूसरा कमरा था। जब हम इसमें से होकर गए, उसका अंधकार बढ़ता गया। मक्खन के दीपक लाए गए थे, और हम एक छोटे गलियारे में प्रविष्ट हुए, जो एकदम अंधेरा था। लगभग दस कदम और, हम एक खाली दीवार के सामने आए। मक्खन के दीपक, एक मन्द सी चमक दिखा रहे थे, जो अंधकार को औरबढ़ाती हुई लगी। मेरे शिक्षक ने, दीपकों में से एक को लिया और उसे लगभग छाती के तल पर रखा और तब मैंने देखा कि वहॉ एक जड़े हुए जाल वाला दरवाजा था। मेरे शिक्षक ने उसे खोला और लगभग अन्दर महसूस किया, जो अलमारी जैसा दिखाई देता था। उसके अन्दर की तरफ आलमारी पर, उन्होंने जोर से थप्पड़ मारा और सावधानीपूर्वक, सुना और उन्होंने दीपक को अन्दर रख दिया और मैंने स्पष्टरूप से देखा कि ये दीवार में लगाया हुआ एक डिब्बा था। मेरे शिक्षक ने कहा, ''ये एक डिब्बा है, लोबसांग, दो दरवाजेवाला, ये दरवाजा और एक इसके अन्दर दरवाजा। इस कोष्ठ में रहनेवाला, जबतक कि एक निश्चित समय न हो, प्रतीक्षा करता है। तब वह अपने दरवाजे को खोलता है, आसपास महसूस करता है और खाने और

पानी को, जो उसके लिए रखा गया है, वहॉ से हटाता है। वह कभी प्रकाश नहीं देखता, वह कभी किसी से बोलता नहीं। वह वास्तव में, खामोशी के एक संकल्प में है। अब हमारी समस्या यह है कि, वह बहुत समय तक, कई दिनों तक, बिना खाने के रहा है और हम नहीं जानते कि वह जिन्दा है या मर चुका है।''

उन्होंने खुले हुए की तरफ देखा, और मुझे देखा। वापस खुले हुए की तरफ देखते हुए, उन्होंने इसे अपने हाथ और भुजा से नापा, तब उन्होंने मुझे नापा। इसके बाद उन्होंने कहा, ''मुझे ऐसा लगता है कि यदि तुम अपनी पोशाक को उतार दो, शायद तुम इसमें से रेंगकर, इस खुले हुए में से जा सकते हो और दरवाजे को दूसरी तरफ, बलपूर्वक खोल सकते हो। तब तुम देख सकोगे कि, क्या वह भिक्षु ध्यान दिए जाने की आवश्यकता में है।'' ''ओह ! स्वामी !'' मैं पूरी तरह, डर में चिलाया। ''क्या होगा, यदि मैं सीधा गया और वापस नहीं लौट पाया ?''

एक क्षण के लिए, मेरे शिक्षक ने सोचा और तब उत्तर दिया, ''पहले तुमको उठाया जाएगा ताकि तुमको सहारा दिया जा सके। तब तुम एक पत्थर की सहायता से, अच्छा हो कि, अन्दर के दरवाजे में जाओ। जब तुम इसे अन्दर सुधार लोगे, हम तुमको अन्दर फिसला देंगे और तब तुम, अपने फैलाए हुए हाथों में, एक दीपक पकड़ सकते हो। ये इतना काफी उजाला होगा कि, तुम्हें ये देखने की इजाजत दे दे कि, वह व्यक्ति सहायता की आवश्यता में है।''

मेरे शिक्षक, दूसरे कमरे में गए और तीन दीपकों को लाए, उनमें से दो की बत्तियों को निहारते हुए, और तीनों को एक साथ मरोड़कर एक दीपक में, जिसको बड़ी सावधानी से, पूरी तरह से मक्खन से भरा गया था, रखा। इस बीच, भिक्षुओं में से एक, खुले में बाहर गया था, और वह अब, एक भारी पत्थर को लिए हुए लौटा। उसने वह पत्थर मुझे दिया और वजन और संतुलन के लिए तौला। ''स्वामी, कोई भिक्षु, एक प्रश्न का उत्तर क्यों नहीं दे सकता ?'' मैंने पूछा। ''क्योंकि वह निश्चित समय के लिए, संकल्प के अन्दर है, कुछ निश्चित समय के लिए न बोलने की एक प्रतिज्ञा के अन्दर,'' ये उनका जवाब था।

बर्फीली हवा में ठण्ड में सिकुड़ते हुए, मैंने अनिच्छापूर्वक, अपनी पोशाक को समेटा। चाकपोरी काफी ठण्डा था, परन्तु ये उससे भी ज्यादा ठण्डा था। ठण्ड काट रही थी। मैंने अपनी चप्पलों को पहना क्योंकि फर्श, बर्फ की शिला की तरह ठण्डा था।

इस बीच, भिक्षु ने पत्थर को ले लिया और अन्दरवाले दरवाजे के विरुद्ध, एक अच्छा झटका दिया, जो एक जोरदार टकराहट के साथ, अपने खॉचे में से उछला परन्तु दूसरों के, यद्यपि उन्होंने काफी प्रयास किए थे, परन्तु अन्दरवाले प्रकोष्ठ में देखने में सफल नहीं हुए थे, सिर बहुत बड़े थे, उनके कन्धे बहुत चौड़े थे। इसलिए मेरे शिक्षक ने मुझे क्षैतिज पकड़ा और मैंने अपना हाथ फैलाया मानो कि, मैं गोता लगाने जा रहा हूँ, और भिक्षुओं में से एक ने, उस दीपक में रख हुईं तीनों बत्तियॉ जलाईं और सावधानीपूर्वक, मेरे हाथों में रखा। तब मैं आगे की तरफ फिसला। मैंने टूटी हुई आलमारी की चौखट या बहुत खुरदरे रास्ते को ढूंढ लिया, परन्तु काफी गुर्राहट और आवाजों के साथ, बगल से मरोड़ते हुए और आगे पीछे झटके देते हुए, मैं सन्दूक जैसी प्रविष्टि (entrance) द्वारा घुस पाया, ताकि कम से कम मेरी भुजाऐं और मेरा सिर, आगे निकला हुआ रहे। तुरन्त ही, मैं एक बीमार करनेवाली दुर्गन्ध से उबर सका। ये पूरी तरह से बहुत खराब थी, ये सड़ते हुए मास की दुर्गन्ध थी, उन चीजों की दुर्गन्ध, जो खराब हो गई हों। कोई ऐसी चीजों को तभी सूंघ सकता है, जब किसी मरे हुए याक या मरे हुए घोड़े को, जो बहुत लम्बे समय से रखा गया हो, देखने का मौका मिले; ये वह गन्ध थी, जिसने मुझे दुनियॉ में सफाई की सारी चीजों का ध्यान दिलाया, जो एक ही समय में खराब हो गईं हैं। मैं दुर्गन्ध के प्रति पूरी तरह से मुँह बन्द रखे हुए था परन्तु मैंने अपने आपको नियंत्रित करने के लिए, हाथ में ली हुई रोशनी को व्यवस्थित किया। मैं उसकी टिमटिमाती हुई रोशनियों को, जो पत्थर की दीवारों से लौट रही थीं, उस

बूढ़े भिक्षु को, देख सका। उसकी ऑखें मेरी तरफ चमक रही थीं, वह मेरी तरफ घूर रहा था, और मैं डर के मारे इतना उछला कि मेरे कन्धों पर से मेरी खाल पूरी तरह से उधड़ गई। मैंने उसके ऊपर, वापस टकटकी लगाई और तब मैंने देखा कि उसकी ऑखें प्रकाश की प्रतिक्रिया में चमक रही थीं परन्तु वे झपकी नहीं, वे हिली नहीं, मैंने संकेत के रूप में कि मैं–जल्दी से बाहर होना चाहता हूँ, अपने पैर हिलाए। धीमे से मुझे वापस खींच लिया गया, और तब मैं बीमार था, बीमार, बीमार, बीमार।

''हम उसे यहॉ नहीं छोड़ सकते !'' मेरे शिक्षक ने कहा। ''हमको दीवार तोड़कर नीचे गिरानी होगी और उसको बाहर निकालना होगा।'' मैंने अपने जी मिचलाने से राहत पाई और अपनी पोशाक पहनी। दूसरे लोगों ने औजार, एक भारी घन और लोहे की चपटे सिरेवाली दो छड़ें (गेंथी या छैनी) ले लीं। तब उन्होंने दीवार के दूरवाले हिस्से की दरारों में, लोहे की छैनियों को उपयोग में लिया और घन चलाए, धीमे–धीमे, एक खण्ड अलग हुआ, और तब दूसरा, तब और दूसरा। दुर्गन्ध भयानक थी। अन्त में, खुलाव (opening), एक आदमी के प्रवेश करने के लिए काफी था और भिक्षुओं में से एक, दो दीपकों को लिए हुए अन्दर घुसा। शीघ्र ही वह भूरा चेहरा लेकर वापस आया और उसने मेरी बात को दोहराया, जिसे जानकर मैं प्रसन्न हुआ।

''हमें उसे एक रस्सी से बांधना होगा और खींचकर बाहर निकालना होगा,'' भिक्षु ने कहा, ''वह टुकड़ों में टूट चुका है। वह पूरी तरह से सड़ने की अवस्था में है।'' एक भिक्षु ने शान्तरूप से, कमरा छोड़ा और शीघ्र ही एक लम्बे रस्से के साथ लौटा। दीवार में छेद में से घुसते हुए (जहॉ दरवाजा, दीवार में, मूलरूप से लगाया गया था), हमने उसे आसपास चलते हुए सुना और तब वह लौटा, ''सब ठीक है, तुम उसे खींच सकते हो,'' उसने कहा। दो भिक्षुओं ने धीमे से रस्से को लिया और खींचा। शीघ्र ही बूढ़े आदमी का सिर और उसकी भुजाऐं प्रकट हुईं; वह भयानक स्थिति में था। भिक्षुओं ने उसे सावधानी से बाहर खींचा और तब उसे मुलायम हाथों के द्वारा उठाया गया और बाहर लाया गया।

कमरे के बाहर के सिरे की तरफ, पहाड़ पर दूर की तरफ जाती हुई, एक छोटी पगडण्डी थी। दो भिक्षु, अपने भार के साथ, रास्ते पर उतरे और हमारी नजर से गायब हो गए। मैं जानता था कि, वे लाश को, एक सपाट स्थान में, जहॉ गिद्धों को, शीघ्र ही खाना दिया जाएगा, ले जा रहे हैं क्योंकि यहॉ इन कड़ी पहाड़ी चट्टानों के बीच, लाशों को गाड़ने का कोई मौका नहीं था। हमको, ''वायु मृतक संस्कार (air burial)'' पर निर्भर रहना पड़ता था।''

जब ये किया जा रहा था, भिक्षु सेवक, जो हमारे साथ था, ने दीवार के दूसरी तरफ दूर एक छोटा छेद बनाया, जिसने प्रकाश की एक छोटी धुंधली किरण को अन्दर आने दिया। तब उसने पानी की टंकियों को लिया और अन्दरवाले प्रकोष्ठ को, उसके अंतिम कब्जाधारी से मुक्त कराते हुए, इसे पानी से धोकर साफ किया। शीघ्र ही–इतना शीघ्र–इसको लेनेवाला यहॉ कोई दूसरा होगा और वह यहॉ रहेगा दस ? बीस ? कितने वर्षों के लिए ?

उस दिन, बाद में, हम सब बैठे हुए थे और बूढ़े अन्धे आदमी ने कहा, ''मैं महसूस कर सकता हूँ कि यहॉ कोई एक हमारे पास है, जिसके भाग्य में, अपनी बहुत दूर यात्रा करने और बहुत कुछ देखने के लिए बदा है। जबसे मेरे हाथों ने उसके सिर को छुआ, मुझे उसके बारे में सूचना मिली है। बेटे, यहॉ मेरे सामने बैठो।''

अनिच्छापूर्वक मैं आगे चला और उस बूढ़े अन्धे आदमी के ठीक सामने बैठा। उसने अपने हाथ उठाए– वे इतने ठण्डे थे, जैसे बर्फ–और उन्हें मेरी मुंड़ी हुई खोपड़ी के ऊपर रखा। उसकी उॅगलियों ने, हल्के से, मेरे सिर की बाहरी रेखा (outline) का पता लगाया और विभिन्न उभारों, जो मेरे थे, को जॉचा। तब उसने कहा : ''तुमको बहुत ही कठोर जीवन जीना है।'' मैं स्वयं में बहुत दुःखी हुआ, हर आदमी मुझे कह रहा था कि मुझे बहुत कठोर जीवन जीना है और मैं पूरे मामले पर दिल से दुःखी होता जा रहा था। ''तमाम परेशानियों, परीक्षाओं, आपत्तियों, जो कुछ पर पड़ती हैं, को झेलने के बाद,

अन्त में, ठीक उससे पहले, तुमको सफलता मिलेगी। तुम वह करोगे जिसके लिए तुम इस संसार में आए हो।''

मैं इस सबको पहले सुन चुका था। मैं शान्ति देनेवालों के पास, भविष्यदृष्टाओं के पास, ज्योतिषियों के पास, अतीन्द्रियज्ञानियों के पास और उनमें से प्रत्येक के पास, जिन्होंने मुझे इसी प्रकार की चीज बतायी थी, गया था। मुझे ये सब बताए जाने के बाद, उसने अपना हाथ हिलाया, इसलिए मैं उठ खड़ा हुआ और इतना दूर चला, जितना दूर मैं चल सकता था, एक कार्य, जिसने उसे आश्चर्य के साथ कुड़कुड़ाने के लिए बाध्य किया।

मेरे शिक्षक और दूसरे लोग, विभिन्न गंभीर मुद्दों पर, एक लम्बी चर्चा में थे। इसका मेरे लिए कोई विशेष अर्थ नहीं था, वे भविष्यवाणियों और उन चीजों के बारे में, जो तिब्बत में होनेवाली थीं, बातचीत कर रहे थे। वे, पवित्रज्ञान को संजोने के सबसे अच्छे तरीकों के बारे में, और विभिन्न पुस्तकों और वस्तुओं को, उन ऊँचे पहाड़ों में, जहॉ वे गुफाओं में छिपे रहेंगे, ले जाने के लिए, पहले से ही, कैसे कदम उठाए जा चुके थे, ये बता रहे थे। वे यह भी कह रहे थे कि, मन्दिरों में से जब्त की हुई चीजें कैसे उठाई जाऐंगी ताकि, वर्षों बाद में आनेवाले उन घुसपैठिये लोगों के हाथों में, पुरानी–पुरानी सही चीजें न पड़ें।

मैं कोठरी में बाहर निकला और ल्हासा के शहर के काफी नीचे, एक चट्टान पर, जो अब तेजी से समीप पहुँचती हुई रात की उदासी के द्वारा छिपी हुई थी, बाहर घूरते हुआ बैठा। केवल चाकपोरी की उच्चतर चोटियॉ और पोटाला, अभी भी धुंधली शाम की रोशनी में थे। वे, सबसे गहरे बैंगनी समुद्र में, दो अलग–अलग प्रायद्वीपों की तरह से तैरते हुए दिखाई दिए। जैसे ही मैं वहॉ बैठा, प्रायद्वीप, हमेशा रहनेवाले अंधकार में, धीमे से डूबते हुए लगे। तब जैसे ही मैं बैठा, पहाड़ों के किनारों के नीचे टकराती हुई चन्द्रमा के प्रकाश की एक चमकीली किरण ने पोटाला की छत को छुआ, जो स्वर्णिम चमक के साथ चमक उठी। मैं मुड़ा और प्रकोष्ठ के अन्दर गया जहॉ से मैंने अपनी पोशाक को उठाया, अपने आपको अपने कम्बल में लपेटा, और नींद में सो गया।

समाप्त